धरती धन न अपना

जगदीशचन्द्र

धरती धन न अपना



राजकमल प्रकाशन

दिल्ली ६ पटना-६

मूल्य १६·००

प्रथम संस्करण १९७२

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०
८ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली ६

मुद्रक विनोद प्रिंटिंग सर्विस द्वारा
शाहदरा प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली ३२

आवरण इमरोज़

सोम आनन्द को
जिनके सहयोग ने
मेरी सो रही सृजन-चेतन को
पुनर्जागृत करके
यह उपन्यास लिखने
के लिए प्रेरित किया

मेरी ओर से

मेरा यह उपन्यास मेरी किशोरावस्था की कुछ अविस्मरणीय स्मृतिया और उनके दामन म छिपी एक अदम्य वेदना की उपज है।

मेरी किशोरावस्था मेरे ननिहाल के गाव रल्हन (पजाब) म बीती। गाँव का एक हरिजन परिवार मेरे नानाजी की जमीन जोतता था और इसी सिलसिले मे मुझे उनकी बस्ती म जाना पडता था। हरिजना की बस्ती म जाने पर कोई पाबदी ता न थी परन्तु कुछ मर्यादाएँ थी, कुछ परम्पराएँ और सीमाएँ थी जिनम बँधकर जरूर चलना पडता था। गाव का दौहित्र होने के कारण मुझसे इन मर्यादाआ का कडाई से पालन करने की अपेक्षा की जाती थी। मेरा किशोर मन बधना की इस झीनी-सी दीवार का ताडकर हरिजना की छोटी छोटी सीलन भरी अँधेरी कोठरिया म छिपे रहस्यो को जानने के लिए हरदम व्यग्र रहता था। लोगा की आँख बचाकर मैं उनम गया भी और मन भर कर मैंने उन बधना को तोडा। गाँव मे चल रहे इस भेदभाव को देखकर मेरे किशोर मन म विद्राह की ज्वालाएँ भडक उठी। परन्तु इन्हे अभिव्यक्ति दन का कोई माग दिखाई न देता था। उपन्यास लिखने जसी किसी चीज से तो मैं बिलकुल ही परिचित नही था।

इसी दौरान पढाई और बाद म नौकरी के सिलसिले म मुझे शहर जाना पडा परन्तु वष मे एकाध बार छुट्टियां मे मुझे अपने ननिहाल जाने का भी अवसर मिलता रहता। मैं हर साल यही देखता कि गाँव मे मर्यादाआ की सीमाएँ टूटनी तो दूर रही, उनकी जकडन दिनोदिन सख्त होती जा रही है। अथशास्त्र का छात्र होने के कारण मुझे इस सामाजिक दुरावस्था के पीछे छिपे आर्थिक कारणा का भी

पता चलने लगा । मैं यह सब देखकर बहुत ही उद्विग्न होता था कि आर्थिक अभावों की चक्की में युगयुगान्तरों से पिस रहे हरिजन अब भी मध्यकालीन यातनाओं को भोग रहे हैं। जिस भूमि पर वे रहते थे जिस जमीन को वे जोतते थे यहाँ तक कि जिन छप्परों में वे रहते थे, कुछ भी उनका नहीं था। इन्हीं बातों को देखकर मेरे किशोर मन की वेदना सहसा अपने सभी बाँध तोडकर फूट निकली और मैंने उपेक्षित हरिजनों के जीवन का चित्रण करने का सकल्प कर लिया। प्रस्तुत उपन्यास लिखने का मूल प्रेरणा बिन्दु यही है।

अपने जातिगत सस्कारों तथा सामाजिक मान्यताओं की कठोर जकडन के कारण मैं हरिजनों के जीवन की कटुताओं को स्वय तो नहीं भोग सका परन्तु फिर भी मुझे अपने दुस्साहस के कारण उनके जीवन को बहुत निकट से देखने का अवसर मिला है। मैंने सर्वथा निरपेक्ष रहकर भारतीय जीवन के इन कटे हुए सदर्भों का चित्रण किया है और कहीं भी अपना मत थोपने अथवा अपनी विचारधारा को लादने की चेष्टा नहीं की है।

—जगदीशचन्द्र

काली जब गाँव के निकट पहुंचा तो पौ फट चुकी थी। वह एक रुंड-मुंड वृक्ष के पास खड़ा होकर गाँव की ओर देखने लगा जो सुबह के मटमैले अँधेरे में बहुत बड़ी गठड़ी की तरह नजर आ रहा था। गाँव से बाहर एक हवेली में एक दिया टिमटिमा रहा था। पास ही एक खेत में हल चल रहा था और थोड़े थोड़े समय के बाद 'तुत तुत... टक टक... तेरे जनने वाले को चोर ले जाएँ... चल पुत्रा शेर की तरह छाती के बल पर चल' की आवाजें आती और साथ ही घुंघरू जोर से छनछना उठते। काली ने सिर से ट्रंक और कंधे में लटक रहा बिस्तर उतारकर रख दिया और वृक्ष के तने के सहारे बैठकर सोचने लगा कि शायद चौधरी फत्तू के खेत में हल चल रहा है... शायद उसका बेटा प्यारू हल चला रहा है... शायद सावनी के लिए खेत तैयार कर रहा है।

काली का ध्यान फिर गाँव की ओर चला गया और वह आँख फाड़ फाड़कर वृक्षों की ओट में छिपे हुए मकानों की ओर देखने लगा। गाँव की एक गली में कोई कुत्ता भौंक उठता तो उसके उत्तर में दूसरी गलियों से कई कुत्तों के भौंकने की आवाजें आने लगतीं और फिर थोड़ी देर के बाद गाँव में ऐसे खामोशी छा जाती जैसे कोई आदमी स्वप्न में बुदबुदाने के बाद करवट बदलकर सो जाए। वहाँ बैठे-बैठे काली को भय महसूस होने लगा। उसके दिल में छः साल के पश्चात गाँव लौटने की खुशी खत्म होने लगी और उसका जी चाहा कि वह उल्टे पाँव कानपुर वापस चला जाए। उसे याद हो आया कि जब वह गाँव के लिए चला था तो कितना प्रसन्न था और उसने चाहा था कि उड़कर वहाँ पहुंच जाए और अब वह गाँव के बहुत निकट है सिर्फ पाँच-सात खेत दूर है तो वह लौट जाना चाहता है। फिर उसे अनायास ही चाची का ख्याल आया और उसकी आँखें भर आईं। उसने सोचा, क्या पता वह जिन्दा भी होगी या नहीं। हो सकता है उसके गाँव छोड़ने के थोड़े दिन बाद ही मर गई हो। यह भी सम्भव है कि वह जिन्दा हो। क्या पता किस हालत में हो।

जब मुर्ग ने बाग दी तो काली हड़बड़ाकर उठ बैठा और सामान उठाकर जल्दी जल्दी गाँव की ओर चल दिया। जब वह पहली हवेली के पास पहुंचा तो एक कुत्ता कान फड़फड़ाकर उठा और भौंकता हुआ उसके आगे आगे चलने लगा। उसने कुत्ते की आवाज को पहचानने की कोशिश की लेकिन दूसरे ही क्षण अपने इस प्रयास पर उसे हँसी आ गई। वह अपने दाएँ बाएँ मकानों को पहचानने की कोशिश करता हुआ तेज़-तेज़ कदम उठाता रहा। उसने देखा कि बड़ा रास्ता पहले से काफी नीचा हो गया है। शायद पिछले कुछ वर्षों में बहुत ज़ोर की बरसातें लगी होंगी। गाँव की अभिन्न गंध उसे कदम-कदम पर अपने से परिचित करा रही थी और वह नथुने फुला फुलाकर उसे सूंघ रहा था। जब वह किसी मकान या हवेली के सामने पहुंचता तो उसके मस्तिष्क में कई तस्वीरें उभरतीं। लेकिन वह उनसे आँखें चुराता हुआ आगे बढ़ जाता।

चौधरियों के मुहल्ले के बाद स्कूल आ गया। चार कक्षाओं के इस स्कूल में काली ने भी कुछ समय तक मुंशी के पाँव दबाए थे उँगलियों के पटाखे निकाले थे और डंडे खाए थे। वह रुककर स्कूल की ओर देखने लगा और मुंशी शिवराम के बारे में सोचने लगा जिसके लिए जाटों के लड़के साग गन्ने गाजरें मूलियाँ इत्यादि लाते थे और कम्मियों के लड़के उनके घर पहुंचाते थे। स्कूल की हालत पहले जैसी ही खराब दिखाई देती थी और उसके आँगन में बड़ के बूढ़े वृक्ष की घनी परछाइयों ने रात के अँधेरे को और भी गहरा कर दिया था। स्कूल की बिल्डिंग के पीछे एक तीन मंजिला मकान घमंडी आदमी की तरह अकड़ा खड़ा था। काली के मन में चौधरी हरनामसिंह की यादों का बस्ता खुल गया और वह उन यादों को झटकता हुआ आगे बढ़ गया।

स्कूल से कुछ दूर जाने पर उसे मन्दिर का कलश नजर आया। मन्दिर के चारों ओर गाँव के दूकानदारों के चौबारे थे। वह पण्डित संतराम के बारे में सोचने लगा जो हरिजनों को देखकर दूर से ही दुर-दुर करना शुरू कर देता था। वह थोड़ा और आगे बढ़ा तो उसकी नजरें गिरजाघर के बच्चे की बाँहों की तरह फैले हुए क्रास पर गड़ गईं और गाँव के पादरी का ममतीन चेहरा आँखों के सामने घूम गया।

थोड़ी दूर और आगे जाने पर उसे ज़ोर की ठोकर लगी और वह गिरते गिरते बचा। गोबर की तेज़ बदबू ने उसे चमादड़ी (हरिजनों की बस्ती) के निकट ही होने का संकेत दिया। इस स्थान पर बड़ा रास्ता काफी गहरा हो गया था क्योंकि गाँव में बरसात का सारा पानी इसी रास्ते में होकर चो में जाता था। कुछ क्षणों के बाद ही वह चमादड़ी के बाहर कुएं पर पहुंच गया। कुएं के गिर्द गन्दे

पानी और कीचड की छपडी बनी हुई थी। वह कुछ क्षणा के लिए रुक गया और सामने छोटे छोटे कच्चे मकाना को देखने लगा। फिर वह कुएँ के गिद चक्कर काटकर उम जगह पहुच गया जहा से मुहल्ले के अन्दर जाने वाली गली शुरू होती थी। वह गली के मुह पर रुक गया और सामने गन्दे पानी की छपडी को पार करने की तरकीब सोचने लगा। उसके जेहन ने उसे वह तरकीब बताई और अपने आप ही उसका पाव पानी म डूबी इटा को टटोलने के लिए उठ गया और दूसरे ही क्षण वह उस छपडी को पार करके गली म घुस गया।

गली म कई कुत्ता न मिलकर उसका स्वागत किया। दूसरी ओर से भी कुत्ता ने उत्तर मे भौंकना शुरू कर दिया और इतना शोर मचाया कि काली को यह आशका हाने लगी कि इस गली म शायद केवल कुत्ते ही रहते हैं। परन्तु जब वह एक टूटे हुए मकान के सामने रुक गया तो कुत्ते आहिस्ता आहिस्ता इधर उधर खिसकने लगे। काली टूटे किवाड को देखता हुआ सोचने लगा कि पता नहा चाची अभी जीवित है या मर गई है। उसके दिल म हौल सा उठा और उसने जल्दी से अपना हाथ साकल की ओर बढा दिया। बाहर की साकल खुली थी। उसने किवाड को धीरे स दबाया तो वह अन्दर से बन्द महसूस हुआ। खुशी के मारे उसका दिल उछलने लगा और वह साकल खटखटा कर बहुत तेज धडकते दिल से उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। जब कोई उत्तर न आया तो उसने दोबारा साकल खटखटाई। जब फिर भी कोई उत्तर न आया तो उसका दिल डूबने लगा। उसने किवाड को जोर से थपथपाया और आहिस्ता से कहा

'चाची।

कुछ क्षणा के बाद अन्दर से खांसने की आवाज आने लगी। काली फिर खिल उठा। वह किवाड के बिल्कुल पास खडा होकर अन्दर से खांसने की और हे रब जी तेरा ही आसरा की आवाजो को ध्यान से सुनने लगा। इतने म पडोस का दरवाजा आहिस्ता से खुला और एक आदमी जगली कबूतर की फुर्ती से अँधेरे म खो गया। केवल उसके जूते की ची ची की आवाज सुनाई देती रही। काली उस दरवाजे की ओर देखने लगा। उसके जेहन म कुछ आलुआ जसी नम और स्वस्थ और कुछ सूखे बेर जसी प्राणहीन सी शक्लें उभरी। परन्तु अगले ही क्षण खांसी की आवाज के साथ कौन है के प्रश्न ने उसे चौंका दिया और वह दरवाजे से पीछे हट गया। दोना पट खुले तो अँधेरी डयोढी से दुर्गन्ध भरी हवा बाहर निकली और साथ ही दो बुझी-बुझी आँखें उसकी ओर देखने लगी।

चाची।' काली ने भराई हुई आवाज म कहा और उसके पाँव की ओर झुक

गया। चाची काली की आवाज पहचानती हुई बोली

'कौन काली है ?' उसने स्नेह और आश्चर्य भरे स्वर म कहा जस उस विश्वास न आया हो। उसने काली के सिर पर हाथ फेरत हुए उस ऊपर उठाया और उसका माथा चूम कर बोली

रब साइयां दी।

काली जब ट्रक और बिस्तर उठाकर अन्दर आने लगा तो चाची ने उसे रोक लिया और स्वय कोठडी म जाकर सरसा के तल की शीशी तलाश करन लगी। शीशी हाथ लग गई तो उसे याद आया कि उसम तल नही है। वह खाली शीशी लेकर ही वापस आ गई और दहलीज क दोना ओर एक एक बूद तल टपकाकर काली को इस तरह अन्दर ले आई जसे वह सारे ससार पर विजय पाकर लौटा हो। चाची की झुकी हुई कमर एकदम सीधी हो गई। उसकी प्रकाशहीन आंखो को अधेरे म भी दीखने लगा और वह सोलह साल की मुटियार की तरह पुर्ती स कोठडी म घूमने लगी। उसका पांव जमीन पर नही पड रहा था। उसने दियासलाई तलाश करके मिट्टी के तेल का दिया जलाया और काली को खाट पर बठाकर उसका चेहरा अपने हाथो मे लेकर दीवानावार चूमती हुई बोली

मेरा लाल वापस आ गया।' फिर कुछ सोचकर चाची की आखो म पानी आ गया। काली गुम सुम बठा कोठडी म चारो ओर देख रहा था। कोठडी की दीवारे शहतीर और कडियाँ चाची की तरह बूढी हो चुकी थी और अपने ही बोझ तले दबी जा रही थी। काली चाची की ओर ध्यान से देखता हुआ बोला

चाची ! कस कटे दिन।' यह कहकर उसकी आँखो म आँसू आ गए। चाची भी उत्तर म सुबकियाँ लेने लगी। फिर वे दोनो फूट पडे। काली चाची के घुटना पर सिर रखकर खूब रोया। इस मुद्दत म दोनो ने जो कष्ट सहन किए थे वे आसुओ की जबान से एक दूसरे को बता दिए। रोते रोत काली को जब हिचकी आने लगी तो चाची उसे चुप कराती हुई बोली

न रो पुत्तरा। य सब तकदीर का चक्कर था। तेरा चाचा जि दा होता तो तुम्हे पाताल से भी खोज लाता। तुम्हे गम हवा तक न लगने देता।' यह कहकर चाची रोने लगी तो काली उसे दिलासा देता हुआ बोला

चाची अब मैं एक पल के लिए भी तेरे से अलग नही रहूँगा। दिन रात *तुम्हारी सेवा करूँगा।*

चाची हिचकियाँ लेती हुइ बोली

काका तूने भी ता अनथ किया। रडी (विधवा) चाची को यू छोड

कर चला गया जैसे तेरा उसके साथ कोई रिश्ता ही नही था। म ता पहले ही मुसीबता की मारी हुई थी। दिन रात तुझ मे खोई रहती। रह रहकर दिल मे हौल उठता। जिसने जो उपाय बताया वह किया। रवड से बिछडी हुई वछिया को कभी देख लेती तो रो रोकर मैं अपना बुरा हाल कर लेती और सोचती कि मेरा काली भी परदेस म इसी तरह डावाडोल और खोया-खोया फिरता होगा दिन रात मैं नीली छत वाले से यही विनती करती कि मेरा लाल ठीक ठाक हो। मैं उसके हाथो म ही मरूँ।' फिर वह काली को ध्यान से देखती हुई बोली

काका क्या मैं तुम्हे कभी याद नही आती थी ?'

काली ने मुह फेर लिया और रुँधी हुई आवाज़ म बोला

चाची, तरी याद ही तो मुझे गाव वापस खीच लाई है।' यह कहकर काली न अपना सिर चाची की गोद म रख दिया। चाची उसके चौडे कधा पर हाथ फेरती हुई बोली

आज तेरा बाप जिदा हाता तो तुम्हे देखकर कितना खुश हाता। उसने ता तुम्हे जी भरकर देखा भी नहा था कि मौत ने आ घेरा। तेरी मा को प्लेग खा गई। चाचे ने चप्पे गिन गिनकर पाला पोसा लेकिन उस भी हैजे ने खा लिया। तुम्ह तो शायद उसकी सूरत भी याद न हो। सारे खानदान की तू ही तो एक निशानी है।' चाची फिर फूट फूटकर रोने लगी। काली उसकी गोद म सिर रखे हुए उन दिना को याद करने लगा जब छ साल पहले वह दो दिन का भूखा प्यासा फटे हाल घर से चोरी भाग गया था। चाची भी यादा मे खोई हुई अपन दु खा को याद करके बार-बार रो पडती। वे दोनो बहुत देर तक गुम सुम बठे रह। चाची के दिल मे जसे हौल उठा और वह काली का माथा चूमती हुई बोली

'पुत्तरा परदेसी पछी भी उडते-उडत साल-दो साल बाद फेरा डाल जाते हैं। लकिन तू तो ऐसा गया कि तरी कोई खबर ही न मिली।' फिर वह अपने आसू पोछती हुई बोली

काका, मुझे सिफ तरा ही आसरा है। तरे सहारे उडती फिरती हू। तू आ गया है तो यह घर भरा भरा मालूम होता है। तू बाहर था तो यह कोठरी मुझे उजाड दिखाई देती थी।

'चाची अब मैं कभी एक पल के लिए भी तुम्ह छोडकर नही जाऊँगा। तुम्हे राज कराऊँगा। खाट से नाचे पाँव नही धरने दूगा।'

दिन चढने तक दोनो का मन हल्का हो चुका था। चाची ने काली के

लिए बिस्तर बिछा दिया।

तू घडी भर सो ले। पता नही कितन दिन का सफर करके आया है। मैं गली म तुम्हारे आन क बारे म बता द। यह कहकर वह गली म आ गई परन्तु उल्टे परा पल्ट आई और काली की खाट क पायँते वठता हुई बाली

काका मैं सोच रही हू कि इस तरह बताने की बजाय गली म चुग्की चुटकी शक्कर बाँट दू तो सबका अपन आप ही पता चल जाएगा। और फिर तुम्हारी वापसी की तो मुझे तुम्हारे ब्याह स भी ज्यादा खुशी है। तेरी क्या मर्जी है ?'

चाची जो जी म आए करो। तुम्हारी मर्जी ही मेरी मर्जी है। काली न यह कहकर करवट बदल ली। चाची चारपाई पर बठी रही तो काली आश्चय म पड गया और फिर उसे अकस्मात ही जसे कुछ याद आया, वह जल्दी से उठा और अपने ट्रक का ताला खोलकर कपडा की तह के नीचे स बहुत से नोट निकाले और चाची की ओर बढाता हुआ बोला

ला चाहे शक्कर की बोरी ले आओ।

चाची न बहुत स नोट दखे तो आश्चय से उसकी आख फल गइ और वह उन्ह कपडा की तहा म छिपाती हुई बनावटी गुस्स स बोली

मुझे कोई दूकान खोलनी है ? चार पस द छज्जू शाह की दूकान से सेर-आध सर शक्कर ले आऊ।

काली ने दस रुपये का नोट चाची क हाथ मे थमा दिया ता वह ऊची आवाज म बोली

यह क्या है ? तू मुझे टूटे हुए पस दे।

इसस छाटा नोट मर पास नही है। काली न दस का नोट उसके हाथ म देते हुए कहा। चाची न नोट को फलाकर देखा और घबराइ हुई आवाज म बोली

सदूक को जल्दी स ताला मारकर कही छिपा दे। यहाँ लोगा की नजर बहुत बुरी है। पिछले दिना ब्यास पार स वता की भतीजी आई थी। उसका शादी हुए दा महीने ही हुए थे। उसके गहने-कपड देखकर प्रीतो न नजर लगा दी। उस बेचारी का सब कुछ उसी रात चोरी हा गया।

काली चाची की बात पर कुछ क्षणा तक हसता रहा और उसके कहन क अनुसार ट्रक को काने म छिपा दिया। चाची दस रुपय के नोट का कई तहा म छिपाकर गली म आत जात लागा की नजरा से बचती शक्कर लेने के लिए छज्जू शाह की दूकान की आर चली गई।

चाची के जाने के बाद काली कुछ समय तक खाट पर लेटा रहा। छ वष के विछोह ने उसमे गाँव और इसके वासियो के प्रति अजनबीपन पदा कर दिया था। यह सोचकर उसे डर लगने लगता कि थाडी ही देर म मुहल्ल की सब स्त्रियाँ बच्चे और कुछ मद उसके घर जमा हो जाएँगे और तरह-तरह क प्रश्न पूछेंगे। काली प्रसन्न होने की बजाय बहुत बेचन था और चाहता था कि यह घडी किसी तरह टल जाए तो अच्छा है।

वह खाट पर लेटा करवटें बदल रहा था। रात भर जागते रहन के बावजूद नीद और थकावट उससे कासा दूर थी। जब लटे लटे उसका मन ऊब गया और बचैनी और भी बढने लगी तो वह उठकर अपने काठे की छत पर आ गया। बोदी सीढी के आखिरी डडे पर खडा होकर वह सामने दखन लगा। चमादडी के कोठा से परे दूर तक खुले खेत फले हुए थ। बाइ ओर चो की चमकती रेत थी। चो के दोना ओर बाँध बना दिए गए थ। इह दखकर काली को हैरानी भी हुई और खुशी भी। चमादडी के पास ही चो के परले किनारे पर बड के वृक्षा और शीसमा से घिरा हुआ तकिया (चौपाल) था। दाईं ओर मदिर और महाजना के मकान और चौबारे थ। उनसे पर स्कूल और नम्बरदारो के मकान और हवलियाँ थी। पश्चिम म गप्पिया मादिया, मिट्टा और चुतौतिया (मुहल्ला के नाम) क मकान और हवलिया थी।

काली ने सीढी के पास ही छत पर खडे होकर चमादडी के काठा पर नजर दौडाई। मटमैल रग के कच्चे और छोटे छाटे कोठे चा क दाएँ किनारे तक फले हुए थे। मुहल्ले के अदर एक छाटा सा चौगान था जिसके बीचोबीच एक बेरी थी। चमादडी म एक ही लम्बी और तग गली थी जा सारे मुहल्ले म कही सीधी और कही बल खाकर घूम जाती थी। उसम से केवल एक छोटी-सी गली निकलती थी जा बाब फत्तू, ताय बसत इत्यादि क घरा के सामने से होकर चो म जा निकलती थी। मुहल्ल के बाहर गोबर और कूडे के ढेर थ और एक-दो छोटे छोटे छप्पड थे जिनका पानी मई की धूप स खुश्क हो चुका था।

वह चमादडी के काठा का देखने लगा। पूरे मुहल्ले म एक भी एसा काठा नही था जिसम पक्की इट लगी हो। पिछली बरसात क बाद इन पर अभी लेप नही किया गया था इसलिए वे कमजोर और उनकी दीवारें खुरदरी नजर आ रही थी। लगभग प्रत्यक घर से ओपला का कडवा धुआँ अलसाया हुआ

सा ऊपर उठ रहा था। मुहल्ले म सुबह के समय भी निस्तब्धता छाई हुई थी जिसे कभी किसी मर्द की गाली किसी औरत की चीखती हुई आवाज या किसी बच्चे के रोने की चीख तोड देती थी।

काली को गली म 'चाची बधाइयाँ' की आवाज सुनाई देन लगी तो वह नीचे उतर आया। यह सोचकर उसका दिल कॉपने लगा कि अभी मुहल्ले की स्त्रियाँ और बच्चे धावा बोलकर उसके कोठे म घुस आएँगे। उसकी समझ म नहीं आ रहा था कि लोगो के आने पर वह उनसे कसे और क्या बातें करे। गली म 'चाची-बधाइयाँ' की आवाजें प्रतिक्षण निकट आ रही थी और उसकी बेचनी बढती जा रही थी।

काली के पास सबसे पहले उसकी पडोसन, निक्कू की पत्नी प्रीतो आई। वह गली म से ही उसे पुकारने लगी

वे काली, वे तू आ गया।'

जब वह अदर आ गई तो काली उसके पाँव की ओर झुकता हुआ बोला

'चाची मत्था टेकता हूँ।

'जुग जुग जियो।' प्रीतो न उसके सिर पर हाथ फेरना चाहा तो उसने गर्दन झुका ली।

वह सीधा खडा हो गया तो प्रीतो ने उसे भरपूर नजरो से देखा। काली न भी उस पर ध्यान स निगाह डाली। प्रीतो का शरीर ढल गया था लेकिन उसके रख रखाव म कोई अतर नही आया था। उसने मसूढो पर रगदार दातन किया हुआ था और व एस दिखाई दे रहे थे जस रबड के बने हुए हों। नाक मे कोके और ठोडी पर कृत्रिम तिल का रग फीका पड गया था। काली नजरें दूसरी ओर फेरता हुआ बोला

चाची, ठीक ठाक हो ना चाचा ठीक है लच्छो अमरू और नाथी ठीक है ?

वह यह पूछ ही रहा था कि एक साथ ही सात बच्चे अदर आ गए। उसने उनम स तीन बच्चा—लच्छा, अमरू और नाथी को तो पहचान लिया लेकिन बाकी उसके लिए अजनबी थे। वह आग बढकर अमरू को बाजुआ म उठाता हुआ बोला

सुना अमरू तू तो वसा-का-वसा पिसा हुआ है।

फिर उसन लच्छो की ओर देखत हुए कहा

लच्छा क्या हाल है तू तो बहुत बडी हो गई है।

लच्छा न मुसकराते और शरमात हुए मुह दूसरी ओर फेर लिया।

'चाचा तो काम पर गया होगा ?'

नहीं, काम पर वह कहाँ जाता है। वह तो चौधरी है। पचायत म बैठता है। तकिए से उठा तो शाह की दूकान पर जा बैठा वहाँ स उठा तो किसी और क थड़े पर धरना दे दिया।' प्रीतो ने नफरत से कहा।

'क्या उसने अफीम छोड दी है ?'

'कहाँ, अब तो पोस्त भी पीने लगा है। वह साल भर डेरे वाले महन्ता के पास रहा, वहाँ से पोस्त पीना सीख आया।' प्रीतो ने उत्तर दिया।

काली न छोटे छोटे बच्चा पर निगाह डालकर प्रीतो की ओर देखा तो वह हँसती हुई बोली

य सारी फौज मेरी ही है। घर से बाहर निकलती हूँ तो मोय लशकर बनाकर मेरे पीछे पीछे आ जाते हैं।'

इतनी देर मे जीतू और उसकी माँ निहाली आ गई। काली निहाली के पाँव की ओर झुकता हुआ बाला

ताई मत्था टकता हूँ।'

फिर उसने जीतू का अपने बाजुआ म लेकर जोर से भींच लिया और कुछ क्षणा के पश्चात उसे छोडता हुआ बोला

'सुना जीतू, ठीक हो ना ?'

हा तू अपनी सुना। तू कहाँ रहा इतनी देर ? हम तो तेरी इतजार म ओंसियाँ डाल डालकर हार गए।'

जीतू ने काली के तगडे सुडौल और गठे हुए शरीर को देखते हुए कहा। जीतू के सख्त और प्रौढ शरीर को देखकर काली को एहसास हुआ कि बालपन के बाद जीतू पर यौवन और बुढ़ापा एक साथ ही शुरू हो गए हैं। प्रीतो काली की ओर प्रशसा भरी नजरा से देखती हुइ जीतू से बोली

'जीतू तू भी शहर चला जा। काली की तरह मोटा ताजा होकर वापस आ जाना।'

खुराक हो तो गाँव म भी शरीर बन जाता है। रूखी रोटी खाकर तो शरीर बनेगा नहीं।' ताई निहाली ने कहा।

अच्छा काली, मैं घास ले आऊ। दोपहर को आऊँगा।' जीतू ने काली के कधे थपथपाते हुए कहा और बाहर निकल गया।

काली के घर म स्त्रिया और बच्चा की भीड प्रतिक्षण बढ रही थी। वह हर औरत के पाव की ओर झुककर मत्था टकता और बच्चा को बाँहो म उठाकर प्यार करता। जब बतू की पत्नी प्रसिन्नी आई तो काली उसे पहचान

न सका। वह उसके पाँव की ओर भी झुका तो प्रीतो उसे डाँटती हुई बोली

फोट, तू यह क्या कर रहा है ? यह प्रसिन्नी है—बन्तू की घरवाली । तू इसका जेठ लगता है। उल्टा य तेरे मत्था टेकेगी। यह सुनकर काली लज्जित सा हो गया और प्रसिन्नी न दबी न्बी हँसी के साथ छोटा-सा घूंघट निकाल लिया ।

काली औरता के मले कुचले फटे पुराने कपडा और नाक सुड्सुडाते नग धडग बच्चा को देखता हुआ सोचने लगा कि वह किस दुनिया मे आ गया है। कई औरता और बच्चा की पलकें गुलाबी थी और उन पर एक भी बाल नही था और उनसे पानी बह रहा था। उनके शरीरा और कपडो से पसीने की एसी दुर्गन्ध आ रही थी जिसस काली अपना परिचय खो चुका था। बच्चे चकित होकर काली को देख रहे थे और जब वह किसी को पुचकारता तो वह शरमा कर अपनी माँ की टागा से लिपट जाता।

'जा बेटा यह तेरा ताया है।

काली ने ये शब्द इतनी बार सुने कि उसे विश्वास सा होने लगा कि इस मुहल्ले म शायद उसके सिवा सबके ब्याह हो चुके हैं।

चाची प्रतापी शक्कर बाटकर वापस घर पहुची तो एक बार फिर चाची बधाइयाँ प्रतापिय बधाइया की कई आवाजें एक साथ गूज गइ। सब औरता न अपने-अपने दुपटटे के पल्लू से मुटठी भर अनाज खोला और काली के सिर स वार कर उसकी बलाए ली। उसके तगडे और जवान शरीर को देखकर कई औरतो को अपनी कवारी युवा भतीजी भानजी बहन या मके की किसी जवान लडकी की याद आने लगी और उनका जी चाहा कि उसका रिश्ता काली स निश्चित हो जाए ।

सब औरता न चोरी छिपे खाट के नीचे पड़ काली के ट्रक को देख लिया था और वे उसम पडी वस्तुआ के बारे म अपन-अपने अनुमान लगा रही थी। हर एक उसी हिसाब से काली को यह जताने की कोशिश कर रही थी कि उसकी अनुपस्थिति म उसन चाची की बहुत देख रेख की है। ताई निहाली न काली का माथा चूमत हुए कहा कि जीतू और काली आयु म बराबर और भाई हैं तो प्रीतो भी सबको सम्बोधित करती हुई बोली

काली तू तडके ही पहुच गया था ना ?

हाँ चाची ।

तुम्हारी आवाज सुनकर मैं सोच म पड गई कि भाभी के साथ कौन बातें कर रहा है। जब मैंन तेरे चाचे की खाट की ओर देखा ता वह खाली थी।

मैंने समझ लिया कि भाभी का हाल चाल और काम-काज पूछने गया होगा। रोज सवेरे उठते ही वह पहले भाभी के पास जाता है।

बुजुर्ग स्त्रियाँ काली के ट्रंक के बारे में खुसर फुसर कर रही थीं और अतू की पत्नी प्रसिन्नी, नन्दसिंह की बेटी पाशो और प्रीतो की बेटी लच्छो बाकी औरतों से अलग एक कोने में खड़ी थीं। उन्होंने आपस में कोई बात की और खिलखिलाकर हँस पड़ीं। पहले तो किसी ने उनकी ओर ध्यान न दिया लेकिन जब वे हँसी के मारे लोट-पोट होने लगीं तो प्रीतो नाक सिकोड़ती हुई बोली

'नी तुम्हें क्या हो गया है। क्या हिड़हिड़ कर रही हो?' जब तीनों हँसी से दोहरी होने लगीं तो सबका ध्यान उनकी ओर चला गया और एक साथ कई आवाजें आइं

'क्या हो गया है तुम्हें? प्रसिन्नी दो बच्चों की माँ बन गई है, तीसरा पेट में लिए घूम रही है लेकिन इसकी छोकर-खेल खत्म नहीं हुई।' प्रसिन्नी पर इस बात का कोई असर न हुआ और हँसते-हँसते उसका चेहरा ऐसा लाल हो गया जैसे उसमें से खून फूट पड़ेगा। प्रीतो उसके कंधों को झकझोरती हुई बोली

'नी, अकेली ही हँस रही है, हमें भी कुछ बता।'

जब प्रसिन्नी ने कुछ न बताया तो प्रीतो ने अपनी बेटी को झिड़कते हुए उससे पूछा

लच्छो का चेहरा शर्म से लाल हो गया और वह अपने-आपको सिकोड़ती और समेटती प्रसिन्नी की ओर संकेत करती हुई बोली

'यह कहती है कि काली को जल्दी से-जल्दी ब्याह कर लेना चाहिए।' लच्छो चुप हो गई परन्तु प्रीतो समझ गई कि प्रसिन्नी ने आगे क्या कहा होगा। उसे क्रोध तो बहुत आया लेकिन वह हँसती हुई ऊँची आवाज़ में बोली

'ठीक तो है। काली अब ब्याह नहीं करेगा तो क्या बुड्ढा होकर करेगा। इसके साथियों के तो तीन-तीन बच्चे हैं।'

'बाहर न जाता तो अब तक शायद उसके चार बच्चे होते।' दूसरी औरत ने कहा।

'मेरे जीतू और काली के तो लगन ढीले हैं।' ताई निहाली उदास स्वर में बोली।

'काली अब कहे तो शाम तक इसकी शादी करा दूँ।' प्रीतो उसको इशारा करती हुई घोड़ियाँ गाने लगी। उसके साथ बाकी औरतें भी मिल गईं।

प्रसिन्नी ने अपने पर से लाल रंग का दुपट्टा उतार कर काली के सिर पर रख दिया। उन्होंने चाची को घसीटकर बीच में बिठा लिया और वे सब इस तरह जोश से गाने लगीं जैसे सचमुच काली का ब्याह रचा हो।

प्रीतो ने चाची का पानी का घड़ा खाली कर लिया और ठीकरा से थाप देने लगी। ताई निहाली सबको बोल उठाने का यत्न करती हुई गाने लगी

जिस दिहाड़े मेरा काली नीं जम्मया

सोई दिहाड़ा भागीं भरया।

(जिस दिन मेरे काली ने जन्म लिया था वह दिन हमारे लिए बहुत शुभ था।)

सब स्त्रियाँ घड़े के गिर्द बैठ गई और झूम झूम कर गीत गाने लगीं।

साडे नमे साजन घर आये सलोनी दे नैन भरे।

सानू कौकौ वस्तू ल्याये सलोनी दे नैन भरे।

सानू गरी ते छुआरा ल्याये सलोनी दे नैन भरे।

सानू सुइमे दी जोड़ ल्याये सलोनी दे नैन भरे।

काली गीत सुनकर कभी हँसने लगता और कभी झेंपकर मुँह छिपा लेता। उसका अजनबीपन दूर हो गया था और वह इस तरह प्रसन्न था जैसे बच्चा अपनी माँ की गोद में बैठा लोरियाँ सुनकर प्रसन्न हो रहा हो।

३

गली में कई लोग दगड़ दगड़ करते हुए गुजर गए तो काली की आँख खुल गई। उसने एक क्षण के लिए इधर उधर देखा और करवट बदलकर फिर सो गया। लेकिन जब एक साथ कई आवाजें आई और उस पर एक बहुत भयानक चीख छा गई तो वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। नजदीक ही मकान की छत पर खड़ी एक स्त्री ने ऊँचे स्वर में कहा

चौबारे वाला चौधरी गालियाँ दे रहा है। पता नहीं किसकी शामत आई है। सब लोग चौगान में चले गए हैं।

काली उठकर चारपाई पर बैठ गया और ध्यान से आवाजों को सुनने

लगा। कोई फरर फरर् गालियाँ दे रहा था। फिर किसी के गिडगिडाने की आवाज आई

'चौधरी जी, मेरा कोई कसूर नही। आप मुझे ' किसी के सिर पर पटाख-पटाख जूत पडने की आवाज आई और साथ ही याचना भरी चीख गूजी

'हाय, मैं मर गया—मुझे बचाओ।'

चमादडी म ऐसी घटना कोई नई बात नही थी। ऐसा अक्सर होता रहता था। जब किसी चौधरी की फसल चोरी कट जाती या बरबाद हो जाती या चमार चौधरी के काम पर न जाता या फिर किसी चौधरी के अदर जमीन का मल्कियत का एहसास जोर पकड लेता तो वह अपनी साख बनाने और चौधर मनवाने के लिए इस मुहल्ले मे चला जाता।

जब चीख दोबारा गूज उठी तो काली पाँव मे जूता घसीटता हुआ गली म आ गया। चाची उसे रोकती रही लेकिन वह चौगान की आर बढ गया।

वह चौगान मे पहुचा ता मुहल्ले के बहुत से मद कमान बनाकर खडे थे। बीच मे चौधरी हरनाम सिह बाएँ हाथ की दो उँगलिया से तहबद का पल्लू थामे हुए खडा गालियाँ दे रहा था। कोठा की दीवारा और दरवाजो के साथ मली कुचली स्त्रियाँ भयभीत बच्चा को छातिया से लटकाए या अपनी टागा म दबाए हुए चौधरी और अपने मुहल्ले के मर्दों को देख रही थी। बूढे और जवान सब ऐसे सिर झुकाए हुए थे जसे राजा के दरबार मे खडे हा। उनके मले ताँब के रग के शरीर मद हवा म हिल रहे पत्ता की तरह काप रहे थ। चौधरी हरनाम सिह सबका गालिया द रहा था लेकिन उनके मुह पर ताले पडे थे।

उनमे से कुछ लोग कभी-कभार गाली सुनकर हँस पडते जैसे उन पर फूल फेंका गया हो।

सन्तू बाकी लोगा से जरा आगे सिर झुकाए खडा था। चौधरी ने उसे गाली देकर पुकारा तो वह ढिठाई से हँसने लगा। यह देखकर चौधरी का क्रोध और भी बढ गया और वह कडकती हुई आवाज मे बोला

इधर आ सन्तू के पुत्तर।'

सन्तू अपनी जगह पर खडा ही बोला

चौधरी जी मेरा कोई कसूर नहीं म तो ।

वह अभी अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि चौधरी आगे बढा और उसे घसीटकर आगे ले आया। चौधरी न उसकी गदन मरोडकर उसका मोर बना दिया और जूते मारने लगा। सन्तू बिलख उठा

'चौधरी जी मेरा कोई कसूर नही ।

जब उसके सिर पर दो चार और जूते पडे तो वह दहाडने लगा ।

'हाय म मर गया । मुझे बचाओ ।'

'सच बता, जानवरा को मरे खेत की ओर किया मोडा था ।

चौधरी जी, जिसकी जो चाहे सौगन्ध दे दो मने यह काम नही किया ।' सतू ने गिडगिडाते हुए कहा । चौधरी जब अपना हाथ ऊपर उठाता तो सतू अपने दोना हाथ सिर पर रखकर जोर-जोर स चीखने लगता । चौधरी को उस पर शायद दया आ गई या वह थक गया, उसने जूता नीचे फेंक दिया और सतू को पाँव से ठोकर मारता हुआ तिरस्कारपूर्ण स्वर म बोला

कुत्ते की औलाद, हुडदँग तो ऐसे मचा रहा है जस सूली पर चढा दिया हो ।

चौधरी चमारो की ओर देखता हुआ दुख भरे स्वर म बोला

'दिन रात पानी देकर मक्ई की अगेतरी फसल उगाई थी । खेत लहलहाने लगा तो किसी मरदूद ने उसम जानवर हाँक दिए ।'

सब लोग साँस रोके चौधरी की नजरा से बचने की कोशिश कर रहे थे । बच्चे डर के मारे अपनी माओ के पीछे जा छिपे थे । काली मजमा से हटकर बेरी के नीच खडा काले और मले शरीरा को देख रहा था जो इत्मीनान से गालिया और मार खा रहे थे ।

चौधरी हरनाम सिंह ने वहाँ खडे हर आदमी को सम्बोधित करते हुए कहा

सच सच बता दो नही तो सारे मुहल्ले को इसी चौगान मे लिटाकर जूते लगाऊँगा ।' मगू जो मजमा से बाहर चौधरी के पास खडा था जीतू को देखकर बोला

'जीतू तू कल दीया-बत्ती के सम कहाँ था ?'

'जीतू ने मगू की ओर घूरकर दखा और तुनककर बोला

तू कौन है पूछने वाला ?

यह कहकर जीतू सहम गया और आहिस्ता आहिस्ता पीछे हटने लगा ताकि चौधरी की नजरा से ओझल हो जाए । मगू चौधरी को सम्बोधित करता हुआ बोला

चौधरी जी कल दिन ढले मैंन जीतू को आपके कुए की ओर जाते देखा था । उस सम उसके हाथ म लाठी भी थी ।

यह सुनकर चौधरी मजम म खडे हर आदमी पर नजर दौडाता हुआ बोला

'कहाँ है जीतू ?' और फिर उसे देखकर क्रुद्ध स्वर म बोला
'इधर आ जीतू के ।'

जीतू मगू को घणा और क्रोध से देखता हुआ चौधरी की ओर बढ़ा और उसके सामने जा खड़ा हुआ।

क्या तूने जानवरों को खेत की तरफ मोड़ा था ?' उसने रोब से पूछा।

'दीपा-बत्ती के समय मैं छज्जू शाह के लिए कोयला लेने गढ़ी के भट्ठे पर गया हुआ था। आप शाह से पूछ लें।' जीतू ने हकलाते हुए कहा।

'कोयले के पुत्तर। जो म पूछ रहा हूँ उसका जवाब दे। चौधरी ने उसे मोटी मी गाली देते हुए कहा।

जीतू ने कोई उत्तर न दिया और मजमे मे खड़े एक-एक आदमी की ओर देखने लगा ताकि उनम से कोई एक तो हामी भरे कि वह सचमुच गढ़ी के भट्ठे पर गया हुआ था। मजमा से उसकी नजरें बेरी के नीचे खड़े काली पर जा टिकी। वह उस देखकर मुसकराने लगा और यह भूल गया कि वह चौधरी के सामने जवाब तलबी के लिए खड़ा है। वह मुसकराता हुआ काली की ओर बढ़ने लगा। लेकिन चौधरी की गालियों की बौछाड़ ने उसे चौंका दिया।

कुत्ता चमार यू खड़ा है जसे यहाँ गरदावरी करने आया हो।'

चौधरी ने आगे बढ़कर जीतू की गदन से पकड़ लिया। उसने गदन अकड़ा दी तो चौधरी गुस्से से फुंकारने लगा

कुत्ते के पुत्तर। मेरी फसल म जानवर क्या हाके थे ?'

'कह जो दिया मन नही हाके थे।

जीतू ने उद्दण्ड स्वर म कहते हुए गदन छुड़ाने की कोशिश की। यह देखकर मगू बोला

चौधरी जी आजकल यह पहलवानी भी करता है।'

पहलवानी का जोर तो एकदम निकाल दूगा। मश्कें बाँधकर उलटा लटकाकर चमड़ी उधेड़ दूगा।' चौधरी ने बहुत गुस्से से कहा और हाथ म मजबूती से जूता पकड़कर बोला

'हराम की औलाद। जानवरो को मेरे खेत म क्या हाँका था ?'

चौधरी ने अपना प्रश्न दो तीन बार दोहराया।

जीतू ने कोई उत्तर न दिया तो मगू बोला

तू क्या गूगा हो गया है जो जवाब नही देता। चौधरी जी इतनी देर से पूछ रहे हैं।

मगू के बाद निक्कू ने भी यही बात कही तो कई और लोग भी बोल उठे।

लेकिन जीतू फिर भी चुप रहा और इसी तरह चौधरी से इधर उधर देखता रहा जैसे लोग उसकी बजाय किसी और से पूछ रहे हों। चौधरी को जीतू की खामोशी बहुत अपमानजनक लगी। उसने आगे बढ़कर उसकी गर्दन झुकानी चाही लेकिन जब जीतू गर्दन अकड़ाने लगा तो चौधरी भड़क उठा। उसने गालियां देते हुए अपने तहमद को अच्छी तरह कसकर बांधा और झपटकर जीतू की गर्दन झुका ली और ताबड़-तोड़ जूते मारता हुआ बोला

'तेरी मौत तुझे बुला रही है जो तू मुझे अपना जोर दिखाने लगा है।

जब चौधरी मारता-मारता थक जाता तो जूता नीचे फेंककर हांफता हुआ पूछता

'बता, तूने जानवरों को मेरे खेत में क्यों हांका था ?'

फिर वह थूकता हुआ कहता

'मक्की का एक डंठल तक नहीं बचा। दो घुमाओं का पूरा खेत उजाड़ दिया।

जीतू फिर भी कुछ नहीं बोला, केवल क्रोध भरी नजरों से चौधरी की ओर देखता रहा। चौधरी ने उसके सिर पर जूता मारने के लिए फिर हाथ उठाया तो जीतू ने उसका हाथ पकड़ने की कोशिश की। यह देखकर चौधरी आग बबूला हो गया। उसने जीतू को धक्का देकर नीचे गिरा लिया और उसके सारे शरीर पर ठुड मारता हुआ बोला

'तेरी यह मजाल, सामने हाथ उठाता है ? तेरी बोटी-बोटी कर दूंगा।

चौधरी ठुड मार मारकर थक गया और हांफता हुआ एक कदम पीछे हट गया। जीतू ने जमीन पर से मुंह उठाया तो वह खून से लथपथ था। उसकी नाक और मुंह दोनों से खून बह रहा था। खून देखकर चौधरी ठिठक गया लेकिन अपनी घबराहट को छिपाता हुआ रोब से बोला

अब मैं तुम्हें छोड़ देता हूं। फिर ऐसी हरकत की तो सीधा जेल भिजवा दूंगा।'

जीतू के मुंह और नाक से खून की बूंदें टप-टप गिर रही थीं। सब देख रहे थे लेकिन किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि उसे उठाकर घर ले जाए। मजमे में किसी ने धीमे स्वर में कहा

चौधरी से क्या मुकाबला ? उनके सामने अकड़ फूं कैसी ? पांव पड़ जाता तो इतनी मार से बच जाता।'

सब लोग भयभीत से उसकी ओर देख रहे थे। जीतू सिर को दोनों हाथों में पकड़कर बैठ गया था।

एक दो औरतें जीतू के घर की ओर भाग गई और उसकी मा निहाली को बुला लाई। वह जीतू के नाक और मुह से खून बहता देखकर जोर जोर से रोने लगी और अपने सिर पर दोहत्थड मारकर बोली

'मोया, तू पदा होते ही क्या न मर गया। अभी तेरे प्राण निकल जाते तो अच्छा होता।' यह कहकर वह सिर पीटने लगी और जीतू को चौधरी के पाँव की ओर धकेलती हुई बोली

चौधरी एक बार ही इसका खात्मा कर दो। रोज रोज का क्लेश तो मिट जाएगा। किसी की फसल कट जाए तो चोर जीतू। किसी का कोई नुकसान हो जाए तो जिम्मेदार जीतू।'

ताई निहाली को चौधरी पर बहुत क्रोध आ रहा था लेकिन वह उसे प्रकट करने म असमर्थ थी। बेबसी के एहसास ने उसके धय के रहे सहे बध भी तोड दिए और वह अपने मृत मा-बाप और पति को याद करती हुइ विलाप करने लगी।

ताइ निहाली को बुरी तरह रोते-पीटते और वावेला करत देखकर चौधरी बेजारी से बोला

माई अगर इस हराम की औलाद से इतना ही लाड है तो इसे अक्ल भी दिया कर। इस हराम के तुखम न मेरी दो घुमाओ मक्ई मिट्टी म मिला दी।

चौधरी के ये शब्द सुनकर मगू भी ताई निहाली को डाटता हुआ बोला

'इस बुड्ढी न तो इसे सिर पर चढा रखा है। मा को डरा लेता है तो समझता है कि सारा जहान इसस डरता है। माई ज्यादा टर टर न कर। इस घर ल जा।

प्रीतो मुहल्ले की औरतो म सबसे आग खडी थी। वह मटकती हुई बोली

रडी का पूत सौदागर का घोडा, जो कर ले सो ही थोडा। जीतू तो आग का नाल है कही लगाता है तो कही बुझाता है।'

जब चौधरी न जूता पाँव म पहन लिया और तहवद को ढीला कर लिया तो आस-पास खडे लोग समझ गए कि अब वह किसी और की मार पिटाई नहीं करगा। कुछ लोगो न आगे बढकर जीतू को सहारा देकर खडा किया। ताई निहाली रोती और जीतू को गालियाँ देती हुई उसे घर की ओर ल जाने लगी। लोगो न एकदम रास्ता छोड दिया और कई औरतें और बच्चे उसके आगे-पीछे चलने लग। औरतो क झुरमुट म खडी मगू की बहन पाशो न तीखी आवाज म चौधरी को गाली दी तो उसकी माँ जसी उसका मुह बन्द करती हुइ चीखकर बोली

'रांड क्या ज्यादा जबान लटराती है। मगू ने सुन लिया तो जान से मार देगा।'

लेकिन नानो फिर भी चुप न हुई और दबी जबान में चौधरी को गालियां देती रही। फिर वह भयभीत और मुरझाए हुए चेहरों को देखने लगी जो चौधरी की हर बात पर सिर हिला रहे थे। नानो ने घृणा से उनकी ओर देखा और सोचने लगी कि इनमें से किसी में भी इतनी हिम्मत नहीं है कि चौधरी को केवल इतना ही कह दे कि वह नाजायज मार पीट कर रहा है आगे बढ़ कर हाथ पकड़ लेना तो बहुत दूर की बात है।

ज्ञानो की नजरें मजमे में खड़े प्रत्येक व्यक्ति से होती हुई काली तक पहुंच गई। उस समय काली की उसकी ओर पीठ थी। उसके पहनावे से उसे सन्देह हुआ कि वह बाहर का आदमी है क्योंकि अगर वह इस मुहल्ले का रहने वाला होता तो बरी के नीचे अकेला खड़ा होने की बजाय मजमे में खड़ा होता। यह सोचकर नानो को बहुत शर्म महसूस हुई कि यदि वह सचमुच बाहर का आदमी हुआ तो क्या सोचेगा कि घोड़ेवाहा के चमार बहुत बगैरत हैं, मुंह खोले बिना ही मार खा लेते हैं।

मजमे के पास खड़ा मगू बढ़चढ़कर बातें करने लगा तो ज्ञानो उसे भी गालियां देने लगी। उसकी मां जस्सो उसे घर की ओर धकेलती हुई क्रुद्ध स्वर में बोली

राड, घर चल, गर्म चिमटे से तेरी जबान खींचती हूं।

मुटियार बेटी को रांड की गाली नहीं देनी चाहिए। बेबे हुक्मा ने जस्सो को समझाया।

बेबे क्या करूं, इसकी तो-तो अन्दर नहीं रहती। चौधरी को गालियां दे रही है। उसने सुन लिया तो हमारी शामत आ जाएगी।

पुत्तरा, तू चुप रहा कर। मुटियार लड़कियों की तो आवाज नहीं निकलनी चाहिए। बेबे ने नानो को समझाया।

बेबे, क्या करूं। नाजायज बात देखकर मुझे गुस्सा आता है। चुप नहीं रहा जाता। नानो ने उत्तर दिया। जस्सो नानो को भला बुरा कहती हुई उसकी ओर लपकी तो वह अपने घर की ओर दौड़ गई।

जीतू को उसकी मां घर ले गई तो चौधरी अपनी फसल की बरबादी की बात करने लगा। ज्यादातर लोग चौधरी के इर्द गिर्द खड़े थे और उसकी हर बात पर सिर धुन रहे थे। चौधरी ने जब छज्जू शाह को अपनी ओर आते हुए देखा तो वह और भी ऊंचे स्वर में बोलने लगा। छज्जू शाह उसके निकट

आकर बोला

'चौधरी जी, मैं चमादड़ी के कुएँ के पास जा रहा था। वहा नर्दसिंह ने बताया कि आपकी दो घुमाओ अगतरी मक्इ जानवरों ने उजाड़ दी है। आपकी आवाज सुनकर इधर चला आया।

छज्जू शाह की बात सुनकर चौधरी जैसे फूट पड़ा।

शाह दो घुमाओ मक्ई पर सुहागा फिर गया। पूरा खेत उजड़ गया। इतनी अच्छी फसल थी एक डंठल नही बचा।

'आहा यह तो बहुत बड़ा नुक्सान है, अनथ है। मैं कभी कुएँ की ओर जाता तो फसल देखकर मन प्रसन्न हो जाता।

छज्जू शाह ने खेद प्रकट करते हुए कहा। और फिर आस पास खड़े लोगो को समझाता हुआ बोला

'मूर्खो, क्या ऐसी हरकत करते हो। चौधरियों की फसल उजाड़ोगे तो आप कहा से खाओगे। फिर वह बाबे फत्तू को सम्बोधित करता हुआ बोला

बाबा फत्तू तू ही इन छोकरों को समझाया कर। जिस थाली में खाना उसी में छेद करना शराफत नही है।' छज्जू शाह चौधरी हरनाम सिंह का हाथ पकड़ता हुआ बोला

चौधरी जी ये लोग आप के कमान हैं। गल्ती कर बैठे हैं, अब इन्हे माफी दे दो।

वह चौधरी को हवेली की ओर ले जाने लगा तो उसकी नजर बरी के नीचे खड़े काली पर पड़ गई और साथ ही दस रुपये का नया नोट उसकी आखो के सामने घूम गया। छज्जू शाह चौधरी का हाथ छोड़कर काली की ओर जाता हुआ प्यार से बोला

बाबू काली दास, सुनाओ कब लौटे? मुझे तो सवेरे तुम्हारी चाची ने बताया कि तुम वापस आ गए हो।

काली छज्जू शाह को बन्दगी करता हुआ बोला

तड़के की गाडी से आया हूँ। फिर वह रुककर कहने लगा

रहना कहाँ था, शाह जी। बस ही इधर उधर भटकता रहा। आप सुनाओ घर में सब सुख-सांद है।

हा सब ठीक-ठाक है।'

छुट्टी आए हो या यही रहोगे?'

कुछ कह नही सकता। गाँव का जो हाल आज देखा है उससे तो जी चाहता है कि रात की गाडी से ही वापस चला जाऊँ। काली ने चौधरी की

ओर देखते हुए कहा।

यह सुनकर छज्जू शाह मुसकरा दिया और उसके तगड़े लम्बे शरीर को देख कर बोला

दूकान पर आना। देस विदेस की बातें सुनाना। तुम तो दुनिया घूमकर आए हो। हम तो कोल्हू के बैल की तरह इसी गाँव में घूमते रहते हैं। बहुत ज़ोर मारा तो साल छमाही के बाद जालन्धर या होशियारपुर का चक्कर लगा आए।

मैं तो आपके दर्शनों के लिए आने वाला ही था।'

काली यह कहता हुआ छज्जू शाह के साथ चल पड़ा। उसने चौधरी के पास पहुँचकर उसे बन्दगी की। चौधरी ने बन्दगी का जवाब देते हुए बहुत खुश्क लहजे में कहा

कब आए हो?'

तड़के की गाड़ी से आया हूँ।

हूँ। चौधरी काली पर एक नज़र और डालकर बोला।

जाने से पहले चौधरी ने वहाँ खड़े लोगों को धमकाते हुए कहा

अगर फिर किसी ने फसल का इस तरह नुकसान किया तो सारी चमादड़ी को ज़मीन पर उलटा बिछाकर पिटवाऊँगा।'

काली को यों महसूस हुआ जैसे यह धमकी उसे दी है। उसने चौधरी की ओर घूरकर देखा। चौधरी को उसका इस तरह देखना बहुत बुरा लगा और वह उसी लहजे में बोला

चमार सिर पर चढ़ते जा रहे हैं। इनका दिमाग खराब हो गया है। इन्हें सीधा करना ही पड़ेगा।

चौधरी जी सारे ज़माने की हवा बदल गई है। छज्जू शाह ने कहा और वे दोनों कुएँ की ओर निकल गए।

उनके जाते ही लोगों की गूँगी ज़बानें फिर बोलने लगीं। कोई जीतू को दोष दे रहा था तो कोई चौधरी की ज़्यादती का दबी ज़बान में रोना रो रहा था। काली छाती पर बाजुओं की कड़ियाँ बनाए हुए जब मंगू के घर के सामने पहुँचा तो अन्दर से जस्सो के गालियाँ देने की आवाज़ आ रही थी और उत्तर में एक और आवाज़ गूँज रही थी कि वह चौधरी की दाढ़ी में जलती लकड़ी लगा देगी।

थोडी ही देर के बाद मुहल्ला फिर मामूल पर आ गया जसे वहाँ कुछ हुआ ही नही था। मद अपने काम-काज के लिए बाहर जा रह थे। बच्चे गली म ठीकरियों म खेलते हुए धम्मा चौकडी मचा रहे थे लेकिन औरता म अभी गहमा गहमी थी। वे गली म सुबह की घटना पर टिप्पणी करती हुइ कभी आपस म झगड पडती और कभी खुसर फुसर करने लगती।

काली की समझ म नही आ रहा था कि चौधरी हरनाम सिंह न जीतू को क्या मारा। उसने चौधरियो से स्वय भी लडकपन म कई बार मार खाई थी और वह हर बार उसे मामूली बात समझकर भूल जाता था। उसे कभी शम महसूस नही हुई थी। लेकिन जीतू को मार पडने पर उसे बहुत दुख हुआ बहुत क्रोध आ रहा था। वह घर आकर दीवार के सहारे जमीन पर ही बैठ गया और खोया खोया सा छत की ओर देखने लगा। हाथ एक-दूसरे से उलझने लग और दाइ टाँग अपन आप ही हिलने लगी। चाची ने उसे इस तरह बठे देखा तो प्यार से झिडकती हुई बोली

'पुतरा ऐसे क्या बठा है। खाट ले ले।'

काली न कोई उत्तर न दिया तो चाची उसे ध्यान मे देखकर समझाती हुई बोली

इस तरह टाँग नही हिलात, नहस हाती है।'

काली की टाँग हिलनी बन्द हो गई लेकिन उस ने चाची को उत्तर न दिया। कुछ दर बाद चाची फिर बोली

'जीतू की मा निहाली बहुत दुखी है। मुझे उस पर बहुत तरस आता है। छोटी उमर म ही उसकी माँ मर गई थी। सम्बन्धियो की झिडकिया खाकर हुशियार हुई। ब्याह का चूडा अभी मैला भी न होने पाया था कि रँडापा दखना पडा। आज तक जीतू को देख देखकर जीती रही है। उसे उमीद थी कि बटे का सुख देखेगी पर ऐसा लगता है कि वह भी नसीब म नही है।

चाची ने अपनी बात जारी रखत हुए कहा

निहाली जितनी भोली है जीतू उतना ही शतान है। घर आता है ता माँ से लडता है। बाहर जाता है तो लोगा से झगडा मोल लेता है। सात कोस का वल खाकर झगडा करने जाता है। आज उसे चौधरी न मारा। नाक की हड्डी टूट गई है। खून के परनाले वह गए हैं। निहाली बेचारी की रो रोकर आखें सूज गइ है। उसे तो जिन्दगी के आखिरी पहर मे भी दुख-ही दुख मिला है।'

चाची परमात्मा को याद करती हुई काली की ओर देखने लगी। वह सोच मे डूबा धीरे धीरे सिर हिलाता हुआ बोला

'चाची, चौधरी ने जीतू को नाजायज मारा है। उसका कोई कसूर नही था। अगर जीतू की जगह मैं होता तो चौधरी की बांह मरोड देता।

काली की बात सुनकर चाची उसकी ओर भय और आश्चय भरी दृष्टि से देखने लगी और जब वह दरवाजे की ओर बढा तो उसे रोकती हुई बोली

'काका तू कहाँ चला ? अपने अन्दर बैठ। चौधरी और जीतू का झगडा है। हम उस म क्या लेना है।

परन्तु काली दरवाजे से बाहर निकल गया तो वह पीछे जाकर उसे देखने लगी। जब वह जीतू के घर की ओर जाने वाली गली म मुड गया तो वह घबरा गई और सोचने लगी कि उसके पीछे जाए लेकिन इस ख्याल से रुक गई कि घर सूना रह गया तो प्रीतो के बच्चे कोई-न कोई चीज उठाकर ले जाएगे।

काली तेज कदम उठाता हुआ चौगान म चला गया। वहा अब कोई नही था। केवल बछडे और बछिया बधी थी जो चौधरियो की दया के रूप म चमारो तक पहुचती हैं। वे अपने-आपको मच्छर मक्खी से बचाने के लिए बार-बार पाव पटक रही थी और पूछो को पखे की तरह इधर उधर हिला रही थी।

जब वह जीतू के घर पहुचा तो दो औरते दरवाजे से बाहर निकल रही थी। बाबे फत्तू की पत्नी बेबे हुकमी जो लाठी के सहारे रास्ता टटोल-टटोलकर आगे बढ रही थी और दूसरी निक्कू की घर वाली प्रीतो जो दो दजन के लगभग बच्चे जनने के बाद भी रगदार दातुन और तेल ने सहारे यौवन की सीमाओ म ही रहना चाहती थी। बेबे हुकमी ने तेरह बच्चो को जन्म दिया था। लेकिन उन म से बारह को अपने हाथ से धरती की गोद म लिटा दिया था। वह परमात्मा के डर के कारण कभी शिकायत तक नही करती थी। उस का दिल इतना नम हो गया था कि वह काँटे की चुभन को तलवार की काट समझकर अपना बुरा हाल कर लेती थी। जीतू के माथे म खून बहता देखकर बेबे हुकमी रो पडी और मुबकियाँ लेती हुई केवल इतना कह सकी कि परमात्मा से डरना चाहिए जो सबका अहकार तोडता है।

गली म आती हुई वह प्रीतो को यही समझा रही थी कि माया का अहकार नहीं करना चाहिए। गरीब की आह ताप्प से भी बुरी होती है। लेकिन प्रीतो सुनकर बोली

बडा रोग है। ऊपर से बीमार रहता है। कभी खाँसी है तो कभी ताप। कोई न-कोई रोग घेरे ही रहता है। बाकी रहा दलीपा अपनी मौज कर रहा है। महीने दो महीने बाद चक्कर लगा जाता है। शहर में जूते बनाने का काम करता है। अपना गुजारा कर रहा है। राजी खुशी रहे।

यह कहकर चन्न हुरमा ने ठण्डी आह भरी जैसे बहुत सी बातों को जबान पर आने से रोक लिया हो। फिर वह खेद भरे स्वर में बोली

'निहाली का दुख मुझ से देखा नहीं गया। जीतू तो मार खाकर खाट पर पड गया वह बेचारी व्याकुल हो रही है। अच्छा जो कर्मों में लिखा है मिल कर रहेगा।

चन्न की बात सुनकर प्रीतो तुनककर बोली

'जीतू को चौधरी ने कौन-सा गडासा मारा है। रण्डी माँ के साथ खेलना है। खाट पर यूँ पडा है जैसे सिर पर कुल्हाडा लगा हो।'

काली ने प्रीतो की ओर ध्यान से देखा और कुछ कहे बिना आगे बढ़ गया।

जब वह जीतू के घर पहुँचा तो ताई निहाली जीतू के नाक और मुह से खून साफ करने की कोशिश कर रही थी। जीतू चीखता चिल्लाता हुआ उसके हाथ परे हटा देता। काली को देखकर ताई निहाली जीतू की ओर संकेत करती हुई बोली

काली, देख चौधरी ने इसका क्या हाल कर दिया है। नाक को हाथ लगाती हूँ तो तडप उठता है। भला इसने चौधरी का क्या बिगाडा था जो इसे पुलसियो की मार मारी है पूरा साल उसकी बेगार करता रहा और इसे सारी मेहनत का यह इनाम मिला है।

ताई निहाली मैला सा कपडा लेकर जीतू के मुह और नाक से खून साफ करने लगी। वह उसकी ओर हाथ बढाती तो जीतू या तो मुह छिपा लेता या फिर उसका हाथ झटक देता। काली ताई निहाली के हाथ से कपडा लेता हुआ बोला

'ताई ला मैं खून साफ करता हूँ तू पानी गर्म करके ला।

ताई निहाली के उठने से पहले ही ज्ञानो, जो दरवाजे की ओट में खडी थी झट सामने आकर बोली

ताई तू बैठ मैं पानी गर्म कर देती हूँ।

काली ने चौंककर ज्ञानो की ओर देखा और साथ ही उसकी आँखों के *सामने छ साल पहले की बेबाक निडर, झगडालू और खुले बालो वाली ज्ञानो* घूम गई जो सारा दिन छोटी उम्र की बछेरी की तरह गलियो मे घूमती फिरती थी। कही गमी हो या शादी झगडा हो या फसाद, यह लडकी सारा

न्नि उसी जगह मँडराती रहती थी । काली ने ज्ञानो की ओर ध्यान से देखा और उसके यौवन और सुडौल शरीर को तकता हुआ बोला

'नानो, तू तो बहुत बडी हो गई है ?'

'तू भी तो बडा हो गया है ।

ज्ञानो ने बेबाकी से उत्तर दिया और फिर लजाती हुई बाहर निकल गई ।

नानो गम पानी लाकर जीतू की खाट की पायँती खडी हो गई । काली गीला कपडा जीतू के होंठो और नाक के नीचे फेरकर उसे निचोडता तो मुख पानी देखकर ताई निहाली का दिल बैठ सा जाता । वह रोती हुई आवाज म बोली

जीतू के अन्दर स लहू के घडे निकल रहे हैं । अगर दो चार बार ऐसी मार पडी तो यह इस दुनिया जहान से जाता रहगा ।'

काली हँसता हुआ कहने लगा

ताई ये खून नहा पानी है । तू क्या इतना घबरा रही है ?'

जीतू के चेहरे से खून साफ हो गया तो काली उसकी नाक पर गम पानी की टकोर करता हुआ जीतू के ऊपर झुककर बोला

'जीतू, अब तबियत कैसी ह ? दद कुछ कम हुआ ?'

उसने कोई उत्तर न दिया । केवल बेजस नजरो से काली की ओर देखता रहा । उसकी आखो म गहरी मटयाली धुध सी छाई हुई थी । वह कुछ क्षणो के लिए काली की ओर देखता रहा । फिर उसका हाथ अपने दोनो हाथो म दबा कर बोला

'काली, तू तो इस गाव से चला गया था । दोबारा इस नक म क्या आ गया है ?'

और कहाँ जाता ? आदमी सब जगह से निराश होकर घर को ही लौटता है । काली ने जीतू को समझाते हुए नर्मी से कहा । उसने आखें मूद ली और मुह दूसरी ओर फेर लिया । कुछ क्षणो के बाद उसने पलटकर काली की ओर देखा जैसे उसे उसकी बात पर विश्वास न आया हो । उसकी आखो म अविश्वास की झलक देखकर काली भी सोच म पड गया और उसने मुह दूसरी ओर फेर लिया । लेकिन जब जीतू ने अपना प्रश्न दोहराया तो वह उसका कधा थपथपाता हुआ बोला

'जीतू अपने घर म बैठकर दुनिया बहुत बडी नजर आती है लेकिन गरीब आदमी के लिए यह हर जगह तग है ।' फिर वह बात पलटने के लिए ताई निहाली से बोला

ताई, जीतू को दो घूट चाय के मिल जायें तो इसके अन्दर गरमायश (गर्मी) हो जाएगी ।'

ताई निहाली सोच म डूबी हुई बोली

'घर मे गुड तो है चाय की पत्ती भी मिल जाएगी लेकिन दूध कहाँ स आएगा ? चौधरिया के घरा स तो लस्सी भी बहुत मुश्किल से मिलती है दूध कौन दगा ? गली म मगू के घर मे भस है । वहा से दूध तो क्या खाली बतन भी वापस नही मिलेगा ।

ज्ञानो को ताई निहाली के ये शब्द बहुत बुरे लग । लेकिन साथ ही उसे यह एहसास हुआ कि ताई न जो कुछ कहा है वह सच है । ज्ञानो अभी सोच ही रही थी कि क्या उत्तर दे कि काली झट से बोल उठा

मेरे घर म दूध है । सवेरे चाची कही से लाई थी । मैं दौडकर ले आता हू । काली के जाने के बाद ताई निहाली परमात्मा को याद करती हुई ज्ञानो स कहने लगी

जीतू की तरह काली का बाप भी बहुत छोटी उम्र मे मर गया था । काली बचारे को तो उसकी शक्ल भी याद नही होगी । इसका बाप बहुत हौसले वाला आदमी था । पहलवानी करता था । इज्जतदार बदा था । चौधरी भी कम ही उसक मुह आन थे । थाना तक उससे डरता था । शरीफो का शरीफ और बदमाशो का बदमाश था । काली की माँ भी उसके बापके मरने के दो साल बाद चल बसी । प्रतापी बचारी ने चप्पे गिन गिनकर पाला है । बहुत अच्छा लडका है । जीतू स तीन महीन बडा है । बाहर से तगडा होकर आया है । ज्ञाना ताई निहाली की बातें बहुत दिलचस्पी स सुन रही थी । जब काली वापस आया तो वह झेंप कर आगन म चली गई ।

ताई निहाली दूध लेकर चाय बनाने क लिए आगन म आ गई । काली दरवाजे म रुक गया और चारो ओर अच्छी तरह देखने के बाद जीतू क पास आ गया । उसन जब स एक बहुत छोटी सी गठडी निकाली और उसम स छोटी सी शीशी निकालकर जीतू को दिखाता हुआ बोला

अभी तर नाक क अन्दर यह दवाई लगाता हूँ । पहले तो यह दर्द करेगी, फिर एकदम आराम आ जाएगा ।

काली न कपड का एक टुकडा शीशी म भिगाकर कुछ बूदें जीतू क नाक म टपका दी । जीतू दर्द स कराहने लगा और हाथ मुह पर रख लिया ।

सबर कर अभी आराम आ जाएगा । काली न उसका हाथ मुह क ऊपर स उठा लिया । दो चार बूदें नाक म बहकर जीतू के ऊपरी होठ पर फल गइ

और कुछ गले मे उतर गइ। उसने उन्ह चाट लिया और बुरा सा मुह बना कर बोला

'दारू (शराब) है ना ?' और फिर एकदम खुश होकर बोला

यह तो ठेके की शराब मालूम होती है।'

काली उत्तर म मुसकरा दिया और शीशी को कपडे म लपेटकर जेब मे डाल लिया। जीतू ऊपरी होठ पर जबान फेरता हुआ बोला

यह तो एकदम ठेके की है। देसी का तो स्वाद ही और होता है।'

काली उत्तर मे फिर मुसकरा दिया। जीतू उठकर बठता हुआ बोला

चाय पीकर क्या करूँगा। इसी के दो घूट दे दो। दद कम हो जाएगा।' उसन हठ से कहा।

काली ने मुसकराते हुए उसके मुह पर हाथ रख दिया।

ताई निहाली चाय लेकर आई तो जीतू ने बदिली स दो घूट पिए और फिर लेट गया। ताई उसका सिर दबाने लगी। उसके बूढे हाथो म इतनी ताकत नही थी कि जीतू को राहत पहुचा सके। काली ने ताई को उठा दिया और स्वय जीतू का सिर दबाने लगा। ज्ञानो खाट की पायँती खडी थी। काली कभी कभी कनखियो स उसकी ओर देख लेता। थोडी दर के बाद जीतू ने आख खोल दी और एक बार फिर ऊपरी होठ पर जबान फेरने लगा। गुड की मिठास के स्वाद पर उसने बुरा सा मुह बना लिया। काली न जीतू के ऊपर झुकते हुए दबी आवाज म पूछा

चौधरी के खेत म जानवर क्या तून हाँके थे ?

नही मैं तो उस समय गढी के भटठे पर था।

'तो फिर किसन हाके थे ?'

'मुझे पता नही। जिसकी जी चाहे सौगध दे दो।

काली के इन प्रश्नो से जीतू परेशान-सा हो उठा।

मगू न तुम्हारा नाम क्या लिया। काली ने पूछा।

मगू का नाम सुनकर ज्ञानो चौकन्नी हो गइ और जीतू की ओर ध्यान स देखने लगी कि वह क्या उत्तर देता है। वह उठकर बठता हुआ बोला

इसलिए कि मैं उसे अच्छा नही लगता। मैं उसकी चौधर नही मानता। इसलिए वह मेरी जान का दुश्मन बना हुआ है।

काली चुप हो गया। जीतू लेटता हुआ बोला

'तुम गाँव म रहोगे तो जल्दी ही मगू के रग ढग देख लोगे।

ज्ञानो भयभीत नजरो से काली के गम्भीर चेहरे को देखती रही। वह नही

चाहती थी कि काली और मगू मे किसी प्रकार का वैर भाव पैदा हो। वह अपने मन को किसी दूसरी ओर लगाने के लिए जीतू की खाट के नीचे पडे खून से लिथडे कपडे के टुकडो को उठाने लगी।

ताई निहाली ने एक दो बार ज्ञानो को मना किया लेकिन जब वह उन्हे समेटकर वहा झाडू लगाने लगी तो ताई प्रफुल्लित होकर बोली

'पुत्तरा, रब तुम्हे भाग (भाग्य) लगाए। तुम्हे राजा घर मिले । ताई उसे आशीर्वाद दे रही थी कि दरवाजे पर जोर की ठोकर पडी और मगू बदमस्त साड की तरह अन्दर घुसकर जीतू की खाट के पास आ खडा हुआ। ज्ञानो ने झाडू वही छोड दिया और घबराई हुई दरवाजे की ओर बढने लगी। जीतू बेचैनी से खाट पर करवटें बदलने लगा।

मगू ज्ञानो को देखकर ऊँचे स्वर मे बोला

तू यहा क्या कर रही है। घर चल तेरे टुकडे करके जमीन मे गाड दूगा। ज्ञानो डर से दीवार के साथ सटक गई और उसके साथ साथ रेंगती हुई दरवाजे की ओर बढने लगी। वह नही चाहती थी कि काली के सामने मगू उसका अपमान करे। वह मगू के बराबर पहुची तो उसने लाठी का सिरा उसके पेट मे चुभो दिया। ज्ञानो चीखती हुई बाहर दौड गई। काली को मगू की इस हरकत पर बहुत क्रोध आया लेकिन वह चुप रहा। ताई निहाली मगू को झिडकती हुई बोली

'कसा बेदर्दी है कसाई की तरह मारता है। बचारी जीतू का हाल पूछने चली आई थी। फिर वह उसे समझाती हुई बोली।

'मगू पुत्तरा देख। बराबर की बहन पर हाथ नही उठाना चाहिए। ताई निहाली अभी अपनी बात पूरी भी न कर पाई थी कि वह बीच मे ही बोल उठा

'चुप रह माई ज्यादा बातें न बनाया कर। और वह लाठी के सहारे जीतू की खाट पर झुकता हुआ बोला

जीतू क्या मुक्र कर रहा है अभी तो कुछ भी मार नही पडी है। अभी तो थाने वाले तेरी हड्डिया का सुर्मा बनाएगे। फिर उसने ताई निहाली से कहा

भाभी तूने इसे सिर पर चढा रखा है। उठा इसे बेकार चारपाई तोड रहा है। अगर बात थाने तक पहुच गई तो वे मार मारकर इसे दिन मे तारे और रात को सूरज दिखा देंगे। चौधरी के खेत मे बाड लगाई जा रही है। इसे कहो वहाँ चला जाए। चौधरी खुश हो जाएगा।

मगू ने अभी तक काली से कोई बात नही की थी । वह उसे ध्यान से देखता हुआ बोला

'सुना काली, तुम्हें तो शहर का राशन घी की तरह लगा है। मरियल बछडे जैसा गया था और साड की तरह पलकर आया है। पर गाव मे रहा तो दो महीने मे ही सारी चरबी ढल जाएगी। यहा किसी को हराम की रोटी नहा मिलती।'

अगर यहा सब हलाल की रोटी खाते हैं तो मैं भी वही खाऊगा।' काली ने इतना कहा और चुपचाप बैठा रहा ।

मगू थोडी देर तक खामोशी से कमरे मे इधर उधर देखता रहा। जब उस की नजर चाय के खाली गिलास पर पडी तो वह जीतू की ओर यो देखने लगा जैसे उसका कोई घोर पाप पकड लिया हो। वह आखें नचाता हुआ धमकी भरे लहजे म बोला

'ऐश कर रहे हो आजकल, चाय पीते हो। दूध वह रांड दे गई होगी। मैं भी सोचता था कि भस दो वट्टी दूध देती है लेकिन घघूना फिर भी खाली ही रहता है। अभी जाकर उसकी खबर लेता हू।' मगू ने घूरकर सब की ओर देखा और लाठी पटकता हुआ बाहर निकल गया।

उसके जाने के बाद कुछ समय तक सब चुप बठे रहे। काली ने जीतू की ओर देखा और सोच में डूबा हुआ बोला

मगू तो बहुत आगे निकल चुका है।

जीतू न बहुत कमजोर आवाज म उत्तर दिया

आप सारा दिन चौधरी की दहलीज चाटता है और यहाँ सब पर रोब गाँठता है। सारे मुहल्ले को गालिया देता है। न बडे की शम, न छोटे का लिहाज। प्रीतो की लच्छो का दिन दिहाडे गली म घेर लेता है।'

यह सुनकर ताई निहाली जीतू के सामने हाथ जोडती हुई बोली

पुत्तरा, तू चुप रह। मगू जाने, लच्छो के माँ बाप जानें। तुझे क्या लेना है तेरे नाक से तो अभी तक सवेरे की मार से खून बह रहा है।'

कुछ समय के बाद काली उठकर गली मे आ गया। जब वह मगू के घर के सामने पहुचा तो अन्दर से ज्ञानो की चीखा और मगू की गालियों की मिली जुली आवाजें आ रही था। काली कुछ क्षणा के लिए दरवाजे के सामने ठिठक गया लेकिन चीखें और गालिया सुनकर उसके मनप्राण कापने लगे और वह उनसे पीछा छुडाने के लिए तेज-तेज कदम उठाता हुआ अपन घर आ गया।

५

काली जब भी कोठड़ी में लेटता तो उसे यही डर रहता कि छत उसके ऊपर आ गिरेगी। दीवारें उसे अपने मलबे के नीचे दबा लेंगी। छत जगह जगह नीचे की ओर झुकी हुई थी और मैले मैले जाले लटक रहे थे। सरकण्डों से मिट्टी गिरती रहती थी। शहतीरों को घुन ने खा लिया था और सरकण्डों के ऊपर मिट्टी को चूहों ने खोखला करके अपने घर बना लिए थे। छत को खड़ा रखने के लिए कई लट्ठों का सहारा लिया गया था। फर्श सीला था और कोठड़ी में हर समय अंधी आंख की तरह अंधेरा छाया रहता था। दीवारें कुबड़ी हो गई थीं और किसी समय भी छत समेत धड़ाम से नीचे गिर सकती थीं।

काली ने कोठे के अन्दर ध्यान से चारों ओर देखा और फिर उठकर छत पर आ गया। छत भी बोदी हो चुकी थी और लेप न होने के कारण उस पर रेत भी बिछी हुई थी। वह सीढ़ी के आखिरी डंडे पर खड़ा चौधरियों और महाजनों के मकानों और पक्के चौबारों को देखने लगा। चमादड़ी के कच्चे कोठों के मुकाबले में वे चौबारे और पक्के मकान बहुत ही भले दिखाई दे रहे थे। वह बहुत देर तक उनकी ओर देखता रहा और सोचने लगा कि वह भी अपने कोठे को खण्डहर पक्का मकान बनाएगा। उस पर एक चौबारा भी डालेगा। यह विचार उसके दिमाग में इतनी जल्दी मजबूत हो गया कि वह इसे जल्दी से जल्दी साकार देखने के लिए बेकरार हो उठा। उसने दिमाग में मकान का नक्शा भी बना लिया और नीचे उतरता हुआ चाची को बहुत ऊँचे स्वर में आवाज़ें देने लगा। जब चाची ने कोई उत्तर न दिया तो वह आवाज़ें देता हुआ गली में आ गया और प्रीतो के घर से चाची को बुलाकर अन्दर ले आया। काली चाची को खाट पर बिठाकर स्वयं उसके पाँव में बैठता हुआ बोला

चाची, मैंने एक बात सोची है।

'क्या?' चाची ने इस ख्याल से खुश होकर कहा कि शायद काली अपनी शादी के बारे में बात करना चाहता है।

चाची, मैं सोच रहा हूँ कि कोठे को गिराकर पक्का मकान बना लूँ। यह मकान अपनी उम्र खा चुका है। काली ने टूटे हुए किवाड़ों, काली दीवारों और झुकी हुई छत की ओर संकेत करते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर चाची ने हाथ से अपना माथा पकड़ लिया और आँखों में पानी लाती हुई बोली

पुत्तर, तेरे बाप दादा इसी मकान में रहे। यहीं पैदा हुए और यहीं

अपने श्वास पूरे किए। उनके समय में भी कुछ-न-कुछ टूटना ही रहता था। दीवार गिरी तो नई बना दी। शहतीर टूटा तो उसे ठूंठ का सहारा दे दिया। छत से मिट्टी गिरने लगी तो सरकंडे बदल लिए और पानी टपकने लगा तो ऊपर मिट्टी डाल दी। यह दरवाज़ा भी तेरे चाचा ने लगाया था वरना पहले तो सरकंडों की टट्टी ही हुआ करती थी। तू चार पैसे कमाकर लाया है तो उन्हें सम्भाल कर रख, कल को तेरी शादी होगी तो काम आएँगे। तू मुझे छप्पड़ से मिट्टी ला दे मैं सारे मकान पर लेप कर दूंगी।'

नहीं चाची मैं नया मकान बनाऊँगा। रुपया खर्च हो जाएगा तो क्या हुआ, और कमा लूँगा। काली चाची के घुटने पकड़कर बोला, चाची, जब तू ईंटें लगाकर पक्के आंगन में चर्खा कातेगी, तो चौधरानियां भी तेरे साथ ईर्ष्या करेंगी।'

काली की बातों पर चाची खुश थी और साथ ही हैरान भी। वह सोच रही थी कि आज छोकरे को क्या हो गया है। यह अनहोनी बातें क्या करने लगा है। भला आज तक इस मुहल्ले में किसी ने मकान को पक्की ईंटें लगाई हैं। चाची ने मन ही मन में मिन्नत मानी कि काली ऐसी बातें सोचना छोड़ दे। जब काली ने चाची की अनुमति के लिए आग्रह किया तो वह अटेरन उठाती हुई बोली

बावा मैं क्या बताऊं। तू जो अच्छा समझता है सो कर। तेरी अक्ल मेरी अक्ल से बड़ी है।

काली ने चाची को बाजुओं में उठा लिया और उसे दो तीन चक्कर दे लिए। चाची कराहती हुई बोली

हट बावा, मेरी तो जान निकल गई है। जोड़-जोड़ हिल गया है। मेरे शरीर में अब ताकत नहीं रही।

काली ने चाची को खाट पर बिठा दिया और स्वयं जूता पहनकर घूमता हुआ दूकानों की ओर चला गया ताकि मकान के बारे में छज्जू शाह से सलाह कर सके। नए मकान का नक्शा उसके दिमाग में भिन्न भिन्न सूरतों में उभर रहा था और वह महाजनों की गली में जाता हुआ प्रत्येक मकान को ध्यान से देख रहा था।

काली छज्जू शाह की दूकान पर पहुंचा तो वहां पर काफी भीड़ थी। शाह सौदा देने में व्यस्त था। वह किवाड़ के साथ खड़ा हो गया ताकि छज्जू शाह की नज़र उस तक पहुँच सके तो वह उसे बंदगी कर सके। काली उसे काम करते हुए दिलचस्पी से देखने लगा। दूकान पर ग्राहकों की भीड़ बढ़ रही थी

परन्तु छज्जू शाह की हर एक पर नज़र थी। क्या मजाल कोई सौदा लिए बिना वापस चला जाए या किसी को अपने प्रश्न का उत्तर न मिले। छज्जू शाह को बहुत ज्यादा मसरूफ देखकर काली निराश हो गया और वापस जाने के लिए किवाड़ से हट गया। छज्जू शाह की नज़र उसकी ओर भी थी। वह झट बोल उठा

'कहाँ चला बाबू काली, पास बोरी पर बैठो, मैं सबको सौदा तोल दूँ, फिर बैठकर इत्मीनान से बातें करेंगे।'

काली थड़े पर एक ओर बिछी हुई फटी सी बोरी पर बैठ गया। थड़े के दूसरी ओर बनौला और खल की खुली बोरियाँ पड़ी थीं और साथ बड़ा तराज़ू और बाट पड़े थे। थड़े के पीछे दालान था जिसके एक कोने में बजाजी की अलमारी थी। उसके सामने एक बहुत मैली चादर बिछी हुई थी। अलमारी के साथ लकड़ी की सन्दूकची और उसके साथ लोहे का गज पड़ा था। दूसरे कोने में कई छोटी-बड़ी बोरियाँ थीं। उनके पीछे टीन के छोटे-बड़े डिब्बों की कमर तक ऊँची कतार थी। दालान के पीछे एक लम्बी और गहरी कोठड़ी थी जिसके अन्दर घुप अँधेरा था। शाह जब कोठड़ी में जाता तो यों महसूस होता जैसे वह किसी गुफा में चला गया था। काली शाह को देखता हुआ सोचने लगा कि स्वभाव से यह आदमी देवता है। क्या बच्चा, क्या बूढ़ा, क्या चौधरी, क्या चमार सबके साथ जी करकर बात करता है और फिर काम में इतना चुस्त है जैसे इसके चार हाथ हों।

शाह अपने बाज़ू से चेहरे का पसीना पोंछता हुआ थड़े पर आया और पल झपकते में उसने बनौले की कई धड़ियाँ तोल दीं। वह काली की ओर देखकर मुस्कराया और अन्दर जाकर उसकी ओर लम्प का सिगरेट और माचिस फेंकता हुआ बोला

'काली दास तुम सिगरेट पीयो। इतनी देर में मैं इनका हिसाब बना दूँ। फिर निश्चिन्त होकर बातें करेंगे।'

काली सिगरेट पीता हुआ मन-ही-मन में छज्जू शाह का चौधरी हरनाम सिंह से मुकाबला करने लगा। एक गीली मिट्टी की तरह नम तो दूसरा सूखी मिट्टी का ढेला सख्त। काली ने ज़ोर से सिगरेट का कश खींचा और अपने आप से कुलबुलाया कि शाह जैसे आदमी के लिए जान भी चली जाए तो कोई हर्ज नहीं।

थोड़ी देर के बाद सब ग्राहकों को निपटाकर छज्जू शाह अपना हुक्का उठाकर काली के पास बोरी पर हटकर थड़े पर आ बैठा। उसने दो-चार बार हुक्का

गुडगुडाया और खासता हुआ बोला

'काली दास, दर हो गई। क्या करूँ, दूकानदारी पशा ही एसा ह्। लाल्च रहता है कि ग्राहक आया है, अगर चार पसे का सौदा ले जाएगा तो कुछ यचत हो जाएगी। दूकानदारी नाम ही आई चलाई का है।'

छज्जू शाह ने अपनी टॅट पर कई बार हाथ फेरा और हुक्के के दो चार लम्बे कश खीचकर उसने नय एकदम परे कर दी जैसे उसे अचानक कुछ याद आ गया हो। वह काली की ओर झुक्ता हुआ बोला

'उस दिन चौधरी हरनाम सिंह ने जीतू को नाहक मारा। वह बचारा बेकसूर था। सवरे से शाम तक मेरे काम म लगा रहा था। रात को जब मैंन दूकान वढाई तो वह अपने घर गया था।'

'मुझे तो समझ नही आता कि लोग मारने का हौसला किस तरह कर लेत हैं और कसूर न होते हुए लोग मार क्या खा लेत हैं।' काली यह कहकर कुछ क्षणा तक चुप रहा और फिर छज्जू शाह की ओर देखता हुआ बोला, शाह जी, इसम चौधरी का इतना दोष नही जितना मगू का हैं। वह चौधरी के कान भरता रहता है। मैं छ साल के बाद गाव आया हू। मेरा उससे काई शरीका भाईचारा नही है फिर भी मेरे साथ दुश्मनी करने लगा है। जहा मिलता है नाजायज बातें करता है।

'बाबू काली दास इस गाँव का हाल मत पूछो। चोरी, यारी निन्दा, चुगली बहुत बढ गई है। भलमानसी का जमाना खत्म हो गया और लुच्चा का राज आ गया है।

छज्जू शाह ने खाँस-खाम कर गले म फँसी हुई बलगम निकाली और गली मे थूकता हुआ बोला

'कहो, छुट्टी काटने आए हो या गाव म ही रहने का विचार है।'

इरादा तो गाँव म ही रहन का है, आगे जो रब जी को मजूर। शहरा म भी हालत ज्यादा अच्छी नही है।'

हाँ, शहर मे गरीब आदमी मारा जाता है। गाँव म तो फिर भी पल जाता है। गाँव के लोगा म अभी तक हमदर्दी है लेकिन शहर म तो आदमी सामने तडप-तडप कर जान दे द काई पानी तक नही पूछेगा।' छज्जू शाह हुक्का गुडगुडान लगा।

काली उसकी ओर देखता हुआ बोला 'शाह जी मेरा कोठा बहुत बोदा हो गया है। पता नही किस समय बठ जाए। सोच रहा हूँ कि उस खदेड कर पक्का बना दूं। इसी बारे म आपस सलाह करने आया था।

छज्जू शाह की आँखों के सामने मकान का इस रुपये का मोड़ एक बार फिर घूम गया। वह उठकर अन्दर गया और उसने काली की ओर लम्पा का एक और सिगरेट फेंक दिया।

'शाह जी, रहने दो। मैं सिगरेट कम पीता हूँ। इससे तो हुक्का अच्छा है।' काली ने कहा।

'बात तो तुम्हारी ठीक है। मैंने हुक्के के अलावा दो हुक्के रखे हुए थे। एक जाटों के लिए और दूसरा चमारों के लिए। लेकिन इस दुनिया में भाँति भाँति के लोग हैं। कुछ दिन हुए पार से एक चमार मेरे लिए शक्कर लेकर आया था। उसने पीने के लिए हुक्का माँगा। मैंने दे दिया लेकिन वह भला मानस जाते समय आँखें बचाकर हुक्का लेकर खिसक गया।'

काली का सिर शर्म से झुक गया और वह कुछ देर तक सिगरेट को उँगलियों में थामे हुए जमीन को घूरता रहा। छज्जू शाह ने गला साफ करके एक बार फिर बलगम गली में थूक दी और काली से बोला

'तुम मकान की बात कर रहे थे। वाह वाह बड़ा नेक ख्याल है। तेरे सदके चमादड़ी में भी एक मकान पक्का हो जाएगा। तेरी इज्जत बढ़ेगी। चार गाँव में नाम हो जाएगा कि घोड़ेवाहा की चमादड़ी में भी एक पक्का मकान बन गया है।'

शाह जी, इस समय मेरे पास तीन सौ रुपया है। अगर तीन सौ में काम हो जाए तो मैं कल से ही इमारत शुरू कर दूँ। कुछ पैसा मिलने वाला है लेकिन अभी उसमें कुछ समय लगेगा। काली ने प्रसन्न मुद्रा से कहा।

'तीन सौ तो कम है। तुम्हारा घर मैंने देखा हुआ है। तुम्हारे चाचा सिद्धू से तो हमारा लेन-देन था। उसने भी एक बार मकान पक्का करने का इरादा किया था। कुछ रुपया भी इकट्ठा किया था। सौ रुपया मुझसे भी उधार ले गया था। लेकिन तकदीर ने साथ नहीं दिया। उस सस्ते जमाने में शायद इतने पैसों में मकान बन जाता लेकिन अब पाँच छः सौ रुपये से कम में काम नहीं चलेगा। हर चीज महँगी हो गई है।

यह तो बहुत बड़ी रकम है। इतना रुपया मेरे पास नहीं है। काली ने बहुत निराशा से कहा। छज्जू शाह भी सोच में पड़ गया और हुक्का गुड़गुड़ाने लगा। फिर वह हुक्के की नै मुँह से हटाता हुआ बोला

बाबू काली दास, मेरी समझ में तो एक सूरत आती है। वह यह कि गली वाली दीवार पक्की बना लो। बाकी पक्के स्तून खड़े करके कच्ची दीवारें खड़ी कर दो। छत का सारा बोझ पक्के स्तूनों पर रहेगा। जब पैसे हाथ आ जाएँ

तो वे दीवारें भी पक्की कर लेना। मैंने भी पन्द्रह साल पहले इसी तरह अपना मकान बनाया था। अब देख लो, भगवान की दया से उसी मकान पर दो मजला चौबारा है।'

'काली ने शाह की योजना को ध्यान से सुना और समझ लिया। उसने एक बार फिर सारी योजना को मन-ही मन में दोहराया। छज्जू शाह हिसाब लगाता हुआ बोला

'ईंटें गढ़ो के भट्टे से मिल जाएँगी। शहतीर और कड़ियों का बन्दोबस्त हो जाएगा। दरवाज़ा के लिए शीशम की लकड़ी के फट्टे महाने से ले लेना। मिट्टी पीपल वाले जोहड़ से खोद लेना।'

उसने सारा हिसाब लगाकर विश्वासपूर्ण स्वर में कहा

परमात्मा का नाम लेकर इमारत शुरू कर दो। महीने भर में मकान खड़ा हो जाएगा।

काली छज्जू शाह को बदगी करके थड़े से नीचे उतरने लगा तो शाह ने उसे बहुत नम्रता से आवाज़ दी। काली पीछे मुड़कर उसकी ओर देखने लगा और संकेत पाकर फिर थड़े पर आ गया। शाह ने बहुत ही गम्भीर स्वर में कहा

'काली दास, तेरे साथ बात करनी तो नहीं चाहिए क्योंकि जो बात गुज़र गई हो उसके ज़िक्र से क्या फायदा।'

'क्या बात है शाह जी?' काली ने दिलचस्पी से पूछा। छज्जू शाह काली की बात का उत्तर दिए बिना उचककर अन्दर गया। एक ताक से पुराने बहीखाते को झाड़ता-पोंछता हुआ उठा लाया और पन्ने पलटकर एक स्थान पर उँगली रखता हुआ बोला

'तुम्हारे चाचा सिद्धू ने बारह साल हुए मुझसे मकान बनाने के लिए एक सौ रुपये उधार लिए थे। उसमें ब्याज लेना तो मैंने मुनासिब न समझा क्योंकि वह अपना प्रेमी था। उसने असल रकम में से पच्चत्तर रुपये ही वापस किए थे और अभी पच्चीस रुपये बाकी थे कि उसे मौत ने आ घेरा। बेचारा बहुत ईमानदार आदमी था। मेरा बड़े-बड़े चौधरियों और साहूकारों से लेन-देन है लेकिन उस जैसा ईमानदार आदमी आज तक नहीं देखा।' छज्जू शाह ने उस पन्ने पर उँगली रख कर बही बन्द कर ली और अफसोस भरी आवाज़ में बोला 'जो मर गया सो मर गया। तुम्हें देखकर मुझे ख्याल आ गया था। आखिर तू उसी खानदान की निशानी है। जब कभी सिद्धू की याद आती है तो यह बही निकालकर देख लेता हूँ। इसमें उसका अँगूठा लगा हुआ है। छज्जू शाह अपनी बात खत्म कर चुका तो काली बहुत हौसले से बोला

'शाह जी, उनकी जगह मैं जो बैठा हूँ। आपने मुझे पहले बताया होता। मैं आज दिन ढले आपको पैसे दे जाऊँगा।'

'नहीं नहीं, ऐसी कोई जल्दी नहीं। रुपये आ जाएंगे। अगर बारह साल बेएतबारी न हुई तो अब दो चार दिन के लिए क्या होगी। जब कभी इधर आओ, दे जाना।'

काली थड़े के नीचे उतरने लगा तो छज्जू शाह काली को हौसला देता हुआ बोला

'इमारत जल्दी ही शुरू कर दो। बस तो परमात्मा के कामों में किसी का दखल नहीं है लेकिन हिसाब से अभी बरसात में दो-पौने दो महीने बाकी हैं। हाँ कमीबेशी होने की सूरत में शर्माना मत। सबके काम करने वाला परमात्मा ही है लेकिन फिर भी बंदा बंदे का दारू है।'

'आपकी दया बनी रहनी चाहिए। आप जैसे लोगों के सहारे गांव में इज्जत से दिन काटने की आशा है वरना यहाँ तो हर आदमी काटने को आता है।' काली यह कहकर थड़े से नीचे उतर आया और शाह की बातों पर मुग्ध गर्दन उठाए हुए अपने घर को जाने वाली गली की ओर मुड़ गया।

६

सूरज पूर्वी क्षितिज पर छाए हुए बादलों में से लिहाफ में छिपे बच्चे की तरह झांक रहा था। सुबह की हवा सुख खेतों में हल्की-सी धूल उड़ाती हुई चल रही थी। चमादड़ी की स्त्रियाँ और लड़कियाँ सिरों पर टोकरे उठाए हुए चौधरियों के घरों और हवेलियों से कूड़ा और गोबर उठाने के लिए घरों से निकल पड़ी थीं। चमादड़ी के मर्द गज गज के साफे बाँधे और कमर तक नीची कुड़तियाँ पहने हाथों में दरांतियाँ या खुर्पे पकड़े हुए खेतों की ओर जा रहे थे।

काली गली में खड़ा अपने आहाते को ध्यान से देखता हुआ नए पक्के मकान के नक्शे के बारे में सोच रहा था। उस ने चाची को नया मकान बनाने के बारे में राजी कर लिया था। वह बहुत प्रसन्न थी कि काली वह काम करने जा रहा है जो उसकी सात पीढ़ियों में न हो सका था। वह चमादड़ी में पहला पक्का

मकान बना रहा है। वह सारे इलाके में अपने बाप दादे का नाम ऊँचा करेगा। कोई पथिक चौबारे को दूर से ही देखकर पूछेगा तो लोग बताएँगे कि वह चौबारा माखे के पुत्र काली का है।

चाची यह सोचकर कुछ उदास सी हो गई। वह मन ही मन में सोचने लगी कि काश उस का भी एक बेटा जिन्दा रहता और वह भी चौबारा बनाता। लोग पूछते तो उन्हें उत्तर मिलता कि वह चौबारा मिद्धू के पुत्र का है। चाची की आखें भर आईं और वह अपने पति और पाँच बेटों को याद करके खूब रोई। जब उसका मन कुछ हल्का हो गया तो उसने अपने आपको यह सोच कर तसल्ली दे ली कि क्या बेटा क्या भतीजा—दोनों में कोई फर्क नहीं होता। और फिर काली तो उसका ही बेटा है। अगर उसे जन्म नहीं दिया तो क्या हुआ, पाला-पोसा तो है। गाँव के लोग अब भी यही कहेंगे कि यह प्रतापी के भतीजे काली का चौबारा है।

काली अन्दर आकर चाची से बरतन और दूसरा सामान समेटने के लिए कहकर स्वयं छत पर जा चढ़ा। उसने छत और मुँडेरों को अच्छी तरह देखा और नीचे उतर कर सामान पिछली कोठड़ी में रखने लगा। जब सब सामान बाहर निकाल लिया गया तो चाची ने एक थम्मी (लकड़ी का मोटा लट्ठ) के पीछे से एक पोटली निकाली और उसे अपने नेफे में छिपा लिया और गली में खाट बिछाकर सूत अटेरने लगी।

काली कुदाल लेकर छत पर जाकर मिट्टी खदड़ने लगा। छत उसके बोझ और कुदाल की चोटों के तले काँप रही थी। चाची थोड़े थोड़े समय के बाद काली को पुकार कर कहती कि सम्भल कर कुदाल चलाना। छत कच्ची है। कहीं एकदम नीचे न जा गिरे।

गली के सब बच्चे चाची के इर्द गिर्द जमा हो गए थे। जिन बच्चों की प्रीतो के बच्चों के साथ दोस्ती थी वे उन के कोठे की छत पर बैठकर बहुत नजदीक से देख रहे थे। चाची गली में उसके गिर्द मँडरा रहे बच्चों को झिड़कती हुई परे रहने की ताकीद कर रही थी। काली को छत उखाड़ते देखकर गली की कुछ स्त्रियाँ गोद के बच्चों को कमर से लगाए हुए चाची के पास आ गई। जो भी औरत काम धंधे से वापस आती वह चाची के पास रुककर छत खदेड़ने का कारण पूछती। चाची उसे बड़े गर्व से बताती कि पुराने कोठे की जगह नया मकान बनाने लगा है। ज्ञानो उपले थापने के लिए अपनी छत पर आई तो काली को कुदाल चलाता देखकर सोच में पड़ गई कि वह अपने कोठे की छत क्या खदेड़ रहा है। वह टोकरा फर्श पर रखकर गोबर भरे हाथों को

मसलती हुई चाची के पास जमा स्त्रियों की भीड़ में आ मिली। चाची लहक लहक कर कह रही थी

'काली कहता है कि पक्का मकान बनाऊँगा। ऊपर चौबारा डालेगा। इतना ऊँचा कि दो कोस से नज़र आए।'

ज्ञानो बच्चों को पीछे धकेलती हुई चाची के बिल्कुल पास चली गई और गोबर से लुण्डे हुए हाथों से बाल सवारती हुई बोली

'चाची, चौबारे के बाहर चारों ओर लाल रंग करवाना। फिर वह दूर से बिल्कुल चौधरी हरनाम सिंह के चौबारे की तरह दिखाई देगा।'

ज्ञानो का सुझाव सुनकर कई स्त्रियाँ हँस पड़ीं। प्रीतो घृणा-पूर्ण स्वर में बोली

'रांड सलाह तो ऐसे दे रही है जैसे काली के चौबारे में इसी का पलंग बिछेगा।'

ज्ञानो की मां जस्सो ने अपनी बेटी की आवाज़ सुनी तो चीखती हुई बोली

'ठहर जा सिरमुनिए तेरी टांगें तोड़ती हूँ। तुम्हे मैंने उपले थापने के लिए कहा था। तू मुझ से भी पहले यहाँ पहुंच गई।'

ज्ञानो गोबर में हाथ झटकती हुई अपने घर की ओर भाग गई और छत पर जाकर काली को कुदाल चलाते हुए देखने लगी। वह दो उपले थाप लेती और फिर काली की ओर देखने लगती। उसके पुराने शीशम के रंग के मजबूत, सुडौल और भरे हुए शरीर से ज्ञानो की नज़रें हटने का नाम नहीं लेती थीं। फिर वह एक तरह से काली के साथ मुकाबला करने लगी। वह कुदाल की हर चोट के साथ एक उपला थापने की कोशिश करने लगी। उधर कुदाल की चोट पड़ती इधर वह उपला थाप कर फेंक देती। जब काली कुदाल छोड़कर सुसताने लगता तो ज्ञानो भी उपले थापना छोड़ देती। तेज़ी से ऊपर चढ़ते हुए सूर्य को देखकर जब काली तेज़-तेज़ कुदाल चलाने लगा तो ज्ञानो की उपले थापने की गति भी उसी हिसाब से बढ़ गई। ज्ञानो ने उपले थाप कर कटोरा नीचे फेंक दिया और काली की ओर देखते हुए भरपूर अँगड़ाई ली। कटोरा गिरने की आवाज़ सुनकर काली उस की ओर देखने लगा और उठी हुई कुदाल कुछ क्षणों के लिए उस के सिर पर ही रुक गई। ज्ञानो ने नीचे आकर हाथ मुँह धोया और अपनी माँ की आवाज़ को अनसुना करती हुई गली में आ गई।

काली को घर की ओर जाते हुए उसे अजान-सा डर महसूस हुआ। कानों में अपने भाई मंगू की झिड़कियाँ और गालियाँ गूँजने लगीं। लेकिन उसने इस

भय को सिर हिलाकर पटक दिया और अपनी कमीज के ऊपर चढाए हुए बाजुओं को खोलती हुई चाची के पास जा खडी हुई।

उस समय चाची के पास केवल दो तीन बच्चे खडे थे और वह इत्मीनान से अटेरन चला रही थी। ज्ञानो को देखकर चाची बोली, 'कौन, ज्ञानो है? इधर आ मेरे पास बैठ। चाची ने आग्रह करते हुए कहा।

'चाची, मैं यहीं ठीक हू,' ज्ञानो सामने वाली दीवार के साहरे खडी काली की ओर देखती हुई बोली। चाची ने अटेरन छोडकर कहा

काली पक्की इट का मकान बनाने लगा है। रब इसकी उम्र लम्बी करे।'

ज्ञानो चाची की बातो से बेपरवा काली को कुदाल चलाते हुए देखती रही। थोडी देर के बाद उस ने कुदाल फेंक दी और मुडेर पर झुकता हुआ बोला

'चाची प्यास लगी है, पानी पिलाना।'

चाची अटेरन रख कर उठने लगी तो ज्ञानो झट से बोल उठी

चाची ठहर जा। मैं लस्सी लाती हू।

'रहने दे लस्मी। तेरे घर मे फिर क्लेश बढेगा।'

ज्ञानो चाची को रोकते रोकते अपने घर की ओर भाग गई। काली ने फिर पानी मागा तो चाची बोली

'काका, ज्ञानो अपने घर से तुम्हारे लिए लस्सी लेने गई है। बस आती ही होगी।'

काली ज्ञानो की प्रतीक्षा मे अपनी आखो पर हाथ की छतरी बनाकर गली म देखने लगा।

थोडी ही देर के बाद ज्ञानो गाढी लस्सी मे नमक मिलाकर लोटा भर लाई और चाची की ओर बढाती हुई बोली

ले चाची, लस्सी। नमक मैंने डाल दिया है।'

अब तू ही पिला दे। मैं तो उठती उठती दो बल लगा दूगी।' चाची ने अटेरन उठाते हुए कहा।

ज्ञानो एक हाथ म लस्सी का लोटा और दूसरे हाथ म पीतल का गिलास पकडे सीढी के आखिरी डडे पर जा खडी हुई और झेपते हुए लस्सी से भरा गिलास काली के हाथ म थमा दिया। काली गटागट लस्सी पीने लगा। ज्ञानो उस के तख्ते की तरह चौडे चकले सीने पर बालो म बह रही पसीने की नदी को देखने लगी। उसके सब पट्ठे तने हुए थे। बालो पर महीन मिट्टी के कण आम के बूर की तरह बिखरे हुए थे। उसने लस्सी पीकर गिलास झुकाया तो

नानो की नजरें भी साथ ही झुक गइ। उसन दूसरा गिलास भर दिया। काली चुसकियाँ लेकर लस्सी पीता हुआ बोला

'ऐसी स्वाद लस्सी जिंदगी म पहली बार पी है। शहर मे तो लस्सी पीने का बिल्कुल मजा नही आता था।'

नानो उत्तर म मुसकरा दी और धीम स्वर मे बोली

'अगर लस्सी पीने का इतना ही शौक था तो गाव छोडकर क्या गया था ?'

यह सुनकर काली खिलखिलाकर हस पडा। नानो मुसकराती हुई सीढी से नीचे उतर आई और गली म आकर चाची की पायतो बठ गई।

'नानो, इधर आकर आराम से बठ। चाची ने अपने सामने पडी सूत की अट्टिया को समेटत हुए कहा।

चाची मैं यही ठीक हूँ। नानो ने कहा। वह कभी काली को कुदाल चलात हुए देखती और कभी सूत के उल्झाआ को दूर करने मे चाची का हाथ बँटाने लगती।

दोपहर तक काली ने छत का बडा हिस्सा गिरा दिया। जब धूप तेज हो गई तो वह नीचे आ गया। उस समय तक उस के नया पक्का मकान बनान की खबर मुहल्ले म हर आदमी तक पहुच गई थी। जो भी मद खेतो से घर वापस आता तो उस के घर वाले उसे सब से पहले यही बतात कि काली नया पक्का मकान बना रहा है। वे कुएँ से आते-आते काली के पास रुककर नए मकान के बारे म बातचीत करत। काली को उन के प्रश्ना के उत्तर देकर अजीब सी खुशी महसूस होती।

काली न भी नहा धोकर खाना खाया और कोठडी के दरवाजे म छोटी खाट बिछाकर लेट गया। हवा के झोका से छत पर बिखरी हुई मिट्टी उड-उड कर उसक ऊपर गिर रही थी। तज धूप म आकाश की नीलाहट घुल गई थी। काली का दिल चाहता था कि अपन मकान के बारे म किसी स बात करे। जब यह ख्वाहिश और धूप दोना असह्य हो गइ तो वह छोटी सी खाट उठाकर तकिए म चला गया।

चमादडी के बाहर चो के पार साइ मुल्ले शाह का तकिया था। तकिए के चारो ओर शीशम के वृक्ष और ऊँचे सरकडा की घनी बाड थी। एक ओर बड के दो वृक्ष थे और बीच मे शायद इस गाव से भी पुराना बहुत बडा पीपल था। इसकी दाढिया झुककर जमीन पर आ लगी थी और उनमे से कुछ ने जडें पकड ली थी।

तकिए मे एक ओर एक टूटी हुई पुरानी कबर थी जिसके बारे म मशहूर था कि वह परमात्मा को पहुचे हुए फकीर साइ मुल्ले शाह का मजार है। कभी कभार कोई दुखियारी, बीमारी या कष्ट की मारी या फिर गोद हरी होन की आकाक्षा पूरी कराने या दुश्मन को मात दने के लिए इस कबर पर शाम को सरसो के तेल का दीया जला जाती। इसके चारो आर तल गिरने से बडे-बडे काले और चिकने धब्बे पड गए थे। इद गिद झाड झंखाड की घनी बाड थी और उसम मजार तक जाने के लिए छोटा सा रास्ता था। मजार मे हटकर एक छोटा सा पक्का कमरा था जिसे मुद्दत हुई किसी ने मनोकामना पूरी होने पर बनवाया था। कमरे की छत गिर चुकी थी। इसके एक कोने मं छोटा सा गढा था जिसम दिन भर उपलो की आग सुलगती रहती थी ताकि हुक्का पीने वाले लोग अपनी चिलम भर सकें। कमरे के बाहर एक घडा पडा था। चमादडी की औरतें आते-जाते कुछ उपले फेंक जाती थी और घडे मे पानी भर देती थी। चमादडी के मर्द शीशम के वृक्षा के नीचे अपने ढोर-डंगर बाधते थे और स्वय पीपल की घनी छाव के नीचे खाट या कपडा बिछाकर आराम करत थे, गप शप लगाते थे और ताश और चौपट खेलते थ।

काली अपनी खाट लेकर पहुचा तो वहा काफी रौनक थी। धूप के सताए और थकावट से चूर लाग सा रहे थे, कुछ ऊँघ रहे थे।

जीतू बन्तू सतू और बग्गा ताश खेल रहे थे। काली को दखते ही जीतू न आवाज दी

'बाबू जी, इधर आ जाओ।'

जीतू काली को उसकी चार जमाता की तालीम और शहर म छ वर्ष *गुजारने के कारण बाबू जी कहता था। वह उनके पास पहुचा तो सारा ने उसे* हाथो हाथ ल लिया। जीतू ताश की गड्डी दोनों हाथा म थामकर बोला

'बतया, बाबू जी पक्का मकान बनान लगा है। ऊपर चौबारा भी रहेगा। अब बाजी बाबू जी के चौबारे म ही रचा करेगी।'

जीतू की बात सुनकर और काली को वहाँ देखकर ऊँघते हुए लोग उठकर उनके पास आ गए। हर आदमी इंटों, गारे, चूने लकड़ी इत्यादि के बारे में सलाह दे रहा था। वे गाँव के कुछ मकानों को उदाहरण के तौर पर पेश कर रहे थे। काली खुशी से फूला नहीं समा रहा था। जीतू ने ताश की गड्डी को कपड़े में बाँध दिया और अपनी छाती पर हाथ रखता हुआ बोला

'बाबू जी, मेरी मदद की जरूरत हो तो बता देना। एक बार मकान को आसमान तक उठा देंगे।'

बाबा फत्तू भी अपनी छोटी सी चुरमराती हुई खाट उठाकर उनके पास आ गया। गाँव में उसकी आयु के बहुत ही कम लोग थे। काली बाबे को देखकर उठ खड़ा हुआ और उसकी खाट पकड़कर उस जगह रख दी जहाँ बहुत ज्यादा घनी छाँव थी। बाबा फत्तू खाट पर बैठकर बोला

'किसके मकान की बात कर रहे हो?'

'बाबा काली ने इमारत शुरू की है।' जीतू ने ऊँची आवाज में कहा। जब बाबे फत्तू ने कान को छूते हुए हाथ हिलाया तो उसने और भी ऊँची आवाज में अपनी बात दोहराई।

'अच्छा अच्छा।' बाबे फत्तू ने काली की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा। वह उसकी ओर झुक गया और बाबा फत्तू उसकी पीठ थपथपाता हुआ बोला

'यह तो बहुत ही अच्छी बात है। सारे मुहल्ले में एक भी पक्का मकान नहीं है। तुम्हारा पक्का मकान बनने से मुहल्ले का सिर ऊँचा हो जाएगा।'

'यह सब आप बुजुर्गों के पैरों का प्रताप है।'

काली की बात सुनाई न दी तो वह अपना कान उसकी ओर करता हुआ बोला

'मेरे कानों के पर्दे तरबूज के खप्पर की तरह मोटे हो गए हैं। अब बहुत ऊँचा सुनाई देने लगा है।'

काली ने अपनी बात दोहराई तो बाबे फत्तू का पोपला मुँह खुल गया और उसने काली के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा

'जीता रह काका! तेरा बाप तो सब अरमान दिल में ही लेकर मर गया था। अगर पल्ले के चार पैसे ठिकाने से खर्च हो जाएँ तो समझो श्रेय आ गए वरना इस पेट की भाजड़ में तो हर चीज जलकर भस्म हो जाती है।' बाबा फत्तू कुछ देर तक चुप रहकर फिर बोला

'मैंने भी जिन्दगी में कारीगरी तो बहुत की। दिन रात मेहनत की। नहरें भट्टों में काम किया। दिन में रंगीनियाँ बनाईं शाम को थाम कर बैठा।

रात को भी कही मजदूरी का काम मिल गया तो नींद खराब करके कर लिया लेकिन पक्का मकान बनाने का अरमान पूरा न हो सका गाँव मे मेहनत तो है, कमाई नही ।'

अतीत की एक कामना को याद करके बाबे फत्तू की आखो म आसू छलक आए। आस-पास बठे हुए लोग सोच म पड गए और काली का दिल भी भर आया।

'मकान बन जाए तो मुझे जरूर दिखाना ।' बाबे फत्तू न अपने जजबात पर काबू पाते हुए कहा।

मकान ही आपका होगा, बाबा जी।

काली ने नम्रता से कहा और बाबे की ओर झुकता हुआ बोला

'अभी तो अगली दीवार पक्की बनाने का इरादा है। बाकी दीवारें पक्के सतून बनाकर कच्ची ही बना दूगा। बाद म जब पसे हाथ आ जाएँगे तो वे दीवारें भी पक्की कर दूगा।

काली बाबे फत्तू के साथ बातो म व्यस्त था कि तकिए म एक ओर से गालिया देने की आवाजें आने लगीं। सब लोगो का ध्यान उस ओर चला गया। सब उस आवाज को पहचानते थे, उस आवाज के मालिक को जानते थे। मगू, निक्कू के बेटे अमरू को गालिया दे रहा था क्योकि उसकी भस की पीठ पर धूप पड रही थी। मगू बकता-झकता भस को छाया म बाधकर वहा आ गया जहा सब लोग बठे थे। अमरू उसके पीछे-पीछे खाट उठाकर आ रहा था। मगू काली के पास आकर बोला

'आज क्या छत पर भस नाचे थे जो उसका एक हिस्सा गिर गया है।'

नही मैंने आप गिराया है। पक्का मकान बना रहा हूँ।' काली ने विश्वास भरे स्वर म कहा।

'क्या कहा ?' मगू खिलखिलाकर हँस पडा और एक ओर लेटे हुए घुम्मन को सम्बोधित करता हुआ बोला

'घुम्मना, सुना तूने ? काली पक्का मकान बना रहा है।'

घुम्मन गदन ऊपर उठाकर कमजोर-सी आवाज म बोला

क्या कहा ? काली मकान बना रहा है ?'

नही हवेली बना रहा है जिसम आसामियो और तेरे मरे जैसे कम्मियो की कचहरी लगाने और दाद फरयाद सुनने के लिए एक दीवानखाना भी होगा। मगू यह कहकर काली स बोला

'क्या शहर म डाके डालता रहा है जो गाँव आते ही पक्का मकान बनाना

हुए कर लिया ? दूसरे गाँव से भी लोग शहर रहकर आए हैं। पक्का मकान तो क्या, किसी का पक्का चूल्हा भी नहीं बना।

घुम्मन, मंगू की हर बात पर सिर हिला रहा था। मगू अपनी बात जारी रखता हुआ बोला

'मेरे मामा का साला फौज में नायक था—सिपाहियों के ऊपर अफसर। सारी उम्र बड़े-बड़े शहरों में रहा। इतने बड़े-बड़े शहरों में जिनमें हमारे गाँव जैसे सैकड़ों गाँव समा जाएँ। दिल्ली दसौर (दसावर) तक वह घूम आया है। लेकिन जब से बेचारा फौज से वापस आया है रोटी के लिए भी तरस रहा है।

मगू की आवाज सुनकर सोए हुए लोग भी उठ गए। ताश और चौपड़ की बाजियाँ ठप हो गई और सबको विश्वास होने लगा कि मगू और काली में झगड़ा हो जाएगा। सब महसूस कर रहे थे कि मगू ज्यादती कर रहा है लेकिन डर के मारे चुप थे। काली कमजोर नहीं था तगड़ा लम्बा शरीर जो मकान की छत तक जाता था। वह मगू की ओर एकटक देखता रहा। वह बात पलटने के लिए बाबे फत्तू से बातें करने लगा। लेकिन मगू उसके कंधे को झकझोड़ता हुआ बोला

'काली, रुपया वाफर है तो कुछ हम भी दे दे।

क्या उसकी शराब पिएगा ? काली ने क्रोध से कहा।

खरीद कर तो ठेके की शराब पी जाती है और वह नामर्द लोग पीते हैं। तुम्हारी कमाई हराम की है, इससे तो मैं कुछ और ही करूँगा।' मगू ने छाती तानकर कहा। काली ने उसकी ओर घूरकर देखा तो वह तिनककर बोला

'मेरी तरफ ऐसे देख रहा है जैसे मेरा साँस पी जाएगा। मगू के साथ वैर करके इस मुहल्ले में कोई नहीं रह सकता।

मगू की ये बात सुनकर बाबा फत्तू चुप न रहा सका। वह उसे समझाता हुआ बोला

'मगू क्यों लाग की बात करता है। खुश नहीं होता कि हमारे मुहल्ले में भी एक ऐसा आदमी निकल आया है जो पक्का मकान बना रहा है।

'चुप रह बुड्ढे, हर समय अपनी टर टर लगा रखता है।' मगू ने बाबे फत्तू को झिड़क दिया। वह रूहाँसा सा होकर शिकायत भरे स्वर में बोला

'इस छोकरे को न बड़ों की इज्जत का पता है न छोटों का लिहाज। शिकारी कुत्ते की तरह पंजे झाड़कर पीछे पड़ जाता है।'

यह सुनकर मगू और भी ज्यादा भड़क उठा

'चुप रह बुड्ढया, तू मेरी एक धौल की मार है।'

काली की आँखों में गरूर चमकने लगा। उसकी मुट्ठियाँ बन्द होने लगीं। उसके चेहरे से साफ पता लगता था कि वह अपना खून का घूँट पी रहा है। काली ने क्रोध से काँपती हुई आवाज़ में कहा

'मंगू, तू मेरे साथ बात कर रहा था। बीच में बाबा को क्यों घसीट लाया। वह तुम्हारे बाप के समान है।'

'तेरे बाप के समान होगा जिसने अपने बाप की शक्ल भी नहीं देखी।' मंगू ने यह कह तो दिया लेकिन काली के शेर के पंजों की तरह खुले हुए हाथ देखकर डर-सा गया। कई लोगों ने दबी ज़बान में मंगू से कहा कि वह इस झगड़े में माँ बाप को बीच में क्या लाता है।

बीच-बचाव कराने के लिए बहुत से लोग एक साथ बोल रहे थे। जीतू चाहता था कि काली मंगू से भिड़ जाए और उसको पीट दे। बाबा फत्तू के पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा था और वह फिकर फिकर हर एक चेहरे की ओर देख रहा था। उसने अपने पास खड़े जीतू से पूछा तो उसने कोई उत्तर न दिया। बन्तू से पूछा तो उसने 'कुछ नहीं' कहकर टाल दिया। बाबा फत्तू ने बारी-बारी हर एक से पूछा लेकिन किसी ने उसे कुछ न बताया। वह हताश होकर ऊँचे स्वर में बोला

'सब जने कौए की तरह काँ-काँ कर रहे हैं। मुझे कहते हैं कोई बात नहीं।' बाबा फत्तू अपनी लाठी टटोलकर उठा लेकिन काली ने उसे फिर खाट पर बिठाते हुए कहा

'बाबा जी, बैठो। आराम से लेटो। बात खत्म हो गई है।'

मंगू वहाँ से उठकर परे चला गया। काली अपनी खाट पर आ बैठा। जीतू उसकी ओर एकटक देखता हुआ धीमे स्वर में बोला

'बाबू जी, तू तो पक्का शहरिया बनकर आया है। आज तू बिल्कुल शहरिया की तरह लड़ा है। हवाई फैर ही किए। मज़ा तब था अगर मंगू के सारे दाँत उसकी झोली में डाल देता।'

काली ने जीतू को कोई उत्तर न दिया और ताश उठाता हुआ बोला

'एक-दो बाजियाँ हो जाएँ।'

जीतू ताश के पत्ते फेंटने लगा तो बाकी लोग भी उनके पास आ गए और शीघ्र ही, ही ही ही हूहह, हा हा हा करते हुए ताश के पत्तों में खो गए।

जब दिन ढल गया तो काली ने ताश जीतू के हाथ में थमा दी और अपनी खाट उठाकर बोला

'परछाइयाँ लम्बी हो गई हैं। जाकर काम शुरू करें।'

काली अभी सरिए के अन्दर ही था कि मगू न कार पन्तू की पाट को ठोकर मारते हुए कहा

'बुड्ढया उठा पाट यहाँ स। कितनी जगह घेर रखी है। अब तू यहाँ न आया कर। काली के चौबारे म दोपहर काटा कर।

इसके साथ दो तीन ठहाके गूज उठे और काफी दूर तक काली का पीछा करते रहे।

८

दो दिन म ही काली ने ड्योढी खदेड कर मलवा साफ कर दिया। उसने जगह की लम्बाई चौडाई का अनुमान लगाकर मकान का नक्शा बना लिया आगे ड्योढी इसके पीछे आगन जिसमे एक ओर रसोईघर, दूसरी ओर एक कोने म सीढी और फिर एक खुली कोठडी। उसका जी चाहा कि उसके आँगन मे भी वसा ही हैडपम्प हो जसा पादरी के घर म है। उसे बार-बार ख्याल आता कि कोठडी के ऊपर एक चौबारा भी होना चाहिए जिसम चारो ओर रगदार शीशो वाली खिडकियाँ हो और उनसे फर फर हवा आए जाए। काली जब चौबारे के बारे म सोचता तो वह बिलकुल आखो के सामने आ जाता लेकिन जब वह उसे कोठडी के ऊपर देखने की कोशिश करता तो वह उसे दूर तक नजर न आता। जब उसे यह याद आता कि वह केवल बाहरी दीवारें ही पक्की बना पाएगा तो उसके दिल म एक खलिश सी उठती। वह सोचता कि चौबारा न सही पूरा मकान तो पक्का बनना चाहिए। लेकिन साथ ही दिल म प्रश्न उठता कि इतना रुपया कहा से आएगा। यह सोचकर उसका दिल बठा लगता और बार बार ख्याल आता कि उसने खाहमुखाह मकान गिरा दिया। यदि अब पक्का न बना सका तो जग हँसाई होगी।

इस अँधेरे म उस रोशनी की एक किरण नजर आती कि शायद छज्जू शाह से कुछ पसे उधार मिल जाएँ। शायद वह उसके मन की मुराद पूरी कर दे। काली को याद आया कि अभी उस अपने चाचा का लिया हुआ उधार भी चुकाना है। इस उम्मीद के सहारे उसने सारा मकान एक ही बार पक्का बनाने

का इरादा कर लिया और जेब म पचास रुपये डाल कर छज्जू शाह की दूकान की ओर चला गया।

काली छज्जू शाह की दूकान पर पहुचा तो चौधरी हरनाम सिंह और हँवडा कलोये का जल्दार फौजा सिंह वहा बैठे थे। वे किसी गोपनीय बातचीत म व्यस्त थे। काली न तीनो को बन्दगी की। चौधरी हरनाम सिंह और जलदार फौजा सिंह ने काली पर एक उचटती सी नजर डाली परन्तु छज्जू शाह ने उसका हाल-अहवाल पूछा और खल बनौले की बोरिया के पास बिछे टाट के टुकडे पर बठन का सकेत किया। वे तीना आपस मे खुसर फुसर करने लगे। काली पहले तो बकार इधर उधर दखता रहा लेकिन जब उसकी बातचीत म रुपया का बार-बार जिक्र आने लगा तो वह भी कान लगाकर उनकी बातचीत सुनने की कोशिश करने लगा।

जलदार फौजा सिंह को रुपया की जरूरत थी। चौधरी हरनाम सिंह सिफारिश के लिए साथ आया था। छज्जू शाह को भली प्रकार मालूम था कि फौजा सिंह जल्दारी के रौब म है। थाने कचहरी तक उसकी रसाई है। जिला हुक्काम से भी दुआ सलाम है। छज्जू शाह उस बडी रकम देने से घबडा रहा था क्योंकि उस इस आसामी पर विश्वास नहीं था। लेकिन वह बहाना यह बना रहा था कि उसके पास इतनी बडी रकम नही है। वह ठोस जमानत चाहता था लेकिन जलदार हाथ उधार रकम चाहता था। जब बात लम्बी होने लगी और छज्जू शाह दबी जबान म अविश्वास प्रकट करने लगा तो चौधरी हरनाम सिंह शाह को समझाता हुआ बोला

शाह, सरदारो की जबान ही सबसे बडी जमानत होनी है। इसी जबान से बडे बडे व्यापार और रिश्ते नाते तय होते हैं।

आप की बात सोलह आने ठीक है लेकिन व्यवहार भी कोई चीज है।' छज्जू शाह ने उत्तर दिया।

जैलदार फौजा सिंह ने जब देखा कि शाह अपनी बात पर डट गया है तो वह जमानत दने के लिए राजी हो गया।

'शाह, हमारे पास जमानत रखने के लिए एक ही चीज होती है और वह मैं तेरे नाम रहन कर नही सकता क्योंकि कानून इजाजत नही देता।

'सर छोटूराम के बनाए हुए कानून की बात कर रहे हो? इसका इलाज मेरे पास है। और छज्जू शाह अपना मुह जलदार के कान के पास ले जाकर बोला

मरे सम्बन्धी जमीनो के मालिक हैं। उनके नाम तो आपकी जमीन रहन

रखी जा सकती है। चलो यह न सही, बाबर वाला जाट जगता मेरा अपना आदमी है। उसके पास रहन करवा देना।'

जल्दार फौजा सिंह और चौधरी हरनाम सिंह चबूतरे के दूसरी ओर चले गए और आपस में सलाह करने के बाद शाह के पास वापस आ गए। चौधरी हरनाम सिंह कहने लगा

'जैल्दार की आठ-दस घुमाओ बंजर ज़मीन है। उसमें से दो घुमाओ रहन रख लो।'

अगर वह ज़मीन रहन रखनी है तो सूद भी डबल होगा। जिस ज़मीन में घास का तिनका भी न उगता हो उसे रहन रखकर मैं क्या कमाऊँगा ?' छज्जू शाह ने कहा।

वे तीनों आपस में फिर सलाह करने लगे और धीरे धीरे उनकी आवाज़ धीमी और सिर निकट होते गए। जब फौजा सिंह अपनी जलदारी का रौब दिखाने लगता तो शाह इस तरह पतरा बदलता कि जलदार को फिर झुकना पड़ता। चौधरी हरनाम सिंह जलदार को एक बार फिर चबूतरे से परे ले गया और थोड़ी देर के बाद शाह के कान में कुछ कहा। शाह ने कुछ क्षणों तक सोचने के बाद चौधरी से एक-दो प्रश्न पूछे और फिर निर्णयात्मक स्वर में बोला

अच्छा जलदार साहब, आप कोई पराए तो हैं नहीं। आप इलाके के मालिक हैं। आप चौधरियों और सरदारों के सहारे तो हम लोग गाँव में इज्जत से दिन गुजार रहे हैं। छज्जू शाह ने यह कहकर दोनों के कान के पास मुँह ले जाकर अपना फैसला सुना दिया। चौधरी और जलदार दोनों चौंक गए लेकिन छज्जू शाह ने उनको एक शब्द भी बोलने का अवसर न दिया। वह अपनी विजय पर मुस्कराता हुआ बोला

आप चौधरी ठहरे ज़मीनों के मालिक हम ठहरे मजदूर हट्वानिये। आप लोगों के सहारे दाल रोटी चल जाती है। आप बड़ी से बड़ी चोट सह सकते हैं लेकिन हम लोग अगर एक बार गिर गए तो बस सारी उम्र नहीं उठ सकते। क्या काली ? छज्जू शाह ने अपनी बात की पुष्टि के लिए काली को सम्बोधित करते हुए कहा। काली उत्तर में मुस्करा दिया। उसे छज्जू शाह पर क्रोध आ रहा था कि वह चौधरी और जल्दार के सामने अपने आपको कितना हीन क्यों जता रहा है।

मंगू ने जब छज्जू शाह को काली को सम्बोधित करते हुए देखा तो वह कनौड़ा की तरह काली के पाँव में लोटता हुआ बोला

'शाह जी, तुम तो सेठ हो सेठ । दुनिया में दो तरह के ही तो आदमी हैं एक चौधरी और दूसरे सेठ।' वह ठहाके मारने लगा।

चौधरी और जलदार एक बार फिर आपस में सलाह करने लगे। चौधरी, जल्दार पर शाह की बात मानने के लिए जोर दे रहा था लेकिन जलदार कुछ हिचकिचा रहा था। मंगू ने काली पर अपना महत्त्व पूरी तरह जताने के लिए इस अवसर से पूरा पूरा फायदा उठाना चाहा। वह एक बार फिर बोरी के पीछे से सिर निकालकर ऊँचे स्वर में बोला

'जल्दार साहब, आप शाह की बात मान लें। इसमें कोई हर्ज नहीं है।'

लेकिन जब उसने देखा कि उनमें से किसी ने भी उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया तो वह बोरी के पीछे से उठ आया और उनके निकट आकर बोला

'मेरी बात मानो तो शाह कोई नाहक बात नहीं कह रहा। फिर वह कोई गैर आदमी तो है नहीं।' मंगू ने विजयी निगाहों से काली की ओर देखा। जब मंगू ने महसूस किया कि इस बार भी उसकी बात को अनसुना कर दिया गया है तो वह उनकी ओर एक कदम बढ़कर छज्जू शाह को सम्बोधित करता हुआ बोला

'शाह जी आप ही कुछ नम पड़ जाओ।'

मंगू ने अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि चौधरी हरनाम सिंह गरजती हुई आवाज में बोला

'कुत्ते की औलाद, चुप बैठ। कुत्ता चमार अपने आपको बड़ा पंच समझता है।'

छज्जू शाह भी मंगू को डाटता हुआ बोला

'मंगू क्या मूर्ख बनता है। बड़ों की बात में क्या दखल देता है।'

मंगू खिसियाना होकर फिर बनौला की बोरी के पीछे जा बैठा और मुंह ही में बुदबुदाने लगा। उसने काली की ओर देखा तो उसे महसूस हुआ जैसे वह उसके निरादर पर बहुत प्रसन्न है। वह मुंह ही मुंह में काली को गालियां देता हुआ धमकियां देने लगा। काली गर्दन झुकाए हुए सोच रहा था कि चौधरी ने मंगू को कुत्ता चमार क्या कहा। काली अपने क्रोध को दबाता हुआ जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। लेकिन छज्जू शाह उसे हाथ से बैठने का इशारा करता हुआ बोला

'बाबू काली दास तू कहाँ चला? बैठो बैठो। लो यह सिगरेट पियो।' छज्जू शाह ने लम्प का सिगरेट और माचिस उसकी ओर फेंकते हुए कहा। काली

सिगरेट सुलगाकर फिर डट गया। मगू अपने अन्दर ही अन्दर जहर घोलता हुआ अपने पास हाँफ रहे शिकारी कुत्ते के गले में पड़े पट्टे को कसने लगा।

चौधरी हरनाम सिंह ने कुत्ते की चूँ चूँ की आवाज सुनी तो मगू को आवाज देकर कुत्ते के गले का पट्टा ढीला करने के लिए कहा। मगू ड्योढ़ी में पीछे से निकलकर बोला

'पट्टा तो ढीला है। बढ़ा-बढ़ा तंग आ गया है।'

'तो इसे हवेली ले जा और पट्टा उतार कर वहीं गेट बन्द कर देना।' चौधरी ने कहा। मगू कुत्ते की जंजीर थाम काली को घूरता हुआ चबूतरे से नीचे उतर गया।

जब जलदार फौजा सिंह और छज्जू शाह की बात सिरे चढ़ती नजर न आई तो चौधरी हरनाम सिंह जलदार से बोला

'जलदार, अगर तू अपनी जमीन रहन नहीं रखना चाहता तो मैं अपनी जमीन रख देता हूँ। जो काम करना है सो करना है। दो जरीब जमीन के पीछे क्या जान दे रहा है।'

'यह है चौधरियों वाला दिल गुर्दा।' छज्जू शाह ने खुश होते हुए ऊँचे स्वर में कहा।

'जलदारजी, मैं ब्याज में दमड़े पाई की कमी कर दूँगा लेकिन मेरी बात आपको माननी ही पड़ेगी। नीति के विरुद्ध जाना मेरा धर्म नहीं है। भगवान गवाह है मुझे अपनी रकम और ब्याज का फिक्र नहीं है, मुझे तो सिर्फ आपकी जरूरत और इज्जत का ख्याल है। जी खोलकर खर्च करो। अगर सरदार और चौधरी लोग खर्च नहीं करेंगे तो क्या कुम्हार और चमार करेंगे।' छज्जू शाह ने अपने एक एक शब्द पर जोर देते हुए कहा। जलदार फौजा सिंह के लिए अब कोई राह नहीं रह गई थी। चौधरी हरनाम सिंह का संकेत पाकर उसने हाँ कह दी और तीनों उठ खड़े हुए। छज्जू शाह जलदार से बोला

'आपको पता ही है जो कागज पत्तर चाहिए। किसी को तहसील भेजकर मँगवा लेना। मैं इतनी देर में रकम का बन्दोबस्त कर लूँगा।'

चौधरी हरनाम सिंह और जलदार फौजा सिंह छज्जू शाह से दिन नियत करके चबूतरे से उतरने लगे। उन्हें जाते देखकर काली भी खड़ा हो गया। चौधरी हरनाम सिंह ने उसकी ओर ध्यान से देखा और उसके हृष्ट पुष्ट शरीर और उजले कपड़ों का जायजा लेता हुआ बोला

'सुना काली, क्या हाल है तेरा?'

काली के उत्तर देने से पहले ही छज्जू शाह बोल उठा

'चौधरी काली पक्का मकान बना रहा है।'

चौधरी ने एक बार फिर काली पर नजर डाली और कुछ कहे बिना चबूतरे से नीचे उतर गया।

जब वह कुछ दूर निकल गए तो छज्जू शाह काली से बोला

'क्या किया जाय ? चौधरी लोग हैं जमीनों के मालिक हैं। रुपये पैसे की जरूरत होती है तो इधर आ जाते हैं। इनकी जरूरत पूरी करनी ही पड़ती है। अगर न करो तो कभी दूकान में डाका और कभी घर में चोरी। अभी दो हजार रुपया माग रहा था लड़की की शादी के लिए। हाथ उधार चाहता था। यह तो कागज पत्तर होते हुए रकम खा जाते हैं, हाथ उधार ली हुई कब वापस करेंगे।'

काली अपने मन की बात कहने के लिए छज्जू शाह की हाँ में हाँ मिलाता हुआ बोला

शाह जी इस दुनिया में हर आदमी हाजतमंद है। बंदा ही बंदे का दारू है। इस इलाके में किसी को रुपये पैसे की जरूरत होगी तो आपके पास ही आएगा।'

'बंदा किसी का क्या कर सकता है। करने वाला तो भगवान है। बंदा तो सिर्फ बहाना बनाता है।' छज्जू शाह ने नम्रता से कहा।

काली छज्जू शाह की ओर देखता रहा कि अपने मन की बात कह डाले। लेकिन उसे हिम्मत नहीं हो रही थी। आखिरकार उसने जेब से पच्चीस रुपये निकाले और छज्जू शाह की ओर बढ़ाता हुआ बोला

'इधर आया था ताकि आपको वे रुपये देता जाऊँ जो चाचा ने आप से लिए थे।'

छज्जू शाह कृत्रिम ढंग से याद करता हुआ ऊँचे स्वर में बोला

'अच्छा अच्छा, याद आ गया। यह तो दस बारह साल पुरानी बात है।' शायद इससे भी ज्यादा पुरानी हो।'

वह तो मुझे पता नहीं। आपने पच्चीस रुपये बताए थे सो मैं ले आया हूँ।

लेकिन इसके साथ सूद भी होगा चलो बारह साल का न सही छः साल का ही दे दो। अपने आदमी से इतनी रियायत तो करनी ही चाहिए।

छज्जू शाह ने पच्चीस रुपये के नोट तीन चार बार उँगलियों में मसलने के बाद कहा। काली ब्याज का जिक्र सुनकर कुछ उदास सा हो गया क्योंकि छज्जू शाह ने पहले इस बारे में कोई जिक्र नहीं किया था। काली प्रत्यक्ष रूप से प्रसन्न भाव से बोला

रितना व्याज है, शाह जी ?'

साल्ह् रपय और दे ग । वस धनत ता ज्यान्ा हैं । छज्जू शाह न हिसाव ल्गात हुए वहा । काली न उसक हाथ म साल्ह रपय और थमा ल्ए । उसन इन नोटा को भी तीन चार वार गिना और उन्ह कमीज क नीच कुर्ती की अन्दरनी जेव म रखकर वोला

'पहले मल्का का चांदी का रुपया चलता था । फिर जाज पचम का चांदी का रुपया आया । जय म दस रुपय भी हा ता महसूस हाता था कि उसम कुछ है । अब कागज के नोट आ गए हैं । जेव म हजार रुपया भी डाल लो तो खबर तक नही होगी । छज्जू शाह एक वार फिर कमीज क अन्दर हाथ डाल कर नोटा को टटोलकर वोला

'ऐसी आसामिया को तो जमानत के बिना रकम देने म भी कोई सकोच नही होता । अगर वाप उधार चुकाए विना मर गया तो वेटे ने चुका दिया । कई वार तो ऐसा भी हुआ है कि दादा का लिया हुआ उधार पोते ने चुकाया । लेकिन अब जमाना वदल गया है ।

छज्जू शाह की वातें सुनकर काली को विश्वास हो गया कि उसे शाह स रुपये उधार मिल जाएगे । वह कुछ क्षणा तक छज्जू शाह की ओर देखता रहा और फिर धीमे स्वर म वोला

शाह जी ।

क्या वात है काली दास ?' छज्जू शाह उसके मन की वात को भापने की कोशिश करता हुआ बोला । काली ने रुक रुक कर कहा ।

शाह जी मैं सोच रहा हूँ कि एक ही वार सव दीवारें पक्की कर दूं । वार वार उधेडने बनाने स खच भी ज्यादा होगा और मकान भी अच्छा नही बनेगा ।

अगर एसा कर सका तो वहुत अच्छी वात है ।' छज्जू शाह ने उत्तर दिया ।

'लेकिन सब दीवारें एक ही वार पक्की बनाने के लिए मरे पास रकम कम है अगर अगर आप । काली अपनी वात पूरी न कर सका और जब छज्जू शाह न उसे हौसला दिया तो वहुत तेज आवाज म बोला

अगर आप व्याज पर कुछ रुपया दे दें तो काम हो सकता है ।

'कितना रुपया दरकार होगा ?

मरे पास दो-ढाई सौ होगा । अगर सौ डेढ सौ और मिल जाए तो काम हो सकता है । काली ने साहिब ल्गात हुए कहा ।

छज्जू शाह साच म पड गया । काली सांस रोककर उसकी ओर देखने

लगा। उसका दिल, दिमाग, कान, आंख सब छज्जू शाह की ओर लगे हुएथे।

'इतनी रकम का बन्दोबस्त कसे होगा ?'

'आप चाह तो सब कुछ हो सकता है। मैं साल दो साल म ब्याज समेत पूरी रकम चुका दूगा।'

वह तो ठीक है लेकिन इतनी रकम कहाँ से आएगी। मेरे पास रुपया होता तो जरूर दे देता। किसी और म लाकर दूगा तो वह जमानत मांगगा। छज्जू शाह ने कहा।

आपके पास रुपये की क्या कमी है। मेरा काम हो जाए तो सारी उम्र आपका एहसान मानूगा।'

'एहसान की तो कोई बात नही। आजकल काम-काज तो रहा नही, चारो ओर मन्दा-ही मन्दा है। पुराने समय अब कहाँ। दाल रोटी भी मुश्किल म चलती है। रुपया कम जमा होगा। छज्जू शाह आकाश की ओर देखता हुआ बोला। काली ने अपनी बात जब फिर दोहराई तो छज्जू शाह सोच म पड गया और कुछ क्षणो के बाद गोपनीय स्वर म बोला

'कोई जमानत के लायक चीज है। कोई जेवर ?'

'बस यह घडी है। काली ने जेब मे पुरानी घडी निकालकर दिखाते हुए कहा जो उसने पन्द्रह रुपय म खरीदी थी।

यह किस काम की ? गाव म घडी का क्या काम ? यहा लोग दिन म परछाइयो से और रात को तारे देखकर समय का अन्दाजा कर लेत है। कोई ऐसी चीज बताओ जो जमानत का काम दे सके। छज्जू शाह अपनी बात पर जोर देता हुआ बोला।

आपने जैलदार को दो हजार रुपया दने का वचन दिया है।' काली ने कुछ तीखे स्वर म कहा।

'उनकी बात मत करो। वे मालिक लोग ह, जमीन्दार है। दो घुमाओ जमीन रहन रख गया है। जब तक उनके पास जमीन है उन्हे ब्याज पर पसे की कमी नही। छज्जू शाह ने अपने एक एक शब्द पर जोर देते हुए कहा।

छज्जू शाह के शब्दो ने काली की सब उम्मीदो को फूक मार कर उडा दिया। उसे समझ नही आ रहा था कि शाह को क्या उत्तर दे। उसन अपने आपको सभालत हुए कहा।

'शाहजी आप मेरे मकान की जमीन रहन रख लें। काली को यह कहते हुए बहुत दुख हुआ और उसे यू महसूस हुआ जसे वह पौधा लगाने से पहल ही उस जगह पर अमरबेल का बीज डाल रहा है। छज्जू शाह काली की उदासी

को भांपता हुआ बोला

'काली दास जिस जमीन की तुम बात कर रहे हो वह जमीन भी तुम्हारी नही है । वह शामलात (गाँव के जमींदारों की साँझी जमीन) जमीन है । जब तू या तेरे वारिस (उत्तराधिकारी) इस गाव म रहेगे, जमीन का वह टुकडा रहाइश के लिए तुम्हारा है । बाद म उसका मालिक गाव होगा । वह तेरी मालकियती जमीन नही है मौरूसी जमीन है ।

छज्जू शाह की बात सुनकर काली की रही-सही हिम्मत भी जवाब दे गई । उसे महसूस होने लगा कि गाव म उसकी हस्ती शून्य के बराबर है । उसकी आँखो के सामने अधेरा छाने लगा । वह कुछ देर तक उसी हालत म बैठा जमीन को घूरता रहा । वह सौ साल के बुडढे की तरह घुटनो पर हाथ रख कर धीरे धीरे उठा और चबूतरे से नीचे उतर आया । छज्जू शाह उसे दिलासा देता हुआ बोला

'काली दास निराश होने की कोई बात नही है । मेरे पास रुपया होता तो फौरन निकाल कर दे देता । जब मैंने तेरे चाचा को दे दिया था तो तुझे देने म क्या हर्ज है अभी एक दीवार ही पक्की कर लो । भगवान ने चाहा दो साल म ऊपर चौबारा भी बन जाएगा ।

काली चबूतरे की ऊपरी सीढी पर रुककर छज्जू शाह की बात सुनने लगा । जब शाह ने दुबारा गुडगुडाना शुरू कर दिया तो वह नीचे उतर कर आहिस्ता आहिस्ता कदम उठाता हुआ अपने घर की ओर चल पडा । उसके दिमाग स मकान का नक्शा उतर गया । चमादडी के बाहर कुएँ के निकट गदे पानी की छप्पडी के पास आकर वह रुक गया । पहले वह यहाँ दुर्गन्ध स बचने के लिए नाक पर हाथ रख लिया करता था । अब उसने वहाँ खडे होकर साँस जोर स अन्दर खींचा और फिर उसे आहिस्ता-आहिस्ता छोडता हुआ छप्पडी पार करके गली म घुस गया । गली म कीचड को पाँव तले रौंदता हुआ वह अपने खंडहर के सामने आ खडा हुआ । वह एक ओर पडे बाले और पुराने शहतीरो कडियो और सिरकियो को देखकर भौंचक्का रह गया । उसने जमीन के छोटे स टुकडे को देखा और मुँह दूसरी ओर फेर लिया जैसे उस जमीन के साथ उसका कोई सम्बन्ध नही था । दिल म घृणा और बेबसी म उसका मन प्राण सिकुडने लगे । वह जमीन के टुकडे को घूरता हुआ सोचने लगा कि यह भी उसका नही है । *यहाँ क्या इस मुल्क म हर चीज मौरूसी है* चमारो का औलाद तक मौरूसी है । काली गुस्से म हाँफ उठा और आँखे बन्द करके गिरी दीवार के साथ टेक लिया ।

उसे दो आवाज़ सुनाई दे रही थी। एक बूढ़ी और दूसरी जवान। एक उमग भरी और दूसरी किसी हद तक निराश। वह ध्यान से दोना आवाज़ो को सुनने लगा। ज्ञानो चाची स कह रही थी

'चाची, मकान बन जाए तो काली का ब्याह कर देना। अच्छी सी दुल्हन लाना—काली की तरह लम्बी और तगडी। कही से कोई बौनी न पकड लाना। घर मे बहू आ जाए तो अपना चखा छत पर ले जाना। पीढे पर बैठे बिठाए रोटी खाना।' ज्ञानो अपनी धुन म बाल्ती जा रही थी कि चाची उसे प्यार से डाटती हुई बोली

'हशत मुटियार लडकिया ऐसी बात नही करती। और फिर सोच म डूबती हुई कहने लगी

सजोग होगा तो शादी भी हा जाएगी। अभी तक तो वह नाम नही लेन देता। उसकी उम्र के लडके चार चार बच्चा के बाप हैं।'

चाची और ज्ञानो अपने अपने ढग से काली के बारे मे बातचीत म खोई हुई थी कि खासकर उसने दोना का ध्यान अपनी ओर खीच लिया। ज्ञानो शम के मारे जमीन मे गडती जा रही थी। लेकिन जब उसन काली को बहुत उदास और निराश देखा तो चौंक गई और चाची से बोली

'चाची, काली को क्या हो गया है। बहुत चुप चुप और उदास दीख रहा है।'

'काका, यहा धूप म क्या बठा है।' चाची घबराकर उठी और काली के पास आकर बोली।

चाची की आवाज सुनकर काली न यू आँख खोली जस कोई बहुत डरावना स्वप्न देखता हुआ डर गया था। काली न चाची और ज्ञाना पर उचटती-सी नजर डाली और आगन म आकर बगल वाली दीवार के साये म बठ गया।

'हो गया बन्दोबस्त ?'

'नही हुआ।' काली न निराशा भरे स्वर म कहा। चाची कुछ देर तक चुप बठी रही। उसके हाथ से अटेरन गिर गया। उसने उसे उठाने की कोशिश नही की और काली का दिलासा देती हुई बाली

बन्दोबस्त नही हुआ तो कोई हज नही। पूरा पक्का न सही, कच्चा-पक्का मकान बना लेंग।'

काली झुझलाई हुई आवाज म बोला

'चाची, मैंने ख्वाहमख्वाह कोठा गिरा दिया। मेरी तो अक्ल मारी गई थी। तू ही मुझे मना कर देती।

वो भांपता हुआ बोला

'काली दास जिस जमीन की तुम बात कर रहे हो वह जमीन भी तुम्हारी नही है। यह शामलात (गाँव के जमादारों की साँझी जमीन) जमीन है। जब तू या तेरे वारिस (उत्तराधिकारी) इस गाँव म रहेंगे, जमीन का वह टुकडा रहाइश के लिए तुम्हारा है। बाद म उसका मालिक गाँव होगा। यह तेरी मालकियती जमीन नही है मौरूसी जमीन है।

छज्जू शाह की बात सुनकर काली की रही-सही हिम्मत भी जवाब दे गई। उसे महसूस होने लगा कि गाँव म उसकी हस्ती शून्य के बराबर है। उसकी आँखो के सामने अधेरा छाने लगा। वह कुछ देर तक उसी हालत म बैठा जमीन को घूरता रहा। वह सौ साल के बुड्ढे की तरह घुटनो पर हाथ रख कर धीरे धीरे उठा और चबूतरे से नीचे उतर आया। छज्जू शाह उसे दिलासा देता हुआ बोला

काली दास निराश होने की कोई बात नही है। मेरे पास रुपया होता तो फौरन निकाल कर दे देता। जब मैंने तेरे चाचा को दे दिया था तो तुझे देने म क्या हर्ज है अभी एक दीवार ही पक्की कर लो। भगवान ने चाहा दो साल मे ऊपर चौबारा भी बन जाएगा।

काली चबूतरे की ऊपरी सीढी पर रुककर छज्जू शाह की बात सुनने लगा। जब शाह ने हुक्का गुडगुडाना शुरू कर लिया तो वह नीचे उतर कर अहिस्ता अहिस्ता कदम उठाता हुआ अपने घर की ओर चल पडा। उसके दिमाग से मकान का नक्शा उतर गया। चमादडी के बाहर कुएँ के निकट गदे पानी की छपडी के पास आकर वह रुक गया। पहले वह यहाँ दुर्गन्ध से बचने के लिए नाक पर हाथ रख लिया करता था। अब उसने वहाँ खडे होकर सास जोर से अन्दर खीचा और फिर उसे अहिस्ता अहिस्ता छोडता हुआ छपडी पार करके गली म घुस गया। गली म कीचड को पाँव तले रौंदता हुआ वह अपने खडर के सामने आ खडा हुआ। वह एक ओर पडे बोदे और पुराने शहतीरो कडियो और सिरकियो को देखकर भौचक्का रह गया। उसने जमीन के छोटे से टुकडे को देखा और मुह दूसरी ओर फेर लिया जसे उस जमीन के साथ उसका कोई सम्बन्ध नही था। दिल म घृणा और बेबसी से उसके मन प्राण सिकुडने लगे। वह जमीन के टुकडे को घूरता हुआ सोचने लगा कि यह भी उसका नही है। यही क्या इस मुहल्ले म हर चीज मौरूसी है चमारो की औलाद तक मौरूसी है। काली गली म ही बैठ गया और आँखें बन्द करके सिर दीवार के साथ टेक दिया।

उस दो आवाज सुनाई दे रही थी। एक बूढ़ी और दूसरी जवान। एक उमग भरी और दूसरी किसी हद तक निराश। वह ध्यान से दोनो आवाजो को सुनने लगा। ज्ञानो चाची से कह रही थी

'चाची, मकान बन जाए तो काली का ब्याह कर देना। अच्छी-सी दुल्हन लाना—काली की तरह लम्बी और तगडी। कही से कोई बौनी न पकड लाना। घर म बहू आ जाए तो अपना चखा छत पर ले जाना। पीढे पर बैठे बिठाए रोटी खाना ।' ज्ञानो अपनी धुन म बोलती जा रही थी कि चाची उसे प्यार स डाटती हुइ बोली

'हुशत, मुटियार लडकिया ऐसी बात नही करती। ' और फिर सोच म डूबती हुई कहने लगी

सजोग होगा तो शादी भी हो जाएगी। अभी तक तो वह नाम नही लेने देता। उसकी उम्र के लडके चार चार बच्चो के बाप हैं।'

चाची और ज्ञानो अपने अपने ढग से काली क बारे म बातचीत म खोई हुई थी कि खासकर उसने दोनो का ध्यान अपनी ओर खीच लिया। ज्ञानो शम के मारे जमीन मे गडती जा रही थी। लेकिन जब उसने काली को बहुत उदास और निराश देखा तो चौक गई और चाची से बोली

'चाची, काली को क्या हो गया है। बहुत चुप चुप और उदास दीख रहा है।'

'काका, यहाँ धूप म क्या बठा है।' चाची घबराकर उठी और काली के पास आकर बोली।

चाची की आवाज सुनकर काली ने यू आँखें खोली जस कोइ बहुत डरावना स्वप्न देखता हुआ डर गया था। काली ने चाची और ज्ञानो पर उचटती सी नजर डाली और आगन म आकर बगल वाली दीवार के साये म बैठ गया।

'हो गया बन्दोबस्त ?'

नही हुआ।' काली न निराशा भरे स्वर म कहा। चाची कुछ देर तक चुप बठी रही। उसके हाथ से अटेरन गिर गया। उसने उसे उठाने की कोशिश नही की और काली को दिलासा देती हुई बोली

'बन्दोबस्त नही हुआ तो कोई हज नही। पूरा पक्का न सही, कच्चा-पक्का मकान बना लेंगे।'

काली झुझलाई हुई आवाज म बोला

चाची, मैंने खाहमुखाह कोठा गिरा दिया। मरी तो अक्ल मारी गई थी। तू ही मुझे मना कर देती।

'जो हुआ सो हुआ। अब रब का नाम लेकर काम शुरू कर दे। जैसा बन पड़ेगा बना लेंगे।'

नहीं चाची, अब मैं गाँव में नहीं रहूँगा। तुम्हें भी साथ ले जाऊँगा। मेरा यहाँ क्या रखा है। मेरे यहाँ कौन से खेत बंजर हो रहे हैं। काली ने बहुत दुख भरे स्वर में कहा।

'काका इस बुढ़ापे में मेरी यहाँ मिट्टी खराब करेगा। मैंने सारी उम्र इस गाँव में गुजारी है बाकी जो है वह भी यहीं काटूँगी। तू चला जाएगा तो गाँव वाले मुझपर चार लकड़ियाँ डाल कर साड़ फूंक देंगे। यह कहती हुई चाची रोने लगी। काली भी रोहाँसा हो गया। वह कुछ समय तक चुप रहकर बोला

'चाची। तू ही बता अब मैं इस गाँव में किस मुँह से रहूँगा। सारे गाँव में खबर घूम गई है कि पक्का मकान बना रहा है। अब कच्चा कोठा ही खड़ा करूँगा तो लोग कहेंगे कि मकान गिराया तो इस तेजी से था जैसे इसकी जगह पर सोने की लंका खड़ी करेगा। अब फिर मिट्टी के ढेले पर ढेला रखकर दीवारें खड़ी कर रहा है। ये बातें नहीं सुनी जाएँगी।'

नानो हैरान और परेशान सी काली की बातें सुनती हुई उसे ध्यान से देख रही थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि काली इस प्रकार की बात क्या कर रहा है। वह उत्तेजित स्वर में बोली

इसमें शर्म की क्या बात है? अपना मकान कोई जैसा जी चाहे बनाए।

इन शब्दों में कोई जादू नहीं था। लेकिन नानो ने अपनी बात इतने विश्वास से कही कि काली हैरान सा उसकी ओर देखने लगा। नानो उसी लहजे में बोली

अगर आदमी गाँव के लोगों की मर्जी पर चलने लगे तो एक दिन में ही या तो उसे गाँव छोड़ना पड़ेगा या कुएँ में छलांग मारनी पड़ेगी। काली को इस साँवली सलोनी सुडौल और स्वस्थ लड़की के साथ अकस्मात ही बहुत ज्यादा खिंचाव का अनुभव हुआ। उसने अपनी कुदाल के फल जैसी लम्बी लम्बी उंगलियों और खुर्पे जैसी चौड़ी हथेलियों पर नजर डाली। अपनी चौड़ी चकली छाती को देखा और अपने मजबूत बाजुओं को अकड़ाया और मन ही मन सोचने लगा कि वह चाहे तो धरती को एक सिरे से पकड़ कर उलटा कर दे। काली का चेहरा तमतमाने लगा और वह चाची को बाजुओं में उठाता हुआ बोला

चाची, यहीं रहूँगा और मकान भी पक्का ही बनाऊँगा। मैं गढ़ों के भट्ठे पर जाकर इंटों के लिए कह आऊँ। फिर छप्पड़ से मिट्टी ढोने के लिए दीनू परजापत (कुम्हार) के पास भी जाना है। संतासिंह मिस्त्री से भी मिलना है।

काली न मुसकराकर ज्ञानो की ओर देखा और उसकी झुकी हुई आँखो को निहारता हुआ गली की ओर बढ गया।

९

दीनू कुम्हार का घर गाँव के पश्चिम म था । काली जब उसकी तलाश म वहाँ पहुचा ता वह गोबर के ढेरा के पास बेरी के नीचे लेटा हुआ था और उसके दोना गधे ढेरा के पीछे घूम रह थे। काली की आवाज़ सुनकर दीनू उठ बठा और उसकी ओर ध्यान स देखता हुआ लज्जित स्वर म बोला

आख लग गई थी।'

'अच्छा कोई हज नही।' काली ने मुसकराते हुए कहा। दीनू अँगडाई लता हुआ उठा और अपनी मली सी पगडी उठाकर उस सिर के गिद लपेटकर बोला

'सुना है तुम पक्का मकान बना रहे हो। कल तकिए मे कोई कह रहा था।

'इसीलिए तो तुम्हारे पास आया हूँ। पहले मेर साथ गढी के भटटे पर चलो इटें दखनी हैं। उसके बाद छप्पड से मिट्टी लानी है।' काली ने सब बातें एक ही साँस म कह दी। दीनू ने बेरी की जडो के पास पडे अपने टूटे और मिट्टी म सने हुए जूत का पहना और काली के साथ हो लिया।

भटठ क निकट पहुचकर दीनू बोला "कौन सी इटें लेनी है—अव्वल, दोम, सोम या धडा ?"

'पहले देख तो ल फिर फसला करगे।' काली ने उत्तर दिया।

दीनू भटठे की दो बडी-बडी चिमनियो के पास जाकर मुशी को आवाज देने लगा। मुशी का उत्तर पाकर दीनू भटठे की बगल म अन्दर जाने वाले रास्ते की ओर मुडता हुआ बोला

'मुशी भटठे क अन्दर है। शायद कच्ची इटो की चुनाई हो रही है।'

दीनू के पीछे पीछे काली भी भटठे के अन्दर चला गया। जहा आठ दस आदमी करीने से कच्ची इटें चुन रह थे। दीनू को दखकर मुशी प्रसन्न भाव से बोला

'सुना परजापता, कहाँ रहा इतने दिन। तू तो कभी कभी एम गायब हो जाता है जस गधे के सिर स सीग।'

'सच मुशी जी? किसके गधे क सिर स सीग गायब हो गए?' दीनू ने हैरत से कहा और फिर दुख भरे स्वर म बोला

'बडा जुल्म हुआ है। गधा बच गया या वह भी साय ही गायब हो गया।' दीनू ने बहुत मासूमीयत स पूछा।

मुशी की हँसी रोके नही रुकती थी। काली भी खिलखिलाकर हस रहा था। कच्ची इटा की चुनाई म लग हुए मजदूर भी पेट पकडकर हँस रह थे। और उन्ह देखकर दीनू के गालो की झुर्रियाँ भी कनपटियो तक जा पहुची थी। मुशी ने बडी मुश्किल से अपनी हँसी को रोका और दीनू की ओर दखता हुआ बोला

तू भी अक्ल का पूरा है। कभी गधे के सिर पर भी सीग हुए है।'

'मुशी जी तुमने अपन आप ही तो कहा है। पहले मुझे भी शक हुआ था लेकिन मैंने यह सोचकर यकीन कर लिया क्योंकि इस भट्ठे पर गाँव गाव क गधे आते हैं।'

मुशी की हँसी थम गई तो वह खाँस कर गला साफ करके बोला

परजापत कस आए हो?'

इसे इट खरीदनी हैं। दीनू ने काली की ओर सकेत करते हुए कहा। मुशी ने काली को सिर से पाव तक देखा और उसकी वेष भूषा स उसकी जात के बारे म किसी नतीजे पर न पहुचकर असमजस म पड गया। उसने काली को एक बार फिर ध्यान स देखा और दीनू को सम्बोधित करता हुआ बोला

कौन सी इट चाहिए?'

दीनू काली की ओर देखने लगा तो वह बोला

'अव्वल नम्बर।

'कितनी चाहिए?'

पन्द्रह बीस हजार तो लग ही जाएँगी काली ने कच्चा-पक्का अनुमान लगाते हुए कहा।

मुशी उन्ह अव्वल नम्बर की इटा के ढेर के पास ले गया और एक इट हाथ म उठाता हुआ बोला

अव्वल स भी अव्वल नम्बर इट है। दस साल स भटठे पर काम कर रहा हूँ लेकिन आज तक एसी इट नही पकी थी। बिल्कुल लहू जसा रग है। काली न भी एक इट उठाकर दखी और फिर ढेर पर रखता हुआ बोला

'क्या परजापत, मुशी जी ठीक कहत हैं ?'

'परजापत से क्या पूछते हो। इटा की पहचान इससे इसके गधा को ज्यादा है। उनपर अव्वल नम्बर की इट लदी हो तो इतना तेज चलते हैं कि परजापत को भी पीछे छोड जाते हैं। दोम नम्बर हो तो रास्ते म इधर उधर भारत हुए जाते हैं। अगर सोम नम्बर की इट लदी हो तो उनकी आपस मे टागें टकराने लगती हैं। क्या परजापता ठीक है ना ?' मुशी ने हँसते हुए पूछा।

काली इटें देखने के लिए थोडी दूरी पर बने ढेरो की ओर बढ गया तो मुशी दीनू से बोला

'परजापत। कौन आदमी है यह!'

'क्या तू नही जानता इसे ?' दीनू ने आश्चय से कहा और फिर ऊँचे स्वर म बोला

'चमारो का काली है। इसके बाप का भला-सा नाम है—भला-सा नाम है—' यह सोचत सोचत दीनू न अपनी पगडी और भी ज्यादा टेढी कर ली और मुह म बुदबुदाने लगा

'भला सा नाम है उसका।' और फिर मुशी की ओर देखता हुआ बोला

'यह शहर म रहता था। थाडे ही दिन पहले गाव वापस आया है। अच्छे पस कमाकर लाया है।'

'मैं भी सोच रहा था कि शक्ल से चमार दिखाई देता है लेकिन पहनावा कुछ और कहता है।' मुशी न कहा।

जब काली उनके पास आया तो वे चुप हो गए। मुशी का लहजा पहले स कुछ बदल गया था। वह अव्वल नम्बर की इटा के चक्र पर हाथ रखता हुआ बोला

फिर कौन सी इटें पसन्द की हैं ?'

मुझे तो पहचान नही है। मिस्तरी सतासिंह न कहा था कि अव्वल नम्बर की इट बढिया होती है।'

ता अव्वल नम्बर ल लो।' मुशी ने कहा।

'क्या दाम है इसका ?'

'यह बारह रुपय की हजार है।' मुशी न उत्तर दिया।

'जा मुनासिब हा वह दाम लगा ल।

'मुशी जी, काली चौधरी नही है। दाम म कुछ रियायत कर दा।' दीनू न कहा।

'सुना परजापता, कहाँ रहा इतन दिन। तू तो कभी कभी एस जाता है जैसे गधे के सिर स साग।'

'सच मुशी जी ? किसके गधे के सिर से सीग गायब हो गए हैरत से कहा और फिर दुख भरे स्वर म बोला

'बडा जुल्म हुआ है। गधा बच गया या वह भी साथ ही गायब दीनू ने बहुत मासूमीयत स पूछा।

मुशी की हँसी रोके नही रुकती थी। काली भी खिलखिलाकर था। कच्ची इटा की चुनाई म लग हुए मजदूर भी पेट पकडकर हँस और उन्हे देखकर दीनू के गालो की चुरियाँ भी कनपटियों तक जा प मुशी ने बडी मुश्किल स अपनी हँसी को रोका और दीनू की ओर बोला

तू भी अक्ल का पूरा है। कभी गधे के सिर पर भी सीग हुए है।

मुशी जी तुमने अपने आप ही तो कहा है। पहले मुझे भी शक लेकिन मैंने यह सोचकर यकीन कर लिया क्योंकि इस भटठे पर गाव गाँव आते है।'

मुशी की हसी थम गई तो वह खास कर गला साफ करके बोला परजापत कम आए हो ?'

इसे इटें खरीदनी है। दीनू ने काली की ओर सकेत करते हुए कहा मुशी न काली को सिर स पाव तक देखा और उसकी वेष भूषा स उसकी जा के बारे मे किसी नतीजे पर न पहुचकर असमजस म पड गया। उसने काला को एक बार फिर ध्यान से देखा और दीनू को सम्बोधित करता हुआ बोला

कौन सी इट चाहिए ?'

दीनू काली की ओर देखने लगा तो वह बोला

अव्वल नम्बर।

'कितनी चाहिए ?

'पन्दह-बीस हजार तो लग ही जाएँगी काली ने कच्चा-पक्का अनुमान लगाते हुए कहा।

मुशी उन्हे अव्वल नम्बर की इटो के ढर के पास ले गया और एक इट हाथ मे उठाता हुआ बोला

अव्वल स भी अव्वल नम्बर इट है। दस साल स भटठे पर काम कर रहा हूँ लेकिन आज तक एसी इट नही पकी थी। बिलकुल लहू जसा रग है। काली न भी एक इट उठाकर देखा और फिर ढर पर रखता हुआ बोला

'क्या परजापत, मुशी जी ठीक कहते हैं ?'

'परजापत से क्या पूछते हो । इटा की पहचान इससे इसके गधा को ज्यादा है । उनपर अव्वल नम्बर की ईंट ल्दी हो तो इतना तेज़ चल्ते हैं कि परजापत को भी पीछे छोड जाते हैं । दोम नम्बर हो तो रास्ते में इधर-उधर मारते हुए जाते हैं । अगर सोम नम्बर की इट ल्दी हो तो उनकी आपस मे टाँगें टकराने ल्गती हैं । क्या परजापता ठीक है ना ?' मुशी ने हँसते हुए पूछा ।

काली इटें देखने के लिए थोडी दूरी पर बने ढेरा की ओर बढ गया तो मुशी दीनू स बोला

'परजापत । कौन आदमी है यह ।'

'क्या तू नही जानता इसे ?' दीनू ने आश्चय स कहा और फिर ऊँचे स्वर म बोला

'चमारा का काली है । इसके बाप का भला-सा नाम है—भला-सा नाम है—' यह सोचते सोचते दीनू ने अपनी पगडी और भी ज्यादा टेढी कर ली और मुह म बुदबुदाने लगा

भला सा नाम है उसका ।' और फिर मुशी की ओर देखता हुआ बोला

'यह शहर म रहता था । थोडे ही दिन पहले गाँव वापस आया है । अच्छे पैसे कमाकर लाया है ।'

मैं भी सोच रहा था कि शक्ल से चमार दिखाई देता है लेकिन पहनावा कुछ और कहता है ।' मुशी न कहा ।

जब काली उनके पास आया तो वे चुप हो गए । मुशी का ल्हजा पहले स कुछ बदल गया था । वह अव्वल नम्बर की इटा के चक पर हाथ रखता हुआ बोला

फिर कौन सी इटें पसन्द की हैं ?

'मुझे तो पहचान नही है । मिस्तरी सतासिंह ने कहा था कि अव्वल नम्बर की इट बढिया होती है ।'

'तो अव्वल नम्बर ले लो । मुशी न कहा ।

'क्या दाम है इसका ?'

'यह बारह रुपय की हजार है ।' मुशी न उत्तर दिया ।

जो मुनासिब हो यह दाम लगा लें ।

'मुशी जी, काली चौधरी नही है । दाम म कुछ रियायत कर दो ।' दीनू न कहा ।

'हमारे लिए सब चौधरी है। परजापता, चौधरमा पसे से होता है। जिसक पास चादर है वह चौधरी है।'

मुशी इधर उधर की बातें करने लगा तो दीनू काली स बोला

जितनी इट लेनी है उसका पर्चा बनवा लो।

काली ने मुशी से पाच हजार इटो का पर्चा काटने के लिए कहा परन्तु वह चुपचाप बडा अविश्वास भरी नजरो से काली की ओर देखने लगा। दीनू ने भी मुशी स पर्चा काटने के लिए कहा तो वह अविश्वास भरी नजरो स देखता हुआ बोला

"याने के लिए पसे लाए हो?'

नही, इस समय तो मेरी जेब म एक दो रपय होग। काली ने कहा।

साठ रुपये की इट होगी दो ढाई रपय लदाई और ढलाई के होगे। इतनी रकम के लिए दो रुपय का ब्याना कुछ हैसियत रखता ह। मुशी ने कहा। काली तो चुप हो गया लेकिन दीनू मुशी से बोला

पसे आ जाएँगे। तुम पर्चा काट लो।

'परजापता, अगर पसे न आए तो मैं तुम्हारे दोनो गधो समेत तुम्हे यहाँ बाध लूगा। मुशी ने कहा।

यह सुनकर काली को क्रोध आ गया। वह तीखे स्वर म बोला

'परजापता, चलो यहाँ से, जब पसे देकर ही माल खरीदना है तो जहाँ से भी चाहें खरीद लेंगे। अभी हम ने एक इट तक ली नही है मुशी जी न पहले ही से हम बेईमान समझ लिया है।

काली की बात सुनकर मुशी कुछ शर्मिन्दा-सा हो गया लेकिन फिर हौसला करता हुआ बोला

इसम गुस्से की कोई बात नही। हम उधार कम ही देते है। अगर देना ही पड जाय तो पहले आसामी देख लेते हैं। अगर कोई चौधरी उधार माँगेगा तो देने म ज्यादा हर्ज नही है क्योकि हर शशमाही फसल के मौके पर वसूली कर लेंगे। एसे लोगो स देर सवेर से पसे मिल ही जाते हैं लेकिन बेहैसियत आदमी से पसा निकालना बहुत मुश्किल होता है। बाबक का मगलू चमार चार हजार इट ले गया था। तीन साल हो गए है अभी तक सिर्फ बाईस रुपये वसूल हुए हैं। अब उससे भट्ठे पर दिहाडियाँ लगवाकर पसे पूरे कर रहा हूँ। एक दिन आता है तो दो दिन गायब रहता है। कही साल-सवा साल म पसे पूरे होंगे।

मुशी की बात सुनकर काली की गर्दन झुक गई। मुशी अपनी सफाई पेश

करता हुआ बोला

मैं नजूमी तो हूं नहीं कि आदमी का चेहरा देखकर उसके अंदर जान लूं। नया आदमी आए तो पूछना ही पड़ता है। मैं पर्चा काट देता हूं आज शाम को या कल सवेरे पैसे दे जाना।'

'नहीं मैं एक ही बार पूरे पैसे देकर ईंट उठाऊंगा।' काली दीनू को साथ लेकर अपने गांव की ओर चल पड़ा।

जब वे भट्ठे से थोड़ी दूर आ गए तो काली बोला

'परजापता मुंशी शक्की आदमी है।'

'नहीं मुंशी आदमी बुरा नहीं है। अगर आसामियां पैसे न दें तो आदमी शक्की हो ही जाता है। लोग तो एक जूते से दो चार साल निकाल लेते हैं लेकिन मुंशी साल में दो जूते तोड़ता है।' दीनू ने कहा।

दीनू मुंशी की प्रशंसा और उसकी मजबूरियों का वर्णन करके काली को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करता रहा कि वह अच्छा आदमी है। सब सुनने के बावजूद काली यही अनुभव कर रहा था कि मुंशी ने उसका अपमान किया है। उसके मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे लेकिन वह चुप था। जब वे गांव के निकट पहुंच गए तो काली अपने मुहल्ले को जाने वाली गली के सामने रुक गया और दीनू से बोला

परजापतजी, मैं मिट्टी खोदने छप्पड़ पर जा रहा हूं। तुम दोनों गधे लेकर जल्दी वहां पहुंच जाना। दोपहर से पहले-पहले दो-तीन फेरे लगा लें तो अच्छा है।

× × ×

काली जब छप्पड़ पर पहुंचा तो धूप बहुत तेज हो गई थी। उसने चिकनी मिट्टी का एक टुकड़ा चुना और पूरे जोर से मिट्टी खोदने लगा। उसके शरीर से पसीने की नदियां फूट रही थीं। थोड़े ही समय में उसने मिट्टी खोदकर ढेर लगा दिया।

दीनू अपने गधों के साथ छप्पड़ के बहुत निकट आ गया तो काली ने कुदाल फेंक दिया और उसे आवाज देता हुआ बोला

'परजापत जी आ गए हो।

दीनू ने गधों को मिट्टी के ढेर के पास खड़ा कर लिया और दोनों मिलकर बोरों में मिट्टी भरने लगे। बोरे भर गए तो दोनों ने मिलकर उन्हें गधों पर लाद दिया। दीनू उन्हें गांव की ओर हांकने लगा तो काली कुदाल उठाता हुआ बोला

'प्रजापत जी, मिट्टी आँगन म ग्गर धोन म फेंकना और जल्दी वापस आ जाना ।'

काली अभी दीनू को समझा ही रहा था कि छप्पड के किनारे पर किसी के ताबडतोड गालियाँ देने की आवाज सुनाई देने लगी । काली और दीनू हैरान होकर उस ओर देखने लगे । मगू चौधरी की घोडी को खुली छोडकर उस ओर भागा आ रहा था । उसने छप्पड म छलाँग मारते हुए गाली देकर पूछा कि कौन मिट्टी खोद रहा है हालाँकि उसे मालूम था कि काली मिट्टी खोद रहा है । मगू ने इनके पास पहुँचकर बहुत रोब से पूछा

'किससे पूछकर मिट्टी खोद रहे हो ?' मगू का बात करने का ढग ऐसा था जैसे वह छप्पड का मालिक हो । मगू ने आगे बढकर कुदाल उठाना चाहा लेकिन काली ने उस पर अपना पाँव रख दिया । मगू गाली देकर बोला

'मैं पूछता हूँ कि किससे पूछकर मिट्टी खोद रहे हो ?

'छप्पड से आज तक किसी ने पूछकर मिट्टी खोदी है जो मैं भी पूछने जाता और किससे पूछता ?

'यह छप्पड तेरे बाप की मल्कियत नहीं है कुत्ते का पुत्तर आगे उल्टा जवाब देता है ।

'छप्पड का पट्टा तेरे बाप के नाम भी नहीं है । काली ने क्रुद्ध स्वर म कहा । वह सोचने लगा कि चौधरी उसे इसलिए नीच समझता है क्योंकि वह चमार है—छज्जू शाह उसे किसी गिनती म शुमार नही करता कि वह गरीब है । मुशी उसपर इसलिए विश्वास नहीं करता क्योंकि वह जमीन का मालिक नहीं है, लेकिन मगू किस बिरते पर इतना रोब दिखाता है । काली मगू को समझाता हुआ बोला ।

तेरी रगो म खून की बजाय पानी बह रहा है जो तू इस तरह की बातें कर रहा है ।

काली पहले ही धूप से सताया हुआ था और मगू का गालीगलौच सुनकर उसका सारा शरीर क्रोध से जलने लगा । मगू गधो पर लदे हुए बोरे फेंकने लगा तो काली ने आगे बढकर उसका हाथ पकड लिया । दीनू ने जब यह देखा कि दोनो म हाथापाई तक नौबत पहुच रही है तो वह वहाँ से दौड पडा और छप्पड के किनारे पर वृक्ष के नीचे जा खडा हुआ । मगू अपना हाथ छुडाने की कोशिश करता हुआ गालियाँ बकता रहा । वह इसम असफल रहा तो उसने अपना सिर काली की छाती पर मारा । काली ने उसकी कलाई मरोडकर बाजू पीठ के पीछे लगा दिया । मगू का सारा शरीर ऐंठने लगा ।

'इन्सान की औलाद है तो आगे किसी पर हाथ न उठाना।' काली ने मगू की कलाई मरोड़ते हुए कहा।

मगू गालियाँ देता हुआ काली की ओर लपटा और उसकी छाती पर दो-हत्थड़ मारने लगा।

'ठहर जा ।' काली ने दांत पीसते हुए कहा और मगू को गर्दन से पकड़ कर नीचे गिरा दिया। वह अपना एक पांव उसकी कलाई और दूसरा उसकी छाती पर रखता हुआ बोला

'अगर जरा-सा ज़ोर दे दूं तो तेरी हड्डियां गर्म भट्ठी में भुन रहे चनों की तरह तड़ाख-तड़ाख करने लगेंगी।

जब छाती पर दबाव के कारण मगू की सांस रुकने लगी और उसकी आंखें बाहर निकल आईं तो काली ने अपने पांव उठाते हुए कहा

बस इसी ताकत पर इतना अकड़ता है?

मगू कपड़े झाड़ता हुआ उठा और बहुत क्रुद्ध स्वर में बोला

अगर तुम्हें कैद न कराया तो मेरा नाम भी मगू नहीं है।

'जाता है यहां से कि नहीं। बड़ा आया थानेदार का साला। जा, जाकर चौधरी के तलवे सहला। उसके पांव में भी खारिश हो रही होगी।'

काली को अपनी ओर बढ़ता देखकर मगू गालियां बकता हुआ छप्पड़ से बाहर चला गया। जब वह काफी दूर निकल गया तो दीनू काली के पास आकर भयभीत स्वर में बोला

'काली दास, बुरा हुआ। मगू बड़ा नामुराद आदमी है। अब यह चौधरी को तुम्हारे खिलाफ भड़काएगा।

काली उसकी बात का कोई उत्तर दिए बिना बोला

'परजापता, मिट्टी फेंककर जल्दी आ जाना। और देख इस झगड़े के बारे में किसी से बात न करना।

मैं क्या कहूँगा। मैं गरीब आदमी हूँ—मुझमें तो मार खाने की हिम्मत नहीं है। दीनू ने कानों को छूते हुए कहा।

दीनू के जाने के बाद काली कुछ समय तक यूं ही खड़ा इधर उधर देखता रहा और उसने फिर इत्मीनान का सांस लिया और सोचने लगा कि और कुछ न सही आज उस मगू की ताकत का पता चल गया। साथ ही उसके दिल में खौफ की एक परछाईं लहरा गई कि अगर मगू ने चौधरी से कह दिया तो बात बढ़ जाएगी। उसने इस भय को झटकते हुए सोचा कि समय आने पर वह चौधरी से भी निपट लेगा। डर डरकर दिन गुजारने से मर जाना ही

अच्छा है।

दीनू वापस आया तो काली के मन से मंगू के साथ झगड़े से पैदा होने वाली बेचैनी, घृणा और क्रोध दूर हो चुके थे। उसने बोरे भरकर दोनों गधों पर लदवा लिए और कुदाल उठाता हुआ बोला

'परजापत जी, धूप बहुत तेज हो गई है। अब दिन ढले ही काम शुरू करेंगे।' वे गधों के पीछे चलने लगे। दीनू काली के बहुत निकट होकर बोला

'जब मैं इधर वापस आ रहा था तो मंगू चौधरी की हवेली के बाहर खड़ा था।

१०

दोपहर के समय तकिए में हर आदमी चमादड़ी की ओर उत्सुकता से देख रहा था। ताश और चौपड़ बंद पड़ी थी। गपशप भी ठप्पी थी। लेकिन जब उन्हें चो में काली नजर आया तो वहां एकदम हलचल सी मच गई। लेटे हुए लोग उचक कर बैठ गए। बैठे हुए लोग उठकर खड़े हो गए। काली तकिए में दाखिल हुआ तो एक साथ कई आवाजें आइं

'काली इधर आ जा। यहां बहुत घनी छांव है।

जीतू दौड़कर काली के साथ लिपट गया और उसे उठाकर अपनी खाट पर बिठा दिया। वह हांफता हुआ बोला

'बाबू जी आज तूने मेरे मन की मुराद पूरी की है। साले को ऐसा मारा कि उम्र भर याद रखेगा। बड़ा फन्नेखां बना फिरता था।'

काली हैरानी से जीतू की ओर देखने लगा कि यहाँ कैसे खबर पहुंच गई। वह चकित-सा बोला

'किस की बात कर रहे हो?'

उसी रानीखां के साले की जो चमादड़ी का चौधरी बना फिरता है।' बन्तू ने कहा।

मैंने तो किसी को नहीं मारा।' काली ने भावहीन स्वर से कहा। सब

खिलखिला कर हँसने लगे जैसे काली की खिल्ली उडा रहे हो।

सब लोग उस के गिर्द इकट्ठे हो गए तो काली ने चारो ओर नज़र दौडाई। बड के नीचे एक ओर दीनू अपनी पगडी बिछा कर लेटा हुआ था। काली ने उसे आवाज़ दी तो रेतली ज़मीन के साथ यू चिपट गया जैसे गहरी निद्रा म हो। काली ने उसे बराबर पुकारा तो वह आख मसलता हुआ उठा और उसके पास आकर सहमी हुई आवाज़ म बोला

मैंने किसी को नही बताया कि तूने मगू को मारा है। जिस की जी चाहे सौगध ले लो।'

परजापता डरता क्या है? तूने किसी की चुगली नही खाई, निदा नही की।' जीतू ने दीनू का हौसला देते हुए कहा। दीनू कुम्हार, काली के तगडे शरीर को देखकर और भी सहम गया और फिर जीतू की ओर इशारा करता हुआ बोला

'मैं तो कुछ भी नही बता रहा था। यही कुरेद-कुरेदकर पूछ रहा था।'

दीनू की बात पर सब हसने लगे। जीतू काली की बाज़ू से पकडता हुआ बोला

बाबू जी, यह बताओ लडाई कैसे शुरू हुई थी?'

'मगू की तो किसी भी बात से लडाई शुरू हो सकती है। बन्तू ने उत्तर दिया।

यारो चुप रहो काली की ज़बान से पूरी कहानी सुनेगे। सन्तू ने हाथ से सब को खामोश रहने का इशारा किया। काली चुप रहा तो बन्तू रोने की बनावटी आवाज़ निकालता हुआ बोला

निक्कू मगू को मार पडी है। जाकर उसे उठा ला। शायद अभी तक छप्पड म ही पडा होगा।'

निक्कू को चुप देखकर बन्तू उसे कुछ और कहने ही वाला था कि जीतू ने उसे रोक दिया।

ठहर यार बाबू जी से पूरी बात तो सुन लेने दो। बाबू जी बताओ ना लडाई कैसे शुरू हुई थी।

कोई खास लडाई नही हुई ।'

काली ने ये शब्द इतनी गम्भीरता से कहे कि सब चुप हो गए। काली को इस बात पर हैरानी थी कि अब जीतू बन्तू सन्तू इत्यादि शेर बने हुए हैं परन्तु जब मगू यहा होता है तो सब यू चुप बैठ जाते है जैसे इन्हे साप सूघ गया हो।

कुछ समय के लिए सब खामोश हो गए। काली के गम्भीर स्वर ने उनकी खुशी को काफूर कर दिया था। काली को उनके मुरझाए हुए चेहरे देखकर हँसी आ गई और वह जीतू की रान पर हाथ मारता हुआ बोला

आज तेरे पहलवान की मैंने सब खरमस्तियाँ झाड़ दी हैं।' वह मंगू के साथ अपने झगड़े की कहानी सुनाने लगा तो सब के चेहरे एक बार फिर दमकने लगे। काली ने उन्हें बताया कि उसने मंगू को चित्त गिराकर उसकी छाती पर पाँव रखकर कहा कि अगर वह आदमी की औलाद है तो आज के बाद किसी पर हाथ नहीं उठाएगा। काली अगर झगड़े की कोई कड़ी भूल जाता तो दीनू उसे बीच में जोड़ देता।

बातों-बातों में दिन ढल गया तो लोग घड़ी भर आराम करने के लिए लेट गए। काली भी तंद्रा की हालत में था जब दासू चौकीदार ने रूठे हुए बच्चे की तरह सब से अलग पड़े निक्कू से पूछा

काली है यहाँ ?

काली ने अपना नाम सुना तो चौंक कर आँखें खोल दीं।

क्या क्या बात है ? निक्कू खाट से उठता हुआ बोला।

चौधरी जी ने उसे दीवानखाने बुलाया है।

वह सामने कबूतर की तरह आँखें बन्द किए हुए पड़ा है। जाकर उठा ले। निक्कू ने काली की खाट की ओर संकेत करते हुए कहा।

दासू को देखकर सब लोग उठ बैठे और आँखों ही आँखों में इशारे करते हुए एक दूसरे से पूछने लगे कि वह क्या कह रहा है। काली खाट से उठता हुआ बोला

दासू क्या बात है ?

चौधरी ने तुम्हें दीवानखाने बुलाया है।

दासू के शब्द सुनकर दीनू कुम्हार का खून खुश्क हो गया और वह सरकता सरकता सरकंडों के पीछे चला गया ताकि दासू की नजरों से ओझल हो जाए। काली ने दीनू की तलाश में चारों ओर देखा और उसे वहाँ न पाकर मुसकराता हुआ ऊँची आवाज़ में बोला

परजापता गधे लेकर छप्पड़ पर पहुँच जाना मैं चौधरी जी की हवेली से सीधा वहीं आ जाऊँगा।'

काली को चौधरी की हवेली से बुलावा आने पर सब सहम गए। जीतू ने भसू को एक ओर ले जाकर धीमी आवाज़ में पूछा

चौधरी ने काली को क्या बुलाया है ?

पहले तो दासू चुप रहा लेकिन जीतू के बार-बार पूछने पर वह इधर उधर देखकर गोपनीय स्वर म बोला

आज मैं सवेरे स ही दीवानखाने म था। एसा लगता है कि काली न मगू की अच्छी मुरम्मत की ह। साले को जान स मार देता तो अच्छा था। सारी दोपहरी चौधरी के तलवे सहलाता हुआ विलाप करता रहा है। एक-दो बार तो दहाड मार कर रोया भी। यह तो मुझे पता नही उसने चौधरी म क्या कहा ह लकिन वह था गुस्स मे।

जीतू ने आंखो ही-आखो म बन्तू का सारी बात समझा दी। काली भी ताड गया कि उसे मगू क साथ झगडे के सिलसिले म ही बुलाया गया है। वह दीनू को छप्पड पर भेजने के लिए जीतू की तकीद करके दासू के साथ चल दिया। जब काली और दासू कुछ दूर निकल गए तो निक्कू जीतू और बन्तू का मुह चिढाता हुआ बोला

क्या ?क्या माँ मर गई है जा इस तरह चुप बठे हो ?'

फिर वह अपनी छाती थपथपाता हुआ बोला

मगू का डेन्ना बैल के सींगो पर चढने क बराबर है। अब खैर मनाओ कि काली थान स इधर ही बच कर आ जाए।

जीतू और बन्तू चुप रह तो निक्कू उनके मुह की ओर अपना चप्पा बलाता हुआ कहने लगा

अब यहा क्या बठा है ? जा जाकर अपने बाप् का छुडा ला ?

निक्कू की बातें सुनकर जीतू खीज गया और उसकी ओर झुकता हुआ बोला

मगू कोई रब नही है। तेरी मेरी तरह चमार है। तू धौंस ता एस द रहा है जस मगू इलाके का थानेदार लगा हुआ है।

मगू के सामने कहो तो बात भी है। पीठ पीछे ता लोग सरकार का भी गाली दे लेते है। निक्कू न जीतू का ललकारा।

जीतू और निक्कू म बात बढने लगी तो बाकी लोग उनम बीच-बचाव कराने लग।

लोग अभी तू तू मैं मैं म लगे हुए थे कि काली तकिए म वापस आ गया। उसने फटदार कपडे की कमीज और खाकी निक्कर पहन रखी थी। पाव म पशावरी चप्पल था और धूप स बचने के लिए सिर पर गाढे के साफे की जगह तौलिया रखा हुआ था। उसकी वेष भूषा देखकर सब के मुह हरत स खुले रह गए। जीतू काली के कपडो को प्रशसा भरी दृष्टि स देखता हुआ प्रसन्नभाव

से बोला

'मेरा बापू जी आज तो सचमुच का बाबू लग रहा है।'

निक्कू खिलखिलाकर हँस पड़ा।

'रही सही कसर चौधरी पूरी कर देगा। वह थोड़े दिन पहले ही विलायती जूता लाया है।'

काली ने निक्कू की ओर कोई ध्यान न दिया और जीतू के निकट जाकर बोला

'परजापत के साथ छप्पड़ में जाकर गधों पर बोरे लदवा देना। मिट्टी मैं सवेरे ही खोद आया था। मैं भी वहां जल्दी से जल्दी पहुंचने की कोशिश करूंगा।'

काली चौधरी की हवेली की ओर जाने वाले बड़े रास्ते की ओर बढ़ गया। सब आँखें उस पर लगी हुई थीं। ताया बसंता उसकी ओर ध्यान से देखता हुआ बोला

'काली का रंग चिट्टा होता तो इन कपड़ों में यह भी गोरा साहब दिखाई देता।'

'अगर साहब नहीं है तो चौधरी बना देगा। पिछले दिनों जीतू को तो चौधरी ने साहब बना दिया था।' निक्कू ने जीतू की ओर देखते हुए कहा। और अपनी खाट उठाकर चमादड़ी की ओर चला गया।

निक्कू गली में प्रवेश करते ही अपनी पत्नी प्रीतो को आवाजें देने लगा। प्रीतो कोठड़ी में सो रही थी। निक्कू ने उसे झंझोड़कर उठाया और एक ही सांस में पूरी बात बता दी। प्रीतो सिर पर दुपट्टा लेना भी भूल गई और मंगू की माँ जस्सो के घर होकर काली की चाची प्रतापी के पास आ गई।

काली के घर में मुहल्ले में हाहाकार मच गई। चाची प्रतापी और जस्सो एक-दूसरी को गालियां देती हुई स्यापा कर रही थीं और ज्ञानो हैरान-सी सोच रही थी कि प्रीतो के मुंह कैसे लगे वह।

११

काली शाम के पाँच बजे छत में मकान में खड़ा होकर चौधरी की हवेली की ओर देखने लगा। उसे महसूस हुआ कि लच्छू का मकान जिसमें बहुत आधा

छुट्टी के समय खेलते हैं, पहले से काफी छोटा हो गया है और हवेली की दीवार स्कूल के बहुत नजदीक पहुच गई है।

काली मदान से बड के दो बडे वृक्षा की ओर चला गया जहा दोपहर के समय चौधरी हरनाम सिंह और मुहल्ले के दूसरे चौधरी आराम करते हैं। लेकिन वहा किसी को न पाकर वह हवेली के फाटक के सामने आ गया। फाटक पर लगी हुई जिस्ती चादरो का रग काला पड गया था। यह फाटक चौधरी हरनाम सिंह के ताऊ बसावा सिंह ने उन दिनो बनवाया था जब उसे जल्दारी मिली थी। हवेली के अन्दर दीवानखाना भी जल्दारी के दिनो म ही बनाया गया था।

काली ने फाटक को धीरे से खोलकर अन्दर झाका और फिर आगे बढकर बन्द कर दिया। फाटक के खुलने और बन्द होने पर चरा चरा की आवाज आई तो एक कुत्ता जोर से भौंका। साथ ही दालान से टँगर टगर टगर की आवाज आई। लेकिन कुत्ता भौंकता हुआ काली की ओर दौड आया। काली पत्थर का एक टुकडा उठाकर उसे डराने धमकाने लगा। दालान से दासू दौडा और कुत्ते को पट्टे से पकड कर दालान की ओर ले गया और काली को दीवानखाने की ओर जाने का सकेत दिया।

काली दीवानखाने की ओर जाता हुआ हवेली म चारो ओर देखने लगा। बाइ ओर दालान म दो भसें और एक घोडी बँधी थी। उसके साथ ही एक और दालान मे बैलो के लिए लम्बी पक्की खोर बनी हुई थी। उसी दालान म दूसरी ओर दो पहियो वाली बैलगाडी खडी थी और बाहर गडडा खडा था। दोनो दालानो के सिरो पर एक एक कोठडी थी। दूसरी कोठडी से दीवानखाने तक एक छोटी सी दीवार थी जिसके पीछे चौधरी का तीन मजिला रिहायशी मकान था। दीवानखाने का पिछला हिस्सा भी रिहायशी मकान से मिला हुआ था।

काली तीन सीढियाँ चढकर दीवानखाने के चबूतरे पर आ गया और फिर बरामदे म रुककर बारी-बारी तीन दरवाजो की ओर देखने लगा जिन पर बारीक सरकडो की चिक लटक रही थी। वह इस असमजस मे था कि कौन सी चिक उठाकर अन्दर जाये कि एक चिक के पीछे से चौधरी हरनामसिंह का भतीजा हरदेव बाहर निकला। काली ने उसे एकदम पहचान लिया और बदगी करता हुआ मुसकराकर बोला

'चौधरी हरदेव, पहचाना नही ? मैं काली हूँ।'

हरदेव कुछ क्षणो के लिए चकित सा उसे पहचानने की कोशिश करता रहा

और फिर उसमें मोहन म छ साल पहले का कमजोर लेकिन मजबूत हड्डी का लड़का उभर आया। वह काली की ओर हैरत और प्रशंसा भरी नजरों से देखता हुआ प्रसन्नभाव से बोला

सुनाओ काली—कब वापस आया तू ? फिर उसके तगड़े शरीर को देखकर अपने बाजुओं की मछलियों और पट्ठों को दोनों हाथों से दबाता हुआ कहने लगा

जिसम अच्छा कमाकर आए हो।

काली उत्तर म मुसकरा दिया। हरदेव अपने सारे शरीर को झटकता हुआ बोला

सवेरे आकर मेरी मालिश कर जाया करो। इस गाँव म एक भी ऐसा चमार या कमीन नहीं है जो अच्छी तरह मालिश कर सके। मगू से कभी-कभी मालिश कराता हूँ लेकिन उसके हाथों म जान ही नहीं है।

काली उत्तर म मुसकराता हुआ बोला

बड़े चौधरी साहब कहाँ हैं ?

हरदेव ने एक चिक की ओर इशारा किया और उसे आने की ताकीद करता हुआ बाहर निकल गया।

काली चिक उठाकर अन्दर चला गया और दरवाजे के पास ही रुक गया। चौधरी हरनाम सिंह सूती चारपाई पर लेटा हुआ था। मगू दरवाजे से जरा हटकर छत से लटक रहे झालरदार पंखे को धीरे धीरे खींच रहा था। काली की आहट पाकर चौधरी ने आँखें खोल दीं और उसे बैठने के लिए इशारा करके करवट बदल ली। वहाँ बैठने लिए कुछ नहीं था। काली ने जमीन पर बैठने की बजाय खड़े रहना ही मुनासिब समझा। वह मगू की ओर देखने लगा जो नंगी जमीन पर पाँव पसारे बैठा पंखे की रस्सी खींच रहा था।

जब चौधरी ने दो चार बार करवट बदली तो मगू पंखा छोड़कर रिहा-यशी मकान की ओर खुलने वाले दरवाजे म खड़ा होकर आवाजें देने लगा

ओ नत्थू चौधरी जी के लिए बादामों की ठंडाई ले आओ।' वह इधर-उधर घूमता हुआ यूँ आवाजें दे रहा था जैसे इस घर के इन्तजाम म उसे खास दखल हासिल हो। जब उसे कुछ न सूझता तो दीवानखाने के चबूतरे पर खड़ा होकर कुत्तों के नाम पुकारने लगता।

थोड़ी देर के बाद चौधरी हरनाम सिंह उठ बैठा। सिर पर साफा रखा और खाट पर पाँव लटका कर बैठ गया। काली को खड़ा देखकर उसने माथे

पर त्यूडिया चढ़ आई। कोई और चमार होता तो उसे वह तुरन्त ही दो चार गालियां सुना देता लेकिन काली का डील-डौल और वेष भूषा देखकर वह चुप रहा। बादामों की ठंडाई पीकर वह काली से बोला

तुम पर कोई नई जवानी नही आई है जो राह जाते लोगों से लड़ाई मोल लेता है। ऐसी अन्धी जवानी जल्दी ही सकी पूह-खदक में जा गिरती है।'

काली चौधरी की बात को पूरी तरह समझ न सका और धीमे स्वर में बोला

'चौधरी जी, मैं आपकी बात समझा नही। मैं तो किसी के साथ झगड़ा नही करता।'

'आज तूने मंगू को मारा। अगर उसकी कोई हड्डी-पसली टूट जाती तो कौन जिम्मेदार होता?

'चौधरी जी पहल मैंने नही की थी। मैं छप्पड़ में मिट्टी खोद रहा था तो मंगू ने पहले मुझे गालियां दी फिर उसने गधा पर लदे हुए मिट्टी के बोरे नीचे गिरा दिए। बाद में उसने मुझ पर हाथ उठाया तो मुझे भी जवाब देना पड़ा।

'तूने कुछ कहा होगा तो उसने हाथ उठाया। तेरा झगड़ा मंगू से हुआ लेकिन तूने कुदाल घोड़ी को मारी। अगर उसकी टांग पर लग जाती तो मेरा पांच सौ रुपया का जानवर नाकारा हो जाता। वह डर कर ऐसी भागी कि उसे दो आदमी नगल के पास से पकड़ कर लाए हैं।

चौधरी ने उत्तेजित स्वर में कहा।

'मैंने तो घोड़ी देखी तक नही कुदाल कैसे मारता? यह बिलकुल झूठ है। आप मंगू को मेरे सामने बुलाकर पूछ लें। काली उत्तेजना में चौधरी की चारपाई की ओर एक कदम बढ़ आया। चौधरी सरहाने से टेक लगाता हुआ बोला

'गांव में रहना है तो भलमानसी से रहो। जिस थाली में खाते हो उसी में छेद करना चाहते हो?'

चौधरी जी मैं किसी की थाली में नहीं खाता इसलिए छेद करने का सवाल ही नही उठता।' काली ने बहुत गम्भीर स्वर में कहा।

काली के इस उत्तर से चौधरी चकरा गया। आज तक उसके सामने किसी कमीन या चमार ने इस ढंग से बात नहीं की थी। उसे क्रोध तो बहुत आया लेकिन अपने आप पर काबू पाता हुआ बोला

दया, आपस म प्रेम प्यार स रहो। तुम्हारी कौन सी जायदाद साँनी है जो तुम लडत हो।

काली कुछ देर के लिए खामोश खडा रहा और फिर नम्रता स बोला

'चौधरी जी आप कह तो छप्पड स मिट्टी खोद लूँ।

छप्पड सबका साँझा है। क्या कमीन क्या चमार—क्या जाट क्या भगजन जितनी जी चाह मिट्टी खोद लो लेकिन इतना ख्याल रखना कि वहाँ बहुत गहरा गड्ढा न बन जाए। चार साल ऊँचे मुहल्ले म पूरण सिंह न वहाँ कुआँ सा खोद लिया था। बरसात म छज्जू शाह की भैंस उसम एसी फँसी थी कि उस बल्लियाँ देकर निकालना पडा।' चौधरी न काली की ओर देखते हुए कहा। कुछ क्षणो के बाद काली हाथ मलता हुआ बोला

अब जाऊँ ?'

चौधरी ने सिर हिलाकर जान की अनुमति देते हुए कहा

मेरी बात याद रखना। दगा फसाद करोगे तो नुकसान उठाओगे।

काली ने कोई उत्तर न दिया और बदगी करके कमरे स बाहर निकल आया।

मगू दीवानखाने के चबूतरे की सीढियो पर बैठा था। काली को देखकर वह नजरें बचाकर बरामदे की ओर चला गया। चौधरी ने मगू को आवाज दी तो वह जल्दी स कमरे म घुस गया। फिर चौधरी की कडकदार आवाज गूँजी

कुत्ते की औलाद तून घोडी को खुल्ला क्यो छोड दिया था। कोई ले जाता तो क्या तेरा बाप इतने रुपय भरता ? कुत्ता चमार हर बात निराली करता है। चौधरी को गरजते सुनकर काली एक क्षण के लिए रुक गया। उसे चमार के शब्दो स बहुत चिढ थी। उसने फाटक की ओर बढते हुए निणय कर लिया कि वह चौधरी हरदेव की मालिश करन के लिए कभी नही आएगा।

काली हवेली स सीधा छप्पड की ओर चला गया। वहाँ जीतू मिट्टी उखाड रहा था। उसे देखते ही जीतू ने कुदाल छोड दी और काली की ओर बढता हुआ बेचनी स बोला

क्या बुलाया था चौधरी ने ?

वही मगू वाली बात थी ? काली न बेध्यानी से उत्तर दिया।

'क्या कहा उसन ?

कोइ खास बात नही हुई उल्टा मगू को डाट पड गई। काली बहुत

उदास और क्रुद्ध स्वर म बोला

मगू के साथ बात करते वक्त चौधरी उसे कुत्ता चमार जरूर कहता है।'

और क्या उसे राजा साहब कहकर पुकारता ? चमार वह जन्म से है और कुत्ता अपनी करतूतों से बन गया है।' जीतू ने हँसते हुए कहा

जीतू हवेली म हुई बातचीत का विस्तार पूछ कर काली म बोला

अच्छा बाबू यह बता तूने मगू का कहाँ पटका था ?'

'क्या ?'

मैं उस जगह पेशाब करूँगा।

ऐसी बात मत कहो। आखिर वह भी हमारी तरह कुत्ता चमार है।' काली ने कृत्रिम गम्भीरता मे कहा।

काली न अपनी कमीज और चप्पल उतार कर एक ओर रख दी और कुदाल उठाकर मिट्टी खोदने लगा। जीतू एक ओर खडा होकर उसम बोला

मुहल्ले मे निक्कू और प्रीतो न मशहूर कर दिया है कि तून मगू की बाँह तोड दी है और तुझे थाना पकडकर ल जाएगा। अब मैं इधर आ रहा था तो जस्सा बेरी के नीचे खडी तेरा स्यापा कर रही थी। प्रीतो भी उसकी हाँ म हा मिला रही थी।'

काली ने कुदाल रोक दी और उत्तेजित स्वर म बोला

'चाची ।

जीतू न काली को टोकत हुए कहा

चाची रुद कम और रो ज्यादा रही थी। उसे प्रीतो न विश्वास दिला दिया था कि तुम्हे थाना पकडने आ रहा है।'

काली कुछ क्षणा तक सोच से डूबा रहा और फिर जीतू स बोला

तू घर जाकर चाची को समझा दे कि मुझे थाना पकडने नहीं आ रहा है। जस्सा से कह देना कि मगू की बाह नहीं टूटी है-और वह चौधरी के कुत्ते की दोनो हाथो से मालिश कर रहा है।

जब काली और दीनू छप्पड से निकले तो सूर्य अस्त हो रहा था। वह घर पहुचे तो मिट्टी के ढेर के पीछे दीपक का मन्द सा प्रकाश फैला हुआ था और मिट्टी के ढेर का साया छोटी सी पहाडी बन गया था। काली न गधा की पीठ स मिट्टी के बोरे नीचे फेंके तो दीपक की बत्ती एकदम बहुत ऊँची कर दी गई। काली ने देखा कि दो आखे उस पर जमी हुई थी। वे आँखें उसन पहले भी देखी थी लेकिन इस समय वे उसे बहुत ही अजीब बडी धुली हुई सी प्रतीत हुई। चाची ने उठकर काली के सिर पर वारना किया और माथा चूमकर रुँधी

हुई आवाज म बोली

'काला, मेरे तो प्राण निकल गए थ। प्रीतो ने सारे मुहल्ले म मशहूर कर दिया कि तूने मंगू की बाँह तोड दी है और थाना तुम्हे पकडने आ रहा है।'

'न मंगू की बाँह टूटी है और न ही थाना मुझे पकडने आ रहा है।' काली ने तीखे स्वर म कहा। चाची ने बहुत जोर से साँस छोडी जो वह बहुत देर से उसकी छाती म अटकी हुई थी और तेजी से गली म दौड गई।

काली चाची की सब बातो को अनसुना करता हुआ मिट्टी के गिरे हुए ढेले समेटने लगा। उसे पहली बार पछतावा हो रहा था कि मंगू के साथ उसे झगडा न करना चाहिए था।

१२

मकान बनाने के लिए कुछ आवश्यक सामान जुटाने के बाद काली ने बुनियाद खोदने का विचार किया। उसकी दाइ ओर बन्तू का मकान था और बाइ ओर निक्कू का। काली ने जीतू की सहायता से बुनियादो के निशान लगा दिए।

सबसे पहले उसने बन्तू और उसके पिता और माता चाननराम और ठाकुरी को बुलाकर उनकी ओर बुनियाद के निशान दिखाए और कहने लगा

'आप अपनी तसल्ली कर लें कि कही मैंने आपकी जगह तो नही घेर ली है।'

उन्होने काली की बात का बहुत बुरा माना और चाननराम अपना रोष प्रकट करता हुआ बोला

'तुम कौन सी मुरब्बो की तकसीम कर रहे हो जो ऐसी बात कहते हो। हम तो खुशी हुई है कि तुम्हारी पक्की दीवार के सहारे हमारी कच्ची दीवार भी खडी रहेगी।'

काली लज्जित स्वर म बोला

'चाचा कइ लोग एतराज कर देते हैं। कभी-कभी तो इसी बात पर झगडा फिसाद खडा हो जाता है। इससे तो यही अच्छा है कि सब मामला पहले ही सुलझा लिया जाय।'

उनके जाने के बाद काली निक्कू के घर गया और उसे बुनियाद का निशान देखने के लिए कहा। निक्कू तो चुप रहा लेकिन उसकी पत्नी प्रीतो काली से तीखे स्वर में बोली

काली, तू तो ऐसी बात कर रहा है जैसे हम तेरे शरीक हैं।'

निक्कू भी अपनी पत्नी की हाँ में-हाँ मिलाता हुआ सिर धुनने लगा। काली हँसी मजाक में निक्कू को घर से निकाल लाया और उसे बुनियाद के निशान दिखा दिए।

'चाचा, देख लो, निशान ठीक है ना ? कोई एतराज हो तो अभी बता दो।'

निक्कू ने सिर हिलाकर अपनी अनुमति दे दी और घर वापस चला गया। उसके पीछे पीछे मगू भी गली में आ रहा था। वह निक्कू के साथ उसके घर में घुस गया।

काली ने यह देखकर सोचा कि सबसे पहले निक्कू की दीवार के साथ बुनियाद खोद ले। उसने जीतू की सहायता से काम शुरू कर दिया। अभी वह कच्चे निशानों को पक्का ही कर रहे थे कि निक्कू सिर पर चादर लपेटे और हाथ में पतली सी लाठी पकड़कर काली के सामने आ खड़ा हुआ और रोब से बोला

'मैं यहां बुनियाद नहीं खोदने दूगा। यह मेरी जगह है।

काली चकित-सा उसकी ओर देखता हुआ बोला

'चाचा, जब मैंने तुम्हें निशान दिखाए थे तो उस समय तो तू चुप रहा। अब मैंने बुनियाद खोदनी शुरू की तो सिर पर चादर बाधकर झगड़ा करने आ गया है।

निक्कू निशान लगी जमीन पर पांव रखता हुआ कहने लगा

यह जगह मेरी है। मैं इस जगह बुनियाद नहीं खोदने दूगा।

चाचा, इस तरह शोर मचाने से क्या फायदा। धीरज से बात कर। काली ने कुदाल फेंकते हुए कहा।

'मेरी जान चली जाए परवा नहीं लेकिन मैं तुम्हें यहाँ बुनियाद नहीं खोदने दूगा।'

शोर सुनकर कई स्त्रियाँ अपने घर से बाहर निकल आइ। कुछ काली के घर के सामने इकट्ठी हो गइ। हजूम के बढ़ने के साथ-साथ काली की परेशानी भी बढ़ने लगी। निक्कू ने जब देखा कि गली में काफी भीड़ इकट्ठी हो गई है तो वह लोगों की महानुभूति पाने के लिए रुँधी हुई आवाज़ में बोला

'काली के पास पसा है और वह तगडा और जवान है तो इसका यह मतलब नहीं कि गरीब और कमजोर पडोसी का हक मार ले मैं यहीं मर जाऊँगा लेकिन इसे अपनी जगह म बुनियाद नहीं खोदने दूगा ।'

काली भी गली म खडी स्त्रिया को सम्बोधित करता हुआ बोला

मैंने कच्चे निशान लगा लेने के बाद इनके सामन हाथ जोडकर कहा कि आकर निशान देख लो । यह तो चुप रहा लेकिन चाची प्रीतो मुझे डाटने लगी कि मैं उनपर बेएतबारी कर रहा हूँ । फिर भी मैंन इसे यहाँ लाकर निशान दिखा दिए और इसने कोई एतराज न किया । अब लाठी उठाकर झगडा करन आ गया है ।'

काली निक्कू के पास आकर उसका हाथ पकडने की कोशिश करता हुआ बोला

'चाचा मरी बात तो सुनो ।

निक्कू झटके स अपना हाथ छुडाता हुआ ऊँचे स्वर म बोला

जोरावर का सात बीस का सौ । एक तो मेरी जमीन खा रहा है और अब मुझे मारने पर भी उतारू हो गया है ।

निक्कू अपने घुटने को इस तरह सहलाने लगा जसे उस पर सख्त चोट लगी हो ।

प्रीतो अब तक चुप खडी थी लेकिन निक्कू को घुटना सहलाता देखकर वह बहुत ही तीखे स्वर म बोली

मोए काली को नई जवानी आई है । हर एक को मारता फिरता है ।

और फिर वह बाजू लहराती हुई बाली

माए का प्लेग निकल—काला ताप चढे—दर दर का भिखारी बन ।'

चाची न प्रीतो का गालियाँ दत हुए सुना तो वह भी भडक उठी

प्लग निकल तुझे और तरे घर वाल का और तरे बच्चा की फौज का जो सारा दिन घर घर क दर सूँघत फिरत हैं ।

ज्ञाना चाची क पास खडी थी । वह उस चुप कराकर प्रीतो क पास चली गई और उसक मुह क आग हाथ रखता हुई बोली

चाची मरदा का झगडा है तू बीच म क्या दखल दती है ।

चोट मुए समसान वाली तू कौन है । आई है उसक साथ हमदर्दी करन । इस हरामी का भाई की मार का इतनी जल्दी न भूलना ।

प्रीतो न ज्ञाना का हाथ अपन मुह स हटात हुए कहा । ज्ञाना शर्मिन्दा-सी पीछे हट गई ।

जब प्रीतो और चाची का बोल-बोलकर पसीना छूटने लगा तो काली चाची का कधा धीरे से दबाता हुआ बोला

'चाची, क्या बोल रही हो। झगडा तो यू शुरू कर दिया है जसे यहा खून हो गया हो।

'खून कर दो। तुम्हारे सिर पर तो खून सवार है ही। पल्ले चार पैसे क्या हो गए कि हर एक के पीछे लठ लेकर घूमता फिरता है। प्रीतो का क्रोध क्षण प्रतिक्षण बढ़ता जा रहा था। काली के कहने पर चाची चुप हो गई थी। नानो ने जब प्रीतो को गालिया देते सुना तो वह उसे चुप कराने के लिए उसकी ओर गइ। उस अपनी ओर आती देख प्रीतो चीखती हुई बोली

राड बाराने पाल रही है। उनकी तरफदारी तो ऐस कर रहा है जसे मकान काली का नही, इसी का बन रहा हो।

नानो बुदबुदाती हुई उल्टे पाव वापस आ गई। काली क्रोध से आग-बगूला हो गया लेकिन बहुत सी स्त्रिया को उपस्थित देखकर चुप रहा। चाची से चुप न रहा गया। वह प्रीतो की ओर बढती हुई बोली

पहले तू अपनी खाट के नीचे तो झाककर देख। लुच्ची राड अपने आपको खानदानी समझती है।

शोर सुनकर ताइ निहाली भी वहा आ गइ। जीतू को काली के पास खडा दखकर वह डर गइ। वह घबराई हुई सी जीतू के पास गई और उसका बाज पकडकर बोली

काका चल यहा से। तू खामुखाह क्या झगडे में पडता है।

मा, यहा डाग नही चल रही। जा घर जाकर बठ।' जीतू ताई निहाली को पीछे धकेलता हुआ बोला।

काका साडो की लडाई म तू खामुखाह मारा जाएगा। मुझसे थाना कचहरिया नही भुगती जाएँगी।

जीतू ने ताई निहाली की ओर घूरकर देखा और बहुत तीखे स्वर म बाला

मेरे पीछे-पीछे सारा दिन ऐसे घूमती रहती है जसे मैं दा सालका बच्चा हूँ।'

जीतू ने ताई निहाली को झिडक दिया। ता वह रुँधी हुई आवाज म बोली

यह तो मरी जान का दुश्मन हो गया है।' ताई निहाली चाची प्रतापी के पास आकर बोली

'प्रतापिए, तू ही इसे समझा।'

प्रीतो ने ताई निहाली और प्रतापी को इकट्ठ देखा तो जीतू को भी गालियाँ देती हुई बोली

रांड का पुत्तर सौदागर का घोड़ा कभी सीधी राह पर नही चलते। क्या तू पहली मार भूल गया जो इस तरह फिर अकड़ने लगा है। मुशटंडा कहीं का।

तेरी शराफ्त को भी मैं अच्छी तरह जानता हूँ। जीतू ने बहुत क्रुद्ध स्वर में कहा।

तू औरतों की लड़ाई में क्या बोलता है। काली ने जीतू को डाँटते हुए कहा।

जीतू कुदाल उठाकर निक्कू की ओर बढ़ता हुआ बोला

इस तरह काम होने से रहा। यह तो जूते का यार है।

निक्कू ने जीतू को अपनी ओर आते देखा तो उसे ललकारता हुआ बोला

हिम्मत है तो आगे आ। तेरे टुकड़े कर दूँगा। रांड का पुत्तर अपने आपको बड़ा लाट साहब समझता है।

जीतू ने निक्कू को मोटी सी गाली दी और उसकी ओर बढ़ा लेकिन काली ने उसे अपने बाजुओं में जकड़ लिया।

जीतू होश कर।

प्रीतो जीतू का यह रंग देखकर और भी ज्यादा भड़क उठी

तेरा कुछ न रहे। रब तुम्हें चढ़ती जवानी में उठा ले। तेरी देह में कीड़े चलें।

प्रीतो की गालियाँ सुनकर ताई निहाली भी जवाब में गालियाँ देने लगी। चाची प्रतापी भी निहाली के साथ मिल गई। प्रीतो के साथ उसकी युवा पुत्री ज्ञानो आ मिली। कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। ऐसा लगता था जैसे सारा [illegible] एक साथ [illegible] रही हो। ज्ञानो सबको [illegible] की कोशिश कर रही थी। जब वह फिर प्रीतो के पास आई तो यह उसके मुँह में हाथ देती हुई बोली

[illegible] जा मर [illegible] बनी है। अपने माँ की लाज का सबक [illegible] है।

ज्ञानो भी भड़क उठी और क्रुद्ध स्वर में बोली

चाची ज़बान सँभाल कर बात कर।

चाची प्रतापी प्रीतो की ओर लपकती हुई बोली

'दुनिया म लोकलाज भी कोई चीज होती है। तुम मे वह भी नही। कँवारी लडकी पर लाछन लगात हुए तुम्ह शम नही आती ?'

कजरी तो है ही जा तेरी इस तरह तरफदारी कर रही है। क्या लगती है यह तरी ?

प्रीतो तुम्ह सारी दुनिया अपन जैसी नजर आती है। तून तो हरजाई कुत्तिया को भी पीछे छोड दिया है। तू बाहर निकलती है ता दस मद तरे पीछे होत हैं। तरी लडकी निकलती है तो बीस उसके पीछे होते हैं। अगर तू सच्ची बातें सुनना चाहती है तो आज सुन ले।'

चाची प्रीतो का मुह चिढाती हुई बोली

तू अपनी करतूतें बहुत जल्दी भूल गई है। आज वे चौधरी तुम्हें खटकने लग हैं जिनके घर म सारा सारा दिन पडी रहती थी। तू ता बाजीगरो के कोठा म भी पहुची।

प्रीतो ने चाची को साथ ही दस-बीस गालिया सुना दी।

तू नत्थासिंह की जोरू तू ऊँचे मुहल्ले वाले खडगसिंह की रखेल तू बावक क लाला चमनलाल की लुगाई तूने अपन गाँव के जवान तो क्या, आस-पास के गाँवो के बूढे तक न छाडे। तुम्ह ता अब भी शम नही आती। दस बच्चा की मा बन गई है लेकिन तेरा तल सुर्मा और कघी पट्टी अब भी उाकरिया जसी है। चाची बाजू लहरा-लहराकर बोल रही थी और उसके मुह स झाग बहन लगी थी।

प्रीतो भी लडाई म अपने आपको भूल गई थी। उसका दुपट्टा सिर से खिसककर पाव म आ पडा था। कमीज के बटन खुल गए थ। उसके छोट बच्चे सहम हुए उसकी टागा स चिपट गए थे। वे एक-दूसरी को अनाप शनाप बक रही थी। गाव का कोई जाट ऐसा नहीं था जिसका इस लडाई म जिक्र न आया हो। काली और जातू अपनी बदनीयत के बारे म नय नये ब्योरे सुनकर शम के मारे जमीन म गडे जा रह थे। निक्कू भी गदन झुकाकर जमीन पर बठ गया था।

काली ने जब दखा कि बात औरता की जात से उठकर बच्चा और वहा तक आ पहुची है ता वह चाची क सामन हाथ जाडता हुआ बोला

चाची बस कर। क्या लोगा का तमाशा दिखा रही हो।'

चाची चुप होने की बजाय और भी ज्यादा जार से बोलन लगी। उसका साँस फूल रहा था। वह काली को एक आर हटाती हुई बोली

'बाबा, परे हट जा, रोज रोज का कलेश अच्छा नही होता। आज इस रौं से फसला करके ही रहूँगी।'

काली ने चाची का यह रूप पहले कभी नही देखा था। वह आग की तरह दहक रही थी। वह उस पकडकर पीछे ले आया और अपने घर से दूर चौगान की ओर ले गया। चाची पीछे मुड मुडकर प्रीतो को बराबर गालियाँ दे रही थी। कई स्त्रियाँ चाची के पीछे चली गइ। प्रीतो कुछ देर तक तो पूरे जोश से बोलती रही लेकिन मुकाबले म किसी को न पाकर उसका जोश ठंडा पडने लगा।

काली चाची को चौगान म छोडकर सीधा प्रीतो के पास आया और उसके सामने हाथ जोड कर सिर झुकाता हुआ बोला

'चाची, मैं तुम्हारे पाव पडता हूँ। तेरे सामने सिर झुकाकर बठ जाता हू। तू मेरे सिर पर सौ जूते मार कर एक गिन। सारे गाँव की राख मेरे सिर मे डाल दे लेकिन यह तमाशा बन्द कर दो। मैं तुम्हारे पुत्तर के समान हूँ। मेरे प्राण भी ले लो तो मैं ऊफ नही करूँगा।

काली प्रीतो के पाव की ओर झुका तो वह पीछे हट गई।

यह क्या कर रहे हो ? प्रीतो ने पीछे हटते हुए कहा। काली की बातो ने उसके अन्दर ममता की भावना जगा दी थी।

चाची छाव म आ जाओ। धूप म खडे रहकर कसा हाल कर लिया है। काली ने दुपट्टा उठाकर उसे साफ किया और प्रीतो के हाथ म थमा दिया।

जीतू को काली पर क्रोध आने लगा और वह मुह ही मुह म बुदबुदाया

इस चुडल के पाव पड रहा है कुदाल उठाकर इसके सिर पर नही मारता। उसने घृणा से मुह दूसरी ओर फेर लिया। प्रीतो ने निक्कू की ओर देखा जो सिर लटकाए हुए खडा था। फिर उसका ध्यान बच्चो की ओर गया। आसुओ से उनकी गालो पर लकीरें सी बन गई थी। काली ने आवाज देकर सब को अपने पास बुलाया और उनके सिर पर हाथ फेरता हुआ बोला

रो रोकर बेचारो के चिडिया जसे पतले-पतले मुह निकल आए हैं।

बच्चे मासूमियत से काली की ओर देखने लगे। बच्चो का यह हुलिया देख कर प्रीतो का भी दिल पसीज गया और उसने सबको अपनी टागो से चिपका लिया।

काली निक्कू के पास जाकर उसके सामने हाथ जोडता हुआ बोला

'चाचा अपनी जिद छोड दो। मैं सब काम तुम्हारी मर्जी के मुताबिक ही करूँगा। जहाँ कहोगे वहीं बुनियाद खोदूँगा और अगर कहोगे तो मकान बनाना

ही छोड दूँगा। लोगों को बहुत तमाशा दिखा चुके हो। अब उठो यहाँ से।'

काली के ये शब्द निक्कू पर ठंडे पानी की धार की तरह पडे। उसके मुह से एक शब्द तक न निकला। काली ने दीवार की छाया में खाट बिछा दी और निक्कू को उस पर बिठा दिया। एक बच्चे से पखा मँगवाकर उसे हवा करने लगा। प्रीतो भी उनके पास आ गई। बच्चे भी खाट के चारों ओर जमा हो गए। काली ने सबको घडे का ठडा पानी पिलाया।

काली ने जब देखा कि निक्कू और प्रीतो शान्त हो गए हैं तो वह दोनों को पखे से हवा करता हुआ बोला

चाचा अब बता, तुम्हें ऐतराज किस बात पर है। अगर तू चाहे तो मैं एक हाथ अपनी जगह तेरी दीवार की ओर छोड देता हूँ। लेकिन यह सोच लो कि बरसात में दोनों दीवारें पानी भरने से बोदी हो जाएँगी। और गिर जाने का डर रहेगा।'

निक्कू ने उसे कोई उत्तर न दिया तो वह प्रीतो से बोला

चाची, तू ही बता दे। चाचे को शायद कुछ सूझ नहीं रहा है।

'मैं क्या बताऊँ। मर्दों की बातों में मैं सलाह देने वाली कौन होती हू?' प्रीतो ने ऐंठते हुए उत्तर दिया। काली निक्कू को समझाता हुआ बोला

चाचा, कच्ची दीवार बहुत मोटी होती है। पक्की दीवार तो उतनी मोटी बनेगी नहीं। तुम उठकर देख लो मैंने तुम्हारी दीवार से मिट्टी का एक छिलका तक नहीं उतारा है।'

निक्कू फिर भी चुप रहा तो काली प्रीतो से कहने लगा

चाची तू पूछ कर बता दे। चाचे को शायद मेरे साथ बात करना पसद नहीं है।

प्रीतो निक्कू को डाटती हुई बोली

अब बोलता क्या नहीं? क्या जबान गोता खा गई है?'

निक्कू ने अपना चेहरा ऊपर उठाया। उसके होठ फडफडाए और वह हारी हुई आवाज में बोला

मुझे पहले ऐसा लगा था कि तूने मेरी आधी दीवार भी काट दी है।'

एक बार फिर अच्छी तरह देखभाल कर अपनी तसल्ली कर लो।' काली ने कहा।

निक्कू अब चुप बैठा रहा तो काली प्रसन्न भाव से बोला

यों मुफ्त इतना समय बरबाद कर लिया। न कोई बात थी और न ही उसका कोई सिर पैर।

काली ने मुस्कराते हुए प्रीतो से कहा
'चाची मेरी तू मुझे इतनी गालियाँ क्यों देती है। क्या तू सचमुच दिल से मेरा बुरा चाहती है ?
'मैं तेरा बुरा क्या चाहूँगी। तू तो मुझे अपनी औलाद से भी ज्यादा प्यारा है।' प्रीतो ने स्निग्ध स्वर में कहा।
तो फिर मुझे इतनी गालियाँ क्यों दीं ?'
तू अपने चाचे के साथ झगड़ जो रहा था। औरत को अपने आदमी का दर्द तो होना ही है। मैं भी बोल पड़ी।
'मैंने चाचे से कब झगड़ा किया है ? पूछ लो उससे ? मैंने तो उसको ऊँचा बोल तक नहीं बोला।
'यह तो पिछलग्गू है। किसी ने पढ़ा सिखा दिया होगा सिर पर चादर बाँध और लाठी उठाकर जब यह घर से निकला तो मैं समझी थी कि कहीं काम से जा रहा है। लेकिन मुझे क्या पता था कि यहाँ जायदाद बाँटने आया है। प्रीतो कराहती हुई बोली पता नहीं वह दिन कब आएगा जब यह भी काम पर जाएगा।
काली कुछ देर चुप रहकर कहने लगा
चाची, अगर कहो तो काम शुरू कर दूँ।'
प्रीतो निक्कू की ओर देखने लगी। जब वह चुप रहा तो तीखे स्वर में बोली
'तू भी मुँह से कुछ बोल। फिर वह काली से कहने लगी
'यह तो गूँगा हो गया है।'
प्रीतो ने एक बार फिर निक्कू से सख्ती से पूछा तो वह भरी हुई आवाज में बोला
मैं कब रोकता हूँ ? तेरी जगह है तू जैसे जी चाहे उसे खोद।
थोड़ी देर के बाद निक्कू और प्रीतो अपने घर चले गए।
काली और जीतू ने कुदालें उठा लीं। जीतू अपनी कुदाल को मजबूती से थामता हुआ बोला
पहले निक्कू की दीवार के साथ बुनियाद खोद ले। इसका कोई भरोसा नहीं है। यही घड़ी में सेर और पल में माशा हो जाता है।
काली जीतू की ओर अर्थपूर्ण नजरों से देखता हुआ बोला
तू ठीक कहता है। पता नहीं फिर कब लाठी उठाकर आ जाए।
काली और जीतू दोनों सिरों से एक-दूसरे के साथ शर्त लगाकर बुनियाद

खोदन म व्यस्त हो गए और प्रीतो के बच्चे मिट्टी के ढेले उठाकर एक ओर फेंकन लगे।

१३

निक्कू और काली म सुलह सफाइ की खबर सुनते ही मगू आग बगूला हो गया। वह लाठी उठाकर जूता घसीटता हुआ निक्कू के घर आ गया। उस समय निक्कू सो रहा था। मगू ने निक्कू की टाग झँझोडी तो वह हडबडाकर उठ बठा। वह कुछ क्षणो तक मगू की ओर देखता रहा और फिर रुँधी हुई आवाज म बोला

मगू चाजी चोपट हो गई। तेरे कहने पर काम पर न गया और उधर से कुछ न मिला। घर म आटे की चुटकी तक नही है। पानी पी-पीकर सबके पेट म अफारा पड गया है।'

कुत्ते की औलाद, तू सारी उम्र भूखा रहेगा। तेरे जसे आदमी को तो पानी भी नसीब नही होना चाहिए। मगू ने कडकती हुई आवाज म कहा।

मैंने क्या नही किया? जिस जगह काली ने निशान लगाए थे वहा धरना मारकर बठा रहा। उसे गालिया दी और ललकारा लेकिन वह जवाब म मेरे सामने हाथ जोडता रहा। वह मेरी दीवार की ओर हाथ भर अपनी जमीन छोडने के लिए भी तयार हो गया।

उसने तुम्हारे साथ धोखा किया है। तुमने बना-बनाया काम बिगाड दिया। तुम्हारी जगह मैं होता तो पाच दस रुपये जरूर वसूल कर लेता। मगू निक्कू की ओर घृणा भरी नजरो से देखता हुआ बोला।

रुपये का जिक्र सुनकर प्रीतो चौक गइ। उसने सोचा कि काली का ट्रक रुपयो से भरा हुआ है। इसीलिए प्रतापी दिन म पचास बार उसका ताला टटोलती है। वह मगू के पास आ खडी हुइ और निक्कू के मुह म हाथ देती हुइ बोली

इस मोए को तो सारी उम्र काम करना न आया, अब क्या आएगा। लोग बिगडे खेल बना देते है लेकिन यह बना हुआ खेल बिगाड देता है। मेरी तो

गमी विस्मत फूटी है कि रुपया भी नहीं मिलता । यह मर जाए तो घर म एक नफर तो कम हो ।'

फिर वह मगू की ओर मुडती हुई तीव्र स्वर म बोली

तू भी तो इस सलाह देकर आप चौधरी की हवेली चला गया ।

मगू न प्रीतो की ओर घूरकर देखा तो वह फिर निक्कू पर बरसन लगी

मोया उछलता बहुत है । लेकिन पानी की झाग की तरह बठ भी जल्दी जाता है । काली ने दो चार मोटी बातें की तो यह उसकी कुनियाद तक खोदने पर तयार हो गया ।

यह सुनकर निक्कू भडक उठा और प्रीतो की सात पुश्तो को एक ही गाली म पिरोता हुआ बोला

तू उस पुत्तर पुत्तर कह रही थी । उस छाती क साथ लगाने पर तुली हुई थी मै तरी करतूता को अच्छी तरह समझता हूँ ।

मगू ने जब देखा कि वे दोनो आपस मे ही उलझने लग है तो वह उन्ह खामोश करता हुआ बोला

'टोकरी से गिरे हुए बेरा की तरह अभी कुछ नहीं बिगडा है । अभी आधी कुनियाद खदी है । लोग तो अमारत बन जाने पर भी झगडा खडा कर देत है दोपहर के बाद जब काली काम शुरू करने आए तो तुम पहले ही उस जगह खाट बिछाकर बठ जाना । बाद म मैं अपन-आप सभाल लूगा ।

मगू निक्कू की प्रतिक्रिया जानने के लिए उसकी ओर देखने लगा । निक्कू को मगू की बात पसद नहीं आइ थी और वह उसकी ओर अविश्वास से देखने लगा । काली के साथ झगडे का ख्याल आता तो उसका दिल दहल जाता लेकिन जब रुपया की ओर ध्यान जाता तो उसकी हिम्मत बँध जाती । जब मगू न उसे असमजस मे देखा तो उसको कधे से झझोडता हुआ बोला

तू मद है मर्दों जसे काम कर ।

यह तो सिफ बच्चा की पलटन तयार करने के लिए ही मद है । बाकी यह तिनका भी तोडेगा तो इसकी बाह दद करने लगती हैं । प्रीतो ने निक्कू का मुह चिढाते हुए कहा ।

निक्कू न घूरकर प्रीतो की ओर देखा और हकलाता हुआ बोला

त कहता है ता एक बार फिर कर देखता हू । लेकिन तुम वहा रहना ।

अगर तुमने मदान मार लिया ता रात को दारू (शराब) पिलाऊगा ।

शराब का नाम सुनकर निक्कू की जान म जान आ गई और वह खाट से उठता हुआ बोला

'अगर शाम तक खुदी हुई बुनियाद भी मिट्टी से न भर दी तो मुह पर थूक देना ।

निक्कू मधु के सामने ही सिर पर चादर लपटने लगा तो वह खुश हो गया और बार-बार खँखारता हुआ बदमस्त सांड की तरह गली म आ गया।

दिन ढलने के बाद जीतू को साथ लेकर काली बुनियाद खोदने के लिए आया तो निक्कू पहले से ही सिर पर चादर बाधकर और हाथ म लाठी पकडे हुए वहा बठा था। यह दखकर काली का माथा ठनका लेकिन वह मुसकराता हुआ नम्र स्वर म बोला

'चाचा, धूप म क्या बठा है। उठ, तुम्हारी खाट छाँव म बिछा दता हू ।

उसके नम्र श दा स निक्कू का दृढ निश्चय कमजोर पडन लगा लेकिन रुपया और शराब का ख्याल आते ही उसकी फिर स हिम्मत बँध गई और वह तीखे स्वर म बोला

'सवेरे तुमन धोखे से आधी बुनियाद खोद ली है। अब नही खोदन दूगा।

जीतू भी काली के पास आ गया और उसे कधे स झकझोरता हुआ पूछने लगा

चाचा निक्कू क्या कह रहा है ?'

काली ने बताया तो वह हँसता हुआ निक्कू स बोला

'चाचा बवक्त का ठट्ठा अच्छा नही होता । उठ, काम करने दे।'

निक्कू जीतू को मोटी-सी गाली देकर बोला

'चला जा यहाँ स कजर की औलाद। मेरे मुह लगा तो जमीन म जिन्दा गाड दूगा।'

वह खिलखिलाकर हँस पडा और काली स बोला

निक्कू चौधरी स तू आप ही बात कर। मुझे तो जमीन म जिदा गाड दन की धमकी दे रहा है।

काली ने निक्कू के पास जाकर बहुत गम्भीरता स कहा

'चाचा, क्या समय बरबाद कर रहा है। चल उठ यहाँ से मैं तुम्हारी तरफ आधा हाथ जमीन छोड दूगा ।

तू जगह छोडने वाला कौन है ? तरी हैसियत ही क्या है ? बात तो ऐसे करता है जस मरला का मालिक हो। निक्कू न काली की खिल्ली उडाते हुए कहा ।

'चाचा इस तरह तो वे लोग भी झगडा नही करत जिन्हें मरब्बे बाटन होते हैं। अगर तुम्हे यह शक है कि मैं तुम्हारी जमीन खा रहा हूँ तो मुहल्ले

की पचायत बुलाकर फसला कर ले।

मैं किसी पचायत का नही जानता। एक तो मेरी जमीन खा रहा है और ऊपर से धौंस द रहा है। निक्कू न ऊँचे स्वर म कहा।

उसकी आवाज सुनकर अपने दरवाजे की ओट म खडी प्रीतो बाहर निकल आई और बोली फलाकर काली का सयापा करने लगी। चौगान म बरी के नीचे बठी चाची प्रतापी को खबर मिली तो वह प्रीतो के सारे कुटुम्ब को गालिया देती हुई वहा आ गई। दोना के बीच लडाई घास म लगी आग की तरह भडकने लगी और पल भर म सारा मुहल्ला इकट्ठा हो गया। मद तकिय स दौडकर वहा पहुँच गए।

काली निक्कू को खाट से उठाने की कोशिश करता हुआ बोला

चाचा तू यहाँ से उठ तो सही। मैं अभी तेरे साथ फसला करता हूँ।

अब यहा से मेरी लाश ही उठगी।' निक्कू उसका हाथ झटकता हुआ बोला।

'चाचा लाश उठे तो तेरे दुश्मना की। काली उस फिर उठाने की कोशिश करन लगा तो निक्कू चारपाई क साथ पहले स भी ज्यादा सटकर बठ गया। काली न जब देखा कि निक्कू झगड पर उतारू है तो वह क्रुद्ध स्वर म बोला

जा जाकर अपन वकील को बुला ला। म उसके साथ बात कर लूगा।

काली की इस बात पर लोगा की भीड म जोर का ठहाका गूज गया।

इतनी दर म बाबा फत्तू भी वहा पहुच गया और निक्कू की खाट पर बठता हुआ बोला

निक्कू अब तू बच्चा नहीं है। कल को तेरी लडकी की शादी हो जाए तो साल-दो साल म तू दोहते-पोहती वाला हो जाएगा। अक्ल स काम ल झगडे फिसाद म क्या रखा है।

'तू कौन है मेरे मामले म दखल दने वाला ? बुड्ढा मरघट तक पहुच गया है लेकिन चौधर स बाज नही आता। निक्कू न बाबा फत्तू को खाट स धक्का दत हुए कहा। वह गिरन लगा लेकिन पास खड बन्तू न उस सभाल लिया।

'मद की जबान कोई चीज होनी है। सबर अच्छा भला मान गया था अब फिर मुकर रहा है। यह तो ज्त का यार है। बन्तू न टोकरा फेंकत हुए कहा। कई लोगा न उसका समथन किया। वहाँ मौजूद लोगा को अपने विरुद्ध देखकर निक्कू घबरा गया। लेकिन प्रीतो उस हौसला दन क लिए गाव क बच्च क मुह स रिम्लान झुलाकर बातू लहराती हुई गालियाँ दन लगी।

जब बाबा फत्तू जमाने को कोसता हुआ वहां से जाने लगा तो जीतू निक्कू के पास जाकर बोला

चाचा भल्मानसी से उठ जा वरना मैं खाट समेत तुम्हें गली में फेंक दूंगा।

निक्कू ने गाली देते हुए जीतू की ओर लाठी लहराई लेकिन काली ने आगे बढ़कर उसको सिर से पकड़ लिया और उसके हाथ से खींचकर एक ओर फेंक दिया।

'चाचा तू एक झापड़ की मार नहीं है। मैं जितनी नर्मी दिखा रहा हूं तू उतना ही सिर पर चढ़ता जा रहा है।'

निक्कू ने काली की लाल आंखें देखीं तो नजरें नीचे झुका लीं। वह सोच रहा था कि काली को उत्तर दे कि उसे मंगू की आवाज सुनाई दी। वह छाती तानकर बोला

मैं अपनी जगह में बैठा हूँ मुझे उठाने वाला तू कौन है?' काली निक्कू की ओर बढ़ने लगा तो मंगू उसे ललकारता हुआ बोला

'खबरदार जो चाचे निक्कू की ओर कदम बढ़ाया फिर वह उपस्थित लोगों को सम्बोधित करता हुआ बोला

निक्कू को कमजोर जानकर हर कोई उस पर धौंस जमा रहा है।

मंगू की शह पाकर निक्कू भी शेर हो गया और खाट पर खड़ा होकर बोला

अगर कोई इस तरफ कुदाल लेकर आया तो गर्दन तोड़ दूंगा।

प्रीतो भी निक्कू के समीप आ गई और गोद में रो रहे बच्चे को चुप कराने के लिए उसके मुंह में पिस्तान देती हुई बोली

'अगर किसी ने हमारी जगह की ओर देखा तो खून पी जाऊँगी।

काली ने जब देखा कि बात हद से बढ़ती जा रही है तो वह कुदाल फेंककर निक्कू के पास आ गया।

चाचा, तू किसी की शह पर क्या झगड़ा कर रहा है? अपना बुरा भला आप सोच।'

जीतू ने भी निक्कू को यही सम्मति दी तो मंगू उसे डांटता हुआ बोला

तू कौन है बीच में बोलने वाला? बड़ा पंच बना फिरता है। मां सारा दिन दर-दर से भीख मांगती है और बेटा लोगों को सिखया (सम्मति) दे रहा है।

'तू कहां का पंच है? सारा दिन चौधरी के जूते चाटता है और यहाँ आकर रोब गाँठता है। क्या पिछली मार भूल गया जो फिर उछलने लगा है।'

जीतू। मंगू का मुँह पिचक गया।

मंगू गालियाँ देता हुआ गली उतरकर जीतू की ओर बढ़ा लेकिन काली दोनों के बीच में आ गया और मंगू के सामने छाती तानकर खड़ा हो गया।

'ज्यादा झगड़ा मत कर और यह गली निक्कू के बीच में है। अगर तू ज्यादा करेगा तो चाची सारा भी खड़ा करेगी। हर जगह चौधर करनी नहीं होती।'

'चौधर वही कर सकता है जिसमें दम होता है। मैं देखूँगा निक्कू की जगह में कौन कुदाल चलाता है।'

'मैं चलाऊँगा। लाओ, कुदाल।' उसने ली। निक्कू ने उसको अपनी ओर आते देखा तो उसका दिल ठहर गया और वह खाई में उतरकर एक ओर जा खड़ा हुआ। काली ने खाई का पानी निकालकर कुदाल से पर रख लिया और हाथों पर थूककर उसे मजबूती से पकड़ा ताकि कुदाल के दस्ते पर हाथ मजबूत रहें।

मंगू निक्कू की ओर देखता हुआ ऊँचे स्वर में बोला

'देख क्या रहा है? आगे बढ़कर उसे रोक दे।'

निक्कू अपनी जगह पर ही खड़ा रहा तो मंगू ने उसे काली की ओर धकेल दिया। काली ने उसे बाजू से पकड़कर पीछे कर लिया। मंगू ने एक बार फिर काली की ओर धकेल दिया तो निक्कू अपने-आपको सँभाल न सका और लड़खड़ाता हुआ पक्की ईंटों के ढेर से जा टकराया। उसने जोर से चीख मारी

'हाय मैं मर गया।'

निक्कू को उठाया गया तो उसके माथे से खून बह रहा था। उसको जख्मी देखकर सब सहम गए और धीरे-धीरे खिसकने का यत्न करने लगे। प्रीतो अपनी छाती पीटती हुई विलाप करने लगी। माँ को रोती देखकर बच्चे भी रोने लगे। काली ने कुदाल फेंक दी और निक्कू को वहाँ से उठाकर खाट पर लिटा दिया। वह निढाल था और उसके चेहरे पर पीलाहट छा गई थी। मंगू अपनी लाठी पटकाता हुआ बोला

'अब यहाँ से भागता नहीं। मैं तुम्हें हथकड़ी लगवाकर ही दम लूँगा।' यह कहता हुआ वह वहाँ से दौड़ गया।

काली ने सरसों के तेल में हल्दी मिलाई और निक्कू के माथे पर रखकर ऊपर पट्टी बाँध दी। उसके मुँह में पानी डाला। वह इर्द-गिर्द मर्दों औरतों और बच्चों को पीछे हटाता हुआ निक्कू को पंखा करने लगा। उसके सिरहाने बैठी प्रीतो कभी छाती पीटने लगती और कभी माथा। जब किसी ने कहा कि मंगू थाना बुलाने गया है तो चाची का दिल घटने लगा और वह बेहोश हो गई। ज्ञानो ने उसके मुँह में पानी डालकर और नाक बन्द करके गशी तोड़ दी।

चाची न आखें खाली और दहाड मारती हुइ बोली

'हाय, मरे काली को अब थाना पकडकर ले जाएगा।'

वह फिर बहोश हो गई। उसका रग हल्दी की तरह पीला हो गया। और हाठ एस बद हो गए जस उह आपम म सी दिया गया हो। निक्कू की कराह प्रीता का विलाप, चाची की बेहोशी और काली की घबराहट देखकर नाना की आखो से आंसू आ गए और उसके मुह से मगू के लिए बद दुआ निकली। काली कभी चाची को हौसला देता और कभी निक्कू का हाल पूछता।

मगू चौधरी हरनाम सिंह की हवेली जाता हुआ छज्जू शाह को भी खबर दता गया। उसन रास्त म मिलने वाले हर व्यक्ति को बताया कि काली न निक्कू का मार दिया है उसका खून कर दिया है। जिसने भी सुना वह अपने सब काम छाडकर चमादडी की आर भाग गया।

थाडी ही देर बाद मगू वापस आ गया और उपस्थित लोगा को ललकारता हुआ बोला

यहा स काई नही जाएगा। पचायत आन ही वाली है।'

मगू बडा को गालिया देता और बच्चा को डाटता हुआ पाछे हटाने लगा। वह काली का नाम लिए बिना उस बहुत ऊँची आवाज मे धमकिया दे रहा था। लेकिन काली इनको अनसुना करता हुआ निक्कू को पखे से हवा करता रहा। मगू न जब चौधरी हरनाम सिंह और छज्जू शाह को गली म आत देखा तो जार जोर स बोलन लगा

'चुप हो जाओ चौधरी जी आ गए है।

चौधरी हरनाम सिंह और छज्जू शाह के पहुचन पर काली पखा छोडकर एक ओर खडा हो गया। चौधरी हरनाम सिंह ने निक्कू क माथ पर पट्टी और उसक उपर तेल मिले खून का धब्बा देखकर काली की ओर यू नजरें उठाइ जस उसे भस्म कर देना चाहता हो।

जब से तू गाव म आया है चमादडी म शरारत बहुत बढ गई है। पहले यही मुहल्ला था और यही लाग थे। लेकिन इनमे से कोई कान म डालने पर भी नही चुभता था। लेकिन जिस दिन से तून यहा कदम रखा है राज दगा फिसाद होने लगा है। कभी किसी को मारता है और कभी किसी का सिर फोडता है।

काली न चौधरी की ओर भरपूर आखो से देखा और दृढस्वर म कहने लगा

'शरारत पहल भी होती थी लेकिन लोग चुपचाप सहन कर लत थ। मैं उस समय चुप नही रह सकता जब पानी सिर से गुजरने लगता है।'

काली के ये शब्द सुनकर चौधरी को बहुत क्रोध आया लेकिन छज्जू शाह उसका हाथ दबाता हुआ बोला

'काली शाह, बात क्या हुई है ? निक्कू का सिर कैसे फट गया ?'

काली उत्तर देने लगा तो मगू बीच में ही बोल पडा । छज्जू शाह ने उसे झिडक दिया ।

चुप रह, उसकी बात सुनने दे । बाद में तू भी अपनी सुना लेना ।

काली ने पूरी कहानी सुनाई तो चौधरी घृणापूर्ण स्वर में बोला

'इन कमीनों के दिमाग में जरूर कोई कीडा होगा जो उस जमीन के लिए लड रहे हैं जो इनकी नहीं है । आदमी किसी जायदाद के लिए झगडा करे तो कोई बात भी है।

'चौधरी जी, काली अपने आपको पूरे गाँव का मालिक समझता है । मगू ने आगे बढते हुए कहा । काली उत्तेजित स्वर में बोला

मैं जमीन के इस टुकडे को भी अपनी जायदाद नहीं समझता । मैं तो सिर्फ मल्वे का मालिक हूँ ।

'तू पूरे मल्वे का भी मालिक नहीं है । यह मिट्टी गाँव के छप्पड की है । चौधरी का क्रोध बढने लगा तो छज्जू शाह ने फिर उसका हाथ दबा दिया ।

काली अगर निक्कू झगडे पर उतारू था तो तू चौधरी के पास आता । अपने आप जबदस्ती फसला करने की क्या कोशिश की ?

शाह जी सवेरे यह बिल्कुल मान गया था । जिससे जी चाहे पूछ लो । सच पूछो तो यह सारी शरारत मगू की है । इसी ने निक्कू को उकसा और भडकाकर झगडा खडा करा दिया और फिर उसे ईंटों के ढेर पर धक्का दिया और उसका सिर फोड दिया ।

यह झूठ है । यह निक्कू को गरीब और कमजोर समझकर उसका हक मार रहा था ।

इस मुहल्ले में सभी गरीब हैं । मेरे कौन से हल चलते हैं ? काली ने कहा ।

मगू बहुत ऊँची आवाज में उत्तर देने लगा तो छज्जू शाह अपने कानों पर दोनों हाथ रखता हुआ बोला

मगू आहिस्ता बोल यहाँ सब कानों वाले खडे हैं । फिर वह चौधरी से कहने लगा

निक्कू भी सिरफिरा है । अपना नफा-नुकसान आप नहीं सोचता ।

निक्कू खाट पर पडा कराह रहा था । उसे विश्वास हो रहा था कि काली से उसे फूटी कौडी भी नहीं मिलेगी । वह खाट पर लेटा चौधरी के पाँव की

ओर झुकता हुआ बोला

'चौधरी जी मैं मर गया । मेरा सिर फोड दिया ।'

प्रीतो विलाप करती हुई सब बच्चो को चौधरी के सामन खडा करके बोली

'चौधरी जी, अगर तेरे चमार को कुछ हो गया तो इन छोटे-छोटे बच्चो का क्या हाल बनेगा ?'

चौधरी हरनाम सिंह चुप खडा था । उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे । उसे सारे मामले म काली का बहुत कम कसूर नजर आ रहा था । वह वहा से चला जाना चाहता था लेकिन कोई फसला किए बिना जाना असम्भव था । वह बेजारी से बोला

'शाह, इन कमीना को कसे समझाया जाय कि लडाई झगडे म कुछ नही रखा ।'

छज्जू शाह बाबे फत्तू को देखकर बोला

तू मुहल्ले का बुजुग है तू ही इन्ह अक्ल दिया कर ।'

बाबे फत्तू ने अपने हाथ मे स पतली सी लाठी जमीन पर रख दी और काना को छूता हुआ बोला

'शाह जी निक्कू को तो रब जी भी नही समझा सकता । मैंने इसे समझाना चाहा तो पजे झाडकर मर पीछे पड गया । बाकी रहा मगू वह मेरे साथ ऐसे बात करता है जसे मैं छ साल का छोकरा हू । इस मुहल्ले मे शराफत नहा रही । यहाँ अब लुच्चा लडा चौधरी और गुडी औरत प्रधान है ।

बाबा फत्तू अभी अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि गली के मोड पर किसी के गालिया देने की आवाज सुनाई दी । उस आवाज को पहचानकर छज्जू शाह मुसकराता हुआ बोला

घडडम चौधरी आ रहा है ।

चलो, हम चले, मुनसिफ आ गया है । चौधरी हरनाम सिंह न कहा ।

एक पतला लम्बा सा व्यक्ति हाथ मे लाठी पकडे हुए वहा पहुचा तो लोगो ने रास्ता दे दिया । उसन कमर के गिद गज भर का साफा लपेट रखा था और सिर पर सफेद पगडी बाध रखी थी । घडडम चौधरी का असली नाम नत्थासिंह है । क्योकि वह हर आदमी के काम मे हस्तक्षेप करना अपना धम समझता है इसलिए लोग उसे प्राय घडडम चौधरी के नाम से पुकारते हैं । वह अपनी सब जमीन बचकर खा चुका है । उसकी पत्नी विवाह क दो साल बाद बेऔलाद ही मर गई थी । नत्थासिंह को कानून और कचहरी दोना का बहुत शौक है । काम हो या न हो वह हर दूसर तीसरे दिन कचहरी जरूर जाता है ।

झूठी सच्ची गवाहियाँ देकर अपनी गुजर-बसर कर रहा है। सब लोग उससे डरते हैं क्योंकि वह मुहफट है और बुरी से-बुरी बात कहने से भी नहीं हिचकिचाता। वह बूढ़ों म बठता है और जवानों म भी, चौधरियों म भी और कमीनों म भी। इसलिए गाँव के बारे म सबसे ज्यादा खबर उस ही रहती है।

धड्डम चौधरी को देखते ही प्रीतो दोहत्थड मारकर रो पड़ी।

चौधरी तेरे चमार को काली ने मार दिया।

'कौन काली ?' धड्डम चौधरी ने चारों ओर देखते हुए कहा।

'माले का लड़का।

धड्डम चौधरी के जेहन म एक तस्वीर उभरी और उसकी जगह एक दूसरी तस्वीर ने ले ली। वह काली को पहचानता हुआ बोला

क्या ? तूने इसका सिर फोड़ा है ? उसने निक्कू की ओर सकेत करते हुए कहा।

पता है इसम दफा ३०२ लगती है। बहुत बड़ा जुर्म है। सात साल की कद हो सकती है।'

यह सुनकर वहाँ खड़े लोगों के दिल दहल गए। धड्डम चौधरी की कानून की सूझबूझ से किसी को इकार नहीं था। वह बड़े वकीलों के कान कतरता था। वह फिर बोला

'कद भी वा मुशक्कत जेल मे लोहे की चक्की पीसनी पड़ेगी।

ज्ञानो ने यह सुना तो उसका सास जहाँ था वहीं रुक गया। वह ऊँची आवाज म बोली

निक्कू का सिर काली ने नहीं मगू ने फोड़ा है। इस आवाज को पहचानने के लिए कई लोगों की नजरें औरतों के जमघट की ओर उठ गई।

धड्डम चौधरी बोला

यह बयान तो मौका के गवाह का मालूम पड़ता है। फिर वह मगू की ओर देखता हुआ बोला

तूने इसका सिर क्यों फोड़ा है ?

'मैंने नहीं फोड़ा। इसका सिर फोड़ने वाला उधर तहसीलदार की तरह छाती चौड़ी करके खड़ा है। मगू न काली की ओर इशारा करते हुए कहा।

छज्जू शाह धड्डम चौधरी को सारी बात बताने के लिए बोला

चौधरी नत्थासिह बात यू हुई है कि।

चुप रह—बड़ा सफेदपोश बना फिरता है। धड्डम चौधरी न छज्जू शाह को झिड़क दिया।

पहले मुझे दोनों फरीकों (पक्षों) की बात सुनने दो।

छज्जू शाह अपनी झेंप मिटाने के लिए बोला

चौधरी नत्थासिंह, मैं इनसे यही कह रहा था कि सुलह सफाई से काम लो।'

'गलत बात है। सुलह सफाई से नहीं कानून से काम लेना चाहिए। वह छज्जू शाह की ओर घूरकर देखता हुआ बोला। छज्जू शाह ने चौधरी हरनाम सिंह का हाथ पकड़ते हुए कहा

चौधरी जी चला चलें। चौधरी नत्थासिंह आ गया है। वह इनका फसला करा देगा।'

वे वहाँ से चले गए तो धडडम चौधरी ने जमीन पर जोर से थूका और निक्कू से पूछने लगा

'तू उसे बुनियाद खोदने से क्या रोक रहा था?'

चौधरी यह मेरी जमीन दबा रहा था। निक्कू ने रुंधी हुई आवाज में कहा।

जमीन दबा रहा था तो पटवारी के पास जाता। वह माप कर तेरी जमीन निकाल देता। सिर पर चादर बाधकर झगडा करने क्या आया? बुलवा दूँ पटवारी को?

मेरे पास पटवारी की फीस के पसे नहीं थे।' निक्कू ने सारा खेल चौपट होते देखकर वावला करना शुरू कर दिया।

फीस मैं दे दूगा। एक बार फसला तो हो जाएगा। काली ने धडडम चौधरी की ओर देखते हुए कहा।

वह दो रुपये लेगा?' उसने काली को ध्यान से देखते हुए कहा जसे उसकी हैसियत का अनुमान लगा रहा हो। कुछ क्षण चुप रहने के बाद वह फिर बोला

वसे तो इस काम की कोई फीस नहीं है। लेकिन अगर फीस न दो तो पटवारी को कभी जरीब नहीं मिलती और कभी गाँव का नक्शा खो जाता है।

काली ने हाँ म सिर हिलाया तो धडडम चौधरी ने जीतू को पास बुलाकर रौब से कहा

'दौडकर पटवारी को बुला लाओ। मेरा नाम लेना। हाँ, उसे कह देना कि साथ जरीब और गाँव का नक्शा लेता आए।

सब लोगों को पता था कि पटवारी इस काम का एक रुपया लेता है। लेकिन धडडम चौधरी ने दो रुपया कहकर अपना हिस्सा भी पक्का कर लिया था। जीतू के जाने के बाद उसने काली को कानून समझाया। फिर वह कभी

निक्कू को गालियाँ देना शुरू कर देता और कभी किसी से मज़ाक करने लगता। उसकी बातों पर लोग हँस रहे थे और वहाँ पर छाया हुआ तनाव तेज़ी से कम हो रहा था।

जीतू को अकेला ही आते देखकर धड़म्म चौधरी ने पूछा

'पटवारी कहाँ है ?'

'चौधरी जी वह तो मिला नहीं। पटवारी की चौकी पर ताला लगा हुआ है।'

'लीलो रांड के चौबारे में बैठा होगा।' फिर वह पटवारी को गाली देता हुआ बोला

'साले से लीलो की ही गरदावरी खत्म नहीं होती। बुरे कामों से हटता नहीं और फिर ताकत के लिए कुश्ते खाता है।'

औरतों ने शर्म के मारे मुँह परे कर लिए और मर्द हँसने लगे तो धड़म्म चौधरी भी मुसकराने लगा।

'आदमी हुशियार है। इस सफाई से गरदावरी करता है कि किसी को कानोंकान खबर नहीं होती। लेकिन मेरे से कोई बात छिपी नहीं रहती। मैं तो उड़ती चिड़िया के पर गिन लेता हूँ।'

धड़म्म चौधरी लोगों का मन बहलाने में व्यस्त था कि जीतू जरीब लेकर वापस आ गया और उसे ज़मीन पर फेंकता हुआ बोला

'पटवारी जी आ रहे हैं।'

जीतू अभी यह कह ही रहा था कि नाक को दबाता हुआ और धोती को सम्भालता हुआ पटवारी वहाँ आ पहुँचा। धड़म्म चौधरी उसे देखते ही ऊँचे स्वर में बोला

'यहाँ लोग एक-दूसरे का सिर फोड़ रहे हैं और तू चौबारे में बैठा टाँगों पर मालिश करवा रहा है। गाँव के नक्शे में चमादड़ी के माते के पुत्तर काली के मकान का निशान देखकर उसका रकबा निकाल दे।'

पटवारी ने नक्शे में काली के मकान का निशान और रकबा देखा और जरीब से मापकर बोला

'काली की ज़मीन निक्कू की ओर आधा हाथ निकलती है।'

यह सुनकर धड़म्म चौधरी भड़क उठा और निक्कू को मोटी-सी गाली देकर बोला

'क्या तेरे बाप की तरो तरफ आधा हाथ ज़मीन निकलती है अगर वह कचहरी में मुकद्दमा दायर कर देता तू अन्दर हो जाएगा। बड़ा सूरमा बना

फिरता है। सिर पर साफ़ा बाँधकर लड़ाई करने निकलता है।' फिर वह काली से बोला

'इसकी दीवार आधा हाथ चौड़ाई तक गिरा दो। अगर यह झगड़ा करे तो मार मारकर इसकी हड्डियाँ तोड़ देना।'

काली ने दो रुपये निकाले तो धड़म्म चौधरी ने आगे बढ़कर पकड़ लिए और उसे निक्कू की दीवार गिरा देने की ताकीद करके पटवारी के साथ चला गया। मंगू पहले ही खिसक गया था। निक्कू भी कराहता हुआ चला गया। प्रीतो बच्चा को घसीटती हुई उसके पीछे-पीछे चल दी। धीरे धीरे बाकी लोग भी खिसकने लगे। सूर्यास्त तक वहाँ केवल काली और चाची रह गए। वह उदास सा चाची के पास जा बैठा। चाची की उखड़ी हुई साँस देखकर उसकी उदासी और भी घनी होने लगी तो वह बुनियाद खोदने लगा। जब इस काम में भी दिल न लगा तो वह चाची से परे हटकर जमीन पर ही बैठ गया। उसे बार-बार ख्याल आ रहा था कि वह किन अरमानों के साथ गाँव आया था। उसका जी चाहा कि वह वापस चला जाए गाँव से इतनी दूर कि वापस आने का ख्याल बस तड़प बनकर रह जाय।

१४

काली चो के पार बाजीगरों के कोठे की ओर जाने के लिए गली में आया तो उसे ताई निहाली दिखाई दी। उसने मैले पल्लू के नीचे कोई बर्तन छिपाया हुआ था और बहुत सँभलकर कदम उठा रही थी। काली तेज कदम उठाता हुआ उसके बराबर आकर ऊँचे स्वर में बोला

ताई!

आवाज सुनकर ताई निहाली चौंक गई और उसने बर्तन को और भी मजबूती से पकड़ लिया। काली हँसता हुआ पल्लू की ओर संकेत करके बोला

'ताई, इसमें क्या घी है जो इतना छिपाकर ले जा रही हो?'

नहीं काका मुझे तो घी देखे कई साल बीत गए हैं। बस यह समझो कि जब जीतू पैदा हुआ था तब आधा सेर घी खाया था। मैं तो घी का रंग

और स्याम भी भूल गई हूँ । लस्सी लाई हूँ । लस्सी भी क्या चिन्न पानी है । नया जमाना आ गया है गाढ़ी लस्सी दन समय चौधरानियां के हाथ काँपने लगते हैं । अब तो गाढ़ी लस्सी यामत होती जा रही है । ताई ने बतन को पल्लू म नीचे से निकालकर काली को दिखाते हुए कहा ।

'तू तो चाय पीता है । प्रतापी कहती थी कि तू लस्सी को मुँह नही लगाता ।

ताई ऐसी बात तो नही । लस्सी मिले तो पिऊँ । जब मैं शहर म था तो रोज लस्सी पीता था । यहाँ मिलती ही नही । एक दो बार कोशिश की कि कही से दूध मिल जाय लेकिन कोई बन्दोबस्त नहीं हो सका । गाव म तो हर चीज भीख की सूरत म मिलती है । और वह जबरदस्ती नही ली जा सकती । सोचता हूँ कि मकान बन जाय तो छोटी-मोटी गाय रख लूं । काली ने उचक कर बतन के अन्दर झाँका ।

काका तू पैसे वाला है । तू चाहे तो हल भी बना सकता है । निहाली ने मिट्टी के बतन को पल्लू के नीचे छिपाते हुए कहा ।

'जीतू कई दिन स कह रहा था कि उसके अन्दर गर्मी पड गई है । नमक मिलाकर लस्सी पीने को कहता था । घर में नमक तो था लेकिन लस्सी नही थी । कल दस घरों मे गई लेकिन सबने यह कहकर टाल दिया कि गर्मी से डँगरों का दूध सूख गया है । आज फत्तू चौधरी की घरवाली की सौ मिन्नतें की तो उसने आधी कटोरी लस्सी दी ।'

काली उसके साथ साथ चलता रहा तो ताई निहाली को सदेह हुआ कि कही उसके घर ही न आ रहा हो । अगर ऐसा हुआ तो जीतू के हिस्से म आधी लस्सी ही आएगी । इस समय वह किसी दूसरे घर म भी जाना नही चाहती थी । क्योंकि जहाँ भी जाएगी उससे पूछा जाएगा कि वह लस्सी कहाँ स लाई है । वह काली को अपने घर म आने से रोकने के लिए बोली

काका जीतू तेरे पास तो नही था ! सवेरे मुह अँधेरे ही निकल गया था । अभी तक नहीं आया । पता नही कहाँ चला गया है ।

तू कहाँ जा रहा है ?'

काली ताई के मनोभाव ताड गया और शरारत स मुसकराता हुआ बोला

मैं भी जीतू को ही देखने आया था । अगर वह घर पर नहीं है तो मैं रामीगरों के पास हो आता हूँ । छत के लिए सिरकियाँ बनवानी है ।

ताई निहाली का घर आ गया तो उसने प्रवेश करते ही झट से दरवाजा बन्द कर लिया । जीतू के प्रति ताई निहाली के लाड-प्यार के बारे म सोचता

हुआ काली बाजीगरों के कोठों की ओर बढ गया ।

चो के दूसरे किनारे के साथ साथ झखाड म से गुजरकर काली बाजीगरों के कोठों की ओर मुड गया । उनके कोठे बाकी गाँव से अलग थलग थे क्योंकि वे बिल्ली, लोमडी और गीदड तक का मांस खा लेते थे । यूं तो गाव का प्रत्येक व्यक्ति उनसे परहेज करता था पर पडित सतराम तो उनकी परछाई तक को सहन नहीं कर सकता था । लेकिन गाँव वालों ने उन्हें इसलिए बसने की आज्ञा दे दी थी क्योंकि वे मिट्टी के खिलौने बनाने और कलाबाजियाँ डालने के अतिरिक्त सिरकिया और छाज भी बनाते थे ।

युवक बाजीगर खुशिया और उसका चाचा रोडा अपने कोठों के पास खडे काली को देख रहे थे । रोडे ने आँखो पर हाथ की छतरी बना रखी थी । उसने खुशिये से पूछा

कौन आ रहा है ? मैंने इसे गाव म पहले कभी नहीं देखा ।'

खुशिये ने कोई उत्तर न दिया और काली की ओर एकटक देखता हुआ पहचानने की कोशिश करता रहा । जब वह उनके निकट पहुच गया तो खुशिया प्रसन्नभाव से बोला

काली है ।'

'कौन काली ?'

चमारों का काली ।'

चमारों का कौनसा काली ?'

'वही जो गाव से भाग गया था । सुना है शहर से बहुत पैसा कमाकर लाया है । खुशिये ने उत्तर दिया ।

'बडा बाका जवान है । रोडा दो कदम आगे बढ आया ।

काली जब उनके बहुत निकट पहुच गया तो खुशिया दौड पडा और उल्टी कलाबाजी खाकर उसके सामने जा खडा हुआ ।

काली, सुना क्या हाल चाल है ?

'तू सुना—मजे म हो ना । काली ने खुशिये का हाथ पकड लिया और फिर रोडे की ओर बढता हुआ बोला

'बदगी चाचा ।

'बदगी । रोडे ने भी काली का हाल चाल पूछा ।

कुछ समय तक इधर-उधर की बातें करने के बाद काली बोला

'खुशिये, आजकल सिरकिया बनाते हो या कोई और कामधधा कर लिया है ।

'गांव म आज तक क्या कभी किसी का धन्धा बदला है। सिरकियां बनात क्या हल चलान लगेगे ? तुम्ह सिरकिया की क्या जरूरत पड गई ?' रोडे ने पूछा।

'काली मकान बना रहा है।' खुशिये ने बताया।

'अच्छा !' रोडा चकित-सा हो गया।

'पक्का मकान बना रहे हो या ।

'कच्चा पक्का ही समझो।

कितनी छतें होगी ?

'एक डयोढी की एक काठडी की और आधी रसोई की।

कितनी शहतीर डालोगे ?'

'दो डयोढी पर दो काठडी पर और एक रसोई पर।

चार कम बीस सिरकिया लगेंगी। रोडे ने उँगलिया पर हिसाब लगाते हुए कहा।

कितन पसे लग जाएँगे ?

जो जी चाहे दे दना। हम कौन स सेठ साहूकार है जो हिसाब किताब करेंगे।

'फिर भी ?

वह जो दिया जो मन चाहे दे देना। लोगा से बारह आन सिरकी लेते हैं तेरे से दस आने ले लेंगे। लेकिन सिरकिया बढ़िया दूंगा। रस्सी की जगह तद (मूमदी की आता को मुखाकर बनाई गई डोरी) से गाँठूगा।

काली आखिरी कोठे के पास खेल रहे बच्चा को देखने लगा। खुशिये का छोटा भाई बच्चा को कलाबाजियाँ सिखा रहा था। उसके हाथ म छडी थी और जिस बच्चे की कलाबाजी म कोई त्रुटि रह जाती वह उसे उससे पीटता। काली उन्ह दिलचस्पी से देखता हुआ बोला

खुशिय, अभी कलाबाजी का काम करते हो या छोड दिया है।

'जब बाजी देखन वाले ही नहा रह तो बाजीगरी कौन करेगा। बहुत जाखम का काम है। हरामी को शौक है—एक दो बार चोट खान के बाद इसका भी शौक उतर जाएगा।

आठ साल पहल तो यह बलूगरा (बिल्ली का बच्चा) सा था लेकिन अब लडका हो गया है। मोहना जवान निकलेगा। काली न उसकी ओर ध्यान म देखते हुए खुशिय म पूछा

'इसका नाम हरामी क्यों रखा है ? तुम्ह काई और नाम नहीं मिला था ?

वह तो चुप रहा लेकिन राडा खिलखिलाकर हँस पडा।

इसका बाप बचपन से ही इसे हरामी कहकर पुकारता था। एक तो इस लिए कि यह शुरू से ही जगली बिल्ले की तरह शरारती था। दूसरे इसका रग गोरा था। कहते हैं कि गोरा चमीन और काला ब्राह्मण दोनो हरामी होते हैं। आहिस्ता-आहिस्ता इसका यही नाम पड गया। अब जब कभी इसका किसीसे झगडा होता है तो यह बहुत रोब से कहता है कि तूने हरामी के हाथ नही देखे।'

रोडे ने एक बार फिर जोर से ठहाका मारा।

काली जेब से एक रुपये का नोट निकालता हुआ बोला

'चाचा यह लो बयाना सिरकियाँ बनाने का, बाकी पैसे सिरकियाँ बन जाने पर दूगा।'

'यह क्या ? कोई बेएतबारी है ?' राडे ने कहा।

'नही बेएतबारी की बात नही। इसका मतलब यह है कि बात पक्की हो गई।

यह क्या कागत (कागज) सा दे रहे हो।' रोडा नोट को देखता हुआ बोला

'क्या शहर मे यही चलते हैं ?'

'हाँ यही चलते हैं।'

'अगर रुपये का यह हाल हो गया है तो बाकी चीजो का क्या बनेगा ?'

राडे ने उदास स्वर मे कहा और फिर जल्दी मे अपने कोठे की ओर मुड गया।

काली चो पार करके मिस्तरी सतासिंह के तरखान (बढई की दुकान) की ओर चल पडा। तरखाना गाव के पश्चिम मे बडे रास्ते पर था। दो कोठियाँ थी जिनमे से एक मे वह अपना काम-काज करता था और दूसरी मे रहता था। सामने छोटे से आगन मे जामुन का पेड था। सतासिंह प्राय इसी जामुन के नीचे बैठकर अपना कामकाज करता था। उसका ऊँचे मुहल्ले मे अपना जद्दी मकान था लेकिन अकेला होने के कारण वह तरखान मे ही रहता था।

उसका मुख्य काम गाव के काश्तकारो के लिए हल पजाली और कृषि सम्बन्धी दूसरे औजारो के लकडी के भाग बनाना और उनकी मरम्मत करना था। इसके लिए उसे प्रतिहल रबी और खरीफ पर एक-एक मन अनाज मिलता था। राजगीरी के लिए वह अलग पैसे लेता था।

काली जब तरखाने मे पहुचा तो मिस्तरी सतासिंह आगन मे खडा था।

उसने रग और पुराना तार लम्बा कच्छा पहन रखा था और सिर पर जगनी रग का साफा बाँधा हुआ था। झाड़ी की दीवार में साथ जड़ रहे चूल्हे पर तवा पड़ा था और पास ही प्रात में गूँधा हुआ आटा रखा था। काली ने मिस्त्री की कल्गी की तो वह दाढ़ी में बाल की उँगलियाँ में साफ करता हुआ बोला

'आ आ, चमारडी के रौंसे आ जा।

काली मुसकरा दिया।

मिस्तरी जी रोटी पकाने लगे हो ?'

'हाँ भई, मेरी घरवाली तो है नही जो मेरे लिए रोटी पकाएगी। मुझ तो अपने हाथ ही जलाने पडते हैं।'

मिस्तरी ने थोडा सा आटा उठाकर तवे के ऊपर लगाया। उसका रग पहले पीला होकर काला पड गया और फिर उसमे धुआ उठने लगा। उसने रोटी बेली और तवे पर डाल दी। रोटी की भाप उसकी उँगलियो को छू जाती तो वह हाथ को झटकता हुआ सी सी करने लगता। एक बार उसके दायें हाथ पर ज्यादा भाप लग गई तो वह उगलियो को पानी म डुबोता हुआ बोला

जो हाथ तेसी आरी और कुल्हाडा चलाने के लिए बने हो उनसे रोटी कसे पकाई जा सकती है ? मिस्तरी ने जोर स ठहाका मारा।

छ रोटियाँ पकाकर मिस्तरी ने तवा नीचे उतार दिया। चूल्हे म जल रही लकडी को राख म मसलकर बुझा दिया। उसम से अभी तक धुआँ निकल रहा था। धुआ उसकी आँखो म पड गया तो वह उन्हे मलता हुआ बोला

ब्याह के बिना जिन्दगी सुलगती लकडी की तरह है जिसम से सिफ धुआँ निकलता है जो आँखो म आसू तो ला देता है लेकिन गरमाइश नही पहुचाता। उसने एक बार फिर जोर का ठहाका मारा और मिट्टी के भले-से बतन मे से अचार निकालकर रोटी पर रख दिया और लस्सी की गडवी पास खीचकर बडी-बडी ग्राहियाँ मुह म डालने लगा।

काली उसे ध्यान से देखता हुआ बोला

मिस्तरी क्या रोज हाथ जलाते हो। शादी क्या नही कर लेते ? तरखाना भी भरा भरा लगेगा।

मिस्तरी ने ग्राही लस्सी के घूट के साथ कण्ठ से नीचे उतारी और मुह भरकर गाली दी।

मरे लिए सारी दुनिया की लडकियाँ और औरतें बहनें या माएँ हैं। वह लडकी शायद मर चुकी है या पैदा ही नही हुई जिसके साथ मेरा सयोग था।

मन्तासिह ने रोटी खाकर सामान समेटकर अन्दर रखा और जूता पह

नता हुआ नन्दसिंह चमार को गाली देकर बोला

'पता नहीं जूते में कील गाड देता है। जब पहनता हूँ पाँव को काटता है।'

'तुम अपनी कसर कहीं और निकाल देते हो।' काली ने शरारत से कहा और फिर सन्तासिंह के कान के पास मुँह ले जाकर बोला

'मिस्तरी जी तुम्हारा नन्दसिंह की लडकी पाशो के साथ क्या रिश्ता है?'

'वही जो कुत्ते का कुतिया से होता है। काली—रन (पत्नी) वह जो अपनी ब्याहता हो। उसे सिर पर चढाओ या पाँव के नीचे दबाकर रखो—कोई उँगली उठाने वाला नहीं। लेकिन पराई जनानी (स्त्री) तो मुँहजोर घोडी की तरह होती है पता नहीं कब विदक जाए।' सन्तासिंह आँखें फैलाता हुआ बोला।

कुछ क्षणों तक मिस्तरी जूते में पाँव को हिलाकर कील की चुभन से बचाने का यत्न करता रहा और फिर दाढी को खुजाता हुआ काली से बोला

'सुनाओ, इधर कैसे आना हुआ?'

'मिस्तरी जी, मेरा इरादा पक्का मकान बनाने का है। सारी बुनियाद खोद ली हैं।'

'अच्छा-अच्छा, निक्कू के साथ तुम्हारा ही झगडा हुआ था। मुझे नन्दसिंह ने बताया था कि काली और निक्कू में झगडा हो गया है। उस समय मुझे समझ में नहीं आया कि तेरा नाम ही काली है। सच्ची बात पूछो तो गाँव में कुत्तों और चमारों की पहचान रखना मुश्किल है। आते जाते रहते हैं ना।' सन्तासिंह ने हँसते हुए कहा

'अच्छा मकान बना रहे हो!'

'मिस्तरी जी क्या तुम्हारी नजर में चमार और कुत्ते बराबर हैं।'

सन्तासिंह ने उसे क्रोध में देखा तो उसका कंधा थपथपाता हुआ बोला

'मैं तो ठट्ठा कर रहा था। तू बुरा मान गया। गुस्से को थूक दे और बात कर।'

काली को अपने क्रोध पर काबू पाने में कुछ समय लगा। वह अपने अन्दर बल खाता रहा। जब मिस्तरी ने उसे कई बार विश्वास दिलाया कि उसके मुँह से यह बात सहज ही निकल गई थी तो काली उदास स्वर में बोला

'मैं पक्का मकान बनाना चाहता हूँ।'

'जरूर बनाओ।'

'या तो तुम आप बना दो या किसी और राज का पता बता दो।'

का ताबीज बाध रखा था । दाएँ हाथ की कलाई पर अपना नाम और रानी पर एक ओर हनुमान की तस्वीर और दूसरी ओर एक परी की तस्वीर खुदवा ली थी । उसके कपडे हमेशा तल से भरे रहते थे और वह यू चलता था जसे अपनी ताकत के बोझ तले दबा जा रहा हो ।

लच्छो ने घूमकर उसकी आर देखा और जल्दी-जल्दी तजले की ओर बढ गई । हरदेव ने एक दूसरा गीत गाना शुरू कर दिया—

'होली टुरनी वाकिए मुटयारे पैर मोच खा जाएगा ।

हरदेव को अपनी उपस्थिति का अहसास दिलाने के लिए दीवानखान के चबूतरे पर बठा हुआ मगू जोर जा र से खासने लगा । हरदेव उस देखकर ऊँची आवाज म बोला

'मगू तरे गल म क्या फँस गया है । नही निकलता तो डडे से निकाल दू ।'

मगू चबूतरे स उठकर हरदव के पास आ गया और खी-खी करके हँसन लगा । हरदेव समझ गया कि मगू न सब-कुछ देख लिया है । वह क्रोध भरे स्वर म बोला

गधे की तरह क्या हिनहिना रहे हो ?'

मगू उसे क्रोध मे देखकर चुप हो गया और कुछ क्षणा के बाद उसके निकट जाकर गोपनीय स्वर म बोला

'चौधरी, यह प्रीतो की लडकी लच्छो है ।'

हरदेव हैरान होकर उसकी ओर देखन लगा । मगू की बात उसकी समझ म नही आई ।

'सीधी तरह बात कर । साला बुझारतें डालता है ।'

मतलब यह है चौधरी हरदवजी यह प्रीतो की लडकी लच्छो है ।' मगू ने एक एक शब्द पर जार देते हुए कहा ।

'वह तो सुन लिया । कुछ आगे भी कहो ।'

'चौधरी, क्या तुम प्रीतो को नही जानत ।' मगू हरदव के सामने खडा होकर बोला ।

जानता हूँ ।'

तो इसको भी जानो । यह उसी घोडी की बछेरी है जिस पर कभी बडा चौधरी बहुत मेहरबान था । मगू हँसन लगा ।

हरदेव ने मगू की ओर दखा तो वह और भी जोर स खिलखिलाकर हँसन लगा ।

मैं ही बता दूंगा।

चिट्ठी में कितने पैसे लगेंगे ?

'जो बाकी राज लेते हैं। आजकल सवा रुपया डेढ़ रुपया दिहाड़ी का चलता है। मैं सवा रुपया ले लूंगा।

ठीक है। कब से काम शुरू कराओगे ?

जब तुम कहो। मैं तो इस समय भी तैयार हूं। आजकल मुझे फुर्सत है। तरखान का काम मन्दा है।

'कल से ही शुरू कर दो।

ठीक है। कल सवेर आ जाऊंगा। गारा तैयार रखना। ईंटों पर पानी छिड़क देना।

संतासिंह काली की ओर ध्यान से देखने लगा। जब वह चलने लगा तो उसे रोकता हुआ बोला

काली, तेरे साथ एक बात करनी थी हम जहां राज का काम करते हैं दोपहर की रोटी और शाम की चाय वहीं खाते-पीते हैं। तेरे घर में रोटी तो खा नहीं सकता इसलिए तुम रोटी चाय के पैसे अलग दे देना। चार आने होंगे।

काली बुझे हुए मन से तरखाने से बाहर आकर बड़े रास्ते की ओर बढ़ गया।

१५

लच्छो सिर पर टोकरा उठाए हवेली के अन्दर दाखिल हुई तो चौधरी हरनाम सिंह का भतीजा हरदेव दीवार के साथ घोड़ी की ऊँची खोर पर बैठकर उसकी ओर देखता हुआ लहक लहककर गाने लगा—

तेरी हिक ते आलना पाया नी जंगली कबूतर ने।

हरदेव २० २१ साल का बांका जवान सुबह सवेरे बाजीगरों के छोकरों से मालिश कराता और शाम को उनके साथ पंड मारता। उसने काली रेशमी डोर में सोने का तावीज बाँधकर गले में लटका रखा था। बाएँ बाजू पर ताकत

का ताबीज बाँध रखा था। दाएँ हाथ की कलाई पर अपना नाम और राना पर एक ओर हनुमान की तस्वीर और दूसरी ओर एक परी की तस्वीर खुदवा ली थी। उसके कपड़े हमेशा तल स भरे रहते थे और वह यू चलता था जसे अपनी ताकत के बोझ तले दबा जा रहा हो।

लच्छो न घूमकर उसकी ओर देखा और जल्दी जल्दी तवले की ओर बढ गइ। हरदव न एक दूसरा गीत गाना शुरु कर दिया—

होली टुरली बाकिए मुटयारे पर मोच खा जाएगा।'

हरदेव को अपनी उपस्थिति का अहसास दिलाने के लिए दीवानखान के चबूतरे पर बठा हुआ मगू जोर-जोर से खाँसने लगा। हरदेव उस देखकर ऊँची आवाज मे बोला

'मगू तेरे गल म क्या फँस गया है। नही निकलता तो डडे से निकाल दू।'

मगू चबूतरे से उठकर हरदेव के पास आ गया और खी खी करके हँसन लगा। हरदव समझ गया कि मगू ने सब-कुछ देख लिया है। वह क्रोध भरे स्वर मे बोला

'गधे की तरह क्या हिनहिना रहे हो ?

मगू उसे क्रोध म देखकर चुप हो गया और कुछ क्षणा के बाद उसके निकट जाकर गोपनीय स्वर म बोला

'चौधरी, यह प्रीतो की लडकी लच्छो है।'

हरदेव हैरान होकर उसकी ओर देखने लगा। मगू की बात उसकी समझ म नही आई।

'सीधी तरह बात कर। साला बुझारतें डालता है।

'मतलब यह है चौधरी हरदवजी, यह प्रीतो की लडकी लच्छो है।' मगू ने एक एक शब्द पर जोर देते हुए कहा।

वह तो सुन लिया। कुछ आगे भी कहो।'

चौधरी, क्या तुम प्रीतो को नही जानते। मगू हरदेव के सामने खडा होकर बोला।

जानता हूँ।'

तो इसको भी जानो। यह उसी घोडी की बछेरी है जिस पर कभी बडा चौधरी बहुत मेहरबान था। मगू हँसने लगा।

हरदव ने मगू की ओर देखा तो वह और भी जोर स खिलखिलाकर हँसन लगा।

'चौधरी, अभी लगाए चौसर की डाल में साथ बांधा है या नहीं ? कहीं गूंगे पहल्वान की तरह तुम्हारा जिस्म भी न फट जाए ।

हरदेव ने अपनी चौड़ी छाती गोल राना, तगड़े पट्ठों को दबा और दोनों बाजुओं को अकड़ाता हुआ बोला

'चमारा कसरत की है घी खाया है दूध पिया है । तेरी तरह बाजरे की सूखी रोटियाँ नहीं खाई हैं ।

तो क्या हुआ । इसका फायदा तो किसी चमारन को ही होगा ।' मगू फिर खिलखिलाकर हंसता हुआ बोला

चौधरी मैं हर रम्ज समझता हूँ, दाई से पेट छिपा नहीं रहना ।'

हरदेव को गुस्सा आ गया और वह उससे उलझने ही वाला था कि मगू उसके तेवर भांपकर हाथ जोड़ता हुआ बोला, 'चौधरी जी, माफी देना । मैंने सब कुछ तुम्हारी भलाई के लिए कहा है । यह कबूतरी जगली नहीं पालतू है । दाना देखते ही बैठ जाएगी ।

मगू की बातें सुनकर और उसका मसकीन चेहरा देखकर हरदेव का गुस्सा दूर हो गया और वह प्रसन्नभाव से बोला

वाह मगू तू बात पते की करता है ।'

मगू ने हरदेव के कंधे पर हाथ रख लिया और उसे दो कदम परे ले जाकर बहुत धीमी आवाज में कुछ समझाने लगा । हरदेव उसकी बात सुनकर परे हट गया । उसका रंग डर से पीला पड़ गया था और होंठ कपकंपा रहे थे ।'

'चौधरी होकर डरते हो ? मगू ने उसे छेड़ते हुए कहा ।

डर की बात हरदेव पर चाबुक की तरह पड़ी । वह रोब से बोला

चमार, तू मुझे जानता नहीं । उसने मगू के कान में कुछ कहा और फिर दोनों ने इतने जोर से हाथ मिलाए कि मगू बाद में कितनी देर तक अपना हाथ दबाता रहा ।

लच्छो गोबर फेंककर वापस आई तो हरदेव ने उसे रोब से आवाज देते हुए कहा

यह ले तबेले की कोठड़ी की चाबी । वहाँ गेहूँ के (बालियां) सिट्टे पड़े हैं । उन्हें ले जाओ । कोठड़ी का दरवाज़ा खुला रहने देना ताकि उसमें ताज़ी हवा फिर जाय ।

लच्छो की समझ में कुछ नहीं आया । वह अभी निर्णय कर भी न पाई थी कि उसका हाथ स्वयं ही चाबी की ओर बढ़ गया और वह टोकरा फेंककर कोठड़ी की ओर चली गई ।

'अच्छा चौधरी मैं चला। शिकारी को हीग खिलानी है। इससे वह खरगोश की बू फौरन सूघ लेता है। मगू दीवानखाने के चबूतरे की ओर चल दिया।

चौधरी हरदेव घोडी की खार के पास खडा कभी मगू की ओर देखता, कभी फाटक की ओर और कभी लच्छो की ओर। लच्छो ने तबेले की कोठरी का ताला खोल दिया तो वह आगे बढने लगा लेकिन दो कदम चलकर रुक गया और मगू की ओर देखने लगा। मगू ने हाथ से उसे जल्दी जाने का सकेत दिया, तो वह तेज तेज कदम उठाता हुआ कोठडी की ओर चल दिया।

लच्छो दरवाजा खोलकर अन्दर चली गई। कोठडी भूस से भरी हुई थी। उसमे एक ओर कपास की छडिया पडी थी और उनके नीचे गहू के सिट्टे। लच्छो ने सिट्टो तक पहुचने के लिए दरवाजे का एक पट बन्द कर दिया। उसने झुककर सिट्टे उठाने के लिए हाथ बढाए तो उसके सीने पर दो हाथ रीगने लगे। उसके मुह से हल्की-सी चीख निकली और वह अपने आपको छुडाने के लिए हाथ पाव मारने लगी।

'छोड दो मुझे ?'

लेकिन हरदेव की ग्रिफ्त मजबूत थी और लच्छो केवल हाथ पाव मारकर रह गई। उसका अग अग ढीला पडने लगा। वह भर्राई हुई आवाज मे बोली

छोड दो मुझे वरना मैं चौधरी जी से कह दूगी।

क्या कहोगी ? बात तो यू करती हो जसे दादी सत्यवती हो।

कपास की छडियाँ कुछ देर तक उनके बोझ तले कडकडाती रही और फिर थोडी देर के बाद हरदेव कोठडी से निकलकर हवेली से बाहर चला गया। लच्छो वहीं भूस पर बठी रही। लेकिन जब उसने बाहर किसी की आहट सुनी तो वह जल्दी से उठी और अपनी झोली सिट्टो से भरने लगी। झोली भरकर उसने दरवाजे के दोनो पट खोल दिए। वह अपना टोकरा उठाकर बगल वाले दरवाजे से चौधरी के रिहायशी मकान मे चली गई। उसने टोकरा एक ओर रख दिया और मन को मारती हुई बोली, 'चौधरानी जी, रोटी दे दो।'

आँगन मे ज्ञेवरानी बतन साफ कर रही थी। उसने लच्छो की ओर देखा और फिर चौधरानी के बुलाने पर अदर चली गई। थोडी देर के बाद ही वह रात की बची हुई बासी रोटिया लेकर बाहर आ गई। लच्छो ने झोली की बजाय अपने हाथ आगे फलाए तो वह आँखें फाड फाडकर देखती हुई बोली

'तेरी झोली मे क्या है ?'

कुछ भी हो तुझे क्या। तू रोटी दे मुझे।' लच्छो ने हँसने का प्रयास

करते हुए कहा।

'यह सिट्टे कहाँ से लाई हो ?'

'चौधरी हरदेव ने दिए हैं।' लच्छो ने अपने ताजा जख्म पर फिर से नाखून लगा दिया। धेवरी ने लच्छो की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा और अन्दर चली गई। लच्छो घर जाने की तैयारी कर रही थी कि चौधरानी बाहर आई और उसे सख्त लहजे में कहने लगी 'नी यह तूने क्या किया ? ये सिट्टे तो बीज के लिए रखे थे। तू इन्हें क्या उठा लाई ?'

'चौधरानी जी मैंने अपने-आप नहीं लिए। मुझे चौधरी हरदेव ने दिए हैं। कहता था इन्हें ढोरा लग गया है।' लच्छो को पसीना आ गया।

'कहर की धूप पड़ रही है इन्हें ढोरा कैसे लग गया ? उस मोए मंगू को कई बार कहा है कि तबेले की कोठड़ी का दरवाजा खोलकर हवा लगने दिया कर। चौधरी को पता चल गया तो मेरी शामत आ जाएगी। तू इन्हें जो उठाने गई मुझसे दाने माँग लेती। फेंक इन्हें।'

चौधरानी ने लच्छो की ओर पाँव की ठोकर से टोकरी बढ़ाते हुए कहा। लच्छो ने सिट्टे टोकरी में डाल दिए और खाली झोली लेकर बाहर आ गई।

१६

प्रीता बार-बार गली में झाँकती और लच्छो को कहीं न पाकर अन्दर जमीन पर बैठकर फिर हाय-हाय करना शुरू कर देती। निक्कू खाट पर पड़ा पेट को दबाने लगता और जो मुँह में आता बक देता। बच्चे प्रीता के इर्द गिर्द रोते हुए आते और मार खाकर इधर उधर बिखर जाते।

निक्कू गिरता-पड़ता अपनी खाट से उठा और प्रीता के पास बैठता हुआ बोला 'भूख के मारे पेट में दर्द होने लगा है। अगर मुझे रोटी न मिली तो मेरी जान निकल जाएगी।'

निक्कू को देखकर बच्चे भी प्रीता के पास आ गए। प्रीता अपने माथे को बाएँ हाथ से टिकाती हुई बोली 'आज तो लच्छो ने बहुत ही देर कर दी है।

फिर वह रोटी मांगते हुए बच्चों को पुचकारने लगी। लेकिन जब उनकी जिद बढ़ती ही गई तो वह उन्हें गालियां देती हुई बोली, 'मोयो, सबर करो। मेरा मास मत नोचो।'

प्रीतो की गालियों और झिड़कियों का बच्चों पर कोई असर नहीं पड़ रहा था। वे पहले से भी ज्यादा चीखने लगे। प्रीतो जानती थी कि वे सच्चे हैं। सुबह से उन्होंने लस्सी की केवल आधी आधी कटोरी पी थी।

प्रीतो अलसाई हुई उठी और कोठड़ी में जाकर खाली बर्तन देखने लगी। बच्चे भी उसके पीछे कोठड़ी में आ गए। जब वह बर्तन उठाकर उसके अन्दर झांकती तो बच्चे भी बर्तन पर झुक जाते परन्तु उसे अपने पेट की तरह खाली पाकर मायूस हो जाते। प्रीतो को जब सब बर्तन खाली नजर आए तो उसे क्रोध आ गया। उसने चौड़े मुंह वाले पीतल के देगचे में नजर डाली तो उसमें मकड़ी के जाले पड़े हुए थे। यह देखकर उसका क्रोध और भी ज्यादा बढ़ गया। वह तीखी आवाज में बोली, 'मेरी मां ने देगचा तो यह सोचकर दिया होगा कि प्रीतो के सुसराल में पकवान पकते होंगे। लेकिन यहां जब से आई हूं भंग ही भुनती देखी है।'

उसने देगचा उलटाकर जमीन पर पटक दिया और गुस्से में बोली,
'बेच दो इसे। हमें इसमें कौन सी खीर पकानी है।'

उसका सबसे बड़ा बेटा अमरू झट बोल उठा,
'ला मां मैं बेच आता हूं। बाबू ठठियार बर्तन लेता है।'

प्रीतो ने क्रोध में देगचा अमरू की ओर लुढ़का दिया और वह उसे सिर पर रखकर दोनों हाथों में थामे हुए दरवाजे की ओर बढ़ गया।

जब वह दहलीज पार करने लगा तो प्रीतो के अन्दर जैसे कोई चीज झटका खाकर टूटने लगी। उसने सोचा कि यह देगचा तो उसकी मां की निशानी है। वह इसे भी बेच रही है। यह सोचकर प्रीतो के मन प्राण कांप गए और वह आवाजें देती हुई अमरू के पीछे दौड़ गई। लेकिन अमरू उसकी आवाजों और गालियों को अनसुना करता हुआ बहुत आगे निकल गया।

रास्ते में अमरू ने सोचा कि एक दिन उसने गुरुद्वारे के महन्त की गड़वी चुराकर बेची थी तो उसके दस आने मिले थे। यह देगचा तो बहुत बड़ा है। इसके चोखे दाम मिलेंगे। यह सोचकर उसके कदम और भी तेज हो गए। प्रीतो गिरती-पड़ती गली तक उसके पीछे आई और यह देखकर कि अमरू मुहल्ले से बाहर कुएं की छपड़ी भी पार कर गया है वह अपने-आप से बोली, 'मुआ अब देगचा बेचकर ही आएगा। उसका बस चले तो घर के मिट्टी के बर्तन भी

बच दे ।'

अमरू हापता हुआ बाबू ठठियार की दूकान पर पहुचा और उसके सामने देगचा रखकर बोला, 'इसे तोलकर पसो का हिसाब लगाओ, मैं अभी आया।'

अमरू दौडता हुआ छज्जू शाह की दूकान पर आ गया और तेज-तज्ञ साँस खीचता हुआ बोला

'शाह जी चार आन का गुड, एक आने का नमक और चार आने का गेहूँ का आटा और एक डिब्बी सिगरेट ।'

पल्ले पसे भी हैं या खाली सौदा ही माँग रहे हो ?' छज्जू शाह ने अमरू को शक भरी नजरो स देखत हुए कहा ।

'तुम सौदा बाधो मैं अभी पसे लाया । अमरू फिर बाबू ठठियार की दूकान पर आ गया । बाबू ठठियार ने इस दौरान मे डंडी मारकर देगचा तोल दिया था । उसने अमरू के हाथ पर डेढ रुपया रखा तो वह तिलमिलाकर बोला

'यह क्या दो रुपया तो दो इतना बडा देगचा है ।

मैंने पहले ही दवन्नी ज्यादा दी है । ऐस पुराने के तो कोई इतने पैसे भी नही देगा और फिर तू भी तो कहा से चोरी करक ही लाया होगा ।'

बाबू ठठियार ने देगचे के पेंदे पर हथौडे से दो चार चोटें लगाकर उसका हुलिया बिगाड दिया और अपने आसन हर बठ बठ पीछे कोठडी म फेंक दिया । अमरू कुछ और कह बिना पसे मुट्ठी म दबाकर छज्जू शाह की दूकान पर आ गया ।

'शाह जी लाओ मरा सौदा । उसने अपनी मुट्ठी खोल दी ।

छज्जू शाह ने अमरू क हाथ म पस दखे तो हैरान रह गया और तराजू सँभालता हुआ बोला

कहा स चोरी करक तो नही लाया ? तरे पास इतने पस कहाँ स आ गए ?'

शाह जी तुम्हें पसा स मतलब है । यह चोरी क हो या गाधी क । अमरू न तीख स्वर म कहा ।

'बात तो ठीक है । मुझे तो केवल पसा स मतलब है ।

छज्जू शाह को अमरू का लहजा बहुत बुरा लगा लेकिन उसकी बात मन को भा गई । उसन सौदा तोलकर कागज क पुडा म बांध दिया ।

अमरू न सिगरेट की डिबिया जेब म रखते नाद का हुक्की का शट्टा दीवार म लग हुए सिगरेट छिपा दी ।

लफ्टा पर आटा का डीब्बा उठाकर हाँफ भागा

'कहा लगा दी इतनी देर ? तेरी राह देखत देखत मेरी तो आखें पक गईं।'

लच्छो ने उसे कोई उत्तर न दिया और खाली टोकरा फेंककर चोली मे बासी रोटिया निकालकर अपनी मा के हाथ मे थमा दीं और एक ओर हटकर जमीन पर ही बैठ गई। बच्चे रोटियां देखते ही उछल पड़े और उन्होंने प्रीतो को घेर लिया।

प्रीतो उन्हें पीछे हटाती हुई बोली

गुड की ढेली माग लेती। मकई या बाजरे के दाने माग लेती। चौधरानी को अपने बाप के बारे मे बताती कि वह जख्मी हुआ पडा है।'

लच्छो ने फिर उसे कोई उत्तर न दिया। प्रीतो उसे चुप देखकर क्रोध भरे स्वर मे बोली

'मैं कुत्तो की तरह भौंक रही हू और तू पटरानियो की तरह कानो मे रुई ठासे बैठी है। मेरी बात का उत्तर क्यो नही देती ?'

'छोटे चौधरी ने गदम के सिट्टे दिए थे लेकिन चौधरानी ने वापस रखवा लिए।' लच्छो ने प्रीतो की ओर देखे बिना ही कहा।

प्रीतो उसकी ओर ध्यान से देखती रही और फिर उसका दिल पसीजने लगा। वह एकदम ही इस तरह चुप हो गई जैसे उसे गहरी चोट पहुची हो। वह बुत की भाति खडी रही और बच्चे उसके हाथ से रोटिया छीनकर आपस मे लडने लगे। फिर वह जैसे नींद से जाग उठी और बच्चो को गालिया देती हुई उनसे रोटी के टुकडे छीनने लगी।

'मोए घर मे कोई चीज रहने नही देते। आती बाद मे है खा पहले जाते हैं। फिर वह लच्छो को सम्बोधित करती हुई बोली

तुम्हें भी रोटी का टुकडा मिला है या नही ?' और वह उसके उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही बच्चो को गालियां देने लगी।

लेकिन उसे तुरन्त ही एहसास हो गया कि गाली गलौज का कोई फायदा नही है। क्योकि रोटियाँ बच्चो के पेट के अन्दर जा चुकी थी। कुछ देर तक वह एक ही जगह पर खडी सोच मे डूबी रही और फिर धीरे धीरे कदम उठाती हुई बाहर आ गई।

काली उनकी दीवार के साथ लगने वाली अपनी बुनियाद देख रहा था। प्रीतो उसके निकट जाकर बोली, काली पुत्तरा, हमारी तरफ जगह बिल्कुल न छोडना। बरसात मे पानी गिरने से दोनो दीवारें बोदी हो जाएगी। तेरी दीवार तो पक्की होगी, इसलिए खडी रहेगी लेकिन हमारी कच्ची दीवार गिर जाएगी।'

'हां चाची, मैंने आधा हाथ जगह छोड़ दी है। जब कभी पक्का मकान बनाओ तो अपनी दीवार इधर बढ़ा लेना।' काली ने खाली जगह को ध्यान से देखते हुए कहा।

'बाबा, पक्का मकान कौन बनाएगा? यहां तो एक डंग की रोटी नहीं मिलती। तेरा चाचा खाट पर पड़ा है। तीन दिन से मेरा अंग अंग दर्द कर रहा है। लच्छो ...।' प्रीतो आगे कुछ कह न सकी और बात का रुख बदलती हुई बोली

'मैं बाहर निकली थी कि किसी के घर से आटे की चुटकी मांग लाऊं ताकि बच्चों के पेट में कुछ तो जाए।' फिर वह कुछ क्षण चुप रहकर बोली

'सुना, तेरी चाची कहां है?'

'यहीं है ... चाचे का अब क्या हाल है?' काली ने पूछा।

'कोई हाल नहीं। खाट पर पड़ा हाय हाय कर रहा है।' प्रीतो ने उत्तर दिया।

'कोई दवा-दारू किया या नहीं?'

'दवा दारू?' प्रीतो ने काली की ओर अजीब सी नजरों से देखा और खोखली हँसी हँसती हुई बोली

'सवेरे से सब भूखे बैठे हैं घर में। नसवार लेने के लिए भी आटा नहीं है। दवा दारू कहां से करूंगी।' प्रीतो की आंखें भर आईं और वह आंसू पोंछती हुई बोली

'घर से निकली थी कि किसी से बाजरे या मकई का आटा मांग लाऊं।'

'चाची से ले लो ...' काली स्वयं चाची की ओर बढ़ गया और उसकी खाट के पास जाकर बोला

'चाची आटा रखा पड़ा है ... चाची प्रीतो मांग रही है।'

इतने में प्रीतो भी चाची के पास आ गई और उसका हाल पूछने लगी। चाची ने निक्कू का हाल पूछा तो तिनककर बोली

'ठीक है ... उस समय तो उछल रहा था। अब दिनों के लिए खाट के साथ बंध गया है।'

काली आटे की बड़ी बाल्टी भर लाया। गेहूं का आटा देखकर प्रीतो दंग रह गई। उसने काली के सामने झोली फैला दी और फिर उसे समेटती हुई बोली

'मुझे बाटी ही दे दो। झोली में डाला तो बहुत सा आटा उसके साथ चिपक जाएगा। बाटी मैं लच्छो के हाथ भेज दूंगी।'

प्रीतो आटे की बाटी लेकर अपने घर जाने के लिए गली में आ गई लेकिन

फिर पलट आई और चाची के पास आकर बोली

गुड हो तो एक ढेली दे दो । तेरे देवर का दूगी । कहता है कि खडा होता हूँ तो चक्कर आ जाता है ।

'मेरे घर म तो नाम के लिए भी गुड नही है ।' चाची धीम स्वर म बोली

'काली खाण्ड वाली चाय पिता है, मैं भी जब कभी दिल चाह उसी से मीठा कर लेती हूँ ।

प्रीतो हैरान सी सोचने लगी कि काली गेहूँ का आटा खाता है, खाण्ड पीता है, इसीलिए तो इतना अकलमद है । उसको यू महसूस होने लगा जस काली किसी देश का राजा हो ।

आटा लेकर प्रीतो अपने घर चली आई और लच्छो के हाथ मे बाटी थमाती हुई बाली

ले तू रोटी बना ले ।' वह स्वय मिक्कू के पास जमीन पर बैठती हुई बोली दख, काली गेहू का आटा खाता है, खाड पीता है । एक तू है सारी उमर घर मे पडा खाट तोडता रहता है । अगर तू भी शहर चला जाता तो हम सब एश आराम स रहत ।' और फिर वह दीवार के सहारे अधलेटी अपने आप से बुदबुदान लगी

अच्छे कम किए हैं इन लोगा ने जो सुख भोग रहे हैं ।

घर म गहू का आटा देखकर सब बच्चे लच्छो के गिद जमा हा गए जसे आज कोइ विशेष चीज़ पक रही हो ।

'मैं चार रोटिया खाऊँगा ।'

'मैं छ खाऊँगा ।

मैं सब खा जाऊँगा ।'

बच्चे आपस म बहस करते-करत हाथा पाई तक पहुच गए ।

इतनी देर म अमरू भी देगचा बेचकर सामान खरीद लाया । प्रीतो ने उसकी झोली को ऊपर तक भरे दखा तो चीखकर बोली

मोया, बच आया देगचा ? जब तक पडा था तरी आँखा मे खटकता रहा । अब सबर हो जाएगा ।'

अमरू ने प्रीतो की बात को अनसुना करके कहा

गेहूँ का आटा लाया हूँ, गुड और नमक भी ।'

प्रीतो ने गुड का नाम सुना तो देगचे का भूल गई और चीखती हुई बाली

कहाँ है गुड ? ला मुझे द ।

अमरू ने दो ढेलियाँ रखकर बाकी गुड उसके सुपुद कर दिया । प्रीता ने

गुड की एक ढेली लच्छा की ओर फकत हुए कहा

ल पुत्तर, तू खा ले। तुझे ता गुड बहुत प्यारा है।

प्रीतो को जब भी लच्छो पर प्यार आता तो वह उस पुतर कहकर पुकारती थी।

बच्चे गुड पर टूट पडे और प्रीतो के चीखने चिल्लाने और मारपीट करने के बावजूद छीनकर इधर उधर भाग गए। प्रीतो को देगचा फिर याद आया तो वह अमरू को गालियां देती हुई बोली

'माया घर उजाड है। बेटा बाप से भी दो कम्म आगे निकल गया है। आज देगचा बेच आया है कल मा-बहन को बेच आएगा।

लच्छो ने य शब्द सुने तो चौंक गई और आटा गूधती हुई सोचने लगी कि माँ घर से आटा उधार माँगने गइ तो आटा ले आई। अमरू देगचा बेचकर आटा और गुड दोना ल आया। लेकिन वह अपना सब कुछ लुटाकर भी खाली हाथ वापस आ गई।

लच्छो की आखो से टप टप आसू गिरकर आटे मे मिलने लगे।

१७

काली और मिस्तरी सन्तासिंह न मिलकर अगली दीवार दो ही दिन म काफी ऊपर उठा दी। सन्तासिंह दीवार के बराबर खडा होकर उसे अपने कद से मापता हुआ बोला

'यह दीवार तो अमर बेल की तरह ऊपर उठी है। असल म राज के साथ गारा इट देने वाला आदमी चुस्त हो तो काम बहुत जल्दी खत्म होता है। अगर दिहाडी पर मजदूर लगाया जाय ता वह दिन म दस बार हुक्का पीएगा, बीस बार उसे प्यास लगेगी और पचास बार उस पशाब की हाजत महसूस होगी।'

मिस्तरी जी तुम्हारा हाथ बहुत साफ है। कई मिस्तरी इट को तोडने म ही आधी घडी लगा दत हैं। तुम एक ही चोट म इट को इस तरह ताड दत हो जस आरी स चीरी गइ हो। काली न मुसकराते हुए कहा। सन्तासिंह खुश होकर बोला

'तूने जोडे का गुरद्वारा देखा है कि नही। यह गुरद्वारा आठ मिस्त्रियो ने बनाया है। लेकिन मैंने अपना हिस्सा दो दिन पहले ही खत्म कर दिया था। जो दीवारें मैंने बनाई हैं व दूर से ही अलग नजर आती है। निशान साहब का चबूतरा भी मैंने बनाया था। उस पर पलस्तर मैंने अपने हाथो से ही किया था। अब तक मलाई की तरह नम है।' सन्तासिह दीवार का ध्यान से देखता और अहिस्ता-अहिस्ता उसके साथ साथ बढता हुआ कह रहा था।

दीवार का निरीक्षण करने के बाद सन्तासिह काली के बहुत निकट आकर गोपनीय स्वर म बोला

'एक बात पूछू—बताओगे ?'

काली ने हा म सिर हिलाया तो वह अपना मुह उसके कान के निकट ले जाकर बोला

'यह जो लडकी तेरे घर आती है मगू की बहन है ना ?'

'हाँ।'

तेरे साथ इसका कुछ खास ही सम्बध मालूम होता है । सन्तासिह ने अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि काली के बदले हुए तेवर दखकर अपनी बात पलटता हुआ बोला

मेरा मतलब है कि यू तो गाव की हर लडकी बहन होती है लेकिन मेरी समझ म नही आता कि ज्ञानो सारा दिन तेरे घर मे ही क्या घुसी रहती है वस काई हज भी नही है मन मिल की बात है जाट लोग तो सिफ अपनी सगी बहन की ही सौगध खाते हैं। यह कहकर सन्तासिह काली की ओर देखने लगा और उसे खामोश पाकर फिर बोला

'अपने मन की बात तो तू ही जानता होगा लेकिन वह लडकी बस तेरी आख के इशारे की इतजार म है और उस पाते ही पक हुए बेर की तरह तेरी गोद म आ जाएगी।' सन्तासिह खी खी करता हुआ हँसने लगा और अपने अग अग को अकडाता हुआ बोला

क्या मगू का पक्का मकान बनाने का इरादा नही है ?'

काली न सन्तासिह की ओर ध्यान स दखा और उसके कधे पर हाथ रख कर बोला

मिस्तरी तू ब्याह क्या नही कर लेता ?

सन्तासिह पहले तो खिलखिलाकर हँसने लगा आर फिर एकदम बहुत गभीर हो गया। काली न अपनी बात फिर दोहराइ तो वह एक एक शब्द को चबाता हुआ बोला 'अब ब्याह क्या होगा। समय निकल चुका है। उसने निराशा भरी

रस्सी साँस छोडी और अपना सामान सँभालने लगा। काली मिस्तरी के निकट जाकर बोला

मेरी बात का जवाब दो टाल क्या रहे हो।'

सन्तासिंह ने तसी को हाथ में थामे हुए कहा

मेरे बाप ने मुझे तसी थामना और ईंट रखना बचपन में ही सिखाना शुरू कर दिया था। लेकिन पेश्तर इसके कि वह मुझे घर बनाना सिखा सके, वह इस दुनिया से चल बसा। जब मुझे घर बनाने का ढंग आया तो समय गुजर चुका था और मेरे माँ-बाप दोनों में से कोई भी जिन्दा नहीं था।'

'तो इससे क्या फर्क पडता है। किसी के भी माँ-बाप हमेशा जिन्दा नहीं रहते। काली ने कहा।

तू अभी यह बात कह सकता है क्योंकि तेरी चाची जिन्दा है। मेरी एक मौसी थी उसे मेरे ब्याह का फिक्र था और वह एक दो जगह बातचीत चला रही थी लेकिन उसे भी मौत ने आ घेरा। सन्तासिंह कुछ क्षणों के लिए चुप रहकर फिर बोला

काली दास लोग लडकी, लडके को नहीं देते बल्कि उसके माँ-बाप को देते हैं खानदान देखते हैं जब खानदान ही न हो तो देखने कौन आएगा।' सन्तासिंह की उदासी गहरी होती जा रही थी और वह उसे छिपाने के लिए खोखली हँसी हँसता हुआ बोला

'चलो आधी से ज्यादा उम्र गुजर गई है जो रह गई है वह भी गुजर जाएगी।'

काली भी कुछ उदास हो गया। उसे चुप देखकर सन्तासिंह ने कहा

'आदमी के पास चार खेत हों तो अर्थी में लेटकर भी शादी करा सकता है लेकिन मेहनत मजदूरी करने वाले आदमी के सिर पर किसी का साया हो तभी शादी होती है।

मैं तो अभी इस झंझट में नहीं पडा हूँ। काली ने भयभीत स्वर में कहा और फिर मिस्तरी को ध्यान से देखकर वह बोला

तुम्हारी उम्र अभी इतनी ज्यादा तो नहीं है कि शादी न हो सके। तुम्हारा भाई अब भी जतन करे तो कहीं न-कहीं से रिश्ता मिल सकता है।'

सन्तासिंह घृणा भरे स्वर में बोला

नाहरसिंह के बारे में कह रहे हो? वह मेरी शादी क्या करा चुका। भाभी ने तो उसे इस तरह बस में कर लिया है कि वह बाकी सब रिश्ते भूल गया है। अब तो उसने गाँव से नाता ही तोड लिया। मैंने पिछले साल उसे चिट्ठी

लिखी थी कि मकान की छत खराब हो गई है। अगर कुछ मरम्मत हो तो शहतीर और कड़ियां बदल दे। उसने मेरी चिट्ठी का जवाब तक न दिया। मैं उनके पास शहर गया और बात शुरू की तो वह फिर भी चुप रहा लेकिन भाभी ने कोरा जवाब देते हुए कहा कि जिसे गांव के मकान में रहना है वही इसकी मरम्मत कर ले।' सन्तासिंह और भी ज्यादा गंभीर हो गया और उसकी बड़ी-बड़ी आंखें फैल गईं। वह तल्खी से बोला

भाभी चाहती तो अपनी छोटी बहन का रिश्ता मेरे लिए ले आती लेकिन उसे डर था कि मेरी शादी हो गई तो मैं अलग हो जाऊंगा या उनके साथ भी रहूंगा तो उसके बच्चों की पल्टन को पालने-पोसने के लिए अपनी कमाई खर्च नहीं करूंगा। इसलिए वह हमेशा टालमटोल करती रही लेकिन जब से वह शहर गई है उसने मेरे ब्याह का जिक्र तक छोड़ दिया है। जब मैं मकान की मरम्मत के बारे में बात करने गया था तो मुझे कहने लगी कि उसके बड़े लड़के और छोटी लड़की को गोद ले लूं। इससे तुम्हारा कुल भी चलता रहे। मैंने उसे जवाब दिया था कि पराए तेल से कुल का दीप नहीं जल सकता।

काली कुछ देर सोचने के बाद बोला

मिस्तरी जी तुम्हारे पास तो पैसे की कमी नहीं है। कहीं से औरत खरीद क्यों नहीं लेते ?

इस काम में भी बहुत ठगी है। मुझे तो पचास रुपये गंवाने के बाद ही अक्ल आ गई लेकिन कई लोगों ने इस काम में बहुत नुकसान उठाया है। जोड़े के सरदार पूर्णसिंह का तो घर-बार ही लुट गया। वह एक औरत खरीद लाया। वह सात दिन उसके घर में रही और हर चीज की टोह ले ली। और फिर एक रात जब पूर्णसिंह जिला कचहरी गया हुआ था तो वह सारे घर में झाड़ू देकर मिट्टी तक उठाकर ले गई। पूर्णसिंह ने थाने में रपट दर्ज करा रखी है। अभी तक तो कुछ पता नहीं चला।'

मिस्तरी जी, तुम्हारे साथ कैसे ठगी हुई थी ?' काली ने दिलचस्पी लेते हुए पूछा।

छोड़ो इस बात को। सन्तासिंह ने उकताहट भरे स्वर में कहा। परन्तु जब काली ने जिद पकड़ ली तो वह बोला

नाबके के लाला बनारसी दास को तो तुम जानते ही हो। मेरा उसके साथ बहुत देर से उठना-बैठना है। उसका तीन मंजिला मकान मैंने ही बनाया था। उसी ने एक आदमी के साथ तीन सौ रुपये में सौदा तय किया था। वह औरत विधवा थी लेकिन बच्चा कोई नहीं था। अपनी ही जात बिरा

हरी की थी। जो आदमी उस औरत के बारे में सौदा तय करने आया था उसने हमारे साथ कुछ इस ढंग से बातचीत की कि बनारसी दास जैसा चालाक आदमी भी धोखा खा गया। उस आदमी ने बताया था कि औरत का गाँव यहाँ से थोड़ी दूर है। उसका बाप मर चुका है और माँ का नाम जगवन्त कौर है। वह हमसे पचास रुपए बयाना ले गया और तीन दिन के बाद औरत को साथ लाने का वायदा कर दिया। उसने बात सब अच्छा-खासा बना लिया था। तीन दिन के बाद वह एक औरत को अपने साथ लाया और सारी बात पक्की कर ली। शाम को वह यह कहकर वापस चला गया कि तीन दिन ब्याह की तैयारी के लिए चाहिएँ। चौथे दिन सवेरे जोड़े को गुरुद्वारे में आनन्दकारज करवाया जाएगा। मैं गुरुद्वारे के ग्रन्थी का यह भाया और अखण्डपाठ रखवा दिया। चौथे दिन सवेरे ही लाला बनारसी दास और अपने गाँव के चौधरी पूर्णसिंह को साथ लेकर मैं वहाँ पहुँच गया। हमने शाम तक उसका इन्तजार किया लेकिन न वह आदमी आया और न वह औरत ही आई। अगले दिन मैं और बनारसी दास उस आदमी के गाँव गए तो वहाँ से पता चला कि वह पहले वहाँ छोटी-मोटी दुकान करता था और फिर एक दिन वह गाँव के धीवर की युवा लड़की को भगाकर ले गया। उसे आज तक पुलिस नहीं पकड़ सकी तो तुम उसे कहाँ तलाश कर सकोगे। काली दास औरत वही होती है जिसे बाजे-गाजे के साथ सेहरे बाँधकर बारात के साथ लाया जाए। बाकी औरत और घोड़ी उसकी होती है जो इस पर सवार है। सन्तासिंह अपने औजार सँभालता हुआ बोला

'अब मैं चलता हूँ जाकर अभी रोटी पकानी है और पाठ करना है।

काली भी सन्तासिंह के साथ बोरी में औजार डालने लगा। जब उसने अपना सब सामान समेट लिया तो काली के कंधे पर हाथ रखकर बोला

'बल्ल्या तेरी अभी उम्र है, यही ब्याह कर ले। चाची ने आँखें बन्द कर ली तो तुम्हे कोई नही पूछेगा। सरकारी साँड की तरह तुम्हें चारों तरफ से डंडे ही पड़ेंगे।' सन्तासिंह चाची को सम्बोधित करता हुआ बोला

'चाची मकान बन जाए तो काली की शादी कर देना।

चाची ने चारपाई से उठने की कोशिश करते हुए कहा

मिस्तरी जी मैं तो कह कहकर हार गई हूँ तुम इसे समझा दो। निक्कू की पत्नी प्रीतो अपनी भतीजी का रिश्ता ला रही है।' सन्तासिंह काली के कान के निकट अपना मुह ले जाकर बोला—'प्रीतो की भतीजी से ब्याह न करना। अगर वह अपनी बुआ जसी निकली तो तुम्हे अपने बच्चों की पहचान करना

भी मुश्किल हो जाएगा।' सन्तासिंह बहुत ज़ोर से हँसने लगा। काली भी पहले मुसकरा दिया लेकिन बाद में सजीदा हो गया। चाची सन्तासिंह की हँसी से बेन्यास अपनी बात जारी रखती हुई बोली

'यह एक बार हाँ कहे, मैं सात लड़कियाँ तलाश कर लूँगी। इसकी उम्र के लड़कों के तो चार चार बच्चे हैं।'

इतनी देर में ज्ञानो आ गई और चाची का हाल पूछने के बाद दीवार की ओर देखने लगी। सन्तासिंह ने ठंडी आह भरी और फिर ऊँची आवाज़ में काली से बोला

तू शादी क्यों नहीं करता। जल्दी शादी करा ले ताकि चाची भी चार दिन बहू से सेवा करा सके।'

मिस्तरी जी, तू ठीक कहता है। अब मेरा आखिरी पहर है। इस शरीर का क्या पता है कब जवाब दे जाए।'

'चाची, किसके ब्याह की बात हो रही है।' ज्ञानो ने खुश होते हुए कहा।

मिस्तरी जी काली का ब्याह करने के लिए कह रहा है।' चाची ने उत्तर दिया।

'अच्छा—चाची जल्दी करो—हम ढोलक बजाएँगी और गिद्दा डालेंगी।' ज्ञानो ने और भी ज़्यादा खुश होते हुए कहा।

ज्ञानो की बात सुनकर चाची मुसकरा दी और उसकी झुर्रियाँ आँखों पर छा गई। काली चुप था। सन्तासिंह ज्ञानो की ओर ध्यान से देख रहा था और उसकी नज़रें उसके कपड़ों को चीर जाना चाहती थीं। वह ज्ञानो की बात सुनकर खिलखिला उठा और काली के कन्धे पर हाथ मारता हुआ बोला

'यह लड़की तो ऐसे बात कर रही है जैसे तेरी वाग (पल्लू) पकड़ेगी।

सन्तासिंह ने बहुत ज़ोर से ठहाका मारा और अपने औज़ारों की बोरी पीठ के पीछे लटकाकर गली में आ गया।

१८

मिस्तरी सन्तासिंह के जाने के बाद काली चाची और ज्ञानो दोनों से आँख चुराता हुआ जल्दी-जल्दी काम समेटने लगा। उसने गारे की तगारी एक ओर

रख दी, बिखरी हुई ईंटें इकट्ठी कर दीं और बाल्टी में पड़े पानी से हाथ मुंह धोकर चाची से बोला

मैं शहतीरों का बन्दोबस्त करने के लिए महाशय तीरथराम के पास जा रहा हूँ। सुना है उसके पास पुराने शीशम के शहतीर हैं।'

महाशय तीरथराम की दूकान अब नाम मात्र ही थी। दूकान का दालान खाली पड़ा था। अब वह केवल मोंगी मोंगी सौंफ ही रखता था। दालान के पीछे कोठड़ी में एक ओर कुछ बोरियाँ पड़ी थीं और दूसरी ओर लकड़ी के तख्ते रखे थे। महाशय के तराजू और बाटों को जंग ने खाना शुरू कर दिया था। उसके तीनों लड़के शहरों में मुलाजमत करते हैं। दोनों लड़कियों की शादी हो चुकी थी। गांव में केवल महाशय और उसकी पत्नी रहती थी। उसने दो भैंसें पाल रखी थीं और वह उनके दूध का घी बनाकर अपने लड़कों को शहर भेज देता था। अपनी गुजर बसर के लिए महाशय छोटा मोटा काम करता रहता था। नई फसल निकलने पर अनाज खरीद लिया, गुड़ शक्कर की बोरियाँ रख लीं और कहीं सस्ती लकड़ी मिल गई तो उसका सौदा कर लिया। उसकी दूकान पर समाचार पत्र आता था इसलिए सारा दिन खूब रौनक रहती थी और वाद विवाद होता रहता था।

जब काली महाशय तीरथराम की दूकान पर पहुंचा तो डा० बिशनदास और पादरी अचिंतराम वहाँ बैठे थे। बिशनदास और महाशय बहस में उलझे हुए थे। काली ने तीनों को बन्दगी की तो कुछ क्षणों के लिए बहस बन्द हो गई। बिशनदास ने हुक्का गुड़गुड़ाते हुए काली के साथ गर्मजोशी से हाथ मिलाया। पादरी ने उसकी पीठ थपथपाकर आशीर्वाद दिया और महाशय ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते की। डाक्टर बिशनदास काली का हाथ दबाता हुआ बोला

काली तुम्हें गाँव में आए हुए आज कितने दिन हो गए हैं लेकिन तू मुझे मिलने नहीं आया। मैं खुद चला आता लेकिन दूकान से फुर्सत नहीं मिलती

काली दास बस एक मिनट।

डाक्टर ने हाथ लहराकर काली को रोका और फिर हुक्के की नय महाशय की ओर मोड़ता हुआ बोला

महाशय जी इन्कलाब को न तुम रोक सकते हो और न ही पादरी जी। इन्कलाब तो चलती बाढ़ की तरह है जो धर्म के कच्चे किनारों को तोड़कर चारों ओर फैल जाएगा।

पादरी ने काली को सम्बोधित करते हुए कहा

सुनाओ बेटा क्या हाल है।

'पादरी जी, ठीक हू ।' काली पादरी की ओर देखता हुआ बोला।

पादरी अचिन्तराम ठिगने कद का आदमी था। वह सफेद पगडी, सफेद लटठे की सल्वार सफेद कमीज और चाहे गर्मी हो या सर्दी ऊपर लम्बा कोट पहनता था। उसके हाथ म हर समय चान्दी की मुटठी वाली छडी रहती थी। पादरी का चेहरा नन्ही मुन्नी गुडिया जैसा था और उस पर हर समय मुस कराहट खेलती रहती थी।

पादरी न अपने चेहरे पर लम्बी चौडी मुसकराहट लाते हुए कहा

काली दास, सुना है तुम मकान बना रहे थे कि तुम्हारे पडौसी निक्कू ने झगडा खडा कर दिया?'

अब तो फसला हो गया है। पटवारी ने जरीब से पमायश करके मेरी जगह निकाल दी है।'

'बहुत अच्छा किया बेटा ईसा मसीह की भी यही तालीम है कि पडोसियो के साथ शान्ति से रहो। आसमानी किताब मे लिखी हुई बातें सदा सच होती हैं। पादरी ने नम्र स्वर म कहा। काली तनमयता से पादरी की बातें सुन रहा था। पादरी फिर से बोला

'कभी-कभी मैं आप लोगो के मुहल्ले मे जाता हू। ईसा मसीह का भी यही हुक्म है। वसे भी गरीब आदमी परमात्मा के ज्यादा नजदीक होता है। अजील पाक म लिखा है—'ऊँट का सूई के सुराख से गुजर हो सकता है लेकिन धनवान का स्वग मे गुजर मुमकिन नही हैं। पादरी कुछ क्षणो के लिए रुककर फिर बोला

तुम्हारे मुहल्ले का नन्दसिंह है ना—वही जो जूते बनाता है। भला आदमी है। एक दिन वह मुझे बाहर खेतो मे मिल गया और मेरा हाथ पकडकर बोला—पादरी जी, मै चमार नही रहना चाहता। इससे बचने के लिए मैंने गुरु का अमृत चखा और सिख बन गया। लेकिन फिर भी रहा चमार का चमार। मुझे कोई तरकीब बताओ कि मैं चमार न रहू। पादरी की आवाज खरगोशी बन गई और वह काली के निकट होकर बोला

'उसके घर मे कभी कभी जाता हू। उसे ईसा मसीह की वाणी बहुत प्यारी है। उसका बडा लडका दिल्ली के बडे दफ्तर म भर्ती हो गया है। यह सब ईसा मसीह की महरबानी से हुआ है। वह सबका पवित्र पिता है वह सबके पाप अपने सिर पर ले लेगा। मैं किसी दिन तुम्हारा मकान देखने आऊँगा। जब कोई आदमी ऊँचा उठने की कोशिश करता है तो मुझे बहुत खुशी होती है।

महाशय ने पादरी को काली के सामने अपना प्रचार करते देखा तो वह विशनदास स जो अभी तव अपनी बात पूरी नही कर पाया था, क्रुद्ध स्वर म बोला

'विशनदास अव चुप हो जा। हमेशा अपनी ना हाका कर। तू कौमनश्ट (कम्युनिस्ट) क्या बना है दिमाग चाट लिया है। फिर वह पादरी को सम्बोधित करता हुआ बोला

तुमम और विशनदास म एक ही फर्क है और वह यह कि विशनदास ऊँचा बोलता है और तू बहुत धीमा। लेकिन तुम दोनो जहा कही भी किसी को देख लेते हो उस पकडकर बठ जाते हो और दूसरा आदमी सुने-न सुने अपनी बाँसुरी बजाते रहते हो।'

पादरी महाशय की बात पर हँस दिया। काली मुसकराता हुआ बोला

पादरी जी मुझे बहुत अच्छी बातें बता रहे थे।'

'बातो की कमाई तो खाता है—मीठी छुरी है, महाशय ने कहा।

मेरी बुराई करने वाले का भी ईसा मसीह भला करेंगे। पादरी ने महाशय की ओर देखते हुए कहा।

विशनदास ने जल्दी जल्दी हुक्के के दो चार कश खीचे और उठकर काली का हाथ पकडता हुआ बोला

उठो अपनी दूकान पर चलते है। फिर उसने महाशय स कहा

मैं रात को आकर आपको इस समस्या की साइंटिफिक थ्योरी समझाऊगा। वसे लेनिन ने कहा है ।

महाशय ने विशनदास की बात को बीच म ही काट दिया और पादरी की ओर देखता हुआ बोला

कभी कभी अपने ग्रन्थ या महापुरुष का भी नाम ले लिया करो।' फिर उसने विशनदास से कहा

तू जब भी मुह खोलता है तो तेरी काली जबान पर मारक्स और लेनिन का नाम होता है और जब यह पादरी बोलता है तो एक ही आवाज निकलती है और वह अजील और ईसा मसीह की। विशनदास खिलखिलाकर हँस पडा और काली के साथ दूकान के चबूतरे से नीचे उतर गया।

गली म आकर विशनदास ने काली स पूछा

महाशय की दूकान पर कसे आया था ?

'मकान बना रहा हूँ उसके लिए शहतीर और कडियाँ देखने आया था ।

विशनदास जी यह बताओ कि आप कामरेड स डाक्टर कब बन गए ?'

विशनदास हँस पडा और फिर गंभीर होकर बोला

रोटी का बंदोबस्त भी तो करना था। खाली कामरेडी से बच्चा का गुजारा तो नहीं हो सकता। अब मैं पहले से ज्यादा काम करता हूँ। पहले मैं लोगों के पास चलकर जाता था। अब लोग मेरे पास चलकर आते हैं। मैं उन्हें रोग का इलाज बताने के साथ-साथ गरीबी का इलाज भी बताता हूँ। अब गाव म पार्टी के कई समथक बन गए हैं। ऊँचे मुहल्ले वाले चाननसिंह का लडका खेलसिंह, जो होशियारपुर कालिज म पढता था, अब पक्का कामरेड बन गया है। उसने पढाई छोड दी है। बहस म बहुत होशियार हो गया है। मुहल्ले म किसी को अपने सामने नहीं टिकने देता।'

काली विशनदास की ओर आश्चर्य से देखने लगा। उसे वह दिन याद आ गए जब विशनदास स्वयं जालन्धर कालेज म पढता था। छुट्टियों मे जब कभी वह गाव म आता तो हर शाम को वह उसे चो मे ले जाता और रात गए तक कई बातें समझाया करता—इन्कलाब की बातें, खेत मजदूरों के सघर्ष की बातें— य सब बातें काली की समझ स बाहर होती थी लेकिन उस पर इतना प्रभाव अवश्य पडा था कि उसने चौधरियों क लडको की गालियाँ सुनने से इन्कार कर दिया था और दो चार बार झगडा हो जाने पर हाथा-पाई भी की थी।

जब व दोनो दुकान पर आ गए तो डाक्टर बोला

सुनाओ कहाँ-कहा घूम फिर आए हो। क्या क्या काम करते रहे ?'

यहा से तो जालन्धर गया था। उसके बाद एक साथी मिल गया और उसके साथ कानपुर पहुच गया। वहाँ कई पापड बेलने के बाद कपडे के एक कारखाने म तीन साल मजदूरी की। काली न उत्तर दिया।

इसका मतलब यह है कि तुम परोलतारी बनकर आए हो।'

विशनदास ने मुसकराते हुए कहा। काली की समझ म कुछ नही आया और वह केवल इधर-उधर ताकता हुआ चुप रहा। कुछ क्षणो के बाद विशनदास बोला

सुना है तुम मकान बना रहे हो ?'

'हा बना तो रहा हूँ। मकान तो नही कहना चाहिए बस कोठा खडा कर रहा था।

'कोई कह रहा था कि निक्कू ने बुनियाद खोदने पर झगडा खडा कर दिया था।'

'हाँ। उसे मंगू न भडकाया था लेकिन अब मामला ठीक हो गया है।'

विशनदास सोचता हुआ बोला

मग्गू चौधरी हरनाम सिंह का एजंट है। गरीबी आदमी का जमीर खत्म कर देती है। गरीबी दूर हो जाए तो हर आदमी अपनी जमीर का मालिक आप होगा। और गरीबी दूर करने का एक ही रास्ता है और वह है इन्कलाब सारे समाज की काया कल्प।

जब काली ने विशनदास को कोई उत्तर न दिया तो वह सोचने लगा कि शायद उस पर पादरी की मीठी बातों का प्रभाव पड गया है। उसे दूर करने के लिए वह बोला

पादरी ऊपर से बहुत मीठा है लेकिन उसकी काट तेज छुरी से भी गहरी होती है। किसी दिन वह तुम्हारे घर पहुच जाएगा और कपडा का जोडा सामने रखकर कहेगा कि ये कपडे पवित्र पिता ने अपने गरीब बच्चों के लिए भेजे हैं। इन्हे कबूल करो और उस आसमानी बाप का शुक्रिया अदा करो जो सारी दुनिया के पाप अपने सिर पर लेने के लिए सूली पर चढ गया। वह केवल एक धर्म की अफीम का नशा उतारकर दूसरे धर्म का नशा पिलाता है। मेरे से पादरी भी घबराता है और महाशय भी। पण्डित सन्तराम तो मुझे देखते ही थू थू करना शुरू कर देता है।

विशनदास अपनी बातों का प्रभाव देखने के लिए काली की ओर तकने लगा। जब काली ने कोई उत्तर न दिया तो डाक्टर सोच में डूब गया और अपनी दाई टाँग को जोर जोर से हिलाने लगा। कुछ क्षणों के पश्चात वह फिर बोला

तुम बहुत देर के बाद गाँव आए हो। तुम्हे यहाँ के पोलिटिक्स का पता नही है।

विशनदास अभी अपनी बात पूरी नही कर पाया था कि दुकान के अन्दर की ओर उसके घर की खिडकी खुली और एक महीन आवाज ने कहा

पिता जी, बीजी कहती है रोटी खा लो।

अभी आया। डाक्टर ने बहुत तल्खी से उत्तर दिया और फिर काली से बोला

मैं तुमसे कह रहा था कि जिस कारखाने में तुम काम करते थे वहाँ मजदूरों की यूनियन जरूर होगी।

एक नहीं तीन यूनियनें थी।

तुम भी किसी यूनियन के मेम्बर थे या नहीं ?

तीनों यूनियनों का मेम्बर रहा सब बकवास। हर यूनियन के लीडरों

को सिफ अपने हलवे माण्डे से गज थी।'

काली की बात सुनकर विशनदास हैरान रह गया और पेश्तर इसके कि वह काली से कुछ कह अल्मारी के पीछे खिडकी एक बार फिर खुली और वही महीन आवाज आइ

पिता जी बीबी कहती है रोटी खा लो।'

'अभी आया बेटा।' डाक्टर विशनदास काली की ओर देखता हुआ बोला

'पूंजीपति यह कभी नही चाहते कि मजदूरा मे सगठन हो। यह एक इम्पीरियलिस्ट चाल है।'

विशनदास बहुत जोश से बोल रहा था कि उसकी तीन साल की बेटी बहुत मुश्किल स चबूतरे पर चढकर बोली

'पिता जी बीबी कहती है रोटी खा लो।

'अभी आया बेटा कहकर विशनदास काली को सम्बोधित करता हुआ बोला

ट्रेड यूनियन का बुनियादी असूल यह है कि । विशनदास बात अधूरी छोडकर सोच मे पड गया और जब अलमारी के पीछे खिडकी ज़ोर से खुली तो चौंककर उस ओर देखने लगा। बारीक क्रोधभरी आवाज आई

कितनी ही बार लडकी को भेज चुकी हू कि आकर रोटी खा लो। यहा कौनसी कमाई कर रहे हो जो तुम्हे फुसत नही है मोये लोगा को भी घर घर कोइ काम नही होता जो यहाँ आ जाते हैं। इसके साथ ही खिडकी धमाके के साथ बन्द हो गई। डाक्टर विशनदास सब बातें भूल गया और दूकान को ताला लगाकर चबूतरे से नीचे उतरता हुआ बोला

'काली दास, शाम को आना। फुसत से बठकर बातें करेंगे।

काली जब घर पहुचा तो मिस्तरी सन्तासिह कमर तक उठी दीवार के साथ खडा ज्ञानो को ध्यान से देख रहा था जो चाची के पास बैठी सूत की उलझी हुई तारा को सुलझा रही थी।

'मिस्तरी जी, काम शुरू करें। काली ने कमीज़ उतारकर खाट पर फेंकते हुए कहा।

'कहाँ पर गया था ? सन्तासिह होठो पर जबान फेरता हुआ धीमी आवाज़ म बोला

माशूक बढिया है।' काली ने गारे की तगारी रखते हुए कहा

मिस्तरी जी अब इधर ध्यान दो। आधी दिहाडी पहले ही निकल गई है।'

सन्तासिह ने काली की ओर घूरकर देखा और कांडी और तसो उठाता

हुआ बोला।

'तेरी आधी दिहाड़ी खराब हुई है अपना तो मन सब-कुछ डोल गया है।'

सन्तासिंह होठों को चबाता हुआ तेसी से ईंटों के टुकड़े करने में व्यस्त हो गया।

१९

सांझ के साये गहरे हो गए तो काली ने काम बंद कर दिया। वह कुछ समय तक कमर तक उठी हुई दीवारों को देखता रहा। फिर उसने बिखरे हुए सामान को इकट्ठा किया और कपड़े पहनकर चाची से बोला

'मैं बाहर घूमने जा रहा हूं। आकर रोटी खाऊँगा।

'पुत्तरा, सूरज अंदर बाहर हो गया है। अभी रोटी खा जा।' चाची ने चूल्हे में फूँकें मारते हुए कहा।

'नहीं चाची थोड़ी देर के लिए बाहर घूम आऊँ।

काली बाहर निकल गया और सीना तान हुए लम्बे लम्बे डग रखता हुआ चमादड़ी के बाहर कुएं के पास आकर कुछ क्षणों के लिए ठिठक गया और सोचने लगा कि किधर जाए। सबसे पहले उसके दिमाग में डाक्टर बिशनदास का ख्याल आया। लेकिन उसकी दूकान की ओर जाने से इसलिए रुक गया कि डाक्टर की बातें आधी रात तक खत्म नहीं होंगी। फिर वह कुछ सोचे समझे बिना ही खेतों की ओर बढ़ गया।

चो के निकट पहुंचकर काली को बहुत-सी आवाजें एक साथ सुनाई दीं। वहाँ गांव के गबरू लड़के कबड्डी खेल रहे थे। उसके तन बदन में भी खिंचाव सा पैदा होने लगा और कदम तेज-तेज उठने लगे। उसे आते देखकर जीतू ने ऊँची आवाज में कहा 'लो हमारा बाबू जी आ गया।' काली कबड्डी का खेल देख रहे लोगों के पास चला गया और लालू पहलवान को देखकर उसके निकट जा बैठा।

जीतू खेल छोड़कर काली की ओर आता हुआ बोला

'बाबू जी इधर आओ ना दो-दो हाथ हो जाएं।

काली उत्तर में केवल मुसकरा दिया लेकिन जब लालू पहलवान ने उसे कबड्डी खेलने को कहा तो काली कपड़े उतारकर मैदान में आ गया।

'बाबू जी से पहले मैं पकड़ लूंगा।' जीतू ने हँसते हुए कहा और कबड्डी कहता हुआ सीधा काली की ओर बढ़ने लगा। काली के दिल में एक अज्ञात-सा भय उत्पन्न हुआ और वह इसके प्रभावाधीन पीछे हटता रहा। लेकिन जब जीतू ने आगे बढ़कर काली को छू लिया और उसे ललकारता हुआ पीछे हटने लगा तो वह भड़क उठा और झपटकर जीतू को इस तरह पकड़ लिया कि वह एक कदम भी आगे न बढ़ सका। जीतू अपने शरीर से रेत झाड़ता हुआ अपने पक्ष की ओर चला गया।

काली और जीतू की पकड़ देखकर दर्शक खुश हो गए। लालू पहलवान ने काली को थापी दी और उसे समझाता हुआ बोला, 'पकड़ने के बाद पहले बाजू काबू में करो और फिर ऐसा धोबी पटड़ा मारो कि सामने का खिलाड़ी जमीन पर चित गिरे।'

काली लालू पहलवान की बात पर मुसकरा दिया। उसकी झिझक अभी तक बाकी थी और वह प्रतिद्वंद्वी पक्ष की ओर जाने में हिचकिचा रहा था। जब कुछ लोगों ने उसे बार-बार कहा तो वह कबड्डी कहता हुआ उस ओर चला गया। जीतू ने उसे तीन बार पकड़ने की कोशिश की लेकिन काली ने उसे अपने शरीर को छूने तक न दिया।

थोड़ी देर के बाद ही काली की झिझक मिट गई और बालपन के सब दावपेंच अपने-आप ही याद हो आए। वह निपुण खिलाड़ी की तरह अपने आगे पीछे और दाएँ-बाएँ देखता हुआ सतर्कता से कबड्डी खेलने लगा। वह दो बार प्रतिद्वंद्वी धड़े की ओर हो आया था। जब वह तीसरी बार गया तो जागे के दिन्दार ने, जो कड़वी बेल की तरह फूल रहा था और प्रतिदिन दर्जी की दुकान पर जाकर गज से अपनी छाती मापा करता था, बगल से होकर काली को पकड़ने का यत्न किया। लेकिन काली ने उसका हाथ झटक दिया। वह क्रोध में आकर पूरे जोर से काली की ओर बढ़ा लेकिन उसने एक बार फिर उसे इस तरह पीछे हटा दिया जैसे वह गंदी मक्खी हो। काली जब अपने पक्ष की ओर वापस आ गया तो उसके साथियों ने उसे अपनी बाजुओं में उठा लिया। लालू पहलवान शाबाश देता हुआ बोला, 'वाह मेरे शेर! अपनी गर्दन को भी नहीं छूने दिया। इतनी साफ कबड्डी खेलने वाले आजकल कम ही मिलेंगे। हाँ एक बात का ख्याल रखो कि घुटना हाथ आ जाए तो दूसरा आदमी कैंची डाल सकता है। इसलिए हमेशा घुटना बचाकर खेलो। दूसरी बात यह कि बाजुओं

को पकड़ो न बाल टोली को लच्छन अभी मारकर काबू कर लेना चाहिए। लगता कई बार पुर्लीना आधा पकड़ म निकल जाता है।

दगल पूरे जोरा पर था कि चौधरी हरदेव भी उस ओर आ निकला। उसके पीछे-पीछे मंगू शिकारी कुत्ते की जंजीर थामे हुए आ रहा था। हरदेव को देखकर लोगा और खिलाड़ियों। उसे हाथोंहाथ ले लिया। सबका अनुमान था कि अभी तक गाव बराबर पर नहीं है। कुछ मिनटा म दिन ढल गया और चारों के प्रतिद्वन्द्वी दलों से एक साथ कई आवाजें आई

चौधरी हमारी तरफ आ जाओ। दूसरा पक्ष हम पर भारी है।

'यहाँ कोई पकड़ लेने वाला भी है या सिर चमार इकट्ठे किए हुए हैं।

हरदेव ने बाबाजी से कहा और फिर दिलदार से बोला

दिलदार तू चमारों के छोकरों के साथ कबड्डी खेलकर अपनी ताकत का अदाजा क्या लगाता है। किसी दिन पहलवान के अखाड़े में आ। हरदेव ने भरपूर अँगड़ाई ली और लालू पहलवान के पास बढ़ता हुआ बोला

पहलवान जी, आपने व्यास पार के पहलवान रहीम की कुश्ती देखी है कि नहीं सुना है बहुत बाँका जवान है।

'उसकी कुश्ती के बारे म तुम्हें बाद म बताऊँगा। पहले तू यहाँ अपना जोर दिखा। लालू पहलवान ने हरदेव को बाजुओं से पकड़कर ऊपर उठाने की कोशिश करते हुए कहा।

'चौधरी यहाँ किससे पकड़ लूँगा। सब चमार इकट्ठे किए हुए हैं। एक दिलदार है सो वह भी अपना बच्चा है। हरदेव ने अखाड़े म युवकों को घृणा से देखते हुए कहा और फिर लालू पहलवान से बोला

मेरी कबड्डी तो सीकरी के मेले के टूर्नामेंट म देखना।

'काली अच्छी पकड़ लेता है। दिलदार को तो इसने एक बार पटड़ा बना दिया। जीतू ने कहा।

यद्यपि हरदेव पेशावर खिलाड़ी नहीं था लेकिन उसने उनके तमाम नखरे सीख लिए थे। वह वहाँ खेलने की नीयत से नहीं आया था लेकिन वह चाहता था कि सब लोग उसे बार बार कहें और मिन्नत करें। लालू पहलवान ने हरदेव को नखरे करते हुए देखा तो ऊँची आवाज म बोला

हरदेव तू भी बाबू ठठियार की तरह बहुत नखरे करने लगा है। उसे कहो कि वाजे (हारमोनियम) पर एकाध गीत सुना दो तो वह पचास बहाने बनाएगा। लेकिन जब एक बार शुरू कर देगा तो फिर गीदड़ की तरह चुप होने का नाम नहीं लेगा। कपड़े उतारकर अखाड़े म चल। काली तेरे मुकाबले

की चोट है।'

जब हरदेव फिर भी अपनी जगह से न हिला तो लालू पहलवान काली से बोला

'काली तू ही बुला ले।'

खेल तो मन की मौज है इसमें किसी को बुलाने या मजबूर करने का क्या मतलब।' काली ने मुसकराते हुए कहा। हरदेव ने काली की ओर घृणापूर्ण नज़रों से देखा और फिर कपड़े उतारता हुआ बोला

'आज इसका भी जोर देख ही लूं। नया नया शहर से आया है।'

हरदेव ने कपड़े उतारकर अपने शरीर पर रेत डाली झुककर अखाड़े की मिट्टी को छुआ और उसे माथे और कानों पर लगाया और कल्लें भरता हुआ अखाड़े में आ गया। दर्शक अखाड़े के निकट खिसक आए। एक दो खिलाड़ियों के बाद हरदेव प्रतिद्वन्द्वी पक्ष की ओर गया। उसका रंग ढंग सबसे निराला था। वह ताज़ादम घोड़े की तरह कल्लें भर रहा था। उसने प्रत्येक प्रतिद्वन्द्वी को ललकारा लेकिन किसी ने भी उसकी ओर हाथ न बढ़ाया और वह सब खिलाड़ियों की ओर रेत फेंकता हुआ अपने पक्ष की ओर लौट आया।

लालू पहलवान के कहने पर काली हरदेव के पक्ष की ओर कबड्डी कहता हुआ गया। काली अभी कुछ कदम ही आगे बढ़ा था कि हरदेव ने उसे शह दी और उसे चीते की तरह दबोचना चाहा लेकिन काली ने उसे अपने बाजुओं के बल से परे धकेल दिया। हरदेव दुबारा उसकी ओर झपटा तो काली शह देकर एक ओर निकल गया और हरदेव अपने ही ज़ोर से जमीन पर गिर गया। वह मिट्टी झाड़ता हुआ उठा तो काली अपनी हद में जा चुका था। हरदेव काली के पीछे ही कबड्डी कहता हुआ आ गया और पेश्तर इसके कि काली अच्छी तरह सँभल सके उसने अपने दोनों हाथ बहुत जोर से काली की छाती पर दे मारे। वह कुछ क्षणों के लिए चकरा गया। सबने महसूस किया कि हरदेव अपनी हार का बदला लेना चाहता है। काली ने हरदेव को पकड़ने की बहुत कोशिश की लेकिन उसके हाथों में उसका कोई अंग न आया और वह सबको ललकारता हुआ अपने पक्ष की ओर वापस चला गया।

कुछ समय तक अपनी सांस दुरुस्त करने के बाद काली प्रतिद्वन्द्वी पक्ष की ओर दम देता हुआ गया। सब खिलाड़ी पीछे हट गए क्योंकि उन्हें मालूम था कि काली को हरदेव ही पकड़ने की कोशिश करेगा। काली चक्कर लगाकर मुड़ा तो हरदेव पैंतरा बदलकर उसके सामने आ गया लेकिन काली ने उसे पीछे धकेल दिया। हरदेव ने काली के बाजुओं को बांध करने की तीन चार बार

कोशिश की लेकिन वह असफल रहा। काली जब अपनी हद में वापस आ गया तो लालू प्रसन्नभाव से बोला

'काली, मुकाबिल खिलाड़ी को कभी अपनी पकड़ में न आने दो।'

फिर वह हरदेव से बोला

'तू हमेशा सामने से पकड़ने की क्या कोशिश करता है? मर्द की तरह हमेशा अपनी सीध में न चला कर।'

वहाँ शोर सुनकर राह जाते लोग भी इकट्ठे होने लगे और दर्शकों की संख्या बढ़ती गई। आकाश पर लालिमा खत्म हो गई और हल्का-हल्का अँधेरा फैलने लगा। चौधरी हरनाम सिंह खेतों से वापस आ रहा था। वह भी शोर सुनकर वहाँ आ गया। उसे देखकर कई लोग पीछे हट गए। वह लालू पहलवान के निकट आकर बोला

'सुनाओ पहलवान जी, खेल गरम है?'

'हाँ चौधरी लेकिन अब वो बातें कहाँ। वह जमाने खत्म हो गए जब चाँदनी रातों में सारी सारी रात कबड्डी चलती थी। खेलने वाले भी बाँके जवान होते थे। उनके मुकाबले का तो आजकल के छोकरों में एक भी पट्ठा नहीं है। चौधरी रल्दू का भतीजा लटकारसिंह ऊँचे मुहल्ले वाला फौजासिंह लोहारों का निक्का और चमारों का माघा।

काली का ध्यान लालू पहलवान की ओर आकर्षित हो गया। अपने पिता की प्रशंसा सुनकर वह प्रसन्न हो गया और उसका उत्साह पहले से कई गुना बढ़ गया। हरदेव ने अपने चाचा को वहाँ उपस्थित देखा तो उसके मन में प्रबल इच्छा पैदा हुई कि वह मैदान में हर खिलाड़ी को पछाड़ दे। चौधरी हरनाम सिंह ने खेल बन्द देखकर ऊँची आवाज़ में कहा

'खेल बन्द क्यों कर दिया। मुझे भी अपने हाथ देखने दो।

कुछ क्षणों तक खिलाड़ियों में सरसराहट सी हुई और फिर हरदेव मोर की तरह नाचता हुआ प्रतिद्वन्द्वी पक्ष की ओर बढ़ गया। काली ने उसे शह दी तो वह एक और खिलाड़ी की ओर मुड़ गया लेकिन दूसरे ही क्षण वह काली से इतनी तेज़ी और फुर्ती से आ भिड़ा कि देखने वाले अश-अश कर उठे। लेकिन पलक झपकते में वे दोनों ज़मीन पर थे और हरदेव हाथ फैलाए हुए कबड्डी कबड्डी कहता हुआ अपनी हद की ओर रींगने की कोशिश कर रहा था। कुछ समय के लिए उसने अपने आपको काली की पकड़ से छुड़ाने के लिए हाथ-पाँव मारे लेकिन बाद में उसका दम खत्म हो गया। काली ने उसे छोड़ दिया तो हरदेव गर्दन झुकाए अपनी हद में आ गया। लालू पहलवान ने प्रसन्न होकर चौधरी

हरनाम सिंह से कहा

'यह माँवें का लड़का है—अपने बाप की तरह दलेर और शेर। अगर दाव पेच सीख ले तो अपने इलाके के बड़े से बड़े पहलवान को सामने न टिकने दे।'

हरदेव को अपनी हार पर बहुत ज्यादा झुँझलाहट हुई। यह सोचकर उसका क्रोध और भी बढ गया कि उसे एक चमार ने हरा दिया। वह पीछे जाकर अपना फूला हुआ साँस ठीक करता रहा और दोनों ओर से खिलाडी बारी-बारी आते जाते रहे। जब काली की बारी आई तो हरदेव आगे बढ आया। काली जानता था कि इस बार भी हरदेव ही उसे पकडने की कोशिश करेगा। वह फूक फूककर कदम बढाता हुआ प्रतिद्वन्द्वी पक्ष की ओर चला गया। हरदेव एक ओर इस ताक में खडा था कि काली की पीठ या बगल उसकी ओर हो तो वह उसे दबोच ले लेकिन काली उसे ऐसा अवसर नहीं दे रहा था। यह देखकर मंगू हरदेव के साथियों को ललकारता हुआ बोला

'उसे शह दो—सीधे तो कुत्ता भी शेर के काबू में नहीं आता।'

मंगू की आवाज सुनकर काली का ध्यान एक क्षण के लिए बट गया। उसी एक क्षण का फायदा उठाते हुए हरदेव ने उसे दबोच लिया। काली अपना पूरा जोर लगाकर उसे घसीटने की कोशिश करने लगा। हरदेव ने जब देखा कि काली उसकी पकड से निकल रहा है तो उसने काली की छाती पर जोर से दोहत्थड मारी और साथ ही उसके बाएँ कूल्हे में अपने पाँव की ऐडी जमा दी। काली की आँखों के सामने अँधेरा छाने लगा। उसकी पकड धीमी हो गई। वह कुछ क्षणों तक लडखडाता हुआ खडा रहा और बाद में जमीन पर लेट गया। हरदेव एक कदम पीछे हटकर विजयभरी दृष्टि से देखने लगा। जब काली कूल्हे को पकडकर लोटपोट होने लगा तो जीतू उसके ऊपर झुकता हुआ बोला

काली को चोट लगी है।

लालू पहलवान भागकर काली के पास आ गया। बाकी लोग भी वहाँ जमा हो गए। लालू पहलवान ने काली की हथेलियों को जोर जोर से मलना शुरू कर दिया। जीतू उसके पाँव के तलवे मलने लगा। थोडी देर बाद काली ने आँखें खोल दीं और वह यों लडखडाता हुआ उठा जैसे बहुत देर तक बीमार रहा हो।

'कहाँ चोट आई है?' लालू पहलवान ने चिन्तित स्वर में पूछा।

'कूल्हे में हरदेव की एडी लग गई है।' काली ने बहुत ही कमजोर आवाज में कहा। लालू पहलवान हरदेव की ओर मलामत भरी निगाहों से देखता हुआ

बोला

'यहाँ सलने आए थे या झगड़ा करने ?'

फिर उसने काली को सहारा देकर सीधा खड़ा किया और नम्र स्वर में बोला

'धीरे धीरे चलने की कोशिश करो। अभी चोट ताजा है। खून जम गया तो चलना मुश्किल हो जाएगा।'

चौधरी हरनाम सिंह हरदेव को डाँटता हुआ बोला

अगर इस तरह कबड्डी खेलोगे तो एक दिन अपनी हड्डी-पसली भी तुड़वा लोगे।' फिर वह काली का हाल पूछकर और उसे हौसला देकर चला गया। लालू पहलवान और जीतू काली को कंधों से पकड़कर आहिस्ता-आहिस्ता चलाने लगे।

हरदेव ने अपने कपड़े उठाए और चुपचाप अपने घर की ओर चल पड़ा। मग्गू शिकारी कुत्ते की जंजीर थामे उसके बराबर जा रहा था।

२०

काली सारी रात दर्द से तड़पता हुआ खाट पर करवटें बदलता रहा। रात के अंतिम पहर में नींद आई तो वह देर तक सोया रहा।

चाची ने पहले तो उसकी ओर ध्यान नहीं दिया परन्तु सूर्य जब कोठों की मुँडेरों से ऊपर आ गया तो वह काली का कंधा झकझोरती हुई बोली

'उठ काका, गोड्डे-गोड्डे दिन चढ आया है। क्या सारा दिन कुम्भकरण की तरह सोया रहेगा ?'

काली ने हड़बड़ाकर आँखें खोल दीं और उठने के लिए जब टाँगें समेटने लगा तो दर्द की टीस सारे शरीर में दौड़ गई। वह टाँगें लटकाकर चारपाई पर बैठ गया और चाची की नजरें बचाकर चोट को इस तरह देखने लगा जैसे चोरी का माल हो। चाची रसोई में चली गई तो वह फिर लेट गया। वह जब पलटकर उसकी ओर आई तो काली उठकर बैठ गया। चाची उसके निकट आकर बोली

'बाहर अन्दर हो आ और आकर काम शुरू कर दे।

'अच्छा चाची उठता हूं।' काली ने दांत भींचे और हिम्मत करके उठने की कोशिश की। वह लँगड़ाता हुआ चार छः कदम चला तो उसके माथे की नसें तन गईं और कान लाल हो गए। चाची ने उसे लँगड़ाते हुए देखा तो घबराई हुई बोली

'लँगड़ाकर क्या चलते हो? कहीं चोट लगी है?'

'नहीं चाची, टांग सो गई थी?' काली ने मुसकराने की कोशिश करते हुए कहा।

चाची अपने काम मे व्यस्त हो गई तो वह फिर अपनी चोट को सहलाने लगा।

जीतू दराती और खुरपा हाथ मे थामे घास काटने जा रहा था। काली को अपने आंगन मे बैठा देखकर वह अन्दर आ गया। काली को कुछ अस्वस्थ देखकर वह बोला

क्या ज्यादा चोट आई है?'

फिर उसके उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही बोला

'हरदेव अपने आपको बहुत बड़ा पहलवान समझता था। परन्तु कल तुमने उसका अहंकार तोड़ दिया।

'उसका अहंकार टूटा या नहीं, मेरा कूल्हा जरूर टूट गया है। शायद अन्दर मांस फट गया है। सख्त दर्द हो रहा है। काली ने दुःख भरी आवाज़ मे कहा।

जीतू दराती और खुरपा बगल मे दबाकर काली पर झुकता हुआ बोला

'दिखाओ तो?'

निक्कर को ऊपर उठाकर काली ने जीतू को चोट दिखाई। कूल्हे पर सेर के बाट जितना मांस उभर आया था और वह हिस्सा नीला हो गया था। जीतू ने चोट वाली जगह को ज़रा दबाया तो काली चीख उठा

छोड़ दो, बहुत दर्द होता है।'

जीतू सीधा खड़ा हो गया और चिन्तित स्वर मे बोला

'चोट ज्यादा ही लगी है। तुम लागड़ (पुरानी मोटी रुई) गर्म करके सेंक दो। तिल्ली का तेल गर्म करके मालिश करो।

चाची ने उन्हें इस तरह खुसर फुसर करते देखा तो उसका शक फिर जाग उठा और वह उनके पास आकर बोली

क्या बात है। क्या काली की टाँग पर चोट आई है ?'

यह सुनकर जीतू ने मुह दूसरी ओर फेर लिया और काली ने नज़र झुका ली। चाची ने जरा ऊचे स्वर मे पूछा

'क्या बात है ? चुप क्या हो ?

'कुछ नही।' जीतू ने दूसरी ओर देखते हुए ही उत्तर दिया।

अभी तो दोनो बकरी की तरह मुह हिला रहे थे और अब कहते हो कि कुछ नही है।

चाची मामूली सी चोट लगी है। अपने-आप ही ठीक हो जाएगी। काली ने उसे टालने की कोशिश की।

दिखाओ तो सही। चाची ने घबराए हुए स्वर म कहा। काली ने जीतू की ओर देखा और फिर अपने आप म सिमटता हुआ बोला

'चाची कोई चोट नही लगी है। तू तो यूँ ही परेशान हो रही है।

चाची समझ गई कि काली को ऐसी जगह चोट लगी है जिसे दिखाने म वह शरमा रहा है। वह स्निग्ध स्वर म बोली

मेरे लिए तो तू वही छोटा सा काली है जो दस वर्ष तक मेरे साथ सोता रहा है। जिसका मुह मैं अपने हाथो से धोती रही हूँ। माँ के लिए बच्चे तो बुड्ढे हो जाने पर भी छोटे रहते हैं। काली को असमंजस म देखकर चाची ने उसे दुलारा तो वह आहिस्ता से बोला

'अच्छा दिखाता हूँ। तू पहले मुझे लोगड गर्म कर दे। दो रोडे (ईंट के टुकडे) चूल्हे म डाल दे। चोट को सेंक दूँगा।

परन्तु चाची पहले चोट देखना चाहती थी। उसे चोट स्वय देखे बिना विश्वास नही हो रहा था। काली की बात छिपाने की आदत को वह भली प्रकार जानती थी। उसने काली को एक बार फिर असमंजस म देखकर उसकी ओर हाथ बढ़ाया तो वह तिलमिला उठा

'चाची, अभी दिखाता हूँ। वह खाट पर लेट गया और निकर को नीचे कर लिया। चाची ने उभरी हुई नीली पत्थर-सी जगह देखी तो घबराकर बोली

'यह चोट कैसे लगी ? क्या किसी से झगड़ा हो गया था ?'

काली चुप रहा परन्तु जीतू ने आहिस्ता से उत्तर दिया

'कबड्डी खेलते-खेलते चोट लग गई। चौधरी हरनाम सिंह के भतीजे हरदेव ने लकी मारी था।

चाची कुछ क्षणो के लिए निस्तब्ध रह गई और फिर बहुत दुखी आवाज़

'तू चौधरिया वे ल्डका वे साथ कबड्डी क्या खेलने गया था। उनवा क्या है। उसने ता एडी भार दी। गरीब की चाहे जान ही चली जाती। चमार घूरकर भी देख ले ता चौधरिया को ताव आ जाता है। आप चाहे चमार को जान से भी मार दे ता कोई पूछन वाला नही। तुम्हारे साथ कई बार माथा मारा है कि उनके साथ न खेला कर। अब लँगडा तू हो गया है, चौधरी हरदेव का क्या गया ?'

चाची काली के पास बठी उसे समझा रही थी। उसे चौधरिया पर कुछ गुस्सा था, कुछ बेबसी थी। वह घुटना पर हाथ रखकर उठी और फटी-पुरानी रजाई म से लोगड निकाल लाई और चूल्हे म दो साफ (इट) खडे रख दिए।

चाची हाथ म छोटी सी कटारी लेकर गली म आ गई ताकि किसी से थोडा सा तिली का तल माग लाए। काली न उसे रोका कि वह शाह जी की दुकान स मगवा लेगा परतु चाची उसकी बात को अनसुना करती हुई गली म निकल गई। कुछ आदत स मजबूर, कुछ इस विचार स कि आम पडोस वाल उससे भी कुछ न कुछ माग कर ले जात हैं और कुछ इस विश्व स से कि गली मुहल्ले वाले दुख सुख के साझी होत है। वह गली के हर घर म गई काली की चोट का जिक्र किया, दबी जबान म चौधरिया को बुरा भला कहकर तिली का तल मागा। हर एक ने इधर उधर स बातें की, गरीबी का रोना रोया, सहानुभूति जताई, चौधरियो के ल्डका को गाली दी और अपनी सतान की कसम खाकर चाची को विश्वास दिलाया कि उनके पास तिली का तल हाता तो व जरूर देत। चाची को तल तो कही से न मिला लेकिन सार मुहल्ले को खबर हो गई कि चौधरी हरदव ने काली का कूल्हा तोड दिया है।

जब चाची बुदबुदाती हुई खाली कटारी उठाए घर गई तो काली बाला

'इतनी दर म तो शहर से भी तल आ जाता।' काली के शब्दा म चाची को कटाक्ष का आभास हुआ। उसका धय पहल ही टूटा हुआ था। काली की बात सुनकर वह भडक उठी।

आस पडास का इतना भी फायदा नही है कि काई किसी का काम ही कर द। अपने को जरूरत हाती है तो इधर मुह उठाए चली आती हैं जैसे यहा भडार खुला हा चाची नामक (नमक) है, चाची मीच (मिर्च) है।

चाची नकल उतारती हुई बोली।

'और आप किसी की फूटी उँगली म मसार छिडकने क लिए भी तयार नही होगी। भाड म जाए तेरा गली गवांड। अब मरे भी कोई मांगने आई तो मुह तोडकर जवाब दूंगी।

चाची न मिट्टी क मटक म रखे एक मल-सा कपडे की कई गाँठें खोलकर दो पसे निकाले। उन्ह अच्छी तरह टटोल कर और फिर आँखों क नजदीक ल्याकर देखा। जब तसल्ली हो गई कि दो पसे ही हैं तो कपडे का मन्के म छिपा दिया और हाथ म कटोरी लेकर गली म आ खडी हुई।

काली की चोट का समाचार सुनकर बच्चो ने उसके घर क गिद मँड राना शुरू कर दिया। चाची न एक दो को तल लान क लिए कहा तो व चुप चाप खिसक गए। उन्ह काली की चोट देखन का शौक था तल लान म दिल चस्पी नही थी। चाची ने एक को पुचकार कर कहा

'बहुत अच्छा लडका है। जा दौडकर टके का तिल्ली का तल ला दे, मैं तुम्ह गुड दूंगी।

परन्तु वह लडका चाची की नजरें बचाता हुआ भाग गया।

आजकल के बच्चे से तो रब बचाए। तिनका तोडने से भी उनक दिल म सूल उठता है। हमारे जमाने म मजाल कि कोई बच्चा बडे का कहना टाल दे। गली गवांड तक का काम कर देते थे।'

चाची की झुंझलाहट बढती देखकर काली ने उसे आवाज़ दी

'चाची जीतू को पसे दे वह तेल ले आएगा।

चाची ने कटोरी और दो पसे जीतू की ओर बढा दिए। काली दो पसे देखकर बोला

दो पसे का कितना तेल आएगा। क्या पता कितने दिन मालिश करनी पडेगी?'

मैं रोज का रोज़ मगवा लूगी। एक बार आधी बोतल मगवा लो तो माँगन वालों की यहाँ छावनियाँ उतर आएँगी। और बूद बद करके दो दिन म ही बोतल ले जाएँगे।

चाची के लहजे मे अहकार जीतू को बुरा लगा। काली ने भी उसे मह सूस किया। वह मुसकराने की कोशिश करता हुआ बोला

कौन किसी क पास हाथ फलाने आता है। अगर कोई आएगा तो अपना समझकर ही आएगा।

चाची जीतू को बोतल और आठ आन पसे द दे।

चाची ने बहुत ज़िद की लेकिन आखिरकार उसे काली की बात माननी

ही पडी। वह क्रुद्ध स्वर म बोली

लुटा दो घर को। चार पैसे हैं सो नजरा म खटक रहे हैं। खत्म हो जाएँगे तो फिर बठकर रोना।' चाची का क्रोध बहुत बढ गया था। उसने बुदबुदाते हुए कई मटके उठाए और गठडी भी निकाली। उसकी कई तहे खोल कर एक रुपया निकाला। और जीतू के हाथ म रुपया और बोतल थमाती हुई बोली

ले, तल से भरवा ला इस।'

चाची का क्रोध मे देखकर जीतू मुसकरा दिया और काली की आर देखता हुआ बाहर निकल गया। जीतू के जाने के बाद चाची काली के पास बठकर ऊँचे स्वर म बोली

'इस तरह घरा के गुजारे नहीं चलत। बाकी लोगो का देखो नमक भी डग के डग लाते ह।'

काली ने चाची की बात पर कोई ध्यान न दिया तो वह और भी झुझला गई और उठकर गली म आ गई।

उसे प्रीतो का लडका अमरू नजर आया तो उसे पुकारकर बोली

'वे, तेरी मा पतीला ले गई थी आट का भरकर। आटा नहा है तो पतीला ही वापस कर दो।'

पतीले का जिक्र सुनकर अमरू की आँखें चमक उठी। उसने ध्यान से चाची की ओर देखा और फिर भाग गया। चाची ने उसे दो एक गालिया दी और अन्दर आकर ऊपर उठी हुई दीवारो को देखन लगी।

अपनी छत पर खडी प्रीतो ने चाची से पूछा

सुना है काली के चोट लग गई है। क्या कहा गिर गया था?'

'बहुत चोट लगी है। सारी रात खाट पर तडपता रहा है।'

हाय मैं मर जाऊँ। कहाँ चोट लगी है?' प्रीतो मुँडेर पर झुकती हुई बोली।

कूल्हे म लगी है। चौधरिया के हरदेव के साथ कबड्डी खेल रहा था। मेरा काली भी रब जी की दया मे तगडा है। हरदेव इससे हार गया तो गुस्से म आकर इसके कूल्ह म एडी मार दी। उसका क्या गया, यह दिना के लिए चार पाई पर आ पडा है।'

चाची ने पतीला माँगने के लिए उससे बात शुरु की थी। लेकिन काली की चोट का जिक्र छिडा तो वह बात भूल ही गई।

'रब जी आराम दे। अभी मकान की दीवारें भी पूरी नहीं हुई हैं। तिलो

का तेल गम करके मालिश करो बहुत जल्दी आराम आ जाएगा।' प्रीतो ने सहानुभूति जताते हुए कहा।

'जीतू गया है तेल लाने।'

प्रीतो चाचो से इधर उधर की दो चार बातें करके नीचे उतर आई और सीधी मगू की माँ जस्सो के पास चली गई। वह रहस्यमय स्वर म बोली

'नी काली के चोट लगी है। कूल्हे की हड्डी टूट गई है। अब खाट पर पड़ा है। चौधरी हरदेव के साथ कबड्डी खेल रहा था। रब जी सबकी सुनता है। सबका अहकार तोडता है। पहले मगू को मारा फिर लच्छो के भाई का सिर फोडा। चौधरी से टक्कर ली तो पछाड खा गया। रब जी ने नजदीक होकर मेरी सुनी। ऊपर वाला सबका अहकार तोडता है।

प्रीतो खिलखिलाकर हँस पडी। उस बोलते सुनकर ज्ञानो भी बाहर आ गई। प्रीतो न उस देखा तो तिनककर बोली

तू अपना काम कर। तू बाहर क्या आई है। मुटियार लडकियो के लिए इतना कान रस अच्छा नही होता। काली के सिफ चोट लगी है मर नही गया है।

प्रीतो ने जस्सो की ओर भावपूण दृष्टि से देखा और जब ज्ञानो जरा परे चली गई तो धीमे स्वर म बोली

'हर आदमी की इज्जत अपने हाथ म होती है। ज्ञानो को मैं जब देखती हूँ काली के घर म घुसी रहती है। अब यह छोटी तो है नही जो सारा दिन आवारा गाय की तरह गलियो म घूमती रह। मैं तो अपनी लच्छो को चौधरियो की हवेलियो म भी न जाने दू, लेकिन क्या करूँ मजबूरी है।

जस्सो ने प्रीतो की बात की ओर ध्यान नही दिया परन्तु ज्ञानो काँप सी गई। उसका जी चाहा कि प्रीतो के बालो म दहकती लकडी दे मारे परन्तु वह माँ के सामने कुछ न कह सकी और अदर चली गई। फिर उसे अचानक काली की चोट का ख्याल आया। वह सोचने लगी कि मोए चौधरियो को भी आग लगी हुई है। रब करे इन सबको प्लेग निकले सबकी टाँगें टूट जाए। चोट ज्यादा हुई तो काली का मकान भी गिरवी पर जा पडेगा। ज्ञानो को डर सा महसूस होने लगा। उसने दरवाजे की ओट म खडे होकर आगन म झाका। जब उसने देखा कि प्रीतो चली गई है तो वह अपनी माँ के पास आकर बोली

'मैं इस रॉड को घर म नही घुसने दूगी। अपनी तरह सबको बदमाश समझती है। वह मुझ पर लाछन लगाने वाली कौन होती है?' ज्ञानो रो पडी। जस्सो पहले चुप रही परन्तु जब उसने देखा कि वह हिचकियाँ ले रही है तो उस

दिलासा दती हुई बोली

'तू क्या रोती है । उसकी ता आदत है। उसके कहन से तू बुरी थोडे ही हो जाएगी । जा उठकर काम कर ।'

नानो उसी स्थान पर बठी रही । उस काली की चोट का ख्याल आया तो वह बाहर जा के लिए उठी परन्तु ठिठर गई । उस महसूस हुआ कि उसके अन्त करण म कोई परिवतन आ गया है । फिर उसन अपना हौसला बढाने के लिए मन ही मन म कहा कि वह प्रीतो की क्या परवाह करती है । वह बाहर जान क लिए दरवाजे तक आ गई परन्तु फिर रुक गई और वही खडी उम्मीद भरी नजरो से गली म झाँकने लगी ।

जीतू तिली का तेल लेकर वापस आया तो चाची ने चूल्हे मे से एक गम रोडा निकाला और उस एक मल से कपड म लपेटकर काली के हाथ म थमा दिया ताकि वह चाट को सेंक ल । स्वय वह कटोरी म तल डालकर उसे गम करने लगी । तिली क गम तल का मालिश करने के बाद चोट लगी जगह का रग गहर नील की बजाय हल्का नीला हो गया और उस पर कही कही लाल लाल धब्ब उभर आए ।

जीतू चाट को ध्यान से देखता हुआ बोला

'अन्दर से मास फल गया है ।'

हा,' काली ने उकताहट भरे स्वर म उत्तर दिया ।

'लालू पहलवान को चोट दिखा दो । एक तो वह मालिश कर देगा, दूसरे उसे टूटी हड्डी की भी समझ है ।'

काली कुछ क्षण तक सोचता रहा और रोडे का फेंकता हुआ बोला

बात ता ठीक है ।

जीतू सोच म पड गया । उसे गम्भीर देखकर काली बोला

क्या साच रहे हो ?

यही सोच रहा था कि लालू पहलवान आदमी शरीफ है परन्तु है तो चौधरी । शायद यहाँ आने से इन्कार कर दे । उसकी हवेली गाव के दूसरी तरफ ह । वहा तक जाना शायद तर लिए मुश्किल हो ।

'नही मुश्किल क्या है । लँगडाता लँगडाता वहा तक पहुच जाऊँगा ।'

काली ने उठकर निक्कर उतार दी और तहबन्द बाध लिया । जीतू उसे तयार देखकर बाला

चाची तेल की बोतल दे दो । लालू पहलवान म मालिश करवा लाता हूँ । चोट जल्दी ठीक हो जाएगी ।

का तेल गर्म करके मालिश करो बहुत जल्दी आराम आ जाएगा।' प्रीतो ने सहानुभूति जताते हुए कहा।

जीतू गया है तेल लाने।

प्रीतो चाचो से इधर उधर की दो चार बातें करके नीचे उतर आई और सीधी मंगू की माँ जस्सो के पास चली गई। वह रहस्यमय स्वर में बोली

नी काली के चोट लगी है। कूल्हे की हड्डी टूट गई है। अब खाट पर पड़ा है। चौधरी हरदेव के साथ कबड्डी खेल रहा था। रब जी सबकी सुनता है। सबका अहंकार तोड़ता है। पहले मंगू को मारा फिर लच्छो के भाई का सिर फोड़ा। चौधरी से टक्कर ली तो पछाड़ खा गया। रब जी ने नजदीक होकर मेरी सुनी। ऊपर वाला सबका अहंकार तोड़ता है।

प्रीतो खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसे बोलते सुनकर ज्ञानो भी बाहर आ गई। प्रीतो ने उसे देखा तो तिनककर बोली

तू अपना काम कर। तू बाहर क्या आई है। मुटियार लड़कियों के लिए इतना कान रस अच्छा नहीं होता। काली के सिर्फ चोट लगी है मर नहीं गया है।

प्रीतो ने जस्सो की ओर भावपूर्ण दृष्टि से देखा और जब ज्ञानो जरा परे चली गई तो धीमे स्वर में बोली

'हर आदमी की इज्जत अपने हाथ में होती है। ज्ञानो को मैं जब देखती हूँ काली के घर में घुसी रहती है। अब यह छोटी तो है नहीं जो सारा दिन आवारा गाय की तरह गलियों में घूमती रहे। मैं तो अपनी लच्छो को चौधरियों की हवेलियों में भी न जाने दूँ लेकिन क्या करें मजबूरी है।

जस्सो ने प्रीतो की बात की ओर ध्यान नहीं दिया परंतु ज्ञानो काँप सी गई। उसका जी चाहा कि प्रीतो के बालों में दहकती लकड़ी दे मारे परंतु वह माँ के सामने कुछ न कह सकी और अन्दर चली गई। फिर उसे अचानक काली की चोट का ख्याल आया। वह सोचने लगी कि साए चौधरियों का भी आग लगी हुई है। रब करे इन सबकी लगन निकले सबकी टाँगें टूट जाएँ। चोट ज्यादा हुई तो काली का मकान भी दिनों पर जा पड़ेगा। ज्ञानो को डर-सा महसूस होने लगा। उसने दरवाजे की ओट में खड़े होकर आँगन में झाँका। जब उसने देखा कि प्रीतो चली गई है तो वह अपनी माँ के पास आकर बोली

मैं इस रांड को घर में नहीं घुसने दूँगी। अपनी तरह सबको बदमाश समझती है। बड़ी सुर पर लाछन लगाने वाली कौन होती है? ज्ञानो रो पड़ी। जस्सो पहले चुप रही परंतु जब उसने देखा कि वह हिचकियाँ ले रही है तो उस

दिलासा दती हुई बोली

'तू क्या रोती है। उसकी तो आदत है। उसके कहने मे तू बुरी थोडे ही हो जाएगी। जा उठकर काम कर।

नानो उसी स्थान पर बठी रही। उस काली की चोट का ख्याल आया तो वह बाहर जाने के लिए उठी परन्तु ठिठक गई। उसे महसूस हुआ कि उसके अन्त करण म कोई परिवतन आ गया है। फिर उसने अपना हौसला बढाने के लिए मन ही मन म कहा कि वह प्रीतो की क्या परवाह करती है। वह बाहर जाने के लिए दरवाजे तक आ गई परन्तु फिर रुक गई और वहीं खडी उम्मीद भरी नजरो से गली म ताकने लगी।

जीतू तिली का तेल लेकर वापस आया तो चाची ने चूल्हे म से एक गम रोडा निकाला और उसे एक मल से कपडे म लपेटकर काली के हाथ म थमा दिया ताकि वह चोट का सेंक ले। स्वय वह कटोरी मे तल डालकर उसे गम करने लगी। तिली के गम तेल की मालिश करने के बाद चोट लगी जगह का रग गहरे नीले की बजाय हल्का नीला हो गया और उस पर कहीं कहीं लाल लाल धब्बे उभर आए।

जीतू चोट को ध्यान से देखता हुआ बोला

अदर से मास फट गया है।

'हा,' काली ने उकताहट भरे स्वर म उत्तर दिया।

लालू पहलवान को चोट दिखा दो। एक तो वह मालिश कर देगा, दूसरे उसे टूटी हड्डी की भी समझ है।'

काली कुछ क्षण तक सोचता रहा और रोडे को फेंकता हुआ बोला

बात तो ठीक है।

जीतू सोच म पड गया। उसे गम्भीर देखकर काली बोला

क्या सोच रहे हो ?'

'यही सोच रहा था कि लालू पहलवान आदमी शरीफ है परन्तु है तो चौधरी। शायद यहा आने स इकार कर दे। उसकी हवेली गाव के दूसरी तरफ है। वहा तक जाना शायद तेरे लिए मुश्किल हो।

नहीं मुश्किल क्या है। लँगडाता लँगडाता वहा तक पहुच जाऊँगा।'

काली ने उठकर निक्कर उतार दी और तहबद बाँध लिया। जीतू उसे तयार देखकर बोला

चाची तेल की बोतल दे दो। लालू पहलवान से मालिश करवा लाता हूँ। चोट जल्दी ठीक हो जाएगी।

लालू पहल्वान अपने गाँव और आसपास के इलाके तक में टूटी हड्डी जोड़ने में निपुण समझा जाता था। कोई गिर जाए, हाथ पाँव टूट जाए किसी के मोच आ जाए—सब लालू के पास आते थे। वह भी सौ काम छोड़कर पहले इधर ध्यान देता था। वह कहता था कि आदमी को अंगहीन होने से बचाना सबसे बड़ा धर्म है। इसे वह भगवान का काम समझकर सबसे पहले और पूरी लगन से करता था। छोटा हो या बड़ा, जाट हो या चमार इस सम्बन्ध में उसके लिए सब बराबर थे।

काली जीतू के कन्धे का सहारा लेकर लँगड़ाता हुआ चलने लगा। उसे लँगड़ाता देखकर चाची के कलेजे पर जैसे पत्थर-सा आ गिरा। वह मुँह ही मुँह में बुड़बुड़ाई कि मोए हरन्च ने चाँद को ग्रहण लगा दिया है। उसने चौधरियों को दबी जबान में गालियाँ दीं और फिर वीर भान का दाना फेंककर मिन्नत माँगी कि काली की चोट जल्दी ठीक हो जाए।

२१

लालू पहल्वान की हवेली पश्चिम में गाँव से बाहर थी। उसने यह हवेली दो तीन साल पहले ही बनाई थी। इसलिए ईंटों का रंग अभी सुर्ख था। उसके चारों ओर पक्की दीवार थी। बीच में लोहे की चादरों का बड़ा दरवाजा था जिसमें से गड्डा आसानी से गुजर सकता था। हवेली के खुले आँगन में गन्ने का रस निकालने का बेलना लगा हुआ था। उसके सामने दालान था जिसके पीछे कोठड़ियाँ थीं जिनमें खेतीबाड़ी का सामान रखा था। एक ओर ढोर डंगर बाँधने के दालान और चारा रखने की कोठड़ी थी। उसके साथ ही वह कोठड़ी थी जिसमें गुड़ पकाया जाता था।

काली और जीतू हवेली में दाखिल हुए तो लालू पहल्वान दालान में चारपाई पर बैठा पटसन की रस्सी बना रहा था। उसने दोनों को गेट में आते देखा तो मुसकराता हुआ बोला

आ भई काली। लँगड़ाकर चल रहे हो क्या ज्यादा चोट लगी है?'

काली के कुछ कहने से पहले ही जीतू बोल उठा

'पहलवान जी, चोट सी चोट लगी है, वह जगह तो काले नमक जैसी हो गई है। सारी टाँग अकड़ गई है। बेचारा घिसट घिसटकर यहाँ तक आया है।'

काली ने बड़ी कठिनाई से होठों पर फीकी सी मुसकान लाते हुए कहा

'चौधरी जी, रस्सी बना रहे हो।'

'हां भई। फसल की कटाई के बाद पठठे-दथ्ये का काम ही रह जाता है। जमीन की जुताई-ब्याई तो बरसात लगने पर ही होगी। ढोर डँगर के चारे पानी का काम सवेरे शाम खत्म हो जाता है। दोपहर अपनी होती है। चौपट छक्की खेलकर भी मन ऊब जाता है। वहाँ फिर सौ झगड़े फिसाद की बातें होती हैं। हाड़ी की फसल अच्छी हो जाय तो जाट के जिस्म में पानी भी लहू बन जाता है। और जिस आदमी में पहले ही लहू वाफर हो, वह या तो देवता बन जाता है या राक्षस—और अक्सर जाट राक्षस ही बनते हैं।' लालू पहलवान मुसकराता हुआ फिर बोला

'मेरे उस्ताद ने तालीम दी थी कि अगर लँगोट का पक्का रहना चाहते हो तो कभी बेकार मत बैठना, जमीन खोदो, बाड़ लगाओ और कोई काम न हो तो खाटों की रस्सियाँ ही कस दो मैंने भी उस्ताद की बात पल्ले बाँध ली। कभी बेकार बैठता हूँ तो ऐसे लगता है जैसे बीमार हो गया हूँ।' लालू पहलवान ने सारी चीजें सँभालकर एक ओर रख दी और काली से बोला

'खड़े क्या हो, बैठ जाओ। उसने दूब की लम्बी चौड़ी सफ कच्चे फर्श पर बिछा दी और उन दोनों को बैठने के लिए कहकर स्वयं भी वहीं बैठ गया।

काली ने चौंककर लालू पहलवान की ओर देखा और उसका सीना हर्ष से फूल गया कि वह चौधरी होकर भी उनके बराबर बैठा है।

कहाँ चोट लगी है? लालू पहलवान ने पूछा। काली ने कूल्हे की ओर संकेत किया।

लेट जाओ।'

'जब काली लेट गया तो पहलवान ने उसकी टाँग को सीधा किया। उसका तहबंद ढीला करके चोट को देखा और उँगलियों से टोहकर उसकी शक्ति महसूस करने लगा। काली को दर्द महसूस हुआ परन्तु वह उसे पी गया। लालू पहलवान ने चोट को अच्छी तरह देखा उसकी टाँग को इधर उधर हिलाया और काली की ओर भरपूर नजरों से देखता हुआ बोला

यह मर्दों का काम नहीं है। खेल में जहाँ बदले की ख्वाहिश पैदा हुई वहीं खेल खत्म और लड़ाई शुरू समझो। मैं हरदेव को अच्छी तरह जानता हूँ। सोहना लगड़ा जवान है। पार साल मेरे पास भी आया करता था। उसके

मजबूर करने पर मैंने उसे अखाड़े म भी उतारा। कुछ दाँव पच भी सिखाए और उस वही नसीहत की जो मेरे उस्ताद ने मुझे की थी। लँगोट लगाकर पराई औरत की ओर न देखना, शराब को हाथ न लगाना। दोनों पाप हैं और जो आदमी एक पाप करता है फिर उसके लिए पाप की काई हद नहीं रहती। तुमसे क्या छिपाना मगू है न नत्थू का पुत्र आजकल वह चौधरी हरनाम सिंह की हवेली म काम करता है उसकी बहन नाम तो मुझे याद नहीं वह यहाँ मक्ई कूटन आती थी। एक दिन वह सवेरे आई तो हरदेव भी वहाँ बठा था। बेलने के पास ही अखाड़ा था। वह मालिश करके दड बठक निकालने लगा था। उस देखकर हरदेव न ठठा किया। मैंने भी सुना। लड़की शरीफ थी। उसने उसे झाड दिया। झट मुह लटकाकर बठ गया। वह चली गई तो मैंने उसे समझाया पागल हर आदमी की इज्जत अपने हाथ म होती है। तरी क्या रही। तेरे बाप और ताये की सारा इलाका इज्जत करता है। एक चमारन न तेरा दाग दाढी कर दिया। अगर तुम्हे यही कुछ करना है तो लँगोट उतारकर तहमद पहन ले हाथ म लाठी रख टेढी पगडी बाँध और मौज कर। मरी बातें कड़वी थी सो गर्मी खा गया और उसी समय उठकर चला गया। उसके बाद यहाँ कभी नहीं आया।

काली ने ज्ञानो के बारे म इस प्रकार की बात पहली बार सुनी थी। कुछ समय के लिए तो वह जस सुन सा हो गया। वह अपनी चोट और दद को बिल्कुल भूल गया। उसके अन्दर गुस्सा बढ रहा था। वह अपन विचारो म मगन था कि लालू पहलवान की आवाज ने उसे चौंका दिया।

'यहा एडी लगी है। हड्डी को कोई चोट नहीं पहुँची है। मास फट गया है। मैं तिली के तेल की मालिश कर देता हूँ। ऊपर गम लोगड बाध कर इटें गम करके सेंक लेते रहना। दो चार दिन म ठीक हो जाएगी मैं तेल ले आऊँ।

तल तो मेरे पास है। काली ने जीतू को तेल की शीशी देने का इशारा करते हुए कहा।

नहीं, नहीं। जो यहाँ आएगा उसकी मालिश के लिए तेल यहीं मिलेगा। हर साल एक मन पक्की तिली का तल इसी काम के लिए निकलवाता हूँ। फिर कभी तल साथ न लाना। लालू पहलवान न काली को प्यार से डाटते हुए कहा और कोठडी से तल की बोतल निकालकर उसकी मालिश करता हुआ बोला

ऊपर वाले न सब-कुछ दिया है। किसी चीज की कमी नहीं। सबर सतोख (सतोष) हो तो थोडे म ही अच्छा गुजारा हो जाता है। यह गुण भी मैंने

अपने उस्ताद से सीखा था । उसे मरे सावन म चार साल हो जाएँगे । उसकी शकल अब भी मेरी आखो और मन म जिन्दा है । इलाके का वह शेर था ।' अपने उस्ताद का जिक्र करत हुए लानू पहलवान की आखो म आँसू आ गए और वह कुछ क्षण चुप रहकर बोला

'कहते हैं पहलवानो को अक्ल नही होती लेकिन बडे बडे पण्डित उससे कन्नी कतराते थे। वह किसी मदरसे म नही पढा था लेकिन उसकी अक्ल बहुत तेज थी। कौल का सच्चा और वादे का पक्का आदमी था। उसकी औलाद सिर्फ एक ही लडकी है। वह पार म ब्याही हुई है। वह मुझे हर साल राखी बाधती है और मैं भी भाई का धर्म निभाता हू। करवा चौथ, वैशाखी, दशहरा और दिवाली पर उसे कुछ न कुछ भेजता रहता हू। लानू पहलवान की आखें भीग गइ और वह रुँधी हुई आवाज मे बोला

मुझे उसका बहुत आसरा था। वह मर गया तो मेरे लिए दुनिया म अँधेरा छा गया। उसकी एक एक बात मुझे अब भी याद है।'

लानू पहलवान बातो म अपना काम नही भूलता था। मजाल है चोट पर ज्यादा दबाव दे जाए। उसने चोट पर पन्द्रह-बीस मिनट मालिश की और हाथ मसलता हुआ बोला

इसे कपडे म ढाप दो नही तो हवा लग जाएगी।

काली ने पहलवान की ओर ध्यान से देखा। पुराने पीपल की तरह उसका शरीर भी बहुत विशाल था। छोटे छोटे मुडे हुए कान मोटी गर्दन और भोला भाला मासूम सा चेहरा। काली नजरें झुकाकर लानू पहलवान की एक एक बात याद करने लगा। उसने मन-ही-मन म सोचा कि पहलवान बहुत अच्छा आदमी है। वह बाकी चौधरियो जैसा नही ह। लानू पहलवान तेल स भरे हाथ सिर पर मलकर बोला

अब तो शरीर म पहले जैसी ताकत नही रही। इतनी देर तो लोहा घिसता रहे तो वह भी हल्का पड जाता है। यह तो हाड मास का शरीर है। इसे सौ सुख-दुख होते रहत है। जवानी के दिनो म मेरे अन्दर साँड जितनी ताकत थी। अधी जवानी म अधी ताकत पग पग पर गिर जाने का डर रहता था। एक बार यहाँ से सात कोस दूर महताबपुर म बहुत बडा दगल हुआ था। उस दगल म डिप्टी साहिब भी आए थे। मेला म इतनी रौनक नही होती जितनी इस दगल म थी। ब्यास पार म नूरा पहलवान भी आया था। मैंने बहुत से दगलो म कुश्तियाँ लडी थी लेकिन उसे पहली बार देखा था। बहुत सोहना सुथरा शरीर था उसका। लम्बा गोरा और बिजली की तरह

फुरतीला। उसका शरीर बेंत की पतली छड़ी की तरह लचक जाता था। जब छोटे मोटे जोड़ हो चुके तो रुमाली की कुश्ती के लिए ढोल बजने लगे। दो मीरासी दमामा ढाल बजाकर पहलवानों को ललकार रहे थे। नूरा एक ओर से छलांग मार कर अखाड़े में उतरा। उसे देखकर सारे मजमे की आंखें उस पर जम गईं। एक आदमी लाठी पर रुमाल और उसके पल्लू में चांदी के इक्यावन रुपये और सोने का एक पौंड बांधे ढोल वालों के साथ नूरे के आगे चलने लगा। नूरा पहलवानों की हर टोली के पास आकर रुक जाता और उनकी ओर मिट्टी फेंकता। उससे कोई जवाब न पाकर वहां से मुसकराता हुआ वह आगे बढ़ जाता।

जब वह हमारी टोली के बराबर आया तो उस्ताद ने मेरी ओर देखा और पूछा कि लालू हिम्मत है? मैंने कहा कि उस्ताद का हुक्म हो तो मैं अभी बात पूरी भी न कर पाया था कि उस्ताद ने मुझे लँगोट बांधने का इशारा किया। नूरे ने हमारी टोली के सामने आकर मिट्टी फेंकी। जवाब में मैंने उसकी ओर मिट्टी फेंक दी। उसने उस्ताद को देखकर उसके पांव छुए और उसके पांव की मिट्टी अपने माथे को लगाई। उस्ताद ने उसे थापी दी और वह कलेजे भरता हुआ आगे बढ़ गया।

मैं लँगोट बांधकर उस्ताद के पास आया। अपना सिर उसके पाँव पर रख दिया। उस्ताद ने मुझे थापी दी और बोला कि लालू शेर है अखाड़े में उतर कर पीठ नहीं लगवाएगा। मैं भी छलांग मारकर अखाड़े में उतर आया। चारों तरफ से आवाजें आईं लालू आ गया लालू आ गया। नूरा पिड़ का चक्कर लगाकर बीच अखाड़े में आकर मिट्टी से खेलने लगा।

'मैंने भी रुमाली के साथ पिड़ का चक्कर लगाया। जिसकी ओर से गुजरता था कई बाँहें मेरी ओर उठकर मेरा स्वागत करती थीं।

'चक्कर लगाकर मैं भी अखाड़े में आ गया। दोनों मीरासियों ने ढोल की तान बदल दी। धनक धिन धिन धनक धिन धिन मेरे अन्दर लहू जोश खाने लगा। मैंने नूरे के साथ हाथ मिलाया और हाथों में मिट्टी मसलकर उसकी तरफ फेंक दी। नूरे का बाँका शरीर देखकर मेरा एक बार तो जी खुश हो गया। उसका शरीर ऐसा गठा हुआ था जैसे रब ने कहीं फुरसत में बैठकर तराशा हो। धूप जैसा रंग बड़ी बड़ी चमकदार आंखें। पतली सी नाक और होंठ और छोटी छोटी भूरी मूछें। शक्ल से वह पहलवान मालूम नहीं होता था।

'जब ढोल की धुन तेज हो गई तो हमने दस्त पंजा लिया। झड़पें होने लगीं। मैंने दो चार झटकों में उसे तोला। वह ताकत में मुझसे कम था लेकिन फुर

तोला इतना कि शरीर पर पानी की बूद न टिकने दे। मैंने उसे गिराने की कई बार कोशिश की लेकिन वह हर बार निकल जाता था। मैं उसे पकडकर नीचे झुकाता तो वह बेंत की छडी की तरह दोहरा होकर इतनी फुरती से मेरी पकड से निकल जाता जैसे मुट्ठी में हवा निकल जाए। थोडी देर बाद लोग हँसने लगे। साला, सलोना चिडिया की तरह फुदकता फिरता है। मैंने एक बार पूरे जोर से उसे पकडने की कोशिश की लेकिन वह फुरती से ऐसे घूम गया कि मैं खुद गिरते गिरते बचा। मैंने फिर उसे दबोचने की कोशिश की लेकिन वह साप की तरह लचकीला मेरी बाँहो मे से निकल गया। मेरा गुस्सा बहुत बढ गया। मैंने उसे पकडकर उसकी बाह को काबू कर लिया। उसके पाव को अपनी ऐडी से खिसकाकर उसे गिराया कि उसका अपना और मेरा सारा बोझ उसकी बाह पर आ पडा और इस तरह तडाख की आवाज आई जैसे कोई टहनी टूटी हो। उसका बायाँ बाजू लटकने लगा। मैं एक तरफ हट गया। मुझे जैसे होश नही था। मैं घबराया हुआ चारो ओर देख रहा था। मुझे पता था कि मैंने क्या किया है। जो मैंने सोचा था वही हुआ था।

'जब कुछ देर तक नूरा बाजू को पकडकर बैठा रहा तो मैं उसके पास गया। दर्द के बावजूद उसकी आखो मे अजीब चमक थी। उसने मलामत भरी नजरो से मेरी ओर देखकर कहा कुश्ती लडने आए थे या मेरा बाजू तोडने तुम चक वाले उस्ताद मेहर के शागिर्द हो ना उसके इन शब्दो ने मुझे जैसे झकझोर दिया।

'दर्द के मारे नूरा जमीन पर चित लेट गया। ढोल वालो ने फतह की धुन बजानी शुरू की तो हजूम मे हाहाकार मच गया। हमारे इलाके के लोगो ने खुशी से बकरे बुलाने शुरू कर दिए। भीड हमारी तरफ उमड पडी। उस्ताद सबसे पहले पहुचा। उसने मेरी ओर नफरत से देखा और नूरे की पीठ पर थापी दी। अपनी पगडी उतारकर उसके बाजू पर बाध दी। उसने नूरे को पीठ पर थापी देकर कहा—नूरे तू जीत गया। लालू के साथ मैं भी हार गया। मैंने तो इस बिरछ (वृक्ष) समझकर पानी दिया था कि इसकी छाँव मे बैठूगा लेकिन मुझे क्या मालूम था कि इस बिरछ मे एक सूराख भी है जिसमे एक साप रहता है जो भरे पिड मे मुझे काट खाएगा। उस्ताद की आँखें नीची हो गई। नूरे की आँखो मे दर्द के साथ साथ एक अजीब चमक भी थी। मैं उस्ताद के पाव पर गिर पडा और फफक फफककर रोने लगा। उस्ताद एक तरफ हटकर बोले कि इससे अच्छा तो यह था कि तू हार जाता।

उस्ताद ने नूरे को अपने कंधों पर उठा लिया। ढोल वाले आगे-आगे ढोल बजाते हुए चलने लगे। उस्ताद ने सारे पिंड का चक्कर लगाया और लोगों से कहते रहे कि पार इलाके का नूरा पहलवान जीत गया और लालू पहलवान समेत हम सब हार गए। उनकी आवाज़ में कुछ ऐसा दर्द था कि सब लोगों ने अपनी हार मान ली। उस्ताद ने नूरे को डिप्टी साहिब के सामने पेश किया। उसके सिर पर जीत का पटका बांधा और एक पौंड और चांदी के इक्यावन रुपये उसकी झोली में डाल दिए।

'उस्ताद का गांव मेहतावपुर से चार कोस था। वह नूरे को सारा रास्ता कंधों पर बिठाए अपने गांव ले गया। लोगों की एक भीड़ उनके साथ थी। घर ले जाकर उसकी बांह जोड़कर बांस की सीख बांध दी। नूरे को उन्होंने सात दिन अपने घर में रखा। बड़े पलंग पर नूरा बैठता। आस पास खाटों पर दूसरे लोग बैठे रहते। उस्ताद की हवेली में मेला-सा लगा रहता। नूरे की इस तरह आओभगत होती जैसे वह गांव का जमाई (दामाद) हो या कोई बहुत पहुंचा हुआ संत या फकीर।

'सात दिन के बाद जब नूरे की बांह ठीक हो गई तो उस्ताद उसे घोड़ी पर बिठा कर ब्यास नदी तक छोड़ने गए। पन्द्रह-बीस आदमी साथ थे। सब लोगों ने नूरे से माफी मांगी कि उनके इलाके के दंगल में उसके साथ ज्यादती हुई है। वापस आकर उस्ताद ने मेरा लंगोट लेकर पीपल की ऊंची टहनी के साथ बांधकर मुझे अखाड़े में उतरने से मना कर दिया। उस दिन के बाद मैं उस्ताद के साथ दंगलों में तो जाता रहा परन्तु मेरा काम सिर्फ पट्ठों की मालिश करना था। वह दिन गया आज तक मैंने कभी बच्चे पर भी हाथ नहीं उठाया। कोई गाली भी दे तो हाथ जोड़ देता हूं। किसी के चोट लग जाए, हड्डी टूट जाए या उतर जाए तो मैं काम छोड़कर उसकी मरहम के लिए जाता हूं ताकि जो पाप मुझसे हो गया था वह दूर हो सके।

यह कहानी सुनाते-सुनाते लालू पहलवान की आंखों में आंसू आ गए। काली भी बच्चे की-सी मासूमियत और गौर से पहलवान की बातें सुन रहा था। पहलवान के अन्दर जैसे विचारों की गहरी नदी वेग से बह रही थी और उसकी सतह पर वह गुण मौजों की तरह उमड़े आ रहे थे जो आदमी को जानवर से इन्सान बना देते हैं। उसकी बातें सुनकर काली को ऐसे महसूस हो रहा था जैसे उसकी आवाज़ हज़ारों जन्मों को छू कर आ रही थी।

लालू पहलवान ने उठते हुए कहा

'चोट पर मरहम न लगाना। मेरी उम्र लेना। कल मैं इसे लेकर

फिर मालिश कर दूगा। तुम यहा न आना, तुम्हे चलने मे तकलीफ होगी। मैं स्वय ही आ जाऊँगा।'

नहीं, मैं ही आ जाऊँगा। आप उस गदगी मे कहाँ आएँगे।' काली ने तुरन्त उत्तर दिया। लालू पहल्वान ने काली की ओर देखा और प्यार से डाँटता हुआ बोला

इस गन्दगी मे फूल भी पैदा होते हैं तेरा बाप माधा मेरा लँगोटिया यार था। वह मेरी मालिश करता और जोर करवाता था। हमारा दोनो का बराबर का जोड था। लेकिन मैं आगे निकल गया क्योकि मेरे पीछे जमीन थी, खुराक थी। मैं अकेला एक भैस का दूध पी जाता था। उसके पीछे मेह नत थी सिर्फ सूखी मेहनत। लेकिन नर आदमी था, बहुत सूझ बूझ वाला था। जब तक वह जिन्दा रहा उसके पास दिन मे एक बार जरूर जाता था। तू भी तो उसी का बेटा है और फिर यह काम मेरा कसब नही, धर्म है। इसके लिए तो मुझे कही भी जाना पडे तो जरूर जाऊँगा।'

लालू पहलवान अभी बातें कर रहा था कि बडे दरवाजे पर किसी के मुह से बकरा बुलाने की आवाज आई बब्बा बब्बा बब्बा। लालू पहल्वान, काली और जीतू—तीनो उस ओर देखने लगे। लोहे के बडे दरवाजे को जोर से धकेलकर दिलसुख झूमता, लडखडाता और ऊटपटाँग बोलता हुआ अदर दाखिल हुआ। सरकडे की तरह लम्बा और पतला शरीर था जैसे बेलने मे से निकाला गया हो। बेरी के निकट आकर वह रुक गया और चारो ओर देखता हुआ आवाजें देने लगा

'ताया ओ ताया !' जब उसे कोई उत्तर न मिला तो वह ऊँची आवाज म बोला।

'बोल कहाँ है तू—बाहर आ जा नही तो सारी पहलवानी निकाल दूगा।

पहल्वान न उन दोनो की ओर देखा और उसके चेहरे का रग बदल गया और उकताहट भरी आवाज म बोला

क्या है दिलसुख ? क्या तू आज फिर पीकर आया है ? लालू पहल्वान दालान से आगन म आ गया। दिलसुख उसके पास आकर और गौर स देखकर डाँटता हुआ बोला

तू कौन है ?' दिलसुख लालू पहल्वान के और भी पास चला गया और अपना मुह उसके बहुत पास ले जाकर हँसता हुआ बोला

'तू ताया है ?'

लालू पहल्वान ने उस पकडकर झझोडा।

'आज तू फिर पीकर आया है। तेरी मौत के दिन अब करीब हैं। कुछ शर्म कर।'

दिलसुख ने लालू की बात अनसुनी करते हुए कहा

'यहाँ वह तो नहीं आई लच्छो निक्कू चमार की छोकरी। साली फरेब दे गई। ऐसा चक्कर दिया कि अब तक नहीं मिली।'

काली और जीतू ने एक-दूसरे की ओर देखा। काली की आँखों में लाल लाल डोरे उभर आए और साथ ही शर्म के मारे उसकी गर्दन झुक गई। लालू पहलवान ने दिलसुख को गालियाँ दीं और धक्के देकर उसे हवेली से बाहर निकालता हुआ बोला

'अगर ज्यादा बकवास की तो जूते मार-मारकर सिर पोला कर दूंगा।'

दिलसुख बुड़बुड़ाता हुआ बड़े दरवाजे की ओर मुड़ गया।

'नालायक सारे जमाने का। इतनी जायदाद का मालिक और ये करतूतें।' लालू पहलवान ने दुखभरे स्वर में कहा। दिलसुख ने बड़े दरवाजे के पास जाकर पीछे मुड़कर देखा और लालू पहलवान की ओर थूककर आगे बढ़ गया। वह बड़े दरवाजे के बाहर जाकर अमरू को आवाजें देने लगा। लेकिन जब कोई जवाब न आया तो मोटी-सी गाली देकर बोला

'बहन तो गई थी अब साला भाई भी दौड़ गया। शराब की भट्ठी से मेरे साथ आया था।'

काली ने यह सुना तो भन्ना-सा गया। पहलवान दालान में आकर चारपाई पर बैठ गया। काली ने उसकी ओर देखा। वह भी खिन्न था। साँस जैसे फूल रही थी। तीनों कुछ देर के लिए चुप रहे। फिर लालू पहलवान ने किसी गहरी सोच में डूबे हुए कहा

'जाट जमीन से सबसे ज्यादा प्यार करता है भाइयों से भी ज्यादा। लेकिन यही इसकी सबसे बड़ी दुश्मन है। दिलसुख बीस घुमाऊँ जमीन का वाहिद मालिक है। नम्बरदार के सिवा किसी के पास इतनी जमीन नहीं है। जाट को जवानी आने से पहले ही पर निकलने शुरू हो जाते हैं। औरत और शराब उसे अपनी तरफ खींचते हैं। कई तो एक-आध चक्कर खाकर वापस आ जाते हैं कुछ वहीं के हो रहते हैं। दिलसुख पाँच घुमाऊँ जमीन पहले ही रहन रख चुका है। बाकी आहिस्ता-आहिस्ता रख देगा बाप-दादा का अच्छा नाम रोशन कर रहा है। परसों-तरसों दिन हुए मेरे पास आया था। पाँच सौ रुपये के बदले में घुमाऊँ जमीन रहन रख रहा था। मैंने तो साफ जवाब दे दिया। मेरा दादा और इसका परदादा सगे भाई थे। रिश्ता पुराना सही, खून तो एक

ही है। अब नम्बरदार हरनाम सिंह और बाबक वाले जगत के पास कौडियों के मोल जमीन रहन रख रहा है। दुख तो बहुत होता है पर क्या करूँ, लोक-लाज मेरी बाँह पकड़े हुए है। शरीके का मामला है। कल को लोग कहेंगे कि ताया भतीजे की जायदाद खा गया। मैंने राजे घर मे इसकी शादी कराई थी। लड़की का बाप फौज में सूबेदार है। इसका फूल-सा बच्चा है। उस बेचारी को इसने बहुत दुख दिया। वह तो रो पीटकर अपने मके चली गई। सो हीले बहाने करके दिलसुख से आधी जमीन लड़के के नाम करा दी है। सब किस्मत के खेल हैं। इसके बाप दादा के वक्त में इसकी हवेली में पंचायत होती थी। अब गाँव का सब लुच्चा-लफंगा वहीं इकट्ठा होता है।' पहलवान के मन प्राण जैसे काँप गए थे। उसने कानों को हाथ लगाते हुए कहा

हे रब जी, सबको बख्श देना।'

कुछ देर चुपचाप बैठे रहने के बाद काली उठ खड़ा हुआ। जीतू भी उसी समय उठ बैठा। लालू पहलवान उन्हें जाने के लिए तैयार देखकर बोला

'चल पड़े। अच्छा, इसका खयाल रखना। हवा न लगने पाए। सेंक जरूर देना। कल मैं दिन ढले आऊँगा।'

दोनों ने लालू पहलवान को बंदगी की और काली जीतू के कंधे का सहारा लेकर चल पड़ा। दोनों बड़े दरवाज़े तक चुपचाप चलते आए। उनका खान करने को जैसे मन नहीं चाहता था। दरवाज़े के बाहर आकर दोनों रुक गए और एक-दूसरे की ओर इस तरह देखने लगे जैसे पूछ रहे हों—तू क्या कहना चाहता है। दोनों की नज़रें झुक गई जैसे बात करने से हिचकिचा रहे हों। काली कुछ क्षणों के बाद जीतू के कंधे से हाथ उठाता हुआ बहुत धीमी आवाज़ में बोला

जीतू, तू तो काम-काज के सिलसिले में गाँव के अन्दर-बाहर आता जाता है। क्या यह ठीक है कि लच्छो अब दिलसुख की बैठक में भी आती है?

मैं भी यही सोच रहा था और यही बात पूछना चाहता था।

कुछ क्षणों के लिए चुप रहकर जीतू ने निर्णयात्मक स्वर में कहा

'आती होगी, ज़रूर आती होगी। वह बाढ़ आए चो की तरह आजकल चारों ओर रास्ते बना रही है।

सारा दिन काली घर में खाट पर लेटा रहा। नानो ने दिन में कई चक्कर लगाए ताकि काली का हाल स्वयं पूछ सके परन्तु जब भी वह आती मुहल्ले का कोई-न-कोई पुरुष या स्त्री उसके पास बैठा होता। काली तो हाल पूछने वाला को कोई उत्तर न देता परन्तु चाची चोट का विस्तृत वृत्तान्त देकर परमात्मा से प्रार्थना करती कि चौधरी हरदेव की ज्यादती का बदला उससे वह स्वयं ले।

दिन भर हाल पूछने वालों का ताँता बँधा रहने से काली का मन उदास नहीं हुआ परन्तु शाम के समय घर में लेटने से उसका दिल घबराने लगा। उसका जी बाहर खेतों में खुली हवा में जाने को हुआ। वह कुछ समय तक चाची के डर से खाट पर लेटा रहा परन्तु जीतू के आने पर वह उठ खड़ा हुआ।

काली ने जीतू के कान में कुछ कहा और उसने कोने में से लाठी उठाकर उसके हाथ में थमा दी। चाची उसे बाहर जाने के लिए तैयार देखकर हैरानी से बोली, तू कहां चला? चलने से मुड्डा बन गया तो दिनों पर जा पड़ेगा। खाट पर लेट। मैं रोड़ा गर्म कर देती हूँ और उससे चोट को सेंक दे।

चाची, लालू पहलवान ने कहा था कि शाम को थोड़ा-बहुत घूमना फिरना, वर्ना तकलीफ बढ़ जाएगी। काली ने कहा। जीतू ने भी उसका समर्थन किया तो चाची चुप हो गई और वे दोनों गली में आ गए।

काली लँगड़ाकर लाठी के सहारे चल रहा था। वे मंगू के घर के सामने पहुँचे तो नानो द्वार में खड़ी थी। वह बहुत ध्यान से काली की ओर देखने लगी जैसे उसके अंग-अंग का निरीक्षण कर रही हो। काली ने भी उसकी ओर नजर भरकर देखा परन्तु जीतू को मुसकराता पाकर उसने आँखें झुका लीं। नानो ने मन ही मन सोचा कि काली को सचमुच बहुत चोट लगी है। मंगू झूठ नहीं कह रहा था कि उसके कूल्हे और कंधे की हड्डी चटख गई है।

गाँव से बाहर आकर वे चो के बंध पर चल गए। वहां से वे बधाने का जाने वाली पगडंडी पर उतर गए और चो के पार शीशम के वृक्षों के कुंज में जा बैठे। जब अँधेरा छा गया तो वे गाँव की ओर चल पड़े। चो पार करने के बाद उन्हें कुछ आवाज सुनाई दी। दूर होने के कारण वे उन आवाजों को पहचान नहीं पा रहे थे आवाजें सुनकर जीतू की जिज्ञासा जाग उठी और वह उन आवाजों तक पहुँचने के लिए तेज-तेज कदम उठाने लगा और काली को पीछे छोड़ गया।

चो के बंध पर दिलमुख, वल्वता और मंगू जा रहे थे और तीनों ने शराब

पी रखी थी। वे लडखडाते और एक दूसरे से टकराते हुए आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ रहे थे। जीतू उनके निकट पहुचा तो दिल्सुख चुनौती भरी आवाज मे बोला

'कौन है तू ?'

'चौधरी मैं हूँ जीतू।'

'सुना चमारा तू आधी रात को यहाँ कैसे घूम रहा है ? क्या किसी माशूक की टोह मे यहा आया था ?'

जीतू के उत्तर देने से पहले ही मगू बोल पडा

आजकल यह चमादडी का छोटा पच है। बडा पच काली है।

'फिर तो निक्कू की छोकडी इसके भी वस म होगी। दिल्सुख हँसता हुआ बोला।

'चौधरी, वह तो अपनी घरानेदार है। इसके मुह पर वह थूकती भी नही। मगू ने अहकार भरे स्वर म कहा।

ओ मगू, तेरा क्या मुकाबला है तू तो चमादडी का राजा है। पटठे ने उसे पूरी तरह जवान भी नही होने दिया। पहले ही उस पर काठी डाल दी।'

बलवत ने मगू को थापी देकर कहा और फिर वह दिलसुख का कधा पकडता हुआ बोला

दिल्सुख, जो लम्बी चाचे मुशी की हवेली म काम करती है वह एकदम पटठी है। बिलकुल जगली मोरनी जसी। रग तो पक्का है लेकिन नन नक्श बहुत अच्छे हैं। जब वह सिर पर टोकरा उठाकर चलती है तो उसकी कच्चे खरबूजे जसी छातिया कटोरे म पडे पानी की तरह हल्कोरे खाती हैं। एक बार हाथ फिर जाए तो उसकी जवानी सरसो के फूलो की तरह खिल उठे।

'मगू कौन है वह ? किसकी लडकी है ?'

दिल्सुख न बचनो से पूछा। मगू ने कोई उत्तर न दिया तो वह उसके कधे को झझोडता हुआ बोला

साले बोलता क्या नही ! तू तो एम चुप हो गया है जसे तेरी सगी बहन लगती हो।

बहन ही लगती है, चौधरी।'

मगू ने अपनी झेंप मिटाते हुए कहा। बलवता खिलखिलाकर हँस पडा और उसे धकेलता हुआ बोला

'साले तेरी शक्ल तो नजरबटटू जसी है।'

उनकी बातें सुनकर काली के दिमाग म उफान सा उठने लगा था। उसका

जी चाहा कि बलवंत और दिलसुख को पास डाँटे। ये चौधरी लोग हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि दूसरों की बहू-बेटियों के बारे में ऐसी बातें करें। उसे मगू पर बहुत गुस्सा आ रहा था कि वह ऐसा बेगैरत हो गया है कि अपनी बहन के बारे में ऐसी बुरी बातें गुस्सा किए बिना ही सुन रहा है।

काली उनके बराबर पहुँचा तो दिलसुख ने पूछा

'कौन है?'

मैं हूँ। काली ने लाठी पकड़ते हुए कहा।

ओ काली, क्या तू अभी जिन्दा है? मैंने तो सुना था कि हरनाम ने तेरी हड्डियों का सुरमा बना दिया है। हमारा बड़ा गुड्डा दरद जान गया है जो एक ही बार में हड्डियाँ तुड़वा लीं। बलवंत ने हँसते हुए कहा।

तुम्हें अपनी ताकत पर घमंड है तो तू भी दो हाथ करके देख ले। काली ने लाठी फेंक दी और बाँहों पर हाथ फेरने लगा।

'वाह ओ सूरमे! क्या दूसरी टाँग भी तुड़वाने का इरादा है? बलवंत ने काली की ओर बढ़ते हुए कहा।

बस-बस कहते हुए जीतू ने बलवंत को पकड़ने की कोशिश की। बलवंत उसे धक्का देकर काली की ओर बढ़ा लेकिन दिलसुख ने पकड़ लिया।

इस वक्त नहीं। तुम्हारी कुश्ती कल देखेंगे। इतनी अच्छी बातें कर रहे थे, बीच में लड़ाई झगड़ा शुरू कर दिया।

'चौधरी, बेचारी लड़कियों के बारे में ऐसी बातें करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती?' काली ने क्रुद्ध स्वर में कहा।

तुम्हें शर्म आती है तो तू चला जा। जिसकी बहन है वह चुप है और तेरे पेट में खाहमखाह मरोड़ उठ रहे हैं। क्यों मगू?' दिलसुख ने कहा। मगू ने कोई उत्तर नहीं दिया तो काली को सचमुच ही शर्म महसूस होने लगी और वह चोट के बावजूद तेज़-तेज़ कदम उठाता हुआ उनसे आगे निकल आया।

काली के जाने के बाद कुछ क्षण तक सब चुप रहे। दिलसुख थूकता हुआ बोला

साले ने सारा मज़ा खराब कर दिया। और फिर वह मगू की ओर मुड़ता हुआ बोला

'इसकी भी प्रीतो की छोकरी के साथ यारी है या नहीं। इसकी तो उनके साथ मुँह-साझी है।

अपना माशूक ऐसा नहीं है कि हर ऐरे-गैरे के काबू आ जाए। वह तो

इसकी ओर आख उठाकर भी नही देखती।' मगू ने प्रफुल्लित स्वर म कहा।

'जा ओ मगू इतना झूठ मत बोल। वह तो राम गाय है। चारा दिखाकर उसे कोई भी दोह सकता है।'

यह सुनकर काली एक बार फिर रुक गया ताकि उसे उत्तर दे। परन्तु फिर यह सोचता हुआ वह आगे बढ गया कि जब अपने मुहल्ले के लोग ही एसी बातें करते हैं तो दूसरा का मुह कैसे बद किया जा सकता है।

काली घर पहुचा तो चाची खाट पर लेटी थी। उसके पास कोई बैठा था। काली उसे अँधेरे म पहचान न सका और निकट आकर उसे देखता हुआ बोला

चाची।'

'आ गया, काका! मेरा तो फिक्र से दिल डूब रहा था। कोई अच्छी बात मन म आती ही नही थी।

चाची परमात्मा का याद करती हुई उठ बैठी। काली उसके सामने दूसरी खाट पर बैठने लगा तो ज्ञानो उठकर खडी हो गई।

'ज्ञानो पुत्तर, तू क्या खडी हो गई?' फिर वह काली स बोली

'बेचारी दिन डूबने के बाद दस चक्कर लगा चुकी है। यह लडकी न होती तो मैं हौल से ही मर जाती।'

काली ने ज्ञानो की ओर देखा तो उसे बलवत और दिलसुख की सब बातें याद आ गइ। वह दूसरी खाट पर लेटता हुआ बोला

'चाची, अँधेरा क्या कर रखा है?'

काका, तू यहाँ नही होता तो मेरे लिए दिन म भी अँधेरा ही रहता है।'

चाची दीया जलाने के लिए उठी तो काली ज्ञानो से बहुत धीमे स्वर म बोला

'तू घर चली जा, मगू आ रहा है। उसने शराब पी रखी है।

ज्ञानो ने उसकी बात को अनसुना करते हुए कहा

क्या बहुत ज्यादा चोट लगी है?'

नही।' वह क्रुद्ध स्वर म ज्ञानो से बोला

'चली जाओ ना, वरना मगू मारेगा।

ज्ञानो को काली के लहजे मे शक हो गया कि उसे बहुत ज्यादा चोट लगी है। काली ने उसे बाजू से पकडकर दरवाजे की ओर धकेलते हुए कहा

'चली जाओ। मगू को पता चल गया तो तुम्हारी हड्डी-पसली एक कर देगा।'

'हाँ आऊँगी। बार-बार कहना तो सुनो सुनो क्या!'

ज्ञानो मुस्कराई तो काली को अँधेरे में भी उसके सफ़ेद-सफ़ेद दाँत नज़र आए। चाची के पीले दाँतों के मुकाबले में काली को ज्ञानो के दाँत बहुत सुन्दर लगे और वह मन ही मन सोचने लगा कि ज्ञानो और चाची का क्या मुकाबला है। वह बिल्कुल ठीक था।

ज्ञानो को रात में अचानक एहसास हुआ कि शायद बहुत देर हो चुकी है। वह उठ बैठी। उसने देखा तो उसकी माँ दीए की मद्धिम रोशनी में चरखी (दीए का सहारा लेकर चारपाई पकड़े का सहारा) के सहारे बैठी ऊँघ रही थी। ज्ञानो माँ को इस प्रकार बैठे ऊँघते देखकर ज्ञानो का मन दया से भर गया और वह बहुत प्यार भरे स्वर में बोली

माँ!

आ गई तू निगुड़िए! ज्ञानो की माँ ने आँखें खोलते हुए कहा, कहाँ मर गई थी तू? आधी रात ऊपर से यहाँ बैठे रहना है।

ज्ञानो ने अपनी माँ की बात अनसुनी करते हुए कहा

माँ, काली को बहुत चोट लगी है। अब वह मीरू कुम्हार के बूढ़े गधे की तरह लँगड़ाकर चलता है।

'चौधरियों ने मारा क्या है, चोट नहीं लगती तो और क्या होगा!'

ज्ञानो की माँ की बात सुनकर ज्ञानो को विश्वास हो गया कि काली को सचमुच गहरी चोट लगी है। यह सोचकर वह परेशान हो गई। वह खाट पर बैठी करवटें बदलती रही। गाँव में पहरा शुरू हो गया। 'जागो सिपाही जागो भाई! बख्तावर सिंह जागते रहो! शाह जी होशियार भई!' ये आवाज़ें घनी रात की निस्तब्धता को कुछ क्षणों के लिए भंग कर देतीं लेकिन बाद में रात फिर टिक जाती। ज्ञानो सोच रही थी कि काली को ज़्यादा चोट आई है तभी तो वह इतना निढाल हो गया है। फिर उसे महसूस हुआ कि रात ढल गई है। कुत्ते भी भौंक भौंक कर सो गए हैं। केवल रात की साँ-साँ और माँ के खर्राटों की आवाज़ें आ रही हैं। ज्ञानो ने करवट बदलकर माँ की ओर देखा। वह गहरी नींद में थी। उसके खर्राटों की आवाज़ उसे धमकियाँ दे रही थी। ज्ञानो ने सोचा क्या न जाकर काली को देख आए। उसकी आँखों के सामने रोशनी फैल गई। फिर उसे ख्याल आया कि अगर माँ जाग गई या किसी ने देख लिया तो फिर क्या होगा। यह सोचकर उसकी आँखों के सामने रोशनी की जगह अँधेरा छा गया।

वह कुछ देर चारपाई पर पड़ी करवटें बदलती रही। फिर वह उठ खड़ी

हुई। उसने मुड़कर अपनी माँ की ओर देखा और धीरे धीरे लकड़ी की सीढ़ी उतरकर नीचे आ गई। उसने दरवाज़े की साँकल उतारी और एक पट खोला तो चुर चुर की आवाज़ ऐसे आई जैसे उसे चेतावनी दे रही हो। उसने बाहर निकलकर दरवाज़ा बन्द करने के लिए साँकल की ओर हाथ बढ़ाया लेकिन फिर खींच लिया।

लोग अपने आँगनों में सोए हुए थे। वह अपने-आप को समेटती हुई दबे पाँव अँधेरी गली में आगे बढ़ती गई। जब वह काली के घर के पास पहुँची तो उसके मन में खयाल आया कि अगर चाची की आँख खुल गई तो फिर क्या होगा। परन्तु जब वह काली के घर के सामने पहुँची तो सब-कुछ भूल गई और लपककर अन्दर घुस गई।

एक ओर खाट पर कच्छा पहने हुए काली सोया हुआ था। उससे थोड़ी दूर पर चाची गठरी बनी हुई लेटी थी। उसके पोपले मुँह में साँस अजीब-सी आवाज़ पैदा करती हुई आ-जा रही थी। काली के सिरहाने बैठकर वह उसके कंधों पर हाथ फेरकर देखने लगी कि कहाँ चोट लगी है। काली हड़बड़ाकर उठा तो ज्ञानो ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया और बहुत धीमे स्वर में बोली

'मैं हूँ।'

काली ने चाची की खाट की ओर देखा और यह इतमीनान करके कि वह सोई हुई है, उसने ज्ञानो का हाथ पकड़ा और उसे ईंटों के चक के पीछे ले गया। काली के कुछ कहने से पहले ज्ञानो ने उसके कान में कहा

'क्या बहुत चोट लगी है?'

'नहीं।'

'सच।'

'तेरी सौगंध।'

ज्ञानो ने इतमीनान से धीरे धीरे लम्बा साँस छोड़ा और अपनी तसल्ली करने के लिए काली की बाज़ुओं, रानों, छाती और पीठ पर हाथ फेरने लगी। काली के शरीर में सनसनी-सी होने लगी और उसने ज्ञानो को अपनी बाहों में ले लिया।

'चोट लगी कहाँ है?'

'कूल्हे में।'

'कीड़े पड़ें निकले माए हरदेव को।' ज्ञानो ने उसकी छाती के साथ सटते हुए कहा।

काली को बलवंत और निक्कासुख की सब बातें फिर याद हो आईं। कच्चे

खरबूजे जैसी छातियाँ। काली की साँस उखड़ने लगी और सारे शरीर में तनाव बढ़ने लगा। उसने ज्ञानो को भींच लिया। फिर उसकी पीठ को अपनी छाती के साथ लगा लिया और हाथ उसकी छाती पर जाकर कटोरियाँ बन गए। ज्ञानो ने कुछ क्षणों के लिए काली की गिरफ्त को तोड़ने का यत्न किया लेकिन शीघ्र ही उसके हाथ ढीले पड़ गए।

कुछ क्षणों के लिए वे ऐसे ही खड़े रहे। काली सारी दुनिया को भूल गया और उसके हाथ नीचे रींगने लगे। ज्ञानो ने एक बार फिर उसे रोकने का असफल यत्न किया। उसका सारा शरीर ढीला पड़ गया और काली के साँचे में ढलता गया।

जब काली ने अपनी गिरफ्त ढीली की तो ज्ञानो को महसूस हुआ कि वह गिर जाएगी। उसने बहुत कठिनाई से अपने आपको सँभाला। उसे एकदम डर और शर्म महसूस होने लगी। वह काली के आँगन से निकलकर गली में आ गई। उसने घर जाकर अंदर से दरवाज़े को साँकल चढ़ा दी। उसने अपनी सलवार उतार दी और उसे पानी में अच्छी तरह निचोड़कर सीढ़ी के डंडे के साथ लटका दिया। वह कमर के इर्द गिर्द दुपट्टा लपेटकर छत पर चली गई और अपनी खाट पर ऐसे गिर पड़ी जैसे उसके अंदर बल एकदम ही खत्म हो गया हो। वह मुँह में कपड़ा ठोंसकर फफक कर रोने लगी।

२३

सतासिंह ने बोरी से सब औज़ार ज़मीन पर उंडेल लिए और उन्हें छाँटता हुआ बोला

आज मन बाँधकर काम करेंगे। कल शाम तक यह दीवार पूरी करनी है।

मैं तैयार हूँ।

काली हाथ झाड़ता हुआ उठा और गारे की तगारी दीवार के साथ लगे फट्टे पर रखकर जल्दी जल्दी ईंटें पकड़ाने लगा। मिस्त्री सतासिंह के हाथ बहुत तेज़ चल रहे थे। वह हाथ में हर ईंट को उछालकर चारों ओर से ध्यान से देखता और उसके नीचे गारा लगाकर दीवार पर जमा देता। वह हर ईंट के

बारे म कहता कि यह ज्यादा पक गई है, यह कच्ची रह गई है, यह बिलकुल ठीक पकी है। गारे मे कभी कक्र आ जाता तो वह उसे कांडी से बाहर फेंकता हुआ कहता कि गारा मक्खन की तरह नम और साफ हो तो इट तुरत जम जाती है और दीवार की उम्र लम्बी होती है।

धूप बढने के साथ-साथ मिस्तरी सतासिंह के हाथ सुस्त पडते गए और पारा चढता गया। प्यास लगी तो पानी पीने के लिए उसे महाशय की दूकान पर जाना पडा। वह वापस आकर बहुत तलख स्वर मे बोला

मैं चमारा का नाम इसी दुख का मारा नही लेता। अभी पानी पीकर आया हूँ फिर प्यास लगने लगी है।

'नन्दसिंह के घर से पानी ला दू वह तो तेरा सिख भाई है।

'आहिस्ता बोल मेरा उसका क्या रिश्ता। वह मजहबी सिख है।' सतासिंह ने नन्दसिंह को गाली देते हुए कहा।

लेकिन गुरु का सिख तो है।'

सिख बन जाने का यह मतलब तो नही कि वह चमार नही रहा। धम बदलने से जात तो नही बदल जाती।' सतासिंह ने एक इट को दो हिस्सा मे तोडते हुए कहा।

जब सूय सिर पर आ गया और लू चलने लगी तो सतासिंह फटटे स नीचे उतर आया। वह बाल्टी मे हाथ धोकर दीवार की ओर देखता हुआ बोला

'आज धूप बहुत तेज है। मैं दिन ढले ही आऊँगा।

'ठीक है। मुझे भी स्कूल के मुशी के पास जाना है। कल उसका बुलावा आया था।'

'मगू की बहन स भी बुलावा आया है या नही?'

सतासिंह ने शरारत भरी नजरा से काली की ओर देखा और खिलखिलाकर हँसता हुआ बोला

'पुत्तरा तू किस्मत का धनी है। मौज कर रहा ह मौज करत समे हम भी याद कर लिया कर।

सतासिंह गली म चला गया तो वह सामान समेटकर कोठरी म जा घुसा और बहुत गर्मी होने के बावजूद दोना पट बन्द करके खाट पर लेट गया। चाची की अनुपस्थिति से उसे इतमीनान सा मिला।

काली नहा चुका तो चाची ने उसके हाथ पर मक्ई की चार रोटिया रख दी। वह उन्ह घूरता हुआ बोला

'मक्ई की रोटी पकाई है, क्या गेहूँ का आटा खतम हो गया है?

'खत्म तो नहीं हुआ, काका। रोज गेहूँ की रोटी खाएँगे तो गुजारा कैसे चलेगा। हमारे घरों में तो गेहूँ की रोटी सौगात समझी जाती है। मुहल्ले में जाकर देख लो, लोग बाग शाम, मक्ई और बाजरा ही खाते हैं।'

चाची ने काली को समझाया।

रोटी खाने के बाद काली ने गारे पर पानी छिडका और कोठरी में आकर खाट पर लेटता हुआ बोला

'आज बहुत गर्मी है।'

'काका हाढ (आषाढ) बीत रहा है।'

चाची ने रोटी खाते हुए पोपले मुह से कहा। वह धीरे धीरे रोटी चबाती हुई अपने बुढापे को कोस रही थी। काली को खाट पर बराबर करवटें बदलते देखकर उसने कहा

'जा, तकिये मे चला जा वहाँ हवा चलती होगी।'

'मुझे बडे मुंशी ने बुलाया है। स्कूल जाना है।'

'उसने क्या बुलाया है?'

चाची नवाले को अपने मुह के पास रोकती हुई बोली।

'पता नही, कल नन्दसिंह का लडका कह गया था।'

'कोई नई मुसीबत न आ रही हो। सरकारी हाकिम बुलाए तो डर लगता है। पर मुंशी बेचारा तो लडके पढाता है। काका, उसे तुम्हारे साथ क्या काम हो सकता है?'

'कोई चिट्ठी चपाटी आई होगी। शहर में मेरे कुछ पैसे रह गए थे शायद वह आए हो।'

चाची की चिन्ता एकदम दूर हो गई और वह काली को समझाती हुई बोली

'किसी के सामने पैसे मत लेना। गाँठ बाँधकर सीधे घर आना।'

काली हँसता हुआ करवट बदलकर सोने की कोशिश करने लगा।

दिन ढले काली स्कूल चला गया। बडा मुंशी अपने कमरे में चबूतरे पर बैठा था। बाहर स्कूल के बच्चे बैठे डाक बटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मुंशी ने हर गाँव की डाक की अलग अलग ढेरी बना रखी थी। वह हर पत्र पर लिखा पता ध्यान से पढता और गाँवबाना से मुहर लगाकर उसे सम्बन्धित ढेरी में रख लेता। काली ने मुंशी का ध्यान बँटाया तो उसने सिर ऊपर उठाया और प्रश्नात्मक दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। काली बोला

'मुंशीजी मेरा नाम कालीदास है। कल आपने नन्दसिंह के लडके से...।'

काली अभी बात पूरी भी न कर पाया था कि मुंशी प्रसन्न भाव से बोला

'अच्छा-अच्छा, याद आ गया। तुम्हारा मनीआडर आया है। मनीआडर पर यह नाम पढ़कर मैं शशोपज मे पड गया। मैं हैरान था कि इस नाम का इस गाँव म कभी खत नही आया, आज मनीआडर कहाँ से आ गया। फिर मैंने सब बच्चो से पूछा तो नन्दसिंह के लडके ने कहा कि उसके मुहल्ले मे इस नाम का आदमी रहता है।' मुशी काली को एक बार फिर ध्यानपूर्वक देखकर बोला आगे के लिए मेरी बात पल्ले बाध लो। अपने नाम के साथ वल्दियत या जात या दोनो जरूर लिखा करो। उससे किसी गडबड का अदेशा नही रहता। अगर इस गाँव मे तुम्हारे नाम का दूसरा आदमी होता और यह मनीआडर ले जाता तो तेरी रकम जाती, उस आदमी को हथकडी लग जाती और मैं नौकरी से बरखास्त हो जाता।'

वह सामने पडे पत्रो पर झुकता हुआ काली स कहने लगा

'मैं डाक बाँट दू तुम इतनी देर मे दो गवाह ले आओ।

गवाह का नाम सुनकर काली चौंक गया।

गवाह किसलिए ?'

'यह तसदीक करने के लिए कि तुम्हें रकम मिल गई है। गवाह पढना और दस्तखत करना जानते हो तो अच्छा है। हा, उनका बालिग होना जरूरी है।'

काली इस सोच मे डूबा हुआ, कि गवाही देने के लिए किस से कहे डाक्टर बिशनदास की दूकान पर आ गया। डाक्टर दीवार के सहारे अधलेटा कोई किताब पढ रहा था। काली बदगी करके दहलीज के साथ बठता हुआ बोला

डाक्टर जी क्या पढ रह हो ?'

यह सोवियत यूनियन से नई किताब आई है। इसमें क्लास स्ट्रगल और मुख्तलिफ तबका के क्लास करेक्टर का तजकरा किया गया है।'

डाक्टर ने सीधा बैठत हुए कहा। काली की समझ मे कुछ न आया। उसके चेहरे पर हैरानी की परछाइयाँ फल गई तो डाक्टर मुसकराता हुआ बोला

'इसम समाज के अलग-अलग तबका (वर्गों) की खासियतें बताई गई हैं। और यह बताया गया है कि इन तबको म टकराव क्या जरूरी है।'

डाक्टर की बात लम्बी होने लगी तो काली उसे टोकता हुआ बोला

डाक्टर जी, मैं आपके पास एक काम से आया था।'

'क्या ?'

मेरा मनीआडर आया है। आपकी गवाही चाहिए। आपको डाकखाने चलना होगा।

मनीआडर कहाँ से आया है ?'

कानपुर से मिल वालों ने मेरी मजदूरी का हिसाब करके बकाया भेजा होगा।

डाक्टर ने लड़की को बुलाकर दूकान पर बिठा दिया और काली के साथ चल पड़ा। जब वे गली में आ गए तो काली बोला

डाक्टर जी, एक गवाह और चाहिए।'

कोई बात नहीं। दूकानों से होकर चलते हैं, हकीमों का ओमा मिल गया तो उसे ले जाएँगे। अगर वह न मिला तो किसी और को पकड़ लेंगे।'

काली का दूकानों की ओर से जाने को जी नहीं चाहता था और जब डाक्टर ने थान की बात शुरू कर दी तो उसका निश्चय और भी दृढ़ हो गया लेकिन उस ओर से जाए बिना कोई चारा नहीं था।

ओमे को साथ लेकर वे डाकखाने पहुँच गए। मुंशी बच्चा को डाक देकर भेज चुका था। उसने डाक्टर और ओमे से इधर उधर की बातें करने के बाद फिर वही नसीहत दोहराई जो वह पहले काली को कर चुका था। उसने अपने सामने पड़ी सन्दूकची का ताला खोला। उसके एक खाने में चार तह करके रखा हुआ मनीआडर निकाला और उस पर लिखा पता पढ़कर काली की ओर बढ़ाता हुआ बोला

अँगूठा लगाओगे या

दस्तखत करूँगा। मैंने इसी स्कूल से चार जमातें पास की थीं। उन दिनों खरलों के पंडित शिवराम मुंशी थे।

काली ने मनीआडर लेकर रकम देखी और मुंशी से कलम लेकर दो जगह मुबलग अस्सी रुपये वसूल पाए लिखकर नीचे हस्ताक्षर करके मनीआडर मुंशी की ओर बढ़ा दिया। मुंशी ने पढ़कर उसे मनीआडर लौटाते हुए कहा

'नाम के साथ बकलम खुद भी लिखो।'

काली ने बकलम खुद भी लिख दिया तो मुंशी ने बारी-बारी डाक्टर और ओमे के हस्ताक्षर कराए और उनका भली भाँति निरीक्षण करके उसने मनीआडर के नीचे का एक हिस्सा तह करके फाड़ा और काली के हाथ में थमा दिया। फिर उसने मनीआडर सन्दूकची में रखकर चमड़े का एक छोटा-सा थैला निकाला और उस पर लगा छोटा-सा ताला खोलकर बहुत सावधानी से उसमें से दस-दस के नोट निकाले और उन्हें तीन चार बार गिना। दस-दस के सात नोट, एक पाँच का नोट, चार एक-एक रुपये के नोट और एक चवन्नी काली के

बोला

'काली, आओ, दुकान पर चलते हैं। तुम्हें घर जाने की क्या जल्दी है ?'

'डाक्टर जी, आज से फिर मकान बनाना शुरू किया है। मिस्तरी संतासिंह मेरा इंतजार कर रहा होगा।

'अच्छा। सुबह शाम किसी वक्त मेरे पास आया कर। तेरे साथ बात करने में मजा आता है। एक-दो आदमियों को छोड़कर बाकी गाँववालों के सिर से मेरी बातें यों गुजर जाती हैं जैसे मोम से पानी।

'जरूर आऊँगा।' कहता हुआ काली आगे बढ़ गया।

वह घर पहुँचा तो मिस्तरी संतासिंह वापस जाने के लिए तैयार हो रहा था। काली को देखते ही बोला

'क्या मुंशी तेरे मुँह को छुआरा लगा रहा था (सगाई कर रहा था) जो तूने इतनी देर लगा दी ?'

'मनीआर्डर आया था उसके लिए दो गवाह चाहिए थे। डाक्टर बिशनदास और ओम को गवाही के लिए लेकर गया था। तुम डाक्टर की आदत जानते ही हो।

मिस्तरी संतासिंह खिलखिलाकर हँसता हुआ बोला

'वह कोई आदमी है। नायन के स्यापे की तरह उसकी बात खत्म होने में नहीं आती। ऐसा झलूला (सुस्त) आदमी मैंने कभी नहीं देखा। नाक साफ करने बैठेगा तो आधी दिहाड़ी शूँ शड़ाप में लगा देगा। किसी वाहेगुरु भगवान को वह नहीं मानता। किसी देवी देवता में उसका विश्वास नहीं है। गाँव का हर बेकार नौजवान उसका यार है। छोड़ हमें उससे क्या लेना है। गारा और ईंटें रख, काम शुरू करें।

चाची कोठरी में सो रही थी। काली की आवाज सुनकर वह बाहर निकल आई और चिंतित स्वर में बोली

'पुत्तरा, क्या कहा मुंशी ने ? क्या बुलाया था उसने ?'

चाची, मनीआर्डर आया था। इसलिए बुलाया था।

वह क्या होता है ?'

डाक से रुपया आया है। मैं शहर में जहाँ काम करता था, वहाँ से पैसे आए हैं।'

चाची का मन प्रफुल्लित हो उठा। काली को अपनी ही नजर से बचाने के लिए उसने जबान दाँतों तले दबा ली और अटेरन और सूत की अट्टियाँ उठा कर बाहर चली गई।

सतासिंह और काली सूर्यास्त के बाद भी काम करते रहे। जब अँधेरा गहरा हो गया तो मिस्तरी फट्टे से नीचे उतर आया और दीवार की ओर प्रशंसा भरी नजरों से देखता हुआ बोला

'काली, मुझे तू आज दस रुपये दे दे। किसी से हाथ उधार लिए थे। पता नहीं मेरा क्या बनेगा। सुना है गाँववाले नया तरखान लाना चाहते हैं।'

सतासिंह कुछ क्षण चुप रहकर बोला

तू शहर में रह आया है। वहाँ राज-तरखान को काम मिल ही जाता होगा।'

'हाँ मेहनत करनेवाला आदमी शहर में बेकार नहीं रहता। वहाँ कमाई है। लेकिन खर्चे भी वैसे ही हैं। मिस्तरी जी, परदेस, परदेस ही है। वहाँ तो किसी से कटी उँगली पर पेशाब करने के लिए भी कहो तो वह इस काम के पैसे माँगेगा। लेकिन यह नहीं कि वह चमार है, यह कुम्हार है। वहाँ भी जात-पात है लेकिन पास पैसा हो तो चमार भी ब्राह्मण के बराबर बैठ सकता है।

मिस्तरी दस का नोट जेब में रखता हुआ बोला

'अच्छा, कभी फुरसत से बैठकर सोचेंगे।'

सतासिंह के जाने के बाद काली चाची के पास आ बैठा और मुँह लटकाकर बोला

चाची, गाँव में हम तो हर आदमी पशु और मूढ़ समझता है। आज मुंशी ने मुझे मूढ़ जानकर मेरे से बारह आने ठगने चाहे।

पुत्तरा तू ऐसी बातें न सोचा कर। रब जी ने जिसको चमार पैदा किया है वह चमार ही रहेगा चौधरी नहीं बनेगा। सब कर्मों का फल है।'

चाची उसे समझाती हुई बोली।

काका तेरे बाप-दादा भी इसी गाँव में रहे। वह तो कभी ऐसी बात नहीं सोचते थे। हाथ धोकर रोटी खा और सो जा। सवेरे से काम में लगा हुआ है।

काली नहा-धोकर खाट पर बैठता हुआ बोला

'ला चाची रोटी दे दे।

चाची उठी तो उसका दुपट्टा धड़ से नीचे खिसक गया। काली ने शर्म के मारे मुँह दूसरी ओर फेर लिया और खीझकर बोला

चाची, तू कमीज क्यों नहीं पहनती ?

काका गर्मी से मेरा शरीर जल रहा था इसलिए उतार दी। अब रात हो गई है सवेरे पहन लूँगी।

काली रोटी खा रहा था। चाची उसके पास आ बैठी और चिन्तित स्वर में बोली

वारा खाना आज भी नहीं खाई।

चाची सोच में डूब गई और काली ज़मीन को घूरता हुआ इस तरह रोटी चबाने लगा जैसे ज़हर निगल रहा हो।

२८

चाची कोठरी का सारा सामान ड्योढ़ी में देखकर चकित रह गई और घबराई हुई बोली

'काली, तूने यह क्या किया? कोठरी का सामान ड्योढ़ी में क्या रख दिया?

चाची सोच रहा हूँ कि लगे हाथों कोठड़ी को भी पक्का पक्का बना दूँ?

'पुत्तरा मेरी मानो तो कोठरी को इसी तरह रहने दो। ड्योढ़ी पक्की बन गई है यही बहुत है। अब शादी की फिक्र करो। सौ डेढ़ सौ रुपये हाथ को रोकते रोकते भी लग जाएंगे। हम कोई खतरी महाजन तो हैं नहीं जो सोना डालेंगे। चांदी के दो चार गहने और शगुन के लिए सोने की बालियां या नाक का कोका बना लेंगे। इस वक्त तो तुम्हें दस रिश्ते मिल जाएँगे। मैं मर गई तो फिर सारी उम्र दूसरों की बहुओं को देखकर छाती पीटोगे।

चाची कुछ क्षण रुककर बोली

अब तू छोटा नहीं है। तेरी उम्र के लड़कों के चार चार बच्चे हैं। नामू को देख ले। उसके तीन बच्चे हैं चौथा तैयार है। दलीपा तेरे से एक साल छोटा है उसके भी तीन बच्चे हैं।

अच्छा-अच्छा तुम्हें हमेशा शादी ही सूझती है? मौका आने पर शादी भी कर लूंगा।

चाची ने काली का कोरा उत्तर सुनकर मुंह दूसरी ओर फेर लिया तो वह उसके पास बैठता हुआ बोला

चाची मैं सोच रहा हूं कि कोठरी पक्की बनाने की बजाय अभी सिर्फ

पक्के स्कूल बना दूँ। दीवारें कच्ची भी रहें तो कोई हर्ज नहीं। इसके बाद मेरी शादी होगी तो लड़कीवाले सोचेंगे कि उनकी लड़की अच्छे घर में गई है। काली चाची की पीठ थपथपाता हुआ बोला

'पन्द्रह दिन का काम है। उसके बाद तू एक छोड़ मेरी दस शादियाँ कर देना।

'तू तो हर बात ठट्ठे में ले जाता है। काका, मैं सच कहती हूँ जिस लड़के के सिर पर कोई न बैठा हो उसके पास सोने की ईंटें हों भी तो उसे कोई लड़की नहीं देगा।

चाची मैं तेरी बात मानता हूँ। लेकिन पन्द्रह दिन में कोई फर्क नहीं पड़ेगा मैं बूढ़ा नहीं हो जाऊँगा। गली में मेरी उम्र के ज्यादा नहीं तो दो लड़के कँवारे बैठे हैं मंगू और जीतू।

तू उनकी बात छोड़ दे। निहाली के पल्ले पैसे होते तो वह जीतू की शादी कई साल पहले कर देती। बाकी रहा मंगू उसकी दो कुड़माइयाँ (मँगनी) छूट चुकी हैं। शराबी को आँखों से देखकर कोई लड़की नहीं देगा।

चाची उत्तेजित स्वर में फिर बोली

हमारे समें में छः सात दस ग्यारह साल की उम्र में शादी हो जाती थी। कई लड़के लड़कियों के ब्याह तो इससे भी छोटी उम्र में हो जाते थे। मैं आठवें साल में थी जब मेरा ब्याह हो गया था। तेरी माँ मुझसे छोटी उम्र में ब्याही गई थी। लड़का लड़की दस साल से ऊपर हो जाते थे तो लोग उँगलियाँ उठाने लगते थे कि कोई ऐब होगा जो ब्याह नहीं होता। काली चुप रहा तो चाची बात बढ़ाती हुई बोली

प्रसिन्नी एक लड़की बता रही है। उसके भाई के साले की लड़की है। उम्र पन्द्रह साल बताती है। उसका बाप गढ़ी में जूते बनाता है। कहती थी लड़की का अंग रंग सब ठीक है। तू हाँ कह दे तो मैं उससे आगे बात करूँ।

अच्छा कोठरी बन जाए तो जिस दिन जी चाहे मेरी शादी कर देना। अब तू कोठरी में जाकर देख ले कोई चीज तो नहीं रह गई है।

काली ने बात खत्म करते हुए कहा।

चाची गहरे सोच में डूबी बैठी रही। काली ने अपनी बात दोहराई तो उसने ड्योढ़ी का द्वार अन्दर से बन्द कर लिया। दीया जलाकर हाथ में ले लिया और काली को अपने पीछे आने का संकेत करती हुई कोठरी की ओर बढ़ गई।

उसने कोठरी के भी दोनों पट बन्द कर लिए और एक कोने में बैठकर

जमीन को टटोलने लगी। काली उसके सिर पर खडा आश्चर्य म देख रहा था। चाची उठ खडी हुई और एक स्थान की ओर सकेत करती हुई बोली

'यहाँ देख पक्की इट है। काली न जगह को टटोला और जोर लगाकर इट बाहर निकल ली और उसे परे रखता हुआ बोला

य रही इट।

चाची न उसे पीछे हटा लिया और फिर उस जगह को टटोला। हाथो स मिट्टी उखाडने लगी। काली का जब गर्मी और घुटन स सांस रुकने लगा तो वह चाची स कुछ क्रुद्ध स्वर म बोला

चाची क्या है हट, मिट्टी मैं उखाड देता हूँ।

'ठहर बाबा।

और फिर वह उस जगह की ओर सकेत करती हुई बोली

'यहाँ से मिट्टी हटा दे।

काली बाहर आकर खुरपा ले आया और मिट्टी खोदने लगा तो चाची बहुत धीम स्वर म बोली

आहिस्ता आहिस्ता खोद। खुरपे की धमक प्रीतो के मकान म सुनाई देगी।

काली हैरानी म डूबा हुआ चाची के कथनानुसार काम करता रहा। आधा घटे की खुदाई के बाद काली न जमीन म से एक मटका निकाला। उसका मुह खोला तो उसके अन्दर स छोटा सा मटका निकला। चाची न मटका काली के हाथ से ले लिया और अपना दुपट्टा जमीन पर बिछाकर मटका उसके ऊपर उँडेल दिया। उसम से चादी क कुछ रुपये छन छन करते नीचे आ गिरे। उनके साथ चादी की पाजेब, दो झुमके चौंक और फूल भी निकले। चाची ने गहने अलग कर दिए और काली स बोली

य गहन तेरी माँ और मेरे दोनो के है। मके ससुराल से हम दोनो को यही कुछ मिला था। ये रुपय गिनो, पाच कम चालीस होने चाहिए। ये सब चीजें तेरी शादी के लिए दबाकर रख दी थी। इसस एक तो चोरी चकारी का डर नही रहता, दूसरे पसा हाथ म हो तो खच हो जाता है।

चाची की बातें सुनकर और अपन सामन पडी चीजें देखकर काली का मन पहल तो गुदगुदा गया और फिर एकदम ही वह बहुत उदास हो गया। उसका जी चाहा कि चाची क गले लगकर फूट फूटकर रोए। चाची ने उन सब चीजो को समेटते हुए कहा

'तेरे बाप दादा न तेरे लिए यही जायदाद छोडी थी। अब तू इसका मालिक है। बस मैं इतना चाहता हू कि तू मेरे जीते-जी शादी कर ले। मैं भी

अपने आगन म छम छम फिरती बहू को देख लू । काका, क्या पता सास की डोरी कब छूट जाए ।

यह कहते-कहते चाची की आंखा म आंसू आ गए ।

काली चाची को कोई उत्तर दिए बिना ही बाहर आ गया और ड्योढी म चक्कर काटता रहा । थोडी देर बाद चाची दुपट्टे म सब चीजें समेटकर उन्ह अपनी छाती से लगाए ड्योढी म ले आई और दुपट्टे को उसकी ओर बढाती हुई बोली

ले इन्हें सँभाल ले । अब तू जाने, तेरा काम जाने ।'

काली ने दुपट्टा लेकर अपने माथे को लगाया और खामाशी से रोता हुआ उन चीजो को एक कपडे म बाधकर अपने ट्रंक मे रख दिया ।

कुछ देर वे दोनो चुप रहे । काली चाची की खाट के पास विचार मग्न बैठा रहा । उसे अपने दादा, पिता और चाचा म से किसी की शक्ल याद नही थी । वह कोशिश कर रहा था कि उनकी कोई तसवीर जेहन म उभार सके । उसकी उदासी बहुत गहरी हो गई तो वह उठकर बाहर चला गया ।

काली के जाने के बाद चाची ने अपना अटेरन और सूत उठाया और ड्योढी को ताला लगाकर चौगान की ओर चली गई ।

चौगान म जस्सो, प्रीता, प्रसिन्नी, बन्तो, पाशो, निहाली बन्त हुक्मा और ज्ञानो बेरी के नीचे बैठी थी । चाची को देखते ही नानो उठ खडी हुई और अपनी मा जस्सो से बोली

मा मैं भैस को चारा डालने जा रही हूँ ।'

चाची ने उसे जाते देखा तो प्रसिन्नी से पूछा

कौन गई है उठकर ?'

नानो ।

अच्छा, आग लग जाए इन आँखो को । मुझे तो चारा ओर परछाइयाँ-ही परछाइया नजर आती है ।'

फिर वह पीछे मुडकर देखती हुई बोली

री नानो ! पुत्तरा, मेरी बात तो सुन ।'

चाची भैस को चारा डाल आऊँ ।

चाची अटेरन से सूत की अट्टियाँ बनाने लगी ।

चाची, तेरा सूत तो बहुत बारीक है । प्रसिन्नी ने कहा जो अपने फूले हुए पेट के कारण बार-बार पहलू बदल रही थी ।

कात लिया सूत । अब तो तकली भी नजर नही आती । चाची ने आखा

स पाना पाछत हुए वहा।

'चाची डयाटी ता वहुत अच्छी वन गइ है।

हाँ पुत्तरा काली की जिद थी। उसकी मर्जी।

'अब तू उसकी शादी कर द। तरी उम्र अब मेहनत करने की नहा है।

पुत्तरा मरी कौन सुनता है। मैं ता कह-कहकर हार गई हूँ। आज कहता था कि काठरी पक्की कर लू। उसक वाद शादी कर लूगा। तुम काई रिश्ता ल्भा ना।

रिश्त तो पचास मिल सकत है लेकिन काली का पता नहीं पसन्द आए या नहीं। उस तो अपनी हैसियत का घर चाहिए।'

वतो की वात सुनकर प्रीतो तिनककर वाली

'मुरवेवो के मालिक घर तो मिलन स रहे क्योंकि हजारा म एक चमार ही ऐसा होगा जिसके पास जमीन होगी। हाँ, मेहनत मजदूरी करने वाला घर मिल सकता है।'

मुरववो का मालिक घर कौन देखता ह। हाँ किसी मँगत फकीर की लडकी नही होनी चाहिए। वाकी सब रव जी क हाथ म है। जहा सजोग होगे वही शादी होगी। चाची न द्ल स्वर म कहा।

चाची एक लडकी है—मरी मौसी की भतीजी लेकिन रग उसका पक्का है। वतो ने वहा।

काली कौन सा अग्रेज है। प्रीतो बोली। यह सुनकर चाची भडक उठी।

प्रीतो तू सदा लागवाजी करती है। चमार का वटा तो काला ही होगा।

चाची का उत्तर सुनकर सब हस पडी। प्रसिन्नी और वन्तो तो हसी स लोट पाट हो रही थीं। प्रीता भी भडक उठी

चाची तू सदा दूसरे के सिर स चादर खींचती है। जो अपन-आपको दाली सत्योती (सत्यवती) समझती है मैं उन्ह भी जानती हू।

प्रीतो वात आग वढान लगी तो वव हुक्मा उस टाकती हुई वोली

प्रीतो तू तो जहान भर की वशम है।

'वेवे वशम हूँ या ! और फिर प्रीतो वात पलटती हुई वोली

'मैंने ता ठट्टे म कहा था। रव राजी-खुशी रखे कालो को लाखा म एक है। पर वता तू किस किस क लिए रिश्ता लाएगी। अभी जीतू की कुडमाई (मँगनी) करा रही थी। अब काली के लिए कह रही ह। क्या एक ही लडकी का सब जगह घुमा फिरा रही हो।

जीतू की कुडमाइ की वात ता पक्की है क्या ताई ? वतो ने जीतू का

मा निहाली की ओर देखत हुए कहा।

'हा बीबा। पक्की ही समझो। जब उसके मुह को छुआरा लग जाएगा तो तभी समझूगी बात पक्की है।

मुहल्ले म शादी लायक लडके और लडकिया बहुत हैं। प्रीता गिनती हुई बोली।

काली जीतू, मगू बग्गा, नत्थू और लडकिया मे नानो, चमली, वदा, नमीबो और '

'तू अपनी लच्छा और अमरू का नाम क्या नही लती।

जस्सो ने अपन बटे और बेटी का नाम सुनकर कहा

व अभी छोटे हैं। अमरू का तो भाभी न अभी पारसाल ही दूध छुडवाया है।' प्रसिन्नी ने ठहाका लिया।

बेब हुक्मा रब जी को याद करती हुई बोली

'अब लडके और लडकिया को आधे बूढे करके शादी करन का रिवाज हा गया है। अभी तक तो सब अच्छे हैं लेकिन दुध और बुद्ध (दूध और बुद्धि) को भ्रष्ट होते देर नही लगती।'

प्रीतो प्रसिन्नी के फूले हुए पेट को दखता हुई बोली

इस साल तो मुहल्ले म पुआरा पडने वाला है। असूज के महीन म वन्तो प्रसिन्नो, घनो और करमी के घर बच्चे होंगे।

तू अपने आपको क्या भूल रही है। पट तो तरा भी शहद के छत्ते की तरह बढा हुआ है।

प्रसिन्नी न यह कहकर बन्तो के कान म कुछ कहा और दाना हँसी से लोट पोट होने लगी। बेबे हुक्मा ने उन्ह टोकत हुए कहा

'क्यो हिड हिड लगा रखी है।'

माई, इनके हँसन के दिन हैं। अपनी जवानी म तू भी तो इसी तरह हँसनी होगी।

'ना बीबा उन दिना हर घर मे सास का पहरा होता था। अब तो सास घर म किसी गिनती म नही है। उन दिना छ छ महीन अपने मद से बात करन का मौका नही मिलता था। आजकल तो उठत-बठत अपने मर्दों क कान म फूक मारती हैं।' बेब हुक्मा न कहा।

बब, सुना है जब तू जवान थी तो तरे मद की टागा म रोज रात का दद उठता था और तू दबाती थी तो उस आराम मिलता था।'

प्रीतो की यह बात सुनकर सब हँसी स दुहरान लगी। बब हुक्मा

गालियाँ देती हुई अपनी लाठी टटोलने लगी तो ताई निहाली प्रीतो को डाँटती हुई बोली

'प्रीतो तेरे जसी वशम मैंने आज तक नही देखी ।'

सब अभी हँस ही रही थी कि काली आ गया । वह चाची के पास आकर बोला

चाची डयोढी की चाबी देना ।'

काली बधाई हो तेरी डयोढी तो हवेली की डयोढी दिखाई देती है ।'

ताई ने कहा । काली उत्तर म मुसकराता हुआ लौट गया ।

काली के जाने के बाद चाची भी उठ खडी हुई तो प्रीतो बोली

भाभी क्या अदर सोने की इटें दबाई हुई हैं जो दिन म भी ताला लगा कर रखती हो ।

हाँ प्रीतो चोर उचक्को से ताला लगाना ही पडता है ।

चाची चली गई, ता प्रीतो नाक चढाकर बोली

चाची भतीजे दोनो का दिमाग बिगड गया है ।

२५

काली अभी ऊँघ ही रहा था कि जीतू दनदनाता हुआ डयोढी म घुसा और उसे कधो स झझोडता हुआ बोला

बाबू जी, तू सो रहा और गाँव म दुनिया पलट रही है ।

काली हडबडाकर उठा और क्रोध और आश्चय भरी नजरो से जीतू की ओर देखने लगा । वह उसे कधो से पकडता हुआ बोला

बाबू जी सचेत हो जाओ ।

'क्या हुआ ?'

भाना बादशाह बनता है । पादरी को तेरे साथ बातें करते मैंने आप देखा है । '

ता इमस क्या होता है ।'

जीतू छाती-सा खाट पर उसके साथ फँसकर बैठता हुआ कान मे बोला

पादरी मुझे शहर भेज रहा है। वडे पादरी के नाम रुक्का (सदेश) देकर । बीस रुपये खाने-पीने का सामान लाने के लिए दिए हैं। एक रुपया मुझे मजदूरी का दिया है।'

वह आश्चय भर स्वर मे बोला

'कुछ समझ मे नही आता। कल इतवार है। सुना है गिरजे म बहुत रौनक होगी। बडा पादरी आएगा। बाहर से भी लोग आएँगे।

तुम्हें किसन बताया ?' काली न आखें मलत हुए कहा।

पादरी पादरानी स कह रहा था। मैंने तो कुछ और भी सुना है।'

मैं महाशय की दूकान पर गया था। वहा कोई कह रहा था कि नन्दसिह और उसका टब्बर (कुटुम्ब) ईसाई बन रहे हैं। तविए म आया तो कान म यही भनक पडी। इसलिए भी शक पडता है क्योकि पादरी सवेर स नन्दसिह के घर म तीन चक्कर लगा चुका है। कुछ गडबड जरूर ह। जीतू न अपने पाव ऊपर उठाकर दिखाते हुए कहा

पादरी ने मुझे बूटा का यह जोडा भी दिया है। देखन म ता बहुत अच्छा ह लेकिन पाव को खाता है।

काली उसके पाव म पडे बूट को देखकर मुसकरा दिया। जीतू उस बाह स पकडकर उठाता हुआ बोला

'चलो महाशय की दूकान पर चलत हैं। वहा पक्का पता चलेगा।

जब वे दूकान पर पहुचे तो महाशय और पडित सतराम दोना बहुत उदास बठे थ। डाक्टर बिशनदास अपनी नाक कुरदता और दाइ टाग हिलाता हुआ हुक्का गुडगुडा रहा था। काली और जीतू बदगी करके एक ओर बठ गए। जीतू ने जब देखा कि व तीनो इस तरह बठे हैं जैसे चुप रहन की शर्त लगा रखी हो तो वह स्वय ही बोला

'महाशय जी मैं शहर जा रहा हूँ। वहाँ से कुछ मँगवाना हो तो बता दो।'

तू क्या लेन जा रहा है ?'

पादरी भेज रहा है। कुछ खान-पीन का सामान लाना है और बडे पादरी को रुक्का देना है।

जीतू की बात सुनकर पडित सतराम भडक उठा और क्रुद्ध स्वर म बोला

मैं ठीक कह रहा हू कि पादरी नन्दसिह का क्रिस्तान बना रहा है। सवनाश हो उसका। बडी मुश्किल स क्रिस्तानियो का बीज-नाश किया था

गान म । अब पादरी फिर नया पौधा लगा रहा है ।

महाशय ने हुक्के की न अपने मुह म ले ली और गम्भीर मुद्रा म बैठा हुक्का गुडगुडाता हुआ बोला

सतराम, शायद तेरी बात ठीक हो । लेकिन क्या किया जा सकता है ।

महाशय सोच म पड गया । पडित सतराम सटपटाता हुआ बोला

कभी किसी दूसरे धम वाले को अपना धम बदलते हुए सुना है । धम जब भी बदलता है तो हिन्दू ही बदलता है । क्योंकि उस अपने धम कम पर विश्वास नही रहा ।

पडित जी, अगर आप की बात मान भी ली जाए तो कोई फक नही पडता । क्योंकि धम बदलने से नन्दसिंह का क्लास करक्टर नही बदलेगा । सब धम पाखण्ड है । हर धम मजदूर तबके के लिए अफीम है । अफीम काली हो या भूरी उससे क्या फक पडता है ?'

तू भी बन जा क्रिस्तान ? पडित सतराम उसे झिडकता हुआ बोला । और फिर कुछ देर तक खामोश रहकर हारी हुई आवाज म कहने लगा

नन्दसिंह तो पहले से ही नीच था । जो आदमी गोमाता और उसके कोख जाए के चमडे के जूते बना सकता है वह गाय का मांस भी खा सकता है ।

सतराम गाय के चमडे के जूते बनाना और बात है और गाय का मांस खाना और बात । जूते बनाना तो धधा है ।

महाशय ने एक एक शब्द पर जोर देते हुए कहा ।

असल बात यह है कि पादरी ने नन्दसिंह को लालच दिया है । उसके बडे लडके को शहर म नौकर कराया है । डाक्टर न कहा ।

वह कौन सा तहसीलदार बन गया है । कही चपरासी-खलासी भरती करा दिया होगा । सतराम बोला ।

चपरासी सही वह सरकारी अहलकार तो बन गया है ।' महाशय ने कहा । डाक्टर हुक्के का कश लेता हुआ बोला

मैं कह रहा था कि आदमी लालच म आकर ही ऐसा काम कर सकता है । जरूरतमन्द की जब जरूरतें पूरी नही होगी तो उन्हे पूरा करने के लिए वह सौ तरह के पापड बेलेगा ।

हाजतमन्द कौन नही है ? तू हाजतमद नही या मैं नही ? सबर सताख (सन्तोष) हो तो सब हाजतें पूरी हो जाती हैं ।

पडित मस्राम न गम होते हुए कहा ।

'पंडित जी, गरीब की हाजत बहुत बडी होती है। भूखा जब भी सवाल करेगा दो रोटियों का करेगा। गरीबी दूर करने का एक ही तरीका है और वह है इन्कलाब, प्रोल्तारी इन्कलाब, जो अमीर और गरीब सबको बराबर कर देगा।'

'बिशनदास, तू अनहोनी बातें करता है। भगवान ने सब जीव-जन्तुओं को उनके कर्मों के अनुसार जन्म दिया है। आदमियों का तो छोडो कुत्तों को ही ले लो। कोई डूम है तो कोई शिकारी। कोई मेमों की गोद में सोता है तो कोई तेरे मेरे से ठोकरें खाता है। तुम पहले इन्हें तो बराबर करो। अमीर-गरीब, ब्राह्मण चमार की बात में एक जैसा करना।

पंडित संतराम की बात पर महाशय जोर से हँसा। उसने महाशय की हँसी को अपनी विजय जानकर प्रफुल्लित स्वर में कहा

बिशनदास नन्दसिंह चमादडी में सबसे सुखी है। जीतू और काली तेरे सामने बैठे हैं। ये क्रिस्तान क्यों नहीं बनते? निक्कू के घर में आठ-आठ पहर का फाका होता है वह क्रिस्तान क्यों नहीं बनता? नन्दसिंह पहले सिख बना लेकिन ऊँची जात के किसी सिख ने उसे मुँह नहीं लगाया। अब वह क्रिस्तान बनकर भी चमार का चमार ही रहेगा, बल्कि कुछ नीचे ही गिर जाएगा। चमारों की बिरादरी से निकलकर चूडा भंगियों में जा मिलेगा।

संतराम, बात करने से कोई फायदा नहीं। कोई ऐसी तरकीब सोचो कि नन्दसिंह अपना इरादा बदल ले। उसके घर जाकर उसे समझाओ।' महाशय ने सुझाव दिया।

राम राम। मैं नन्दसिंह के घर जाऊँ! क्या मेरा जन्म भ्रष्ट करने की सलाह दे रहे हो? जो करेगा सो भरेगा। पंडित संतराम ने कानों को छूते हुए कहा।

पंडित संतराम की बात सुनकर काली को क्रोध आ गया और वह एकदम उठ खडा हुआ। उसे महसूस हुआ कि नन्दसिंह ईसाई बनकर कोई बुरा काम नहीं कर रहा है। डाक्टर ने उसे रोकने की कोशिश की लेकिन वह अपने घर की ओर आ गया। जीतू वहाँ से उठकर पादरी के घर चला गया।

काली ने ड्योढी में कदम रखा ही था कि चाची उसके पास आकर बोली

काली सुना तूने?

क्या?'

नन्दसिंह और उसका टब्बर ईसाई बन रहा है। अभी प्रीतो आई थी नन्दसिंह के घर से होकर। वह बता रही थी कि उसके घर में पादरी ने कपडा

सा सटठर भेजा है। बच्चा-बड़ा सबके दो-दो जोड़े हैं, एक-एक जूता है—देसी नहीं विलायती। और बहुत सा सामान भी है।

बन रहा होगा। उसकी मर्जी है।' काली ने बेध्यानी से उत्तर दिया।

प्रीतो कहती थी कि कल से नन्दसिंह चमार नहीं ईसाई हो जाएगा। चाची ने उत्सुकता से कहा।

अच्छा। काली ने कोई दिलचस्पी दिखाए बिना कहा और कुदाल उठा कर कोठरी की दीवारें खदेड़ने लगा।

२६

इतवार के दिन गाँव में हलचल मच गई। कोई ही ऐसा मर्द औरत और बच्चा होगा जिसने पादरी के घर और गिरजे के सामने चक्कर न लगाया हो। नन्दसिंह के घर में तो सवेरे से ही ताला पड़ा था और वह अपनी पत्नी और बच्चों सहित पादरी के घर चला गया था।

गिरजाघर में सुबह से ही सफाई हो रही थी। रंग बिरंगी झंडियों से उसे सजाया जा रहा था। पादरी के घर में बड़ी-बड़ी देगों में पकवान पक रहे थे। बाहर से ईसाई लोग पादरी के घर पहुंच रहे थे। बड़ा पादरी और इलाके के अमीर ईसाई पादरी की बैठक में कुर्सियों पर बैठे थे और गरीब ईसाई गिरजा घर के अन्दर पड़े बेंचों पर ऊँघ रहे थे। बच्चों का एक बड़ा हुजूम कभी गिरजाघर के सामने जमा हो जाता और कभी पादरी के घर के सामने। बच्चे नन्दसिंह के बच्चों को देखने को उत्सुक हो रहे थे कि ईसाई बनने के बाद वे कैसे दिखाई देते हैं।

ज्यों ज्यों दिन चढ़ रहा था लोगों में हलचल बढ़ रही थी। पादरी के घर में बन रहे पकवानों की सुगंध चारों ओर फैल रही थी। उसके घर में ऐसी रौनक थी जैसे वहाँ विवाह हो रहा हो। जब पादरी के घर से जीतू बाहर निकला तो गली में मँडरा रहे लोग उस पर झपट पड़े

नन्दसिंह बन गया ईसाई? ठाकरी बन गई ईसायन? पाशो बन गई ईसायन?

जीतू बच्चों की भीड़ को चीरता हुआ सरना नाई को बुलाने के लिए उसके घर की ओर बढ़ गया। सरना नाई ने पहले तो आने से इनकार कर दिया लेकिन जब जीतू ने बताया कि पादरी पूरा एक रुपया देगा तो उसे लालच आ गया लेकिन वह लोक-लज्जा और गाँववालों की प्रतिक्रिया से डर गया। उसे चुप देखकर जीतू ने बताया कि पादरी हर हजामत का एक रुपया देगा। सरना ने चौंककर जीतू की ओर देखा और नजरें झुका लीं।

जीतू ने उसके कान में कुछ कहा तो सरना भड़क उठा और उस्तरा उठाकर उसके पीछे-पीछे गालियाँ देता हुआ भागा। जीतू छलाँग भरता हुआ उसकी पहुँच से बाहर निकल गया तो सरना रुक गया और उसे मोटी-सी गाली देकर बोला

कुत्तया चमार, एक बार हाथ आ गया तो इसी उस्तरे से तेरी गर्दन काट दूँगा।'

जीतू बाजार से होता हुआ सबको ताजा खबरें सुनाकर पादरी के घर पहुँच गया। जब उसने बताया कि सरना नाई ने आने से इनकार कर दिया है तो पादरी दुविधा में पड़ गया क्योंकि इसका अर्थ था कि गाँव के लोग नन्दसिंह के ईसाई बनने के विरोधी हैं। उसने जीतू को चुप रहने का संकेत दिया और अपनी छड़ी तलाश करने लगा। बड़े पादरी ने उससे बेचैनी का कारण पूछा तो पादरी ने टाल दिया।

जीतू के जाने के बाद सरना सोच में पड़ गया। जब उसे पैसों का खयाल आता तो जी चाहता कि चला जाए। उसने सोचा कि जब वह और चमारों के बाल काटता है और हजामत बनाता है तो नन्दसिंह के बाल काटने में क्या हर्ज है। सरना हजामत के सामान का थैला उठाकर गली में आ गया और आधा गाँव घूमकर पादरी के घर जा पहुँचा।

सरना को देखकर पादरी को जितनी प्रसन्नता हुई इतनी शायद नन्दसिंह के ईसाई बनने के लिए हाँ कहने पर नहीं हुई थी। पादरी ने उसे अन्दर ले जाते हुए कहा

'जीतू ने तो मुझे डरा दिया था।

आपने उस कुत्ते चमार को क्या भेजा था। मेरे साथ ऊटपटाँग बातें कर रहा था। शुक्र करो वह बच गया। मेरे हाथ आ जाता तो मैं उस्तरे से उसकी गर्दन काट देता।'

सरना नाई ने पादरी के घर में चारों ओर देखकर कहा

'क्या काम है, पादरी जी?'

गा गटटर भेजा है। बच्चा-बड़ा सबके दो-दो जोड़े हैं, एक-एक जूता है—ऐसी नहीं, विलायती। और बहुत सा सामान भी है।

'बन रहा होगा। उसकी मर्जी है।' काली ने बेध्यानी से उत्तर दिया।

'प्रीतो कहती थी कि कल से नन्दसिंह चमार नहीं, ईसाई हो जाएगा।' चाची ने उत्सुकता से कहा।

'अच्छा!' काली ने कोई दिलचस्पी दिखाए बिना कहा और कुदाल उठा कर कोठरी की दीवारें खरेंडने लगा।

२६

इतवार के दिन गांव में हलचल मच गई। कोई ही ऐसा मर्द औरत और बच्चा होगा जिसने पादरी के घर और गिरजे के सामने चक्कर न लगाया हो। नन्दसिंह के घर में तो सवेरे से ही ताला पड़ा था और वह अपनी पत्नी और बच्चों सहित पादरी के घर चला गया था।

गिरजाघर में सुबह से ही सफाई हो रही थी। रंग बिरंगी झंडियों से उसे सजाया जा रहा था। पादरी के घर में बड़ी-बड़ी देगों में पकवान पक रहे थे। बाहर से ईसाई लोग पादरी के घर पहुंच रहे थे। बड़ा पादरी और इलाके के अमीर ईसाई पादरी की बैठक में कुर्सियों पर बैठे थे और गरीब ईसाई गिरजा घर के अन्दर पड़े बेंचों पर ऊंघ रहे थे। बच्चों का एक बड़ा हुजूम कभी गिरजाघर के सामने जमा हो जाता और कभी पादरी के घर के सामने। बच्चे नन्दसिंह के बच्चों को देखने को उत्सुक हो रहे थे कि ईसाई बनने के बाद वे कैसे दिखाई देते हैं।

ज्यों-ज्यों दिन चढ़ रहा था लोगों में हलचल बढ़ रही थी। पादरी के घर में बन रहे पकवानों की सुगंध चारों ओर फैल रही थी। उसके घर में ऐसी रौनक थी जैसे वहां विवाह हो रहा हो। जब पादरी के घर से जीतू बाहर निकला तो गली में मंडरा रहे लोग उस पर झपट पड़े।

नन्दसिंह बन गया ईसाई? ठाकरी बन गई ईसायन? पाशो बन गई ईसायन?

जीतू बच्चा की भीड को चीरता हुआ सरना नाई को बुलाने के लिए उसके घर की ओर बढ गया। सरना नाई ने पहले तो आन से इनकार कर दिया लेकिन जब जीतू ने बताया कि पादरी पूरा एक रुपया दगा तो उसे लालच आ गया लेकिन वह लोक-लज्जा और गाववाला की प्रतिक्रिया से डर गया । उसे चुप देखकर जीतू ने बताया कि पादरी हर हजामत का एक रुपया देगा। सरना ने चौंककर जीतू की आर देखा और नजरें झुका ली।

जीतू ने उसके कान मे कुछ कहा तो सरना भडक उठा और उस्तरा उठाकर उसके पीछे-पीछे गालिया दता हुआ भागा। जीतू छलाँगें भरता हुआ उसकी पहुच से बाहर निकल गया तो सरना रुक गया और उसे मोटी-सी गाली देकर बोला

'कुत्तया चमार एक बार हाथ आ गया तो इसी उस्तरे से तेरी गदन काट दूगा।'

जीतू बाजार से होता हुआ सबको ताजा खबरें सुनाकर पादरी के घर पहुच गया। जब उसने बताया कि सरना नाई ने आने से इनकार कर दिया है ता पादरी दुविधा में पड गया क्याकि इसका अथ था कि गाव के लोग नन्दसिंह के ईसाई बनने के विरोधी हैं। उसने जीतू को चुप रहने का सकेत दिया और अपनी छडी तलाश करने लगा। बडे पादरी ने उससे बचनी का कारण पूछा तो पादरी न टाल दिया।

जीतू के जाने के बाद सरना सोच मे पड गया। जब उसे पसा का खयाल आता तो जी चाहता कि चला जाए। उसने सोचा कि जब वह और चमारो के बाल काटता है और हजामत बनाता है तो नन्दसिंह के बाल काटन में क्या हज है। सरना हजामत क सामान का थैला उठाकर गली म आ गया और आधा गाँव घूमकर पादरी के घर जा पहुचा।

सरना को दखकर पादरी का जितनी प्रसन्नता हुई इतनी शायद नन्दसिंह के इसाइ बनने के लिए हाँ कहने पर नही हुई थी। पादरी न उस अन्दर ले जात हुए कहा

जीतू ने तो मुझे डरा दिया था।'

आपने उस कुत्ते चमार को क्या भेजा था। मेरे साथ ऊटपटाँग बातें कर रहा था। शुकर करो वह बच गया। मेरे हाथ आ जाता तो मैं उस्तर स उसकी गदन काट देता।'

सरना नाई ने पादरी के घर म चारा आर दखकर कहा

'क्या काम है पादरी जी?'

'नन्दसिंह और उसका टब्बर यीशू मसीह की शरण में आ रहे हैं। उसके और उसके दोनों लड़कों के बाल काटने हैं।

पादरी ने नन्दसिंह को आवाज़ दी। वह आँगन में आकर सरना की ओर देखकर हँसने लगा

'दाँत बाद में दिखाना। पहले सिर दिखाओ।'

सरना ने हँसते हुए कहा। नन्दसिंह ने पगड़ी उतार दी और बाल खोल कर सरना के सामने बैठ गया।

बोदा रखना है। पादरी ने कहा।

'पादरी जी बोदा रखने से जुएँ रह जाएँगी। मेरी मानो तो एक बार उस्तरा फिरा दो।

सरना हँसता हुआ बोला और उसने एक हाथ में सब बाल समेटकर कैंची से काट लिए।

हजामत के बाद नन्दसिंह मौलवी दिखाई देने लगा। सरना ने मशीन से उसकी दाढ़ी काट दी और छोटे छोटे बालों पर पानी लगाकर उन्हें उँगलियों से मसलने लगा। जब वह नन्दसिंह की दाढ़ी पर उस्तरा चलाने लगा तो वह बिलख उठा। गालों और ठोडी पर कई जगह मांस कट गया तो नन्दसिंह झुंझलाता हुआ बोला

सरना क्या तू हजामत करना भूल गया है?

नहीं मैं तो नहीं भूला तूने बहुत देर के बाद कराई है।

हजामत के बाद नन्दसिंह की अजीब-सी शक्ल निकल आई। उसकी पत्नी और बेटे रतियाँ उसे हैरत और दिलचस्पी से देख रहे थे। बाद में सरना ने नन्दसिंह के दोनों लड़कों की हजामतें बनाई। पादरी ने सरना को पैसों के साथ कुछ मिठाई भी दी। उसने मिठाई वहीं खा ली क्योंकि बाहर ले जाने में उसे डर महसूस हो रहा था।

हजामत के बाद बड़ा पादरी आँगन में आ गया। पानी की एक बाल्टी मेज पर रखकर उसके पास खड़ा अजील में से कुछ पढ़ता रहा। उसके साथ साथ पादरी और दो-तीन दूसरे आदमी भी अपनी-अपनी अजील से पढ़ रहे थे। आधा घण्टे के बाद बड़े पादरी ने बहुत आदर से कहा

आबेहयात यानी अमृत तैयार है। इससे नन्दसिंह और उसके बीवी बच्चे नहा लें।

स्नान के पश्चात उन्होंने नए कपड़े और जूते पहने। बड़े पादरी ने उन्हें अपने सामने खड़ा करके प्रार्थना की और उनके गले में छोटी छोटी सुनहरे रंग की

जजीर लाल की जिनके बीच में छोटा-सा त्रास लटक रहा था। इस कारवाई के समय सब महमान पादरी के घर में जमा थे और सब मिलकर गा रह थे

'हैं य बच्चे, पास आन दो, कहा तूने मसीह।
गोद म उनको प्यार से लिया तूने मसीह।
तूने फरमाया मैं इनको दूगा अपनी पाक रूह।
इनको बापतिस्मा मिला अब इनको गले स मिला।
बाप बट पाक रूह इन बच्चो को कर ले कबूल।
है यकीन हमको कि सुन ली है दुआ तूने मसीह।

अन्दर ईसाई बिरादरी यह गीत गा रही थी और बाहर गली मे बच्चे बड़े शौक म सुन रह थे। व पादरी के दरवाजे के आस-पास जमा थे। गीत के बाद लोगो के हँसन की आवाजें आनी शुरू हुई और फिर पादरी के मकान का दरवाजा खुल गया। बच्चे डर के मारे इधर उधर भागने लग तो पादरी उन्हे पुचकारता हुआ बोला

'इधर आओ तुम्हे मिठाई मिलेगी।

पादरी के साथ खड़ा लम्बा चोगा पहने हुए बडा पादरी मुसकरा रहा था। बडे पादरी ने दो बच्चो को जो भागत हुए आपस म टकराकर गिर गए थ, आगे बढ़कर उठाया उनक कपड़े झाडे और प्यार मे थपथपाया और उनको मीठी गोलियाँ दी। यह देखकर बाकी बच्चे भी लौट आए और गोलियाँ लेन क लिए धक्कम पेल करन लगे।

बड़े पादरी न सब बच्चो को दो कतारो म खडा करक उनम गोलिया बाँटी। व गोलियाँ लेकर इधर उधर बिखर गए लेकिन थोडी दर के बाद फिर वहाँ जमा हो गए।

दिन ढले तीन साढे तीन बजे क बाद गिरजाघर का घंटा बजना शुरू हो गया। बच्च पादरी के मकान से हटकर गिरजाघर के सामने आ खड़े हुए। कुछ उसके तीन ओर फसील पर चढकर खिड़किया म स अन्दर झाँकन लग। घंटा बजन क बाद बाहर स आए हुए लोग गिरजाघर म जमा होने लग लेकिन प्रमुख और गात-पीत ईसाई पादरी का बैठक म ही बैठ रह।

थोडी दर के बाद पादरी क घर के दोनो दरवाजे खुल गए। सबसे पहले बडा पादरी बाहर निकला। उसने दोनो हाथो म काफी बड़ा त्रास उठा रखा था। उसक पीछे छोटा पादरी था। उसके हाथ मे किताब थी। बाद म नन्दसिंह था। उसके हाथ म सलीब पर लटके हुए यीशू मसीह की तसवीर थी। उसक साथ उसकी पत्नी और बच्च थ। उनके हाथो म भी यीशू मसीह की तसवीरें

थी। उनके पीछे बाकी लोग थे। यह जुलूस गीत गाता हुआ आहिस्ता आहिस्ता गिरजाघर की ओर बढने लगा। पहले एक आदमी बोल उठाता और बाकी उसके पीछे गाते

थी दुनिया तारीकी में डूबी हुई।
खुदा की तरफ से फिर रोशनी हुई।
ए गुनाहगार इस रोशनी में आ।
अब देखता हूँ, जो अधा मैं था।
तेरे गुनाह वो दूर करेगा।
कि दुनिया का नूर है यसूह।

समूह-गान की आवाज सुनकर बहुत से लोग गिरजाघर के सामने आ खडे हुए। डाक्टर काली बन्तू बतू और सतू के पास खडा था। उनसे थोडा हटकर निक्कू खडा खांस रहा था। परे जाटा के लडके थे। चमादडी की औरतें प्रीतो के नेतृत्व में गली के नुक्कड पर खडी थी और चौधरानिया और महाशन गिरजाघर के सामने हरीसिंह की छत पर बठी थी।

जब गीत गाता हुआ जुलूस गिरजाघर के दरवाजे के सामने आ पहुचा तो सब लोग एडियाँ उठाकर नन्दसिंह और उसके परिवार की ओर देखने लगे कि ईसाई बनकर वे कसे दीख पडते हैं। नन्दसिंह और उसके दोनो लडके नए बूटो के कारण पजो के बल चल रहे थे। उन्हें इस तरह चलते देखकर कई लोगो को हँसी आ गई। उनके उजले कपडे देखकर कइ लोगो के मन में ईर्ष्या की भावना जाग उठी।

बन्तू, नन्दसिंह को ध्यान से देखकर बोला

'इसमें फक तो कोई पडा नही, बस सिख से माना हो गया है।

'तू क्या समझता है कि ईसाई बनने से उसका हुलिया बदल जाएगा। सब मजहब फरेब है। अमीरो और पूजीपतियो ने लूटने और उन्हें गुमराह करने के लिए ये ढकोसले खडे किए हैं।

नन्दसिंह को ईसाई बनने का फायदा क्या होगा ? सतू ने पूछा।

'तख्त मिल जाएगा। अब यह दुनिया पर राज करेगा। डाक्टर कटाक्ष करता हुआ बोला।

दूकान पर बठकर जूते सियेगा। पहले वाहे गुरु वाहे गुरु कहता था अब यीशू-यीशू कहेगा।

हाँ चार टके जरूर मिल जाएँगे।'

डाक्टर ने कहा और काली के कधे पर हाथ रखता हुआ बोला

'ये सब इन्कलाब के दुश्मन लोग हैं, चलो चलें।'

काली वहीं रुका रहा और डाक्टर अकेला ही आगे बढ़ गया।

जुलूस गिरजाघर के गेट में पहुंचा तो बेंचों पर बैठे हुए लोग उठकर खड़े हो गए और आवाज़ में आवाज़ मिलाकर गाने लगे। नन्द सिंह और उसके दोनों बेटे पादरी के साथ अगले बेंच पर बैठ गए। उसकी पत्नी ठाकरी और बेटी पाशो दूसरी कतार में पादरानी के साथ सबसे आगे बैठीं।

बड़े पादरी ने क्रास दीवार पर लगी यीसू मसीह की बहुत बड़ी तस्वीर के नीचे रख दिया। उसके बाद बड़े पादरी ने लोगों की ओर देखा और सबको उठने का इशारा किया। लोग खड़े हो गए तो उसने गीत शुरू किया और सब उसके पीछे गाने लगे

'ए खुदा तू दिन का नूर चमकाता है।
और धूप का ज़ोर बढ़ाता है।
झगड़ों की आग को बुझा।
तमाम झगड़ों को मिटा।
जस्मानी सहत दे और दिल में राहत पैदा कर।'

गीत के बाद बड़े पादरी ने अंजील के कुछ भाग पढ़कर सुनाए। और फिर उन्हें नसीहतें दीं। उसने वहां बैठे लोगों को समझाया कि यीसू मसीह किस तरह उनके सब पाप अपने सिर पर लेकर उन्हें मुक्त कर देगा। भाषण खत्म हो गया तो सब लोग फिर खड़े हो गए। पादरी ने गीत गाना शुरू कर दिया

'अब रुखसत करो खुदावंद।
कर सब कसूरों को माफ।
हम सबके सब गुनाहगार।
अब बंदगी कर ले कबूल।
हम सब पर अपनी रहमत बरसा।
कर दिलों को कलाम से साफ।
पस तेरा फजल तेरा है दरबार।
और रुखसत कर सलामती से।

पादरी के अमीन कहने के बाद सब लोग गिरजाघर से बाहर आ गए और रुखसती का दौर शुरू हो गया। नन्द सिंह और उसकी पत्नी गली में खड़े लोगों को यूं घृणा भरी नज़रों से देख रहे थे जैसे वे नीच हों। दोनों लड़के कुछ हैरान और कुछ खुश थे। वे अपने नये कपड़ों और बूटों को बड़े चाव से निहार रहे थे और गली में खड़े बच्चों को देख-देखकर मुसकरा रहे थे।

शाम तक गाँव वालों को खबर लग गई थी कि रत्न दिन में दिन सामूहिक मजदूरी मिल न देने का गया है।

२७

चाची और काली ड्योढ़ी की छत पर लेप का लेप कर रहे थे जो सब धूप के कारण कई स्थानों पर फट गई थी और लम्बी-लम्बी दरारें पड़ गई थीं। काली एक दरार के पास बैठकर उसे ध्यान से देखता हुआ बोला

चाचा, अभी दो लेप और होंगे तो छत पक्की बनेगी।

हाँ पुत्तर, एक बार को पर्ड दो बार करने पर ही पक्की है। यह तो कच्ची छत है और ऊपर लेप भी मिट्टी का। मेरी सलाह है आज लेप शुरू कर दूँ। तू कोठरी की नींव खोद ले। बरसात शुरू होने में वैसे तो अभी दिन हैं पर रब जी का क्या पता कब बादल भेज दे। तू छत पर गारा चढ़ा दे, मैं लीप कर देती हूँ। दो चार दिन के बाद एक पतला लेप और हो जाएगा तो छत की मिट्टी पक्की हो जाएगी।

काली ने छत पर गारा लाकर उसमें पानी मिला दिया। चाची को कुछ समय तक वह लेप करते देखता रहा और फिर नीचे आकर कोठरी की नींव खोदने लगा। वह इस काम में व्यस्त था कि बाबा फत्तू लाठी टेकता हुआ उसके पास आया। काली ने कुदाल रोक दी और उसे बहुत नम्रता से मत्था टेककर सामने जा खड़ा हुआ। बाबा फत्तू नींव की चौड़ाई को देखकर बोला

पक्की दीवार के लिए इतनी चौड़ी नींव की क्या जरूरत है?

बाबा जी, सिर्फ स्तून पक्के बनाने हैं दीवारें तो कच्ची ही होंगी। पक्की दीवारें बनाने के लिए जितनी रकम चाहिए उतनी मेरे पास नहीं है। इसलिए यही सोचा है कि अभी स्तून ही पक्के कर लूँ।

अच्छा, जो रब जी की मर्जी। मैं इसलिए आया था कि मुझे थोड़ी सी चाय की पत्ती चाहिए। मुहल्ले में किसी के पास अव्वल तो होगी ही नहीं, अगर होगी भी, तो कोई देगा नहीं। बाबा फत्तू ने कहा।

मेरे पास होनी तो चाहिए। मैं अभी देखता हूँ।' काली ड्योढ़ी में आ

गया। उसने कई बतन उठाकर देखे, कई पुडिया खाली लेकिन चाय की पत्ती किसी म नही थी।

'मैं चाची से पूछता हू। वह कई बार चीज़ ऐसे सँभालकर रख देती है कि बाद म मिलती ही नही। काली डयोढी की छत पर चढ गया।

वह ऊपर पहुचा तो चाची गारे के पास बेहोश पडी थी। उसे इस हालत म देखकर काली का सास ऊपर का ऊपर और नीचे का नीचे रह गया। उसने भयभीत स्वर मे चाची को बुलाया और उसे हिला जुलाकर देखा। वह बिल्कुल बेसुध थी। उसने चाची को हाथो म उठा लिया और नीचे लाकर खाट पर लिटाकर घबराई हुई आवाज़ म बाबे फत्तू से बोला

'पता नही चाची को क्या हो गया है ?'

'घबराओ नही, गर्मी म कई बार चक्कर आ जाता है। मुह म पानी डालो और छीटे मारो।

बाबे फत्तू ने कहा और बाहर जाता हुआ बोला

मैं तेरी ताई को भेजता हूँ।'

काली न चाची का मुह खोलकर पानी डाला और चेहरे पर पानी के छीटे मारे लेकिन चाची के शरीर म कोई हरकत नही हुई। उसने चाची के माथे पर हाथ लगाकर देखा और फिर उसके पेट को छुआ। उसका शरीर ठण्डा महसूस करके काली की आखो म आँसू आ गए। वह बहुत घबराया हुआ जीतू के घर की ओर दौड गया और ताई निहाली के बहुत पास जाकर बोला

ताई, चाची को पता नही क्या हो गया है। उसे होश नही है और उसका शरीर भी एकदम ठण्डा हो गया है।'

काली ने जल्दी जल्दी कहा। ताई निहाली अपना सूत और अटेरन समेटकर उसके पीछे-पीछे आ गई।

काली घर पहुचा तो धव हुकमा चाची का नाम लेकर उसे पुकार रही थी। थोडी देर के बाद ही प्रीतो और प्रसिन्नी भी आ गई। ताई निहाली काली से बोली

घर मे देसी घी है तो निकाल। घी म हाथ-पाव मलने से होश आ आएगा।'

काली न सारा सामान उलट पलटकर घी की कुजी (मिट्टी का छोटा-सा बतन) निकाली और चारो चाची के हाथ-पैर मलने लगी। काली कुछ समय तक वहाँ खडा रहा। जब उसने देखा कि चाची के शरीर म जीवन के कोई चिह्न व्यक्त नही हो रहे तो वह बहुत घबरा गया।

डाक्टर कीचड भरी गली म सँभल सँभलकर कदम उठा रहा था और उसकी चलन की रफ्तार बहुत ही कम हो गई थी। नन्दसिंह के घर के सामने आकर वह रुक गया और उसका बन्द दरवाजा देखकर बोला

नन्दसिंह ईसाई क्या बना है दुनिया म अपन बराबर किसी को समझता ही नही। पादरी ने उसे चाँदी की जजीर दी है जिसके नीचे सलीब बनी हुई है। उसे गले म डालकर वह यूँ चलता है जैस सारी खुदाई उसक कदमा म पडी हो।'

काली न कोई उत्तर न दिया और डाक्टर की सुस्त रफ्तार पर मन ही मन खीजता हुआ अपन घर की ओर बढता रहा।

दरवाजे क सामने बच्चा का जमघट देखकर और अन्दर स्त्रिया का शोर सुनकर काली का दिल बठ गया। उसन बच्चा को पीछे हटाया और अन्दर जाकर चाची के ऊपर झुक गया। प्रीतो और प्रसिन्नी उसके पाव के तलवा का जोर जोर से रगड रही थी। चाची को कुछ कुछ होश आ गया था। वह बहुत कमजोर आवाज म हाय-हाय कर रही थी। काली ने सबको पीछे हटा दिया और दरवाजे की ओर देखता हुआ बोला

डाक्टर जी, आ जाओ।

डाक्टर न ड्योढी के अन्दर आकर चारा ओर नजर दौडाई। नई पक्की दीवारें, नई छत, पीतल के बतन और लोहे क ट्रक को देखकर सोचने लगा कि काली भी छोटा मोटा बूरज्वा बन गया है। फिर वह स्त्रिया और बच्चा को डाँटता हुआ बोला

'क्या जमघट लगा रखा है। पीछे हट जाओ अन्दर हवा आन दो। एस जमघट म तो अच्छा भला आदमी भी बहोश हो जाएगा।

काली ने बच्चा को वहा से हटा दिया। सब औरतें एक ओर खडी हो गइ। डाक्टर स्टथोस्कोप क दोना सिरे कानो म ठासकर उसका मुह चाची की छाती पर जगह जगह रखकर देखता रहा। फिर उसने चाची की पीठ का मुआइना किया। वह काली को दो गोलियाँ दता हुआ बोला

एक गोली पानी के साथ अभ दे दो। दूसरी पूरी तरह होश आन पर दे दना। शोर बिलकुल न हो और हवा खुली हो। शाम का हाल बताकर और दवाई ले जाना।'

डाक्टर जी पस मैं शाम का ही दूगा। काली चाची की ओर दखता हुआ बोला

खाने-पीने के लिए क्या दना है ?'

म थोडा-सा दूध लाकर काली के गिलास म उँडेल कर बोली

'तू काम धंधा क्या नहीं कर लेता। अपने चमार को तो ऐसी जरूरत पूरी करनी ही पडती है हर किसी को तो दूध दिया नहीं जाता।'

काली का जी चाहा कि चौधरानी से कहे कि वह दूध के पैसे ले ले लेकिन वह इतना साहस न कर सका। वह कोई उत्तर दिए बिना ही बाहर आ गया और गिलास को बहुत सावधानी से थामे हुए तेज-तेज कदमों से अपने घर की ओर आ गया।

चाची वैसे ही बसुद्ध-सी पडी थी। मक्खियाँ उसके होठों के कोनों पर भिनभिना रही थी। काली ने जल्दी से चूल्हा जलाया और उसके ऊपर पानी रखकर चाय की पत्ती और चीनी ढूढने लगा। पानी उबल-उबल कर सूख गया लेकिन उन दोनों म से कोई चीज न मिली। उसने पतीली म और पानी डाला और स्वय चाय की पत्ती और चीनी लेने के लिए छज्जू शाह की दूकान की ओर दौड गया।

चीजें लेकर वह फिर भी रुका रहा तो छज्जू शाह कहने लगा

'काली दास, इतना घबराने की क्या बात है। बुखार है उतर जाएगा। पार साल मैं इन्ही दिनो म दो महीने ताप से चारपाई के साथ जुडा रहा था। हौसला रखो, प्रभु जल्दी आराम देगा।

'शाह जी, आपकी बात ठीक है। दुख सुख इस शरीर के साथ बने हैं। मैं आप से यह कहना चाहता था कि कहीं से पाओ-आध सेर दूध का बंदोबस्त करा दें। सवेरे चौधरी मुंशी के घर से माग कर लाया हू। चौधरानी ने थोडा सा दूध दिया लेकिन साथ पचास बातें भी सुना दी। कहने लगी कि अपने चमार की हाजत पूरी करनी ही पडती है। हर एक कमीन को दूध तो क्या लस्सी देना भी मुश्किल है।

बात तो उसकी ठीक है काली दास। सदावरत तो कोई लगा नहीं सकता। आदमी कह कुछ भी लेकिन यह बात पक्की है कि आदमी उसके हाथ पर चीज रखेगा जिससे उसे या तो कोई लाभ हो या उसके साथ कोई रिश्ता हो। बाकी रहा पाओ-आध पाओ दूध खरीदने का सवाल।' यह कहकर छज्जू शाह सोचने लगा और फिर गली म जाते हुए एक आदमी को आवाज देकर बोला

हरी सिंह चौधरी तू बडा बेलिहाज होता जा रहा है।'

छज्जू शाह ने हँसते हुए कहा। हरी सिंह उसकी दूकान की ओर मुडता हुआ बोला

शाह जी बात दिल्लगी की नहीं है। हवेली जा रहा था भाग और बल का पट्ठा-सा दिखता है। मुझे किस की सी मन में भर गई हुई है।

'चौधरी क्या यह गरीबी कि नहीं।

'शाह जी क्या बक कहाँ से लूँगा। मैं दीवान में गए थे देखा था। उसके दाँत हैं सात। मालूम है उसका मालिक कितना पैसा माँग रहा था? छह बीसियाँ और दस रुपया। मालिक दूध का मूल माँग रहा है। सारी फसल बेचकर भी पूरे नहीं होंगे। हरी सिंह बुरा सा मुँह बनाता हुआ बोला।

चौधरी इसे जानते हो। छज्जू शाह ने काली की ओर संकेत करते हुए कहा।

क्या नहीं जानता। यह काली है नागे चमार का लड़का। हरी सिंह ने उत्तर दिया।

इसकी चाची बीमार है। इसे दूध की जरूरत है।'

छज्जू शाह की बात सुनकर हरी सिंह भड़क उठा

'शाहा तेरी अक्ल ठिकाने है कि नहीं? गरीब हूँ तो क्या हुआ चौधरी तो हूँ चमार के हाथ दूध बेचूँगा तो गाँव वाले क्या कहेंगे?

हरीसिंह थड़े से नीचे उतर आया।

छज्जू शाह हाथ मसलता हुआ बोला

काली दास देखा तूने। घर में खाने को दाने नहीं हैं। एक बैल से हल जोतता है लेकिन अकड़ रावण जैसी है। तुम फिक्र न करो। मैं किसी और से पूछूँगा।'

काली सौदा लेकर घर आ गया। उसकी परेशानी पहले से भी बहुत बढ़ गई थी। हरी सिंह के शब्द गिरजाघर के घड़ियाल की तरह उसके कानों में गूँज रहे थे। उसने चाय बनाई और चाची को उठाता हुआ बोला

'चाची चाय पी ले।'

चाची की गर्दन का जिस ओर झुकाव होता उधर ही लटक जाती थी। काली ने बहुत यत्न करके उसको दो घूँट चाय पिलाई और ड्योढ़ी में लिटाकर आटा गूँधने लगा। जब ताई निहाली अन्दर आई तो काली रोटियाँ पका रहा था। वह खाट पर बैठती हुई बोली

प्रतापिए, क्या हाल है अब?'

चाची ने आँखें खोलने की कोशिश की और उसके होंठ हिले लेकिन जबान से कोई शब्द न निकल सका। ताई निहाली ने इधर उधर देखा और

काली की तलाश म आँगन म आ गई। उसे रोटी पकाता देखकर बोली
हाय मैं मर जाऊँ। पुत्तरा तू यह क्या कर रहा है? ठीक है प्रतापी बीमार है लेकिन मैं तो चलती फिरती हू। जसा जीतू वैसा तू। खबरदार अगर फिर रोटी आप बनाइ।
ताइ निहाली ने काली को प्यार स डाटत हुए कहा और उसे उठाकर खुद रोटिया पकान लगी। काली कुछ क्षणा तक आगन म खडा रहा और फिर ताइ निहाली से बोला
ताई तुम यही रहना। मैं डाक्टर से दवा ले आऊँ।'
काली डयोढी के अदर चाची क पास आ गया। चाची की आखो स पानी बह-बहकर चारपाई पर गिर रहा था। वह पूरी तरह होश म थी। वह बहुत कमजोर आवाज म बोली
पुत्तरा तू आप रोटी बना रहा था। चाची फिर रोने लगी। काली की आखो म भी आसू आ गए। वह प्रसन्न था कि चाची पूरी तरह होश म है।
फिर काली डाक्टर की दुकान पर पहुचा तो हकीमा का ओमा वहा बैठा था। डाक्टर उस समझा रहा था कि रूस पर जमनी के आक्रमण का मुकाबला करने मे रूसी छापामार दस्ता ने क्या-क्या काम किए थे। काली पहले तो बहुत दिलचस्पी म डाक्टर की बातें सुनता रहा लेकिन चाची का खयाल आते ही वह बचनी से बाला
डाक्टर जी, चाची का बुखार ता बढता ही जा रहा है।'
कोई हरज नही। डाक्टर ओमे को सम्बोधित करता कहने लगा
'रूसी छापामार दस्ता न जमन फौजा का नाक म दम कर दिया था। वे दुश्मन के मोर्चे के पीछे जाकर उसे परेशान करत थ।' काली ने डाक्टर की बात टोकते हुए कहा
'डाक्टर जी, दवा द दें। उस बुखार म बहाशी-सी हो रही है। सवेरे से चाय के गिनकर सिफ दो घूट पिए हैं।'
काइ हरज नहा।
डाक्टर न अपनी बात जारी रखते हुए कहा
छापामार दस्त दुश्मन को न सोन दत, न खान दत और न पीन दत थ।
बडे बदले। बडे मजबूत होंगे।'
ओमे ने आश्चय प्रकट करत हुए कहा।
हाँ भई, वे दस्त अपनी जान हर समय अपनी हथेली पर रखत थ। डाक्टर न खुश होत हुए कहा।

काली ने बात टाली और हँसी से डाक्टर से बोला

'अच्छा डाक्टर जी, मैं पादरी जी से मिल आऊँ। कुछ ज़रूरी काम है।'

डाक्टर ने चौंककर उसकी ओर देखा और उसे जाने दिया। मगर आज की बात पर करके आप ही आप से बातें करने लगा।

पादरी काली को घर पर ही मिल गया। वह उसको कमरे अन्दर ले गया। और उसे अपने बराबर कुर्सी पर बिठाया। पादरी मुस्कराता हुआ बोला

'कहो भाई काली, कैसे आए ?'

'पादरी जी ... चाची को रोग पकड़ा हुआ है। डाक्टर कहता है कि उसके लिए दूध, चाय या मालूम देता है। आज सवेरे चौधरी हरनाम के घर से कटोरा भर दूध लाया था। चौधराइन ने दूध तो दिया लेकिन बहुत अपमान जता कर। फिर छज्जू शाह ने चौधरी से जिद से बात की कि आप कर दूध पर एतबार दे दे। उसने बड़ी बदतमीज़ी की। कहने लगा कि वह गरीब है तो क्या हुआ आखिर जमींदार है, चौधरी है। चमार को दूध देना अच्छा लगता।' काली की आँखों में आँसू आ गए।

पादरी उसे तसल्ली देता हुआ बोला

'काली दास, घबराओ नहीं। यीशु मसीह तुम्हारी सब मुश्किलें दूर करेंगे। तुम्हारी सब ज़रूरतें पूरी होंगी। हमारा ईसाई धर्म तो यह कहता है कि खुदा का बेटा यीशु मसीह हर ईसाई के घर में मौजूद होता है भले वह नज़र न आए। इसलिए कोई ईसाई किसी को वह चीज़ देने से इन्कार नहीं करेगा जो उसके घर में मौजूद है। वह हम सबका पवित्र पिता है। उसकी आँखों के सामने चोरी चैसी झूठ कैसा, फरेब दगा कैसा ?'

पादरी अन्दर जाकर एक पुड़ा उठा लाया और काली के सामने खोलता हुआ बोला

'यह विलायती दूध है, सूखा दूध। इसमें थोड़ा सा गर्म पानी मिलाकर उसे इतना रगड़ो कि पानी और यह दूध एक जान हो जाए, फिर इसमें और पानी मिला दो, दूध तैयार है। मेरे पास भैंस है लेकिन फिर भी हम ज़्यादा तर यही दूध इस्तेमाल करते हैं।

मुझे पता है पादरी जी। शहर में भी ऐसा दूध मिलता है। एक गाढ़ा गाढ़ा रबड़ी जैसा डिब्बे का दूध भी होता है।

काली डाक्टर की दुकान पर पहुँचा तो अभी रूसी छापामार दस्ता की बात जारी थी। डाक्टर बिशनदास ओम से उनके बारे में प्रश्न पूछ रहा था।

डाक्टर अपने प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए आग्रह करने लगा तो ओमा बोला

अच्छा पहले मुझे एक बात बताओ।

'क्या ?' डाक्टर ने उत्सुकता से पूछा।

'क्या छापामार दस्ते लकड़ी के थे या लोहे के ?'

ओमे की बात सुनकर डाक्टर को एकदम क्रोध आ गया और वह उसके मुंह में हाथ देता हुआ बोला

तेरा हाल तो उस जाट जैसा है जिसने सारी रात रामायण सुनने के बाद पूछा था कि सीता राम की मां थी या बहन।

डाक्टर ने ओमे को और भी बहुत सी ऐसी बातें कहीं और वह शर्मिन्दा होकर उठ गया। उसके जाने के बाद डाक्टर बोला

ऐसा खरदिमाग आदमी मैंने अपनी जिंदगी में नहीं देखा। जितने साल इसने सात जमातें पास करने में लगाए हैं और पैसा खर्च किया है उससे तो भैंस का कटड़ा बी० ए० पास कर लेता।

डाक्टर की बात सुनकर काली हँस दिया और कुछ क्षणों के पश्चात डाक्टर से बोला

'डाक्टर जी, चाची के लिए दवाई दे दो।'

'अच्छा। डाक्टर दांत कटकटाता हुआ छत की ओर देखता रहा और जब काली ने दवाई का फिर जिक्र किया तो वह अपने आसन से उठा और एक कागज में चार गोलियां बाँध कर बोला

'चाय दूध या गर्म पानी के साथ देना। दो अभी जाकर दे दो, दो शाम को और सवेरे आकर हाल बता जाना और दवाई ले जाना।'

दवाई लेकर काली घर पहुंचा तो ताई निहाली जा चुकी थी। वह जो रोटियाँ बनाकर रख गई थी उन्हें एक कुत्ता उठाकर आंगन के एक कोने में दीवार की छाँव में बैठा चबा रहा था। काली ने उसे धतकारा तो वह रोटियाँ छोड़कर चूं चूं करता हुआ भाग गया। उसने रोटियाँ उठाई और उन्हें झाड़ पोंछकर साफ किया। उसने सोचा कि इन्हें फेंक दे लेकिन उसे इतनी ज्यादा भूख लगी थी कि उसने चारों ओर ध्यान से देखने के बाद रोटियों को ड्योढ़ी में लाकर छिपा दिया। चाची को दवाई देकर वह उन रोटियों को उसी तरह जल्दी-जल्दी चबाने लगा जैसे पहले कुत्ता चबा रहा था।

काली अभी रोटी खा ही रहा था कि मिस्त्री संतासिंह आ गया। काली रोटी छोड़कर इस तरह खड़ा हो गया जैसे उसे देखकर कुत्ते ने रोटी छोड़ दी

थी। सतासिंह चाची की ओर संकेत करता हुआ बोला

'क्या बीमार हो गई है ?'

हाँ, छत पर लेप करती करती बेहोश हो गई थी। पहले शरीर ठंडा हो गया फिर ताप चढ गया।' काली ने चिंतित स्वर म उत्तर दिया।

'अच्छा मैं हिसाब करने आया था। मैंने कुल सालह दिहाडियाँ लगाई हैं। सवा रुपये दिहाडी के हिसाब से बीच रुपये बनते हैं और दो रुपये मजदूर के। दस मैं ले चुका हूँ। बाकी बारह रह गए। मुझे आज पैसों की जरूरत पड गई है शहर जा रहा हूँ।

'मिस्तरी जी एक दिहाडी तो आधी थी। उसके पूरे दाम लगा रहे हो।'

दिहाडी आधी हो या पूरी, पैसे पूरी के ही लगते हैं। मैं बता दूँ कि आज कल अच्छा राज डेढ रुपये से कम दिहाडी नही लेता।' सतासिंह ने कहा और फिर कोठडी की नीवों को देखकर बोला

'इसे कब बनाना है ? आजकल मुझे फुरसत है। दस दिन के बाद कहोगे तो मैं नही आ सकूगा।

काली ने अपने ट्रक से पैसे निकालकर सतासिंह के हाथ पर रख दिए। वह पैसों को ध्यान से गिनकर जेब म रख कर बोला

'उस कुत्ते की औलाद काले साहब का क्या हाल है। साले ने अपने कई शहीद करा दिए है। गुरु के अमृत का अपमान किया है। घडडम चौधरी को तो तुम जानते ही हो मुह फट आदमी है। आज सवेरे नंद सिंह को देखकर बोला— सुना चमारा, ईसाई बनने के बाद कुछ फर्क पडा है ? क्या टट्टी पेशाब पहले की तरह ही करता है या तरीका बदल गया है ?' नंद सिंह ने भी उलटा सीधा जवाब दिया। घडडम चौधरी ने जूता उतार लिया और लगा मारने। मजे की बात यह है कि जूता नंद सिंह का ही बनाया हुआ था और उसे अभी उसके पैसे भी नही मिले हैं। वह चार जूते खाकर ही पेशाब की झाग की तरह बैठ गया। घडडम चौधरी ने उससे कहा कि चमडा काला हो या लाल, कमाया हुआ हो या कच्चा, आखिर चमडा है। नंद सिंह खारिश खाए कुत्ते की तरह चू चू करता हुआ घर आ गया।

सतासिंह ने सारी बात लहक लहक कर सुनाई।

काली खामोश रहा और कुछ क्षणों के पश्चात मिस्तरी से बोला

मिस्तरी जी ! चाची बीमार है। मेरा ध्यान किसी दूसरी ओर जाता ही नहीं। नींव तो मैंने खोद दी है। आप दो दिहाडी लगा कर पक्के स्तून बना दें। एक, दो तीन चार, पाँच और छः स्तून बनाने होंगे। दो नहीं तो तीन दिन

म बन जाएँग । मैं दीवार मिट्टी की बनाकर छत डाल दूगा । जब हाथ मे पम आ जाएगे तो उन्ह भी पक्की कर लूगा ।'

जसी तरी मर्जी । फिर कल आ जाऊँ ? गारा तयार रखना ।' मतासिंह गली म आ गया और दूसरे ही क्षण वापस आकर काली को कोठडी के एक कान म ले जाकर बोला

'तरे माशूक पर जवानी तो खाद और कुएँ के पानी पर पली मक्ई की तरह फूटी है ।'

किस की बात कर रहे हो ?' काली न उसकी ओर आश्चय से देखते हुए कहा ।

वही जो तुम्ह मक्खन वाली लस्सी पिलाने आया करती थी । मगू की बहन ज्ञानो । ऐसा लगता है उसे खाद खुराक दोनो मिलने लगे हैं । और तरे पास तो दाना की कमी नही है । मिस्तरी ने काली के कधे पर जोर से हाथ मारत हुए कहा ।

काली का चेहरा लाल हो गया और वह क्रुद्ध स्वर म बोला

मिस्तरी, कुछ अक्ल की बात कर । किसी की मा बहन के बारे म एसी बात कभी नहीं करनी चाहिए ।

काली, य सब कहने की बात हैं । जो आदमी राज पाओ भर अन्न खाता है वो हर जवान लडकी को अपनी बहन नही समझ सकता । बीबा, जवानी चीज ही एसी है । इसके सामने बडे-बडे भक्तो के मन डोल जाते हैं ।'

सतासिंह हँसता हुआ बाहर निकल गया ।

२८

मुहल्ले म एकदम बहुत शोर मच गया और एक साथ बहुत सी आवाजें आने लगीं । प्रीतो का बेटा अमरू खबर लाया कि बूटासिंह जाट के लडके पालो और जगत के भाई बग्गे का आपस म झगडा हो गया है । इसी दौरान म फेरू खबर लाया कि बग्गे न पालो को खूब मारा है और चौधरी बूटासिंह दो आदमियो को साथ लेकर खेता की ओर गया है ।

नन्द के बाद प्रीतू खबर लाया कि काली को दुर्गासिंह चमादड़ी से हवेली की ओर ले गया है। वह बच्चा दुर्गासिंह की हवेली की ओर दौड़ गया। थोड़ी देर के बाद एक बच्चा दौड़ा-दौड़ा आया और हाँफता हुआ बोला

'काली दुर्गासिंह की हवेली में नहीं है। वह उसे चौधरी हरनाम सिंह की हवेली ले गए थे लेकिन चौधरी ने वहाँ से उसे चौधरी मुंशी की हवेली भेज दिया है।

चमादड़ी में इस झगड़े से फैलने वाली गहमा-गहमी अभी कम होने ही लगी थी कि बाबू बाबा फत्तू और ताया बसंत को बुलावा आ गया। वह दोनों को चौगान में बुलाकर बोला

'चौधरी मुंशी की हवेली में पंचायत हो रही है। वहाँ तुम्हें बुलाया है।'

'काली का क्या झगड़ा है?'

'मुझे तो इतना ही पता चला कि काली ने चौधरी दुर्गासिंह के लड़के को मारा है। जल्दी चलो। वहाँ चौधरी हरनाम सिंह, दुर्गासिंह, महाशय तीथराम और लालू पहलवान सब बैठे हैं।'

'इस गाँव में इज्जत से जीना बहुत मुश्किल हो गया है। लड़ाई छोकरों की और अब दाढ़ी खाई जाएगी बूढ़ों की।' बाबा फत्तू ने दुखी आवाज में कहा। जब वे दोनों चौधरी मुंशी की हवेली की ओर चले तो कई आदमी और बच्चे उनके पीछे हो लिए।

चौधरी मुंशी की हवेली के खुले आँगन में कई चारपाइयाँ बिछी हुई थीं। उन पर चौधरी हरनाम सिंह, चौधरी मुंशी, महाशय तीथराम और बहुत से लोग बैठे थे। वे सब बहुत क्रोध में थे क्योंकि गाँव के चमार ने चौधरी पर हाथ उठाया था। आसपास मकानों पर कई स्त्रियाँ बैठी थीं। चारपाइयों के सामने काली सिर झुकाए बैठा था। बच्चों में प्रायः यह एहसास कम ही होता था कि वे चमारों के लड़के हैं या चौधरियों के। परन्तु इस समय उन्हें भी अपनी जाति का बहुत एहसास था। चौधरियों के बच्चे चारपाइयों के पास खड़े थे और चमारों के बच्चे परे हटकर तपती जमीन पर बैठे थे।

जब बाबा फत्तू, ताया बसंता, जगता और चमादड़ी के बहुत से लोग वहाँ पहुँच गए तो चौधरियों में हो रही बातचीत बंद हो गई। बाबा फत्तू चारपाइयों से थोड़ी दूर हटकर जमीन पर बैठ गया और बाकी लोग उसके आसपास बैठ गए। सब चुप थे, केवल हुक्का गुड़गुड़ाने और खाँसने की आवाजें आ रही थीं। चौधरी मुंशी ने चौधरी हरनाम सिंह से बात शुरू करने के लिए कहा। लेकिन उसके इनकार करने पर चौधरी मुंशी खाँसकर गला साफ करता

हुआ बोला

'आज हमारे गाँव में ऐसी बात हुई है जो अनर्थ से कम नहीं। बग्गे चमार, ने चौधरी पाले को उसी के खेत में मारा है। पहली बात तो यह है कि बग्गा चौधरी बूटासिंह के खेत में बिना पूछे गया क्यों ? दूसरे इसने चोरी से खरबूजे तोड़ने की कोशिश की। तीसरे यह कि पाले ने उसे रोका तो बग्गे ने उस पर हाथ उठाया। है ना अँधेर साईं का ? जमींदार लोग अपने खेतों में हमेशा से खरबूजे बोते आए हैं। वे आप भी खाते रहे हैं और उनके कमीन भी। लेकिन चोरी करके नहीं, मुंह से माँग कर। आज चमारों के छोकरे ने चौधरियों के लड़के पर हाथ उठाया है। कल तो बात आगे बढ़ सकती है। सयाने कह गए हैं कि शरारत छित्तर थोर की तरह फलती और बढ़ती है। अब यह बात पंचों के सामने है। वह ऐसा फैसला करें कि शरारत यहीं दब जाए।'

बग्गे को दण्ड देना चाहिए। एक आवाज़ आई।

सिर्फ बग्गे का ही क्या, उसके सारे घर वालों को दण्ड देना चाहिए। इनका बाईकाट करना चाहिए। मार मार कर इनका मलीदा कर देना चाहिए। कोई भी इन्हें अपने खेतों में न घुसने दे।' दूसरी आवाज़ आई।

सारे चमारों पर सौ जूता मार कर एक गिनो और इस तरह सौ जूता लगाओ। तीसरी आवाज़ आई।

'बग्गे को पुलिस के हवाले कर दो।' एक और चौधरी ने सुझाव दिया।

क्या हम मर गए हैं जो पुलिस का सहारा लें ?' एक साथ कई आवाजें उठीं।

चारपाइयों पर बैठा हर व्यक्ति अपनी अपनी समझ के अनुसार दण्ड का सुझाव देने लगा और वहाँ पर अच्छा खासा शोर मच गया।

बाबे फत्तू ने जब चौधरियों को इस प्रकार बातें करते सुना तो वह खड़ा होकर हाथ जोड़ता हुआ बोला

चौधरियो मुझे भी दो बातें करने का मौका दो।'

'शोर कम होने लगा और चुप चुप की कई आवाजें एक साथ उठीं। जब सब लोग चुप हो गए तो बाबा फत्तू धीमे स्वर में बोला

'अगर आप लोगों को ही दण्ड का फैसला करना था तो हमें क्यों बुलाया गया।

बाबे फत्तू ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा

हम चमार हैं चौधरियों के कमीन। आप हमारे मालिक हैं। आप जो भी दण्ड देंगे, जिसको भी देंगे वह उसे कबूल करना होगा। नदी में रहकर

मगरमच्छ स वर नही रखा जा सकता ।' बाबे फत्तू के इन शब्दो ने उत्तेजित चौधरियो को किसी हद तक शात कर दिया । बाबा फत्तू फिर बोला

'आप और हम इस गाव मे पुश्तो से रहते आए हैं । हम आपको अपना चौधरी समझते थे और आप हम अपने चमार । हमारा काम आपकी सेवा और सहायता करना था और आपका काम हमारी पालना करना हमारी हाजतें पूरी करना । हमारे दुख सुख म साझीदार होना । मेरी उम्र सत्तर से ऊपर है । हम सब इसी गाँव म रहते आए है । पहले, गाव म चाहे चमार हो या चौधरी सबकी इज्जत साँझी होती थी । लडाई झगडा तो दूर, कोई चमार चौधरिया के सामने आँख उठाकर नही देखता था । जब आप लोगो ने हमारी इज्जत को अपनी इज्जत समझना छोड दिया, जब जाट और चमार का खून मिलने लगा तो यह गडबड होने लगी । अगर आज आप के ही खून ने आपके बच्चे को मारा है तो आपको दुख क्या हुआ ?

बाबे फत्तू ने बग्गे की ओर सकेत करते हुए कहा इसे देखकर कोई कह सकता है कि यह चमार की औलाद है ?

सब चौधरिया की गदन झुक गई । आसपास मकानो पर बैठी स्त्रिया मुह बद करके हँस रही थी । चौधरी एक एक करके वहा से खिसकने लगे तो बाबे फत्तू ने हाथ जोडकर कहा

'मैं सिर्फ यही कहना चाहता था । अब आप जो चाहे दण्ड दें ।'

बाबे फत्तू ने अपना सिर झुका दिया ।

सब लोग चुप बैठे थे । कुछ क्षणो के बाद चौधरी मुशी ने खामोशी तोडते हुए कहा

'जमाना बहुत बुरा आ गया है ।

'कलयुग म जो भी हो जाए सो थोडा है ।' महाशय ने कहा ।

चलो दौडो यहाँ से । अगर फिर कभी चोरी की या झगडा किया तो उल्टी खाल उधेड लूगा ।'

चौधरी मुशी न बग्गे को सम्बोधित करते हुए कहा और पचायत जितनी जल्दी इकट्ठी हुई थी उससे भी कम समय म बर्खास्त हो गई परन्तु चौधरिया की हवेलियो म, बाजार की दुकानो पर चमादडी के तकियो म बल्कि हर घर म एक ही चर्चा हो रही थी और वह थी बाबे फत्तू की बातें । तमाशबीन लोग सारे गाँव का चक्कर लगाते हुए आज की घटना पर लोगो की टिप्पणियाँ सुन कर चटखार ले रहे थे ।

महाशय तीर्थराम की दुकान पर मजमा गम थी । घमडम चौधरी का

इस घटना का पता चला तो वह सीधा महाशय के पास आ गया और नसवार की चुटकियाँ ले-लेकर जाटो और चमारों दोनों को गालियाँ देने लगा। महाशय कभी जाटों के पक्ष में बात करता तो कभी चमारों का समर्थन करता।

डाक्टर विशनदास साथ से पहले ही दूकान बढ़ाकर महाशय के चबूतरे पर आ बैठा। पंडित संतराम मंदिर की ओर जाता हुआ वहाँ तक रुक गया। घड़म्म चौधरी उसे चबूतरे पर चढ़ते देखकर बोला

पण्डिता तुम्हें कब से कान रस हो गया है। जा, जाकर शंख में फूंक मार। नाइयों का समद्र कुत्ता और बलासिंह का नास पाटा कुत्ता तेरी इन्तज़ार कर रहे होंगे।'

पण्डित संतराम ने उसकी ओर घूरकर देखा और महाशय से बोला

आज पंचायत किसलिए हुई थी ?'

कुछ नहीं, चमारों के बग्गे ने सूर्तासिंह के लड़के पालो से धौल धप्पा किया था।'

अच्छा।' पण्डित संतराम उतरने लगा तो घड़म्म चौधरी उसे बाँह से पकड़कर बिठाता हुआ बोला

कहाँ चला ? अभी तो एक घड़ी दिन बाकी है।'

'नहीं चौधरी, जाने दो, मुझे काम है।' पण्डित संतराम ने उठते हुए कहा।

'ठाकुरों को गर्मी लग रही होगी। उन्हें अश्नान (स्नान) करना होगा। घड़म्म चौधरी ने नसवार की एक और चुटकी लेकर जोर से साँस खींचा और पण्डित संतराम के मुँह पर छींक मारी। संतराम डर कर पीछे हट गया और ऊँचे स्वर में बोला

'दुरपिट्ट मुँह। पापी कहीं का। चौधरी, अब तू छोटा नहीं, छोकरखेल छोड़ दे। तू प्रभु का नाम लिया कर। कुछ अगली दुनिया की भी खबर कर।

'पण्डिता तुम्हें पकी पकाई रोटी मिल जाती है। मेंह हो या आंधी, धूप हो या छाँव तेरे हद्दे (दान की रोटी) पक्के हैं। तुम्हें भक्ति नहीं सूझेगी तो और क्या सूझेगा। दो दिन मेहनत करके रोटी खानी पड़े तो तुम्हें पता चल जाए कि पेट से बड़ा कोई पापी नहीं।' घड़म्म चौधरी हँसता हुआ बोला

मैं तो कई दिनों से सोच रहा हूँ कि तेरे मरने के बाद मंदिर सँभाल लूँ। काम ही क्या है। सवेरे शाम ठाकुरों को स्नान कराना घण्टी बजाना, धूप जलाना और शंख बजाना। बाकी मौज ही मौज है। गर्मियों में सत्रस पहनो गर्मियों के मेवे खाओ सर्दियों में सर्दियों के। ठाकुरों का तो नाम ही है, असली भोग तो तू ही लगाता है।'

की भी नही है। तू हमेशा बेमौके की और बेतुकी बात करता है। अगर तेरी बात ठीक है तो तू अपने बच्चो के रिश्ते चमारा से कर देना।'

'चौधरी तू जाट की बात कर रहा है। तेरी बात म कोई तुक नही है। मैं साइटिफिक नजरिया (दृष्टिकोण) पेश कर रहा हू।' डाक्टर ने सख्त लहजे म कहा।

देखा है तेरा साइटिफिक नजरिया। तू नाक साफ करने बठना है तो आधा दिन लगा देता है। तेरी नजरिया साइटिफिक है या नही यह तो मुझे पता नही लेकिन तुम्हे फिटक (बुरी आदत) जरूर है।

धडडम चौधरी की बात पर सब खिलखिलाकर हँसने लग तो डाक्टर ने बुरा सा मुह बना लिया।

धडडम चौधरी महफिल पर छाया हुआ था कि मदिर मे घण्टिया बज उठी और साथ ही शख की आवाज आने लगी। महाशय न मुह म गायत्री मत्र पढ़ते हुए लालटेन जला दी। लोग धीरे धीरे वहाँ से खिसकने लगे। धडडम चौधरी अपना जूता टटोलता हुआ उठ गया।

महाशय की दूकान पर केवल डाक्टर रह गया। वह महाशय को इसान के खून के बारे म नवीनतम थ्यारी बना रहा था और वह मुह म गायत्री मत्र का पाठ कर रहा था। गली म नाना आ रही थी और उसके पीछे-पीछे बूटासिह का लडका पालो गा रहा था

इक बार चुम्मी लण दे।
तनू दे दिया मुरब्बे सारे॥

२९

चाची को दवा-दारू से लाभ न हुआ तो ताई निहाली और बब हुक्मा के आग्रह पर काली जादू टोने का सहारा लेने के लिए तैयार हो गया। उसने जीतू द्वारा नजदीकी गाँव कथाला जटटा से रक्खे घेवर को बुला भेजा। वह झाड फूक और जादू टोने के लिए सारे इलाके म मशहूर था।

अधेरा काफी गहरा हो गया था जब गली म चिमटे की छनछनाहट सुनाई

दी। काली लपककर गली म आ गया और जीतू के साथ चिमटे वाले व्यक्ति को देखकर प्रसन्नभाव से बोला

'आ गए जी ?'

हाँ। कहता हुआ जीतू ड्योढ़ी म घुस आया।

उसने पीछे पीछे रक्खा धेवर भी ड्योढ़ी म चारा ओर ध्यान स दखता हुआ अन्दर आ गया। काली ने आंगन से खाट उठाकर ड्योढ़ी के अन्दर बिछा दी।

बठो जी। काली न रक्खे धेवर की ओर देखते हुए कहा।

मिट्टी क दीए के प्रकाश म रक्खे का काला चेहरा जिस पर उसने सरसा का तेल पोत रखा था बहुत चमक रहा था। उसके गले म मोटे-मोटे मनका की माला पडी थी और सिर पर मली सी पगडी थी। एक हाथ म थैला और दूसरे म लोहे का बडा चिमटा। चिमटे पर भी सरसा का तल पोता हुआ था और उसकी दोनो बाँहा पर कुण्डे लगे हुए थे जो थोडा-सा भी हिलाने पर छन-छना उठत।

यह बठक नई बनाई है ?' रक्खे ने पूछा।

'हाँ पद्रह बीस दिन हुए है। काली न उत्तर दिया।

'हूँ। रक्खा जस सोच म पड गया और फिर काली की ओर आँखें फाड कर देखता हुआ बोला

इसमे बसेरा करने से पहले किसी सयाने को बुलाया था ?

'नही।

इसीलिए प्रेता का वास हो गया है। एक बात याद रखो जब कभी नई इमारत बनेगी उसम प्रेम आ जाएगे। वे चोला चाहते हैं। रक्खे ने कहा।

काली की समझ म कुछ नही आया और वह नीची नजरा से रक्खे की ओर दखन लगा।

जीतू अपनी माँ को बुला लाया। ताई निहाली न आते आत गली म पाँच सात घरा म सूचना द दी। थोडी ही दर म कई स्त्रियाँ काली के आँगन मे इकट्ठी हो गइ। सबने रक्खे के पाव की ओर झुककर उसे प्रणाम किया। ताई निहाली उसस बातें करने लगी। रक्खे न उसस कई चौधरिया और चौधरानिया का हाल पूछा और फिर कठोर स्वर म बोला

निहालिए! पत्तरहवा तो बसमन है। तू ही इसे समझा देती कि नई इमारत म भूता का निवाल बिना वास नहा करना चाहिए। उसन काली की ओर अपना धला करत हुए कहा

इसे सँभालकर रखना । इसम खरबूजे हैं ।' और फिर ताई निहाली से कहने लगा

जिसके अन्दर भूत है वह कहा ह ?

ताई निहाली दीया उठाकर उसके प्रकाश म रक्खे को आगन मे ले आई। रक्खे न चाची पर एक निगाह डाली और हाथ म पकडा चिमटा बजाया । चाची का शरीर डर से सिहर उठा ता रक्खा हँसता हुआ बोला

अभी तो मैंने कुछ किया ही नही तू पहले ही कापने लगा है। फिर वह काली को सम्बोधित करता हुआ बोला

'धूप गुग्गल डडी वाली लाल मिच रखी है ?'

हा जी।'

ले आओ सब चोजें । रक्खे ने अपना चिमटा फश पर रखते हुए कहा

कुछ खाने पीने का सामान ले आओ। सूखा राशन लाना।'

काली से पूछकर ताई निहाली थाली म आटा और गुड ले आइ और रक्खे के सामने रख दिया । रक्खा थाली को देखता हुआ बोला

इमम चार आने दूध के लिए भी रख दो । भूत जिद्दी लगता है। मेरे ख्याल म सुलह-सफाई स नही जाएगा।

काली न थाली म चार आने भी रख दिए।

रक्खे न धूप और गुग्गल कडछी म डालकर उसपर दहकता हुआ कोयला रख दिया और उम चाची क नथना क पास रख कर मुह बद करके कुछ बुद बुदान लगा । वह थोडे-थोडे अतर के बाद चिमटा ज़ोर से फश पर मारकर ऊँची आवाज मे कहता

निकल जा यहा से तेरे पीरा फकीरो का खाना खिलाऊँगा। रक्खे न यह क्रिया सात बार दोहराई परतु जब चाची के शरीर म हवा जितनी जुबश भी न हुइ तो वह सब को देखता हुआ बोला

भूत काफा ढीठ है। पता है किसका भूत है यह ?' और वह खिलखिला कर हस पडा । सब उसकी ओर देखन लग। लकिन वह सबसे बेपरवा ऊँची आवाज म बोला

मैंन तुम्हें पहचान लिया है। तुम्हारी भलाई इसी म ही है कि सुलह सफाई स चले जाओ वग्ना तुम जानते हो मैं तुम्ह कही का नही रहने दूगा। रक्खा आखें ऊपर उठाता हुआ बोला

हरवेलसिंह का नाम सुना है ? हरवेलसिंह पारिया ?

यह नाम सुनकर सबके दिल दहल गए। हरवेलसिंह व्यास नदी के पार का

नामी डाकू था। उसने बहुत से डाके डाले थे और कई कत्ल किए थे। उसे पुलिस ने एक मकान म घेर कर जिन्दा जला दिया था।

रक्खा चिमटा बजाता हुआ बोला

'डाके भी हमारे इलाके म डालता था और अब भूत बनकर भी इसी इलाके म घूमता है। जोडे के तरखाण के नौजवान लडके म वास कर गया था। मैंने वहा से इस कुत्ते का हाल करके निकाला था।' रक्खे ने कडछी उठा ली और कोयले पर फेर मारकर चमका दिया और ऊपर लाल मिर्चें रख दीं। मिर्चों के कडवे धुएँ से बचने के लिए सबने नाक और मुह पर कपडा रख लिया और आखें बन्द कर ली। रक्खे ने बहुत जल्दी जल्दी मुह ही-मुह म कुछ पढा और वह कडछी चाची के नाक के नीचे ले जाकर जमीन पर चिमटा ज़ोर स पटककर बोला

निकल जा वरना तरे जनने वालो को चीटियो को खिलाऊँगा। उसन दो तीन बार जोर से चिमटा पटका। चाची का शरीर एक बार कांपा और उसके होठो और पलको मे जसे कँपकँपी लग गई।

'अब हिला है, देखता जा, मैं तुझे घोडे की तरह दौडाऊँगा।

रक्खे न चिमटा बजाकर कहा और कडछी म जब लाल मिच के बीज जलन लगे तो उसने कडछी चाची के नाक के बिलकुल नीचे रख दी। चाची को ऊपर नीचे दो तीन छीकें आ गइ तो रक्खा चिमटा चाची के सिर के बिलकुल पास बजाता हुआ बोला

बोल निकलेगा या नही। इस बार मैं तुम्ह ब्यास पार ही पहुचाकर छोडूगा। रक्खे न अपन मुह म फिर कुछ पढा और चाची के नाक के नीचे कडछी घुमान लगा। कडवे धुए से चाची को खासी का दौरा-सा पड गया और उसकी बद आखो से पानी बहने लगा। रक्खा आखो स बहते पानी को देखकर बोला

अब क्या रो रहा ह पहले ही मेरी बात मान लेता और खा-पीकर सुलह सफाई से चला जाता।

स्त्रियाँ दम साध सब कुछ देख और सुन रही थी। व कभी कभार एक दूसरे के कान म फुसफुसान लगती। खाँसी के मारे जब चाची का सारा शरीर सुकडन लगा तो रक्खा चिमटा बजाता हुआ ऊँची आवाज म बोला

उस अकड क्या रहा है ? जाता क्या नहा ? क्या जूत खान का इरादा है ?

चाची का जब खाँसी स बुरा हाल हो गया तो काली न ताई निहाली क

कान म कहा

चाची का सास पल्ट नही रहा ह । थाडा-सा पानी पिला दू ?'

काली रक्खे क पास आकर बठ गया आर उमसे आर चुकता हुआ बाला

कहो ता चाची का एक घूट पानी पिला दू ।

इस मारने का इरादा है ? इस हालत म पानी पिलाना छाया का बुलाना है । दुश्मन को दूध पिलाना है ?'

थाडी देर बाद अपने-आप ही चाची की खासी कुछ कम हो गई और साथ ही शरीर की एठन भी । उसका शरीर धीरे धीरे कापन लगा ।

'अब काप रहा है । मूखा मेरी बात मान लना ता इस दुदशा स बच जाता ।

रक्खा चाची के कँपकँपाते हाथो को देखकर उसके मुह की आर चुकता हुआ ऊँची आवाज म बोला

क्या कहा ? और फिर चिल्लाकर बोला

माफ कर दूँ ?' रक्खा खिलखिलाकर हँसता हुआ बाला

'अच्छा अच्छा माफ कर दूगा ? क्या कहा ? विराया चाहिए ? क्या न्याज बाब की मडी पर ? हा हा वह मैं करवा दूगा जरूर करवा दूगा क्या कहा सवा पाच रुपये की नही नही दूसर आदमिया की हैसियत देखकर न्याज मागा करो । य चौधरिया का नहो, चमारा का घर है । हा क्या कहा सवा रुपय की न्याज हा यह हा जाएगी । हा सवा रुपय की करवा दूगा ।

रक्खे न ऊँचे स्वर म कहा और फिर काली की आर चुकता हुआ बाला

कहता है बाब की मडी पर न्याज करा दो और कुछ नही मागता । वह ता सवा पाच रुपय की न्याज माँगता था लेकिन मैंने सवा रुपय पर मना लिया है । थाली मे सवा रुपया अभी रख दो । क्या पता अपन वचन से मुकर जाए ।'

काली न ताई निहाली की ओर देखा और उसका सकत पाकर थाली म सवा रुपया रख दिया ।

लो न्याज भी आ गइ, अब जाओ निकलो यहा से । रक्खे न फिर चिमटा बजाकर कहा ।

इतने देर म गम हवा का एक झाका आया । दीय की लौ फडफडाकर बुझ गई । कडछी म सुलग रही धूप और गुग्गल स कुछ शररे उडकर बिखर गए । अगले ही क्षण हवा का पहले स भी ज्यादा जोरदार झाका आया । तकिए म वृक्षा के पत्ते आपस म टकराकर शोर मचान लग । सानवा व चाँद की

चादनी मरी हो गई और मुह, आखें और नथने धूल से भर गए।

लोग छतों से उतर आए। आँधी के डर से गली के कुत्ते भौंकने और गाएँ भैंसें डकारने लगीं।

यह तो जुम्मे शाह की आँधी है।

एक स्त्री ने हवा के दबाव में खटखटा रहे दरवाजों की आवाज सुनते हुए कहा

हां, जुम्मे शाह की आँधी ही मालूम होती है।'

दूसरी स्त्री ने अपना दुपट्टा सँभालते हुए उत्तर दिया

'कहर साईं का।

'हरबर्लसिंह का भूत कोई ऐसा वैसा भूत नहीं है। तूफान बनकर जाएगा। अपनी निशानी जरूर छोड़ेगा। माई को अन्दर ले चलो।' रक्खे ने थाली और चिमटा सँभालते हुए कहा।

काली चाची को अन्दर ले जा रहा था कि आगन में धूप की आवाज पैदा करती हुई कोई चीज गिरी।

क्या गिरा है? ताई निहाली ने घबराकर पीछे हटते हुए कहा क्योंकि वह चीज उसके पाँव के पास ही गिरी थी।

भूत ने जाने से पहले निशानी छोड़ी होगी। और क्या गिरा होगा।

रक्खे ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा। ताई निहाली फर्श पर बैठकर टटोलती हुई एक ईंट तक जा पहुँची और उसके चारों ओर हाथ फेरकर बोली

ईंट गिरी है। ताई के यह कहते-कहते हवा का जोरदार झोंका आया और अपने साथ एक और ईंट उखाड़ लाया। ताई पीछे हटती हुई बोली

लो एक ईंट और गिरी है।

'इसका मतलब है कि भूत दोबारा यहां नहीं आएगा। मेरे सामने तो जरी से जरी भूत भी नहीं ठहर सकता। रक्खे ने सशक्त स्वर में कहा।

चाची को अन्दर खाट पर लिटा दिया गया। आँधी बहुत जोर से चल रही थी। ड्योढ़ी के द्वार के पट बार-बार बज रहे थे। सब स्त्रियां कोने में दुबककर बैठी थीं। वे पहले ही डरी हुई थीं। तेज आँधी से और भी ज्यादा डर गईं। रक्खा आँधी को गाली देकर बोला

मैं इस एक झपट में बाँध दूँ लेकिन पुरा चल रहा है शायद बारिश आ जाए। क्या जीव क्या जन्तु क्या पखेरू क्या पँखेरू, क्या घास क्या वृक्ष (वृक्ष) सब पानी माँग रहे हैं। इस साल तो गर्मी भी नरक की आग की तरह पड़ी है।'

फिर वह काली को सम्बोधित करता हुआ बोला

देख बल्ल्या अब माई को पाँच दिन कोई सफेद चीज न देना वरना भूत फिर वास कर जाएगा। और अव्वल तो निकलेगा नहीं अगर निकलेगा भी तो इसकी जान लेकर जाएगा।'

इस बात का मैं ध्यान रखूगी। ताई निहाली ने कहा।

थोडी देर के बाद हवा की चीखा म बादलो की गरज भी शामिल हो गई। फिर छींटे पडने लगे और गम हवा म कुछ ऐसा परिवतन हो गया कि शरीर म सुईयाँ-सी चुभने लगी। रखे ने अपने शरीर के गिद चादर लपेट ली और हवा म ठडक महसूस करता हुआ बोला

'तेरी माई के अन्दर भी ऐसी ही ठड पड गई है। देख लो किस तरह थोडे दब कर सोई हुई है। अच्छा अब मैं चलू। आधी रात हो गई है। दीया जला कर मुझे कडछी दो।

काली ने दीया जलाया और कडछी रखे के हाथ म थमा दी। उसने कडछी म गुग्गल और धूप को दीयासलाई जलाकर सुलगाया और मुह म बुदबुदाता हुआ उसे हाथ म पकडे ड्योढी के चारो कोनो म गया। कमरा धूप की सुगधि से भर गया तो रखे ने कडछी चाची की खाट के नीचे रख दी और काली से बोला

'इसे यहा से हिलाना नही। भूत निकाल दिया है अब इसे सवेरे तक परछाई से बचाना है। अच्छा लाओ मेरा थला।

काली ने थला रखे के हाथ म दे दिया। उसने थले को टटोलकर देखा और थाली मे पडा हुआ आटा और गुड कपडे म बाध कर उसम डाला और डेढ रुपया उठाकर जेब म रख लिया।

'अच्छा मैं अब जाऊँगा।'

रखे को तैयार देखकर ताई निहाली ने काली से कहा

पुत्तरा, उसे सवा रुपया धूप जलाई दे दो।'

काली ने उसके हाथ पर सवा रुपया रखा तो रखा उसे देखता हुआ बोला

हरदेवसिंह का भूत निकालने के मैं सवा ग्यारह रुपये से कम नही लेता क्योंकि ऐसा भूत कभी-कभी उलटा भी पड जाता है। खर यही काफी है। रखे ने सवा रुपये को एक बार फिर देखते हुए कहा और बाहर निकल गया। उसके पीछे-पीछे सब स्त्रियाँ भी चली गई।

काली ने दीये के प्रकाश म चाची की ओर देखा। वह आँखें बन्द किए सीधी पडी थी। उसका सास धीरे धीरे चल रहा था। उसकी शक्ल देखकर

काली को विश्वास हो गया कि भूत सचमुच निकल गया है । उसने इत्मीनान की सास ली और आँगन मे खाट बिछाकर सो गया ।

३०

सुबह तक चाची के होठ नीले पड गए थे आँख पथरा गई थी और चेहरे का रग हल्दी हो गया था । सास उखडी उखडी थी और ठहर ठहर कर वह सास इस प्रकार खीचती थी जसे साँस कही फँसी पडी हो । काली चाची की यह दशा देखकर बहुत घबराया । उसने चाची के कान के पास मुह ले जाकर आवाजें दी लेकिन उसके किसी अग म हरकत न हुई । चाची की शक्ल निर्जीव पशु की तरह थी । मारे घबराहट के काली का कलेजा मुह को आने लगा । वह तज-तेज कदम उठाता हुआ दरवाजे तक जाता और फिर लौट आता । चाची की मृत्यु के विचार से ही उसके मन प्राण काँपने लगे थे ।

जीतू ने जब डयोढी म कदम रखा तो काली लपककर चिंतित स्वर म बोला

जीतू देखो चाची की शक्ल कितनी भयानक हो गई है । उसकी साँस कस चल रही है ।'

क्या इतना घबरा रह हो । भूत निकला है कमजोरी तो होगी ही । भूत निकलने बाद कई लोग तो छ छ महीने खाट से नही उठते ।

तू दौडकर ताई को बुला ला । काली ने कहा ।

जीतू के जाने म बाद काली चाची पर झुक गया और उसके होठो व बाना पर बठी हुई मक्खिया को दखने लगा । मक्खियाँ थोडी के देर पश्चात उड जाती और चाची के इद गिद मँडराकर फिर वहीं आ बठती ।

ताई निहाली क आने पर काली उठ गया । लेकिन जब वह घूरकर चाची को दखने लगी तो काली भी घट गया । ताई कुछ क्षणो तक चाची को *दखकर उस आवाजें दन लगी ।*

चाची न कोई उत्तर न दिया तो काली पीछ हटता हुआ रुध स्वर म बोला

'चाची कुछ नहीं सुनती, कुछ नहीं बोलती।

'घबराओ नहीं भूत निकल जाने के बाद ऐसी ही खुमारी आती है।' ताई निहाली फिर चाची को पुकारने लगी। कई आवाजें देने पर भी चाची के शरीर में मामूली-सी हरकत भी न हुई तो वह उसे झकझोरने लगी। उसने चाची की ठोडी को हिलाया लेकिन वह उसके हाथ के साथ ही मुड गई। यह देखकर ताई भी घबडा गई परन्तु काली की आखों में आसू देखकर वह अपनी घबराहट को छिपाती हुई बोली

'होश तू रोने लगा है।' प्रतापी को भूत निकलने के बाद बहुत कमजोरी हो गई है। पुत्तरा तू आप सोच, शरीर से दो बूंदें लहू की निकल जाएँ या घुटने, गोडे पर चोट लग जाए तो सारा शरीर यूठा पड जाता है। इसके अन्दर से तो नामी डाकू का भूत निकला है। भूत आता है तो तंग करता है, जाता है तो जान सूली पर चढा देता है।

ताई निहाली उसे दिलासा देने लगी। लेकिन चाची ने जब जोर से हिचकी ली तो वह बहुत घबडा गई और दौडकर प्रीतो और बेबे हुकमा को बुला लाई। काली सहमा हुआ सा परे चला गया। बेबे हुकमा ने चाची के माथे पेट, कलाइया, टागो और पाव पर हाथ लगाकर देखा और पीछे हटती हुई बोली

'प्रतापी का शरीर घने फागुन के कोहरे की तरह ठण्डा है।' उसने काली को अपने पास बुलाया और स्निग्ध स्वर में बोली

पुत्तरा हौसला रख। इस दुनिया में हर एक को देर सवेर से जाना है।' फिर उसने निहाली से कहा

निहालिए प्रतापी को जमीन पर उतार दे। इसका सांस अब ऊपर-ऊपर ही है।'

यह सुनकर काली का खून सूख गया। उसने मन ही मन में दृढ निश्चय किया कि वह चाची को मरने नहीं देगा। उसने अपने आसू पी लिए और डाक्टर बिशनदास की दूकान की ओर दौड गया।

डाक्टर की दूकान पर मोटा-सा ताला देखकर काली का दिल बैठ गया। वहाँ से वह डाक्टर के घर चला गया और दरवाजा पीटता हुआ जोर जोर से उसे आवाजें देने लगा। अन्दर से डाक्टर की पत्नी ने उत्तर दिया

वह शहर गया है। दिन ढले आएगा।

काली के शरीर में सारा बल खत्म हो गया। वह गर्दन झुकाये धीरे धीरे कदम उठाता हुआ अपने घर की ओर चलने लगा। उसकी आँखों के सामने

अँधेरा छा रहा था। वह यह विश्वास नहीं करना चाहता था कि चाची मर जाएगी। लेकिन उसकी जान बचाने का भी कोई उपाय नज़र नहीं आ रहा था। बेबसी से उसकी आँखों से टप टप आसू गिरने लगे। परन्तु जब उसे याद आया कि शहर मे हस्पताल है तो उसके आसू खुश्क हो गए और उसकी सारी शक्ति लौट आई। वह एक बार फिर अपने घर की ओर दौडने लगा।

काली घर पहुचा तो उसके दरवाज़े के बाहर बच्चो की भीड जमा थी। ड्योढी म बहुत सी स्त्रिया बठी थी। जीतू के अतिरिक्त बन्तू और सन्तू भी वहा खडे थे। स्त्रिया ने चाची को ज़मीन पर लिटा दिया था। उसके सिरहाने दीया जल रहा था। काली को देखकर प्रीतो बोली

काका, प्रतापी के सिरहाने अनाज रख दो। अन्त मे दान पुन (पुण्य) ही साथ जाता है।'

काली न सब लोगो पर सरसरी-सी नज़र डाली और ट्रक खोलकर सारे पसे जेब म डाल लिए और चाची के पास बठी स्त्रियो से बोला

चाची को मैं शहर के हस्पताल ले जाऊँगा।

यह सुनकर वे चकित-सी उसकी ओर देखने लगी। काली खाट के पावो के साथ रस्सिया बाँधने लगा तो बेबे हुक्मा बोली

पुत्तरा अब तू बुझी आग मे फूक मार रहा है। प्रतापी के श्वास पूरे हो गए ह और वह घडी पल से ज़्यादा नही निएगी। उसे क्या घसीटना चाहता है। जीते जी तो उसे आराम नही मिला अब चन स मरने तो दो।

'नहीं बेबे मैं चाची को हस्पताल ले जाऊँगा।

काका उम्र बडी हो तो दवा दारू के बिना भी जान बच जाती है। लकिन अन्त आ गया हो तो वद्य हकीम डाक्टर दवा दारू सन्त, पगम्बर कोई कुछ नही कर सकते। ताई निहाली ने कहा। बाकी स्त्रिया ने भी उसकी हाँ म हाँ मिलाई परन्तु काली अपने काम म व्यस्त रहा। उसने चाची को खाट पर लिटा दिया और जीतू स बोला

जीतू तयार हो जा चाची को शहर के हस्पताल ले जाना है।

अपनी माँ का व्यवहार देख कर जीतू आना कानी करने लगा तो काली फूट फूटकर रोता हुआ बोला

मेरा भी कोई भाई होता तो मुझे आज किसी की मिन्नत न करनी पडती, किसी का मोहताज न होना पडता।

काली को रोते हुए देखकर सबके दिल पसीज गए। ताई निहाली अपनी आँखें मलती हुई बोली

'पुत्तरा, यह तू क्या कह रहा है ? ये सब तेरे ही भाई हैं ।'

ताई ने वहाँ खड़े जीतू, बन्तू और सन्तू की ओर संकेत करते हुए कहा। यह सुनकर जीतू काली के कंधे पर हाथ रखकर बोला

'अगर जाना है तो जल्दी करो।

पुत्तरा, शहर जाने से पहले गाँव के डाक्टर को बुलाकर दिखा दो।'

विशनदास शहर गया है।' काली ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा।

'तो हकीम लम्भू राम को बुला लाओ।' बेबे हुकमा ने कहा।

काली सोच मे डूबा हुआ हकीम को बुलाने चला गया। प्रीतो पास बैठी प्रसिन्नी के कान म फुसफुसाई

काली ता बुड्ढी के पीछे पागल हो रहा है। वह आज नहीं मरेगी तो कल मर जाएगी।

'कुछ भी कहो काली ने चाची को जिस तरह अपने सिर पर बिठाया है कोई कोख जाया भी इतनी सेवा नही करेगा। आजकल तो लोग यही चाहते हैं कि बुड्ढी को अगर कल मरना है तो आज मर जाए।'

थोड़ी ही देर मे हकीम लम्भूराम आ गया। उसने चाची की नब्ज सिर स पाँव तक देखी और हाथ हिलाता हुआ बोला

अब दवा-दारू का समय निकल गया है। परमात्मा का नाम लो और प्रतापो की आत्मा के लिए शान्ति की प्रार्थना करो।

यह कहकर हकीम लम्भूराम चला गया परन्तु काली को उसकी बात पर विश्वास नही आया। उसने छाँव करने के लिए खाट के गिर्द रस्सियों से चादर बाँध दी और पायती पानी का बर्तन रख दिया। लम्बा मजबूत लठ दोनों ओर के पाँवों से बँधी रस्सियों से निकालकर डोली तैयार कर दी।

काली पुत्तरा क्यों अनर्थ करने लगा है। यह तेरी भूल है कि आई मौत को टाला जा सकता है ?'

बेबे हुकमा न अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि चाची ने जोर की हिचकी ली। उसकी एक बाहु जोर से फड़फड़ाई।

'उतार लो नीचे ।' बेबे हुकमा न शोर मचा दिया। काली एक ओर हट गया। ताई निहाली और प्रीतो न चाची को खाट से उठाकर ज़मीन पर लिटा दिया। ताई निहाली ने अनाज का मटका उसके सिरहाने उंडेल दिया और प्रीतो दीया जलाने लगी।

'वे काली अनाज मे कुछ पैसे डाल दे।

काली न जेब से पैसे निकालकर अनाज म फेंक दिए। बेबे हुकमा चाची

प्रतापी के वक्ष जैसे ठंडे शरीर को छूती हुई बोली, 'हाय, प्रतापी गई।' उसने बहुत ऊँची दहाड मारते हुए चाची के मुह पर कपडा खीच दिया। कुछ स्त्रिया सचमुच रोने लगी और कुछ लाज-लाज के डर से रोने का स्वांग भरने लगी। कुछ ही क्षणो म काली के घर स चीखें गूजने लगी।

काली को जब विश्वास हो गया कि चाची सचमुच मर गई है तो वह उससे लिपटकर ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। उसका विलाप सुनकर वहा पर उपस्थित लोगो के दिल पसीज गए। रोने का स्वांग भरने वाली स्त्रियाँ भी सचमुच आसू बहाने लगी। जब काली का रोना धोना कुछ कम हो जाता और चीखें सिसकियो म बदल जाती तो उनम से कोई स्त्री चाची का नाम लेकर ऊचे स्वर म बैन शुरू कर देती। चाची के मुह पर से पल्लू उठाकर कहती कि प्रतापिए तू सचमुच साथ छोड गई है। उनके बैन सुनकर काली का दिल भर जाता और वह फिर ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर देता।

जब दिन ढल गया तो ताया बसन्ता काली के पास आकर बोला

अपने आचार्य रलदू राम को कोई बुलाने गया है कि नही। अभी से तैयारी शुरू करोगे तो शाम तक अर्थी निकाल सकोगे।

सन्तू आचार्य को बुलाने गया है। जीतू ने उत्तर दिया।

कम से-कम लकडी ही श्मशान पहुचा दो। इस तरह हाथ पर हाथ रख कर तो कोई काम होगा नही।' ताये बसन्ते ने कहा।

लकडी हम पहुचा देते है। सन्तू उठता हुआ बोला।

'काली, लकडी घर से ही निकालोगे या मोल लेनी है। ताये बसन्ते ने पूछा।

मोल किसलिए लेनी है, ये लकडी ही है।' काली ने कडियो और शहतीरो की ओर देखते हुए कहा।

यह तो इमारती लकडी है।

अब किस काम की। काली के मन म अपनी हर चीज से अत्यत वैराग्य उत्पन्न हो गया। उसने आगे बढकर सन्तू की सहायता स एक शहतीर अलग कर लिया और कुछ अच्छी-अच्छी कडियाँ निकाल दी।

ये ले जाओ कम हो तो और कडियाँ ले जाना। काली ने सन्तू से कहा।

चमादडी के आचार्य रलदू के आने पर सब स्त्रियाँ और मर्द सतर्क हो गए। स्त्रियाँ चाची को स्नान कराने की तैयारियाँ करने लगी और मर्द अर्थी बनाने म जुट गए। ताई निहाली, प्रीतो प्रसिन्नी और मुहल्ले की कुछ अन्य

स्त्रिया या व्यस्त हो गइ जैस विवाह की तयारी कर रही हो। प्रीतो पानी तैयार कर काली के पास आ गई और वावे फत्तू और ताये बसन्त को देखते ही छोटा सा घूघट निकालकर धीमे स्वर म बोली

'चाची के कपडे कहा है ?'

काली न अन्दर जाकर एक कनस्तर खोला और उसमें से एक गुच्छा मुच्छा-सा सूट निकाल दिया। चाची के पास यह सूट कई वर्षों स था। इस वह केवल विशेष अवसरा पर ही पहनती थी।

चाची यह सूट पहनकर निकलती थी तो बिल्कुल रानी लगती थी। हाय वे रब्बा आज यह सूट भी उसके साथ ही भस्म हो जाएगा।'

'प्रीतो, तन के कपडे भी साथ नही जाते कुछ भी साथ नही जाता। ताई निहाली न भराई हुई आवाज म कहा।

सूय काफी नीचे चला गया तो ताया बसन्ता ड्योढी के द्वार के पास जाकर स्त्रिया स कुछ क्रुद्ध स्वर म बोला

'जल्दी करो बातें कम करो, काम ज्यादा करो।' फिर वह अर्थी को देखता हुआ बोला

रस्सिया कसकर बाधना। ढीली अर्थी को उठाना मुश्किल हो जाता है।

चाची को स्नान कराके स्त्रिया न कपडे पहना दिए तो जीतू और काली उस अर्थी पर डालकर बाहर ले आए। ताई निहाली दहाड मारकर रोती हुई बोली

प्रतापिये तू तो सचमुच ही हम छोडकर जा रही है। स्त्रिया एक बार फिर रोने लगी। काली के द्वार के आगे बच्चा की बहुत बडी भीड एकत्रित हो गई थी। ताया बसन्ता बच्चा को पीछे हटाता हुआ बोला

बादल आ रहे हैं जल्दी करो। छींटे पडने लगे तो बहुत मुश्किल बनेगी।

चाची की अर्थी उठी तो काली एक बार फिर फफककर रोने लगा। अर्थी के पीछे मद चल रहे थे। उनके पीछे बच्चे और स्त्रियाँ थी। चो के पार पहुचने पर बच्चा को लौटा दिया गया। श्मशान भूमि से कुछ दूरी पर अर्थी रख दी गई और चाची के मुह पर से पल्लू हटा दिया गया ताकि सब स्त्रियाँ अन्तिम दशन कर सकें। स्त्रिया की चीख पुकार एक बार फिर बहुत बढ गई। वे सच मुच फफककर रो रही थी। चाची से उम्र म छोटी स्त्रिया न उसके पाव छूकर उसे अन्तिम विदाई दी। उसकी सखिया न रो रोकर अपना बुरा हाल कर लिया। उन्ह यह विचार बार-बार सता रहा था कि प्रतापी को इसके पश्चात्

व कभी नही देख सकगी । आचाय रुलदू राम न उन्हे उपदेश दिया और धीरे धीरे उनका रोना धोना कम हो गया ।

रुलदू राम ने चाची की अर्थी के पास बठकर कुछ मत्र पढे और काली को धमारक (पानी से भरा हुआ मिट्टी का छोटा-सा घडा) तोडने के लिए कहा । आचाय के कथनानुसार काली बहुत तनमयता और श्रद्धा से सब गति विधिया को पूरा कर रहा था ताकि उसकी किसी त्रुटि के कारण चाची की आत्मा को कष्ट न पहुचे ।

शमशान तक पहुचते-पहुचत सूय पश्चिमी क्षितिज को छूने लगा था । पूव म काली घटा उमड रही थी और सूय की अन्तिम किरणा ने उनम मला सा लाल रग बिखेर दिया था । सूय को डूबता देखकर ताया वसन्ता जोर देने लगा कि चाची को शीघ्र से शीघ्र चिता के सुपुद कर दिया जाय । रुलदू राम ने मन्त्र पढकर काली से सकल्प कराया । चाची का शव अर्थी सहित चिता पर रख उसने मुह पर से कपडा हटा दिया । चाची को देखते ही काली फूट पडा । वह दिवाना वार-बार रो रहा था । रुलदू राम उसे समझाता हुआ बोला

'पुत्तरा अगर आंसू बहाने से मरा हुआ आदमी जिन्दा हो सकता तो इस दुनिया म कभी कोई न मरता । मौत हर किसी को आएगी । इससे कोई नही बच सकता यह कुदरत का अटल कानून है । इसलिए सबर से काम लो ।'

काली के लिए उस समय ये शब्द अथहीन थे क्याकि वह अपनी आंखा से देख रहा था कि आधे घटे के बाद चाची का अस्तित्व केवल कुछ हड्डिया और राख के रूप म ही रह जाएगा । ताय वसन्त न काली को पकड कर उसके हाथ से चिता म आग लगवाई । हवा के झोंका और सामग्री की सहायता से आग धीरे धीरे फलने लगी । चिता से कुछ दूरी पर बठी हुई स्त्रियां सामग्री और घी की सुगन्धि सूँघ रही थी । प्रीतो नथने फुलाती हुई बोली

दसी घी है मैं तो खुशबू सूघ कर बता सकती हूँ । फिर वह कुछ ईर्ष्या भरे स्वर म कहने लगी 'भाभी प्रतापी न पिछले जन्म म बहुत ही अच्छे कम किए हांगे जा उसकी चिता पर भी देसी घी डाला गया है । एक हम हैं जिन्होंने जीते जी भी दसी घी चखकर नही दखा ।

चिता म जब आग चारा ओर फल गई और लकडियां चटाख-चटाख जलन लगीं तो काली का धय और सयम बिल्कुल जवाब द गए । वह पागल की तरह चिता की ओर दौडा । जातू, ताय वसन्त और रुलदू राम न उसे लपक कर पकड लिया और उसे पीछे घसीट लाए । काली हाथ-पाँव मारता हुआ

अपने आपको छुडाने लगा।

क्या पागल हो गया है ? चिता मे कूद कर तू भी जल जाएगा लेकिन प्रतापी जिदा नही होगी। रल्दू राम और ताय बसत न सख्त स्वर म कहा। काली न धीरे धीरे हाथ-पाव मारन छोड दिए और बेवसी से भडकती चिता की ओर देखता रहा।

चिता जब लपकते शोलो और भडकती आग म खो गई तो रल्दू राम न काली के हाथ मे लम्बा-सा बास देकर कहा

'इससे अपनी चाची का सिर ठाक दो।

काली हैरानी से उसकी ओर देखन लगा तो वह उसे आगे धकेलता हुआ बोला

'अगर तुम ऐसा नही करोगे तो प्रतापी की गति नही होगी।'

काली ने रल्दूराम के आदेश के अनुसार चाची का सिर बास से ठाक दिया। रल्दू राम न चिता की ओर ध्यान से दखा और लोगो को उठन का सकेत दता हुआ कहने लगा

चलो ।'

सब लोग अलसाए हुए-से उठ बठे और धीरे धीरे गाव की ओर चलन लगे।

काली ने रुक कर चिता की ओर देखा। डूबते सूय ने पश्चिम म काले और लाल रग के बडे-बडे पहाड और हाथी और घोड़े बना दिए थ। पूव म उठ रही घटा धीरे धीरे आकाश पर छा रही थी। लपकत शोलो और आकाश पर फली हुई मैली-सी लालिमा और मटमली कालिमा दखकर उसे डर-सा महसूस हुआ और वह चिता की ओर पीठ मोडकर धीरे धीरे कदम उठाता हुआ सिर झुकाए गाव की ओर चल पडा।

३१

काली बिखरा हुआ सामान समेटकर झाडू लगाने लगा तो प्रीतो न उसका हाथ पकड लिया और भर्राई हुई आवाज म बोली

'हम मर तो नही गए जो तू आप झाड लगान लगा है। वह काली के

हाथ म थाड़ छीनती हुई बोली

हाय भर मुहल्ल म सिर म मिट्टी डालन लगा था ।'

प्रीतो बिखर हुए गामाा और बतना पर एक नजर डालती हुई कहने लगी

रिया (प्रिया) कम हान तक तर घर म स्त्रिया और मर्दों का ताँता बँधा रहेगा । चलो औरतें यहा बठ जाएगी मर्दों के बठने का क्या बन्दोबस्त किया है ?

अभी तो कही नही किया ? काली न अधीर स्वर म उत्तर दिया ।

प्रीतो भी सोच म डूब गई और फिर गली म जात हुए अपने बच्चे का आवाज दकर बोली कि अपन चाचे को जल्दी भेज दें । बहुत देर तक प्रतीक्षा करन के बाद भी निक्कू नही आया तो प्रीतो उसे गाली देकर बोली

मैं इस आदमी स बहुत दु खी हूँ । ऐस आदमी क सुहाग स तो रडापा अच्छा जिस अपने हाण (हानि) लाभ का भी पता न हो । प्रीतो बकती हुई उठ गई ।

काली मटका को ठीक ढग से रखन लगा । गहूँ के मटके म हाथ डालने पर उस एक लडडू मिला जो सूखकर हडडी की तरह सख्त हो गया था । काली को याद हो आया कि अपनी मृत्यु स कोई एक मास पूव चाची ने उसे यह लडडू खान के लिए दिया था परतु उस समय उसने इकार कर दिया था । चाची ने उसे सँभालकर मटके म रख दिया होगा ताकि बाद म उसे दे सके ।

काली लडडू को कुछ क्षणा तक देखता रहा और फिर उसकी आँखा म आँसू छलक आए। चाची की याद जून की आँधी की तरह उमड आई । काली सिर को घुटना म दबाए चाची की याद को आसुआ म बहाता रहा ।

काली को कुछ पता नही था कि पादरी कब डयोढी म आया । उसे उस समय खबर हुई जब उसे महसूस हुआ कि कोई बहुत ही प्यार स उसके सिर पर हाथ फेर रहा है । काली उसे देखकर फुफक उठा तो पादरी फश पर उसक निकट बठता हुआ बोला

काली दास यह क्या हो गया । आज सवेरे मुझे पता चला तो मेरा कलेजा फट गया । खुदा अपने उन बदा को इस दुनिया के दोजख म ज्यादा दिन नही रहन देता जो नेकी की राह पर चलते हैं ।

पादरी की आखें भी नमदार हो गइ । वह उस दिलासा देता हुआ बोला

नद सिंह न बात टालन की कोशिश की तो पादरी कुछ क्रुद्ध स्वर म बोला

नद सिंह कुछ अपना भला भी सोचो । काली मुहल्ल म सबस अच्छा लड़का है शरीफ है तदुरुस्त है चार जमातें भी पढ़ा है । आज उस पर मुसीबत पड़ी है उसकी मदद करो । हो सकता है एक दिन वह भी तेरी मुश्किल हल कर द । तेरी लड़की जवान है । मल वो अगर काली ईसाई बन जाए तो तुम्हे घर बठे बिठाए इतना अच्छा वर मिल जाएगा ।

नद सिंह कुछ क्षणों तक सोच म डूबा हुआ चुप रहा और फिर चौंक कर बोला

म काली को कोठा दूगा और जो मदद मागेगा वह भी करूगा ।'

पादरी न अपनी बात उसक दिमाग म अच्छी तरह बिठा दी और अपन घर की ओर बढ गया ।

नद सिंह न अपनी पत्नी टाकरी के साथ पादरी क साथ हुई अपनी बात चीत के बारे म परामश किया और व दोनो मिलकर कोठा साफ करन लगे । ज्यो-ज्यो पादरी की बातो का अथ नद सिंह की समझ म आ रहा था उसकी फुर्ती बढती जा रही थी । कोठा साफ करके उसने दूब की सफें बिछा दी और स्वय ही काली को बुलाने चला गया ।

काली को अपने साथ ही लाकर नद सिंह सफो की ओर सकेत करता हुआ बोला

अफसोस के लिए आन वाले मद यहाँ बठेंगे । काली दास असली आदमी वही होता है जो मुसीबत म दूसरो क काम आए ।

नद सिंह की बातें सुनकर काली का मन भर आया और कृतज्ञता स उसकी आँखो म आँसू छलक आए । नद सिंह उसे दिलासा देता हुआ उसक पास ही बठ गया । उनकी आवाज़ सुनकर टाकरी भी वहाँ आ गई और काली के गले मिलकर रोने लगी । फिर वह अपने आँसू पोछती हुई बोली

काली मैं गली मे निकलती हूँ तो मुझे ऐसे महसूस होता है जैसे चाची ने मुझे आवाज दी हो ।

काली को कोई उत्तर नही सूझ रहा था । वह सोचने लगा कि ससार म अच्छाई अभी बाकी है और सब लोग बुरे नही है ।

नद सिंह काली के पास बठकर जूते सीता हुआ उसक साथ बातें करन लगा । उसकी बातें सुनकर काली की उदासी कुछ कम होन लगी । उसके मन म बार-बार विचार आ रहा था कि नद सिंह से उसक ईसाई बनने की

कारण पूछे परन्तु उसे साहस नही हो रहा था। धीरे धीरे नद सिंह अपने मन की गाठ स्वय ही खोलने लगा। वह जूता एक ओर रखता हुआ बोला

'मुझे गाँव मे रहना बिलकुल पसद नही है क्योंकि यहाँ गरीब आदमी की, खास तौर पर कम्मी कमीन की कोई इज्जत नही है। गाव म इज्जत से रहना हो तो आदमी का जमीन का मालिक होना चाहिए। यहा सिर्फ जमीन और जूते की इज्जत है, बाकी चीजो को कोइ नही पूछता।'

काली उसकी बाता म इस हद तक तल्लीन हो गया कि उसे चाची की मृत्यु तक भूल गई। वह मुह खोले उसकी ओर दख रहा था। नद सिंह ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा

गाव म चमार होना तो सबसे वडा पाप है। घोर लाछन है। दो कौडी का मालिक काश्तकार अपने चमार को छटी का दूध पिला देता है। मुझे 'चमार' शब्द स ही नफरत है। मुझे कोई चमार कहे तो गुस्सा आ जाता है।

नद सिंह की बाता न काली को जस मोह लिया था। शाम की परछाइया खेतो से उठकर छतो पर फल गइ और फिर सिमटती हुई अधकार की कोख म लुप्त हो गइ परतु व बातो म मग्न रहे। ठाकरी उनके पास आई तो उन्ह एहसास हुआ कि रात पड गई है। काली उठता हुआ बोला

अच्छा मैं चलता हू। बातो-बातो म बहुत देर हो गई।'

'अब रोटी खाकर जाना—रूखी सूखी तयार है।

काली ने बहुत इन्कार किया परन्तु ठाकरी का आग्रह बढ़ता ही गया।

नद सिंह ने कोठे के द्वार पर ताला लगाकर चाबी काली को द दी और वे दूकान के भीतरी दरवाजे से होकर छोटे से आगन मे आ गए। ठाकरी न आग बढकर खाट बिछा दी और दोनो को बठने का सकेत किया। काली नद सिंह की वडी पुत्री पाशो का रोटियाँ पकाते हुए देखने लगा। उसे नानो याद आ गइ और वह सोचन लगा कि चाची के मरने पर वह अफसोस करने नही आई। उसका मन एकदम बहुत उदास हो उठा। नानो उसके दिमाग पर छाने लगी और जब नद सिंह ने उसस बात शुरू की तो वह चौंक गया।

ठाकरी जूता पहने खुली रसोई म इधर उधर घूम रही थी। काली दिलचस्पी और हैरानी से उसकी ओर देखता हुआ सोचने लगा कि चाची ठाकरी की आदतें कुछ दिना म ही बदल गई हैं।

पाशो न दाल से भरी दो कटोरियाँ उनके आगे रख दी और रोटिया उनके हाथो म थमा दी तो ठाकरी पाव पटकती हुई बोली

'पाशो, तू चमारन की चमारन ही रही । तुम्हे अक्ल नहा आई । रोटी पिच (प्लेट) म रखकर दो । वह प्लेट लाने के लिए कमरे म जान लगी तो काली ने उसे रोक दिया ।

मैं हमशा हाथ पर रखकर ही रोटी खाता हू ।'

परन्तु ठाकरी न उसके हाथ स रोटी छीनकर प्लेट म रखत हुए कहा

बडे साहिबा की तरह रोटी खाओ । पादरी जी एस ही खाता है । कहती हुई ठाकरी उनके पास बठकर दाना को पखा करने लगी ।

नद सिंह ने काली के हाथ पर एक प्याज रखत हुए कहा

पादरी जी कहता है कि इस मौसम म प्याज जरूर खाना चाहिए बीमारी से बचाता है ।

पादरी जी को दुनिया भर की बातें मालूम है। कोई बात पूछा ऐसी सलाह देगा कि दिल खुश हो जाए ।

यह कहती कहती ठाकरी सोच म पड गई और फिर नद सिंह को सम्बोधित करती हुई बोली

वह कौनसा बाप कहता है भला सा नाम है उसका ।'

नद सिंह न अपने दिमाग पर जोर देत हुए कहा

मुकददस बाप ।

यह सुनकर ठाकरी उछल पडी ।

कितना अच्छा नाम है । हमारे यहा किसी के बाप का नाम है नत्थू फत्तू तो किसी के बाप का रुल्दू या रला । पादरी जी उसकी बहुत प्रशसा करता है ।

काली मुसकरा दिया और अचानक ही उसके मुह स निकल गया

'चाची तू घर म जूता पहनकर क्या घूमती है ?

पुत्तरा पादरानी जी भी घर म जूता पहन रखती है । मैंन सोचा शायद इसाइया म एसा रिवाज है । इसलिए मैंने भी घर म जूता पहनना शुरू कर दिया है । हम जब ईसाई बन गए हैं तो रिवाज भी उन्ही क करन होंगे ।'

खाना खाकर नद सिंह ने हुक्का गम किया तो काली चकित-सा बोला

चाचा यह क्या ? तू तो हुक्का नहा पीता था ।

'पहल पाता था लेकिन मजहबी बनन क बाद छोड दिया था अब मैं मजहबी नहीं रहा ता हुक्का क्या छोडू ।

नद सिंह ने खाँसत हुए कहा । वह हुक्का की नय काली की आर मोडता हुआ बोला

'पादरी जी तुमसे बहुत प्यार करता है। कहता है कि काली बहुत अच्छा लडका है।'

काली उत्तर म मुसकरा दिया। नद सिंह अपन ईसाई वनन से मिलन वाले फायदा का जिक्र करने लगा तो ठाकरी बोली

'काली, तू भी ईसाई क्या नही बन जाता। चमार रहने म क्या मिलता है।'

नद सिंह न भी अपनी पत्नी का समथन किया। काली का दिल घबरान लगा और वह वहा से भाग आया।

घर के सूनेपन से उसे घबराहट हाने लगी। उसन दीया जलाया और उसके मद्धम प्रकाश ने सूनेपन को और भी गहरा कर दिया। काली न दीया बुझा दिया और दरवाज़े की ओट म सफ बिछाकर लेट गया। गली म लोगा का आना-जाना बहुत कम हो गया था। हवा की साँ सा और घोर अधकार देखकर एहसास होता था कि जोर की वर्षा आएगी। उसकी आँखा के सामने चाची की बहुत-सी तस्वीरें घूम रही थी। हवा की सा-सा, दूर गज रहे बादला की घनघनाहट और घुप अधेरे ने ऐसा वातावरण पदा कर दिया कि काली पर उदासी और भय छाने लग। उसे बार-बार एहसास होता जैसे बहुत दूर से उसे कोई आवाजें दे रहा हो। यह आवाज बिलकुल अपरिचित थी और वह चौंककर बार-बार उठता-बठता। फिर ऐसी स्थिति हो गई कि उदासी और नींद म भी भेद मिटने लगा।

जब रात बिल्कुल टिक गई और धरती और आकाश दोना मनुष्य की नजरो से आजाद हो गए तो उसे अपने दरवाज़े पर हल्की सी दस्तक सुनाई दी। वह आखें फाड फाडकर अधेरे म ही दरवाज़े की ओर देखन लगा। जब दोबारा दस्तक हुई तो वह उठ खडा हुआ और लपककर दरवाज़े के पास पहुच गया। उसन इस नर्मी से साकल उतारी जस किसी मुटियार के सिर से चुनी उतार रहा हा और आहिस्ता से दरवाजा खोल दिया। उसके सामन ज्ञानो खडी थी। काली को पता था लेकिन फिर भी उसन पूछ ही लिया

'कौन है ?'

मैं हूँ।' कहकर ज्ञानो अदर आ गई। काली न आहिस्ता से दरवाजा बद कर दिया और ज्ञानो के सामने आ खडा हुआ। वह कुछ क्षण ता चुप रही और फिर भरी हुई आवाज म बोली

क्या चाची अब कभी नही आएगी ?'

ज्ञानो फफक कर रो पडी। काली न उसके सिर पर हाथ रख दिया। उसे

रोते देखकर काली का दिल भी भर आया। नानो उसके साथ सट गई। उसका माथा काली के कंधे को छू रहा था। उसकी ठोडी नानो के सिर पर टिक गई थी। काली की आँखों से आँसू टप टप उसके बालों पर गिर रहे थे।

जब रोकर दोनों का दिल हल्का हो गया तो वे सफ पर बैठ गए। नानो ने अपनी चुन्नी के पल्लू से दो रोटियाँ खोलीं और काली से बोली

रात को रोटी खाई थी ?

हाँ, एक रोटी खाई थी।'

'उससे पेट भर गया था ?'

नहीं।'

'अच्छा तो ये खा लो। उसने रोटियाँ काली की ओर बढा दीं। काली ने रोटियों की तह खोलकर टटोला और खुश होकर बोला

'साथ अचार है ना ?

'हाँ आम का।'

काली को सचमुच ही बहुत भूख लगी हुई थी। उसने जल्दी जल्दी रोटी खाकर पानी पिया।

काली का जी चाहता था कि नानो से खुलकर बातें करे। उसने बात शुरू करने के लिए कहा

चाची ने साथ छोड दिया। मुझे उस दिन सवेरे ही पता चल गया लेकिन मैं यकीन नहीं करना चाहता था। मेरी कोशिश थी कि किसी-न किसी तरह उसे बचा लूँ। जब यह सोचता कि चाची मर जाएगी तो मेरे दिल में हौल सा उठने लगता।

नानो खामोशी से रोती हुई काली की बातें सुनती रही। काली चुप हो गया तो वह अपने आँसू पोछती हुई बोली

'चाची ने मेरे बारे में कभी नहीं पूछा था ?

'रोज पूछती थी, लेकिन । कहकर काली चुप हो गया। उस पर पाप का एहसास छाने लगा और थोडी देर बाद घबराई हुई आवाज में बोला

'नानो अब घर जाओ। बहुत देर हो गई है।'

'कोई बात नहीं चली जाऊँगी।

काली ने पाप के एहसास से छुटकारा पाने के लिए फिर चाची की बात शुरू कर दी। उसकी हर बात के उत्तर में नानो यही कहती कि उसे पता है।

काली उस वाला से पकडता हुआ वाला

'तुम्ह कसे पता चल जाता था। तू तो हमारे घर की ओर आख उठा कर भी नहा देखती थी ?

'पता चल जाता है। तुम नही वतात थे तो क्या हुआ गली गवाड वता देता था। वह नही वतात थ तो मेरा मन वता दता था। ज्ञाना ने ठडी आह भरत हुए कहा।

यह सुनकर काली उदास भी हुआ और खुश भी और नानो को अपनी ओर खीचता हुआ वाला

'अब जा अपने घर। किसी को पता चल गया तो दोना की शामत आ जाएगी।'

चली जाऊगी। ऐसा महसूस होता है तुम्हें मेरा यहा आना अच्छा नही लगा ?' नाना ने काली से परे हटने का यत्न करत हुए कहा।

'तू यहा बठी है तो इस कोठडी म चानन (प्रकाश) ही चानन हा गया है।

काली ने नानो को घमाट कर अपन बाजुओं म जकड लिया। काली के होठ उसके सिर स हाकर माथे तक पहुचे और वहा से उसकी गालो पर आ गए। उसक हाथ भी उसक रवा से नीचे रीगन लग तो ज्ञाना पूरा जार लगा कर अपन आप का उसके चगुल स छुटाकर वोली

'फिर वही वात। आदमिया की जात ही कमीनी होती है।

वह उठ खडी हुइ और उछलकर दरवाजे के पास पहुच गई। पशतर इसक कि काली उस तक पहुच पाता वह दरवाजा खोलकर गली के अँधेरे म खो गइ।

३२

क्रियाकम तक काली न साग मनाया क्योकि चमाल्डी के आचाय के आदेश अनुसार वह सब कुछ करने के लिए तयार था जिसस चाची की गति हो सके और उस स्वग म स्थान मिले। उसने मिन्नत-समाजत करके मुहल्ले की स्त्रिया

को इस बात के लिए मना लिया कि वह नियारम के दिन तक अपने अवकाश के समय में उसके घर बैठेगी। वह समय मिलने पर वहाँ आ जाती और चाची की मृत्यु को भूलकर निंदा चुगली में व्यस्त रहती या फिर में अनुमान लगाती कि चाची क्या कुछ छोड़कर मरी होगी।

वे एक-दूसरी की आँख बचाकर काली के घर से कोई बर्तन या कोई अन्य वस्तु भी उठा लेती।

नियारम के दिन चाची की बहन भी आई जो पन्द्रह कोस दूर एक गाँव में रहती थी। वह आते ही बहुत रोई और अपनी बहन का स्यापा किया। वह काली पर बहुत नाराज़ हुई कि उसने यदि पहले पता दिया होता तो वह अपनी बहन के अन्तिम दर्शन तो कर लेती। परन्तु कुछ समय बाद ही वह काली को एक ओर ले जाकर बोली

मेरी बहन क्या कुछ छोड़कर मरी है?"

काली अपनी मौसी के प्रश्न पर चकित रह गया।

मौसी, चाची क्या छोड़कर मरती। न तो उसके घर में कोई कमाने वाला था और न ही उसके हल चलते थे।

मुझे तो पता नहीं। तेरे मुहल्ले वाली कहती हैं कि गली में ब्याज पर पैसे देती थी। पल्ले था तो देती होगी।

काली ने मौसी को समझाने में बहुत यत्न किए परन्तु जब उसका अविश्वास बढ़ता ही गया तो काली अपना ट्रंक उठा लाया और खोलकर उसमें से चाची की दी हुई पोटली तलाश करने लगा। पोटली नहीं मिली तो उसकी घबराहट बढ़ने लगी। उसने सब कपड़े बाहर फेंक दिए। फिर भी पोटली न मिली तो वह सिर पकड़कर बैठ गया और बहुत घबराई हुई आवाज़ में बोला

पोटली किसी ने चुरा ली है।

मौसी उसकी ओर इस तरह देखने लगी जैसे मज़ाक उड़ाना चाहती हो और फिर परे हटती हुई बोली

मक्कर की क्या ज़रूरत है। उसने जो कुछ छोड़ा है वह तेरा ही है। मैं तो केवल इतना ही चाहती हूँ कि मेरी बहन का मरना खराब न करना ताकि उसकी गति हो सके।

अन्य स्त्रियों को जब पता चला कि काली के घर चोरी हो गई है तो वे सफ़ाई में अपनी संतान की सौगंध खाने लगीं। एक-दो ने दबी ज़बान में यह भी कह दिया कि स्वयं उसने ही पैसे छिपा दिए हैं और दोष मुहल्ले के लोगों पर थोपना चाहता है। मौसी थोड़े-थोड़े समय के बाद दोहत्थड़ मारकर चीखती

हुई कहती कि उसकी बहन का मरना खराब हो गया। अब उसकी गति नहीं होगी।

प्रीतो ने ताई निहाली पर चोरी का संदेह प्रकट किया तो वहां हंगामा खड़ा हो गया। ताई निहाली ने पहले तो रोकर अपनी सफाई पेश की और बाद में भड़क उठी और चीखकर बोली

'चोरी उसी सिरमुंनी ने की होगी जिसने मेरा नाम लिया है।'

प्रीतो उठकर ताई निहाली की ओर लपकी और उसके मुंह में हाथ देती हुई बोली

'तू ही सारा दिन काली के घर में घुसी रहती थी। तू ही हर चीज़ रखती ढकती थी। चोरी घर के भेदी ने की होगी किसी ने बाहर से आकर नहीं की।'

काली की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह हैरान था कि उसी की चोरी हुई है और उसी पर लांछन लगाया जा रहा है। वह घबराकर कभी ताई निहाली के सामने हाथ जोड़ता और कभी प्रीतो के कि वे यह तमाशा बंद कर दें। हंगामे में कोई किसी की बात सुनने को तैयार नहीं था। काली के घर के बाहर लोगों की भीड़ एकत्रित हो गई थी।

थक-हारकर काली एक ओर बैठ गया और फूट फूटकर रोने लगा। उसे इस बात का बहुत दुःख हो रहा था कि चाची उसकी मरी, पैसे उसके चोरी हुए, लांछन उस पर लगे और लोग नाराज़ भी उसी पर हो रहे हैं।

यह हंगामा पता नहीं कब तक जारी रहता यदि आचार्य रुल्दूराम उसे खत्म न कराता। उसने सबको चुप कराकर समझाया कि होनी को कोई नहीं टाल सकता। काली के भाग्य में जो लिखा है वह उसे अवश्य मिलकर रहेगा। लोग शान्त हो गए तो वह काली को सम्बोधित करता हुआ बोला पगड़ी बांधने का समय हो गया। मर्द चौगान में बैठे हैं। तुम वहां पहुंच जाओ।

काली का कोई ऐसा नज़दीकी रिश्तेदार नहीं था जो इस अवसर पर उसके लिए पगड़ी लाता। उसने रुल्दूराम से पुरानी पगड़ी ही अपने सिर पर बंधवा ली।

पगड़ी के बाद वहां मौजूद लोगों ने काली को दिलासा और रुल्दूराम ने उपदेश दिया कि वह घर का काम-काज शुरू करे क्योंकि संसार में रहकर कर्म किए बिना गति और गुजारा नहीं है। लेकिन काली के सामने प्रश्न था कि वह क्या काम करे। पैसों की चोरी के बाद कोठड़ी के निर्माण का प्रश्न ही नहीं उठता था। ज़मीन होती तो वह खेतों में हल चलाता ढोर डंगरों को चारा-

पानी डालता। दूकान होती तो उसे खोलकर बैठ जाता।

बाबा फत्तू उसके असमंजस को भाँपता हुआ बोला

'पुत्तरा, वही काम करो जो चमार लोग पिता पुर्खों से करते आए हैं। चादर और खुर्पा उठाओ और घास खोद कर लाओ।

जीतू ने काली को खुर्पा और चादर ला दी और उसे साथ लेकर बाहर आ गया। वे बला सिंह जाट के कुएँ से भी परे चले गए। काली एक जगह अच्छी घास देखकर खोदने लगा। आध पौन घंटे में ही काली ने घास से चादर भर ली तो जीतू आश्चर्य से बोला, मैं समझता था कि तू शहर में जाकर निरापुरा बाबू बन गया है लेकिन तेरे हाथ तो चलते हैं।'

काली घास उठाकर गाँव की ओर चल पड़ा। जीतू उसके पीछे-पीछे आता हुआ बोला

'इस घास का क्या होगा ?'

देखो, क्या करता हूँ।'

काली तेज तेज कदम उठाता हुआ गाँव में आ गया। वह अपने मुहल्ले की ओर मुड़ने की बजाय सीधा दूकानों की ओर चला गया। जीतू ने उसे रोका, उसे पुकारा लेकिन काली महाशय की दूकान की ओर जाने वाली गली में मुड़ गया। महाशय की दूकान पर पहुँचा तो वह बंद थी। वह सीधा छज्जू शाह की दूकान की ओर बढ़ गया। उसके शरीर से पसीना बहकर पाँवों के तलवों तक को गीला कर रहा था। छज्जू शाह की दूकान पर पहुँचकर उसने घास सिर से उतारे बिना ही कहा

'शाह जी घास चाहिए।'

कौन काली है ? छज्जू शाह ने हैरानी से पूछा।

हाँ जी।

'घास है तो सही

छज्जू शाह बात को लटकाकर घास का निरीक्षण करता हुआ बोला, चलो फेंक दो कल भी तो जरूरत पड़ेगी।'

काली ने चबूतरे पर एक ओर घास डाल दी।

छज्जू शाह हरी और लम्बी घास देखकर खुश हो गया लेकिन एक तिनका उठाता हुआ बोला

बरसाती घास है। इसमें पानी ज्यादा होता है। कितने पैसे दूँ ?

जो खुशी हो।

फिर भी ?

जो मर्जी हो दे दें। मैं आप से कोई सौदा थोडे ही करूँगा।'

'आज के लिए ही लाए हो या रोज लाओगे ?'

'जसा आप कहें।'

छज्जू शाह ने काली की ओर देखा और मन ही मन मे सोचने लगा कि चमार की खुशहाली उसकी जवानी की तरह चार दिन ही रहती है। वह उसकी हथेली पर तीन आने रखता हुआ बोला

'जीतू को मैं तीन दिन के बाद आठ आने देता हूँ। तुम्हे रोज तीन आने दिया करूँगा। लेकिन शर्त यह है कि गर्मी हो या सर्दी बरसात हो या बहार इसी मोल घास लूगा।'

काली कोई उत्तर दिए बिना थडे से नीचे उतरकर सीधा मिस्तरी सतासिंह के पास आ गया और उसके हाथ पर तीन आने रखता हुआ बोला

मिस्तरी जी मुझे एक खुर्पा चाहिए, बढ़िया-सा, कीमत इससे ज्यादा हो जाए तो परवाह नही।'

मिस्तरी न हैरानी से काली की ओर देखा और अपनी छदरी दाढी को सँवारता हुआ बोला

खुर्पे स क्या करोगे ?

घास खोदूगा।'

सच ?

'हा।

आ गया तू भी टके वाली था (जगह) पर।

मिस्तरी न हँसत हुए कहा

कल ले जाना।'

सवेरे चाहिए।

'सवेरे ही ले जाना।'

अपन घर की ओर आते हुए काली ने अपने चौडे चौडे हाथो को देखा, अपनी मजबूत बाँहो पर नजर दौडाई और मुट्ठियाँ भीचता हुआ सोचन लगा कि वह चाहे तो अपने बल स धरती को एक सिरे से पकडकर उलट सकता है। वह किसी दूसरे क हाथो की ओर क्या दखेगा।

३३

ब्याई शुरू होते ही गाँव के किसान और चमार काम में बहुत व्यस्त हो गए। सुबह का तारा निकलते ही हाली हल पंजाली लेकर निकल जाते और दिन चढ़े तक खेतों में घुंघरुओं की छन छनाहट सुनाई देती रहती। चमार या तो अपने चौधरी की हवेली में पहुंच जाते या फिर सीधे खेतों में। यदि कोई नींद का मतवाला सोया रहता तो उसे घर से उठा लिया जाता। टेढ़ी मेढ़ी पगडंडियों पर मुटियार बहुएँ काली सूफ के घघरे पहन और छोटा-सा घूंघट काढ़कर हालियों के लिए भत्ता लेकर जातीं।

काली अभी तक किसी चौधरी की हवेली में काम पर नहीं लगा था। वह केवल दो समय घास लाकर एक गट्ठा छज्जू शाह के और दूसरा महाशय तीर्थ राम की दुकान पर फेंक आता। वह घास खोदकर वापस आ रहा था कि रास्ते में उसे लालू पहलवान मिल गया और उसका हाल-चाल पूछकर बोला

'घास खोदता फिरता है किसी की हवेली में काम क्यों नहीं कर लेता? इन दिनों में तो वही चमार घास खोदेगा जिसके अंदर दम न हो।

चौधरी जी आपकी बात ठीक है लेकिन किसकी हवेली में काम करूँ? हर हवेली का अपना चमार है।

आजकल तो जितने आदमी हों, उतने ही कम हैं। पहले ब्याई फिर नलाई, उसके बाद कटाई और आखिर में छटाई। सावनी बहुत मेहनत मांगती है। अगर तुम्हें कोई नहीं रखता तो मेरी हवेली आ जाना।'

अच्छा, चौधरी जी।

पक्की बात करो। कब से आओगे?

जब से आप कहो।

कल सवेरे ही आ जाओ।

अच्छा, चौधरी जी।

लालू पहलवान आगे बढ़ गया और काली गाँव की ओर आ गया। घास फेंककर काली ने छज्जू शाह से नकद पैसे लेने की बजाय आटा, नमक और तेल ले लिया और अपने घर आ गया। वह गर्मी का सताया हुआ आँगन में खाट बिछाकर लेट गया और सामने कोठड़ी के खण्डर को देखकर सोचने लगा कि चौबारा बनाने का स्वप्न देखते देखते अपना कच्चा कोठा भी गिरा दिया। उसने ठंडी आह भरी और सिर झटकता हुआ अपने भाग्य को कोसने

लगा ।

घर मे बठे जब काली का मन उब गया तो वह उठकर गली म आ गया। उस समक्ष म नहा आ रहा था कि कहा जाए । वह अनमना सा कुएँ की ओर चल पदा । उस गली म जाते देखकर नद सिंह ने आवाज दी । काली उसके पास पहुचा तो वह उसकी ओर मूढा धकेलता हुआ बोला

सुनाओ काली, क्या हाल चाल है ?'

ठाक है ।' काली ने ठडी आह भरत हुए कहा ।

काली की उदासी भापकर नद सिंह बहुत नम्र स्वर म बोला

'काली दास, स्याना आदमी कुछ न करे खाट पर ही लेटा रहे लेकिन उसका बहुत सहारा होता है ।

'क्या किया जाय । अपने बस से बाहर की बात थी ।'

'तेरे घर म बात करन क लिए दूसरा जीव भी ता नहा है । दो चार महीने गुजरन के बाद शादी करा लेना । ससार का सिलसिला इसी तरह चलता है ।

नद सिंह कुछ क्षणा तक काली की प्रतिक्रिया देखता रहा और बात का पलटता हुआ बोला

कामकाज का क्या सोचा है ? गाव मे तो महनत मजदूरी है ।'

'अभी कुछ खास ता सोचा नही । कई बार सोचता हू शहर चला जाऊँ ।

तुम जानत ही हो मेरा बडा लडका प्रकाश सिंह बहुत दर तक बकार रहा । कही काम धधा नही मिलता था लेकिन जब हम इसाई बन गए तो पादरी जी न कह-सुनकर उस जल्दी हा नौकरी दिला दी । अपनी बिरादरी बन जाए तो नौकरी चाकरी और शादी-ब्याह के सब बन्दोबस्त हो जाते हैं। सबमे बडा फायदा यह हुआ कि अब हम चमार नहो रहे हैं ?'

वे बाता म मग्न थे कि एक सख्त आवाज ने उन्ह चौंका दिया । दुकान के द्वार पर चौधरी मुशी खडा उस आवाजें द रहा था । नद सिंह बाहर आया तो चौधरी मुशी गाली देकर बोला

'चमारा, तूने क्या भग पी रखी है ? आवाजें दे-देकर मेरा गला बैठ गया है। चौधरी मुशी तज आवाज म बोला

'ला मेरा जूता दे दे ।

अभी बना नही । नद सिंह ने क्रुद्ध स्वर मे कहा क्योकि चौधरी मुशी के मुह स अपने लिए चमार का सम्बोधन सुनकर वह गुस्से मे आ गया था ।

क्या जूता बनाने म पूरा साल लगाएगा ? चमारा, काम किया कर वरना भूखा मर जाएगा । चौधरी मुशी ने उदण्ड लहजे म कहा ।

'चौधरी, जबान सँभालकर बात कर। मुझे बार-बार चमार मत कह।' नंद सिंह ऊंचे स्वर में बोला।

तो क्या तुम्हें सरदार बहादुर कहूँ ? कुत्ता चमार, बात यूं करता है जैसे गांव का नम्बरदार हो।

'जा चला जा। जब तक तू पहले पैसे नहीं देगा मैं तुम्हारा जूता नहीं बनाऊँगा। नंद सिंह ने निर्णयात्मक स्वर में कहा।

यह सुनकर चौधरी मुंशी पहले तो चुप हो गया और फिर ज़ोर-ज़ोर से गालियाँ देने लगा।

कुत्तया चमारा, तेरी यह मजाल ? अपनी दूकान पर मुझसे पैसे मांगता है। जूता बनाने से इन्कार करता है ? मैं तेरी खाल उधेड़ लूंगा। तू पागल तो पहले ही था ईसाई बनकर सवाया हो गया है। चौधरी मुंशी उसे बाँह से पकड़कर बाहर खींचने लगा तो काली उठा और चौधरी मुंशी को परे धकेलता हुआ बोला

चौधरी, क्या ज़ोर जबरदस्ती करता है। अपनी मेहनत के पैसे माँगे हैं कोई डाँग (लाठी) नहीं मारी है।'

चमारा तेरी यह हिम्मत ? मुझे धक्का देता है ? तेरे बाप-दादा मेरे टुकड़ों पर पलते रहे हैं। मैं तुम दोनों को जमीन में जिंदा गाड़ दूंगा। चौधरी मुंशी के मुंह से क्रोध के कारण झाग बहने लगी।

शोर शराबा सुनकर कई लोग इकट्ठे हो गए। ताया बसंता बीच बचाव कराने लगा और चौधरी मुंशी के सामने हाथ जोड़ता हुआ बोला

'चौधरी, बात क्या हुई है ? इतने गर्म क्यों हो ?'

चौधरी के कुछ कहने से पहले नंद सिंह बोल उठा

यह मुझे चमार कहता है। मैंने पचास बार कहा कि मुझे चमार मत कहो।

'तो क्या कहें ?'

मैं चमार नहीं, ईसाई हूँ।

'वाह, वाह नंद सिंघा। तेरे सिर पर अभी सींग तो उगे नहीं पागला तो कुछ भी बन जा लेकिन रहेगा चमार का चमार ही। जात कर्म से नहीं जन्म से बनती है। अगर चमार कहलवाना पसंद नहीं तो अपनी माँ से कहो कि तुम्हें दोबारा जन्म दे।

चौधरी मुंशी इस हद तक क्रोध में आ गया कि उसने नंद सिंह को गर्दन से पकड़कर झुका दिया और उसकी पीठ पर ज़ोर ज़ोर से मुक्के मारता हुआ बोला

चमारा, तेरी अकड मैं ऐसी तोडूगा कि तू साल भर हडिडया को तापेगा।'

नन्द सिंह को पिटते देखकर काली से न रहा गया। उसने पीछे से जाकर चौधरी मुशी की दाता वाह अपने शिकजे में ले ली और उसे पीछे घसीट लाया। चौधरी मुशी अपने-आपको काली की गिरफ्त से छुडाने के लिए हाथ पाव मारता हुआ बोला

चमारा, तेरी यह हिम्मत ? मेरा हाथ पकडता है ?' चौधरी मुशी नन्द सिंह को भूल गया और काली को गालिया देने लगा

'कल तेरी चाची मरी और आज तू दगे फिसाद पर उतारू हो गया है। मैं तुम्हे कच्चा खा जाऊँगा।'

ताया वसता काली को दोहत्यड मारता हुआ बोला

'झगडा चौधरी और नन्द सिंह के बीच हो रहा है, तू बल के सीगो पर क्या चढता है ? चल दौड यहा से।' ताए वसते ने धक्का देकर काली को परे धकेल दिया और स्वय चौधरी मुशी के आगे हाथ जोडता हुआ बोला

'चौधरी, नन्द सिंह तो पागल है। इसे बाउले कुत्ते ने काटा है।'

चौधरी निरतर काली को गालिया और धमकियाँ दे रहा था। वह पाव से जूता उतारकर काली की ओर फेंकता हुआ बोला

'मैं तुम्हे गाव की गलियो में कुत्ते की तरह घसीटूगा।

जूता उसस पर जा गिरा तो चौधरी उस ओर लपका और काली को गरेबान से पकडकर झझोडने लगा। खीचातानी में काली का गरेबान फट गया और उसकी छाती के बाल बाहर झाकने लगे।

गली में शोर सुनकर उस ओर आ जा रहे कुछ चौधरी लोग भी वहा आ गए। उन्होने गालियों का तूमार बाँध दिया। जब चौधरी हरनाम सिंह वहाँ पहुचा तो शोर कुछ कम हो गया। उसने चौधरी मशी को गुस्से मे आग-बगूला देखा तो उसके बहुत निकट आकर बोला

'चौधरी क्या हो गया ? किस पर इतना बरस रहे हो ?

'माछे की हराम की औलाद काली पर। उसने मुझे धक्का दिया। मेरी बाँह पकडी और मुझे मारने के लिए आया।

'देख ओ काली के पुत्तर, जूते मार मारकर तेरा सिर पोला कर दूगा। सौ मारकर एक गिनूगा। तू शरारती आदमी है। तेरी खैर इसी में है कि गाव छोड जा।'

काली ने अपनी सफाई पेश करने की कोशिश की तो चौधरी हरनाम सिंह भडक उठा

'आग से टर टर करता है। तू यहाँ का धम पुत्तर है। कान खोलकर सुन ले, चौधरी के मुकाबले म गलती हमेशा कमीन की होती है। ज्यादा अकड और फूँ फाँ दिखाई तो तरी लाश तक नहीं मिलेगी।'

चौधरी हरनाम सिंह ने काली को बहुत बुरा भला कहा और चौधरी मुशी को साथ लेकर कुएँ की ओर बढ गया। ताया बसत ने भी काली पर फटकार डाली और उसे बाँह से पकडकर बोला

'जा, अपने घर म जाकर बठ। चौधरियो से ज्यादा मत्था लगाएगा तो नुकसान मे रहेगा।'

काली गदन झुकाए धीरे धीरे कदम उठाता हुआ अपने घर की ओर आ गया। अभी वह ताला खोल ही रहा था कि प्रीतो आ गई और कूल्हे मटकाती हुई बोली

'चौधरी क्या तुम्हे गालियाँ दे रहा था ?

पता नही।' काली ने दरवाज़ा अन्दर से बद कर लिया। प्रीतो की उत्सुकता बहुत बढ गई और वह दरवाजा पीटती हुई बोली

दरवाजा तो खोल।'

काली ने जब दरवाज़ा नही खोला तो उसने कई अनुमान लगाए और उन्हे मूत रूप दती हुई मुहल्ले म चली गई। वह जस्सो के पास बठी थी जब मगू भी आ गया। उसने प्रीतो के सब अनुमानो और आशकाओ की पुष्टि कर दी तो वह बहुत प्रसन्न भाव स बोली

'काली मोया आते ही खनपट्टी लेकर लेट गया। मैं तो उसका चेहरा देखकर ही भाप गई थी। अच्छा हुआ माया अकड ऐस दिखाता है जस चार चक उसी की जागीर हो। मैं कहती हू चौधरी सचमुच मार देता तो अच्छा होता।'

'अगर वह कभी तुम्हारे साथ तू-ताँ करे तो मुझे बताना। हाँ, जब वह पिछली कोठली बनाने लगे तो रोक देना। आगे मैं सँभाल लूगा। मगू न रोटी चबाते हुए कहा।

बना चुका कोठडी। अब तो वह रोटी के टुकडे को तरसता है। उस रडी निहाली ने उसका घर साफ कर दिया। वह भी हर समय ताई-ताई कहता फिरता था। (वर्षा की) झडी लगने दो—मोला दिन के पाये न काटे तो मरा नाम बदल देना। *प्रीतो न तज लेकिन धीमी आवाज म कहा।*

ज्ञानो अपन काम म मग्न थी लेकिन उसके कान उनकी बातो की ओर थे। वह अपने अन्दर ही-अन्दर क्रोध स पक रही थी। जब उसन यह सुना कि काली

कभी फाका भी काटता है तो वह एकदम उदास हो गई। उसका सारा शरीर शिथिल हो गया। उसने बरतन उठाया तो वह हाथ से गिर गया। कोठडी की ओर बढी तो पाव रास्ते मे पडे चरखे म उलझ गया। प्रीतो उसकी ओर ध्यान से देखती हुई जस्सो स बोली

जस्सो, तुम्हे रात को नीद कसे आ जाती है ? ज्ञानो तो अब बहुत जवान हो गई है।'

लडके ढूढना मर्दों का काम है। मैं तो लडका बता सकती हूँ। मगू को न अपना फिक्र है न बहन का। दिन रात चौधरी की हवेली पडा रहता है। इसे शिकारी कुत्तो और घोडी से ही फुरसत नही मिलती।'

फिर वह मगू से बोली

सुन ले, अब तो आस पडोस कहने भी लगा है। पुत्तरा ज्ञानो की शादी करना तेरा फर्ज है और इसे तुझे ही पूरा करना है।'

फिर वह प्रीतो को सम्बोधित करती हुई बोली

'इसे एक लडका बताया तो था लेकिन यह ध्यान ही नही देता।'

प्रीतो कुछ क्षणो तक चुप रही और फिर ठण्डी आह भरती हुई बोली

मेरे तो अपने गले गले तक पानी आ गया है। सोचती हूँ तो दिल डूबने लगता है। मेरे पास चार टल्ले (कपडे) होते तो मैं लच्छो का ब्याह कर देती। निहाली रडी से कहा था कि चोरी के माल से मुझे भी आध पचाध हिस्सा दे दे लेकिन वह परो पर पानी नही पडने देती।

जस्सो के घर स उठकर प्रीतो फिर काली के घर आई। उसका दरवाजा अभी तक अन्दर स बन्द था। उसने गली म इधर उधर देखा कि कोई आ-जा तो नही रहा और फिर दरवाजे के पटो की दराडो म से अन्दर झाकने लगी। उसने देखा कि काली अपने कपडे बाध रहा है। चीजो को ठिकाने लगा रहा है जसे सफर पर जाने की तयारी कर रहा हो। वह दौडी दौडी फिर जस्सो के घर आ गई और मगू को झँझोडती हुई बोली

'काली सामान बाध रहा है। कही जाने की तयारी कर रहा है।

हूँ। गाव म रहेगा कसे। चौधरी ने उसे कह दिया है कि गाव छोडकर चला जाए वरना उसकी लाश तक नही मिलगा।

ज्ञानो यह सुनकर एकदम बचन हो गई। कभी वह किसी बहाने छत पर जा चढती कभी नीचे उतर आती। वह बसब्री से इतजार कर रही थी कि मगू और प्रीतो चले जाएँ। जब उन्होने उठने का नाम तक न लिया तो वह चक्की के पास जा लेटा और जस्सो के पूछने पर पेट को दबाती हुई बोली

'मेरे पट म पैर (दर्द) ग उठ रहे हैं।'

जा बाहर हो आ। जम्मो न कहा। यह सुनते ही ज्ञानो काली के मकान की ओर भाग गई।

वहाँ ताला लगा देख ज्ञानो का दिल बैठ गया। वह घबराई हुई कुएँ की ओर निकल गई और इधर उधर घूमकर फिर गली म आ गई। काली के मकान पर ताला पड़ा देखा तो अपने घर वापस आकर जस्सी के पास लेट गई। मंगू जा चुका था लेकिन प्रीतो उसकी माँ के साथ बातें कर रही थी।

ज्ञानो को घर म चैन न पड़ा तो गली म चली गई। काली के घर के सामने पहुँची तो वहाँ अब भी ताला लगा था। वह मेला की ओर चली गई। कुएँ के पास पहुँची तो वहाँ मुहल्ले के कुछ लोग नहा रहे थे। नामू सबको बता रहा था कि चौधरी ने काली को बहुत डाँटा है। उसे कहा है कि गाँव छोड़कर चला जाए वरना उसकी लाश तक नहीं मिलेगी।

क्या बात है ?' बाबे फत्तू ने पूछा।

वही चौधरी मुंशी वाला झगड़ा।'

हनेर (अंधकार) है साई का। चौधरी नाहक बात कर रहा है। बाबे फत्तू ने कहा।

ज्ञानो कुएँ से थोड़ी दूर परे जाकर सिर हिलाती हुई अपने-आपसे बोली

हूँ तो ये बात है। माए चौधरी को एसी प्लेग निकले कि सूरज का मुँह न देखे।' वह अपने मन ही मन म सोचने लगी कि कौन कौन सी ऐसी बीमारियाँ हैं जो आदमी को पल झपकते म खा जाती हैं ताकि परमात्मा से प्रार्थना करे कि चौधरी को वही बीमारियाँ हों।

थोड़ी देर के बाद वह फिर गली म वापस आ गई। काली का मकान अभी तक बंद था। ज्ञानो का जी चाहा कि वह उसे जल्दी से जल्दी मिल जाए। वह घर जाने की बजाय पीछे लौट आई। उसे विश्वास था कि काली किसी न किसी दूकान पर बैठा होगा। इसलिए पहले वह डाक्टर की दूकान पर गई। वहाँ से महाशय तीर्थराम की दूकान पर। उसे वहाँ भी काली नजर न आया तो उसका विश्वास टूटने लगा। वहाँ से वह छज्जू शाह की दूकान की ओर बढ़ गई। काली वहाँ भी नजर न आया तो वह पश्चिम म गप्पियों के मुहल्ले की ओर मुड़ गई। लालू पहलवान की हवेली म भी काली दिखाई न दिया तो वह उस गली मे दाखिल हो गई जिसमे पादरी का मकान था। जब वह उसके घर के सामने पहुँची तो उसे बैठक म काली की आवाज सुनाई दी। वह वहीं ठिठक गई और फिर दरवाजा खटखटाने लगी। काली पादरी से वह

रहा था

वाहर कोई है।'

'दूसरी तरफ है। कोई पादरानी से मिलने आई होगी।' यह कहकर पादरी ने फिर बात शुरू कर दी।

कुछ क्षणों के पश्चात दरवाजा खुल गया। सामने प्रीतो की लडकी लच्छो को देखकर ज्ञानो चकित सी रह गई। और लच्छो ऐसे डर गई जैसे चोरी करती हुई पकड़ी गई हो। लेकिन पादरानी ने ज्ञानो को देखते ही प्रसन्न भाव से कहा

'आ ज्ञानो, तू आज कैसे भूलकर इस घर में आई है।

ज्ञानो आगे बढ़कर धड़प से उनके पास बैठ गई। पादरानी उसकी बेचैनी और घबराहट को भांपती हुई बोली

आराम से बैठ जा। हाड़ की धूप से तो आदमी पागल हो जाता है।' उसने ज्ञानो की ओर पंखा फेंकते हुए कहा। ज्ञानो कोने में बैठी लच्छो की ओर देखने लगी लेकिन उसके कान बैठक की ओर थे।

ज्ञानो की समझ में नहीं आ रहा था कि पादरी काली को क्या समझा रहा है। कुछ देर तक बैठक में खामोशी रही तो ज्ञानो पादरानी की ओर देखने लगी जो सिलाई की मशीन चला रही थी। ज्ञानो को अपनी ओर देखते पाकर वह बोली

लच्छो को मैं सिलाई कढ़ाई सिखा रही हूं। देखो लच्छो अब उल्टा सीधा दाना ताँपे लगा लेती है।

ज्ञानो दिलचस्पी दिखाती हुई बोली

मुझे तो सीना पिरोना बहुत अच्छा लगता है लेकिन सिखाने वाला कोई नहीं है।

पादरानी ज्ञानो को उत्तर देने ही लगी थी कि पादरी अन्दर आया। उसे देखकर पादरानी भी अन्दर चली गई।

ज्ञानो सोचने लगी कि बैठक में पादरी जिस आदमी के साथ बात कर रहा था शायद वह काली न हो। अपनी इस आशंका पर वह घबरा गई और जब पादरानी वापस आई तो ज्ञानो ने बेचैनी से पूछा

पादरी जी किस के साथ बात कर रहे हैं ?'

'तुम्हारे मुहल्ले के काली नाम के साथ। उस पादरी जी से बहुत प्रेम है।'

ज्ञानो चुप रही और जब पादरी की आवाज सुनाई दी तो वह उस ओर झुककर उनकी बातें सुनने लगी।

पादरी काली से कह रहा था
'यह लो।'
'पादरी जी, मैं यह रकम आपको जल्दी से जल्दी लौटा दूंगा।'
'नहीं, मुझे मत लौटाना। यीसू मसीह को ही लौटाना जो यह रकम तुम्हें दे रहा है।' पादरी ने थोड़ी ऊँची आवाज़ में कहा
'दे तो आप रहे हैं।'
'मैं तो सिर्फ ज़रिया हूं। देने वाला वही है।'
'पर मुझे वह मिलेगा कहां?'
'जब तुम उस पर ईमान ले आओगे, उसके कदमों में गिर जाओगे तो वह तुम्हें अपने आप ही मिल जाएगा। वह अपने भक्तों को फौरन पहचान लेता है।'
थोड़ी देर तक बैठक में खामोशी रही और जब काली ने उठते हुए पादरी को वन्दगी की तो ज्ञानो चौंक गई। पादरी ने बैठक का दरवाज़ा बन्द किया तो ज्ञानो भी उठ बैठी और किसी से कुछ कहे बिना और पादरानी की आवाज़ को अनसुना करती हुई गली में भाग गई।
गिरजाघर के पास उसने काली को जा लिया और उसे गली के मोड़ की ओट में रोककर बोली
'पादरी से पैसे लेकर आए हो शहर जाने के लिए?'
काली उसके चेहरे पर गुस्सा देखकर चकित-सा रह गया और हां में सिर हिला दिया।
'अभी वापस करके आओ। घर घर जाकर पैसे मांगते हुए तुम्हें शरम नहीं आती। जा अभी वापस करके आ।'
'ज्ञानो, अगर किसी ने हमें बातें करते हुए देख लिया तो दोनों की शामत आ जाएगी।'
'देखा जाएगा। पहले तू पैसे वापस कर।'
'कल वापस कर दूंगा। अभी लेकर आया हूं। उल्टे पांव वापस करने जाऊंगा तो पादरी क्या कहेगा।'
'जो मर्ज़ी कहे लेकिन तुम अभी वापस करके आओ। मैं यहीं खड़ी हूं।' ज्ञानो ने दृढ़ स्वर में कहा।
काली गहन [illegible] भाव में डूबा हुआ पादरी के मकान की ओर मुड़ गया। ज्ञानो गली में जब किसी के आने जाने की आहट सुनती तो [illegible] हो जाती और फिर गली की नुक्कड़ में आगे बढ़कर देखने लगती कि काली आ रहा है या नहीं।

थाडी ही दर के बाद काली वापस आ गया। ज्ञानो ने बहुत बेचनी स पूछा

दे आए रुपये ?'

'हू। अब तुम जाओ।'

'जाती हूँ। रात का आऊँगी। तुम्हारी अच्छी तरह खबर लूगी।'

ज्ञानो ने मुसकराते हुए कहा और तज-तज कदम उठाती हुई काली से आगे निकल गई। उसकी एक मुसकराहट से काली सारे दिन की परेशानी भूल गया, और बेसब्री से रात का इतज़ार करने लगा।

३४

शाम तक काली दिन की तल्खी भूल गया। वह बसब्री से रात पडने का इतज़ार कर रहा था। अभी दिन बाकी ही था कि काली ने रोटी पका ली। जल्दबाजी म उसने अपनी उँगलिया झुलसा ली और उसके दाएँ हाथ पर छाला पड गया।

घर पर बठे बठे समय बहुत धीरे धीरे गुजरने लगा तो काली बाहर आ गया। वह चो की आधी सूखी और आधी गीली रेत पर दूर तक चलता गया। कथाले को जाने वाले रास्ते पर पहुचकर वह चो के किनारे ऊँचे बध पर चढ गया। चारो ओर मक्की की छोटी छोटी फसल शाम की मद पवन म लहलहा रही थी। डूबते सूरज की सुनहरी किरणो ने उसे बहुत ही सुदर रूप दे दिया था। सामने कथाले गाव का हल्का हल्का शोर सुनाई दे रहा था। बाबुक गाव की ओर जाने वाली पगडडी पर कुछ लोग तज तज कदम उठाते हुए जा रहे थे। चो म भसें बडे-बडे निशान छोडती हुई गाव की ओर जा रही थी।

चो के नशेब के निकट टाली के वृक्षो के झुड म पक्षियों का ऊँचा शोर सुन कर महसूस होता था जसे उनम सख्त झगडा हो रहा हो। झुड से परे खाली खेतो म मोर पख फलाकर नाच रहे थ। आकाश पर डूबती किरणो की केवल लालिमा ही रह गई तो मदिर म शख की ऊची आवाज गूजी और उसके साथ ही घटियाँ बजने लगी। इसके पश्चात अधकार धुएँ की तरह फलने लगा तो

काली के मन में एक अजीब सा कौतूहल उठना आरम्भ हो गया। वह चाहता था कि रात एकदम ही बहुत गहरी हो जाए ताकि वह ज्ञानो की प्रतीक्षा में अपने द्वार खुले छोड़ दे।

ज्ञानो के बारे में सोचकर काली के मन में गुदगुदी सी होने लगी। वह सोचने लगा कि यदि ज्ञानो उसे मना न करती तो वह पादरी से पास लेकर सुबह की गाड़ी से गांव छोड़ गया होता। ज्ञानो उसे क्यों नहीं गांव से जाने देना चाहती? इस प्रश्न के कई उत्तर उसके मन में आए परन्तु उसकी तसल्ली किसी से भी न हुई। बहुत सोचने के बाद उसके मन में केवल एक ही बात रह गई कि अंधेरा गहरा होने पर लोग सो जाएंगे और ज्ञानो उसके पास आएगी।

जब वृक्षों के झुंड का आकार अंधेरे में खो गया और उसमें सांसां की आवाज उठने लगी तो काली गांव की ओर चल पड़ा। वह अभी गांव से दूर ही था कि उसे डाक्टर बिशनदास और ओमा मिल गए। काली को देखकर डाक्टर प्रसन्नभाव से बोला,

'सुना काली, तू कहां रहता है। कभी कभी तो ऐसे छिप जाता है जैसे सर्दियों में मक्खियां।'

'डाक्टर जी, मैं तो यहीं हूं, आप ही नहीं मिलते।'

'मैंने सुना है चौधरी हरनाम सिंह ने तुम्हें बहुत बुरा भला कहा और डराया धमकाया है।'

'वह गांव का चौधरी और मैं ठहरा चमार। वह चमारों को यूं समझता है जैसे वे उसके खरीदे हुए दास हों।' काली ने कुछ उत्तेजित स्वर में कहा।

'काली दास, दरअसल सारी खराबी कपिटलिस्ट सिस्टम यानी पूंजीवाद की है। हमारे देश में तो हालत और भी गम्भीर है। यहां अभी पूंजीवाद भी पूरी तरह नहीं आया। दुनिया समाजवाद की तरफ बढ़ रही है और हम अभी तक जागीरदारी के चक्कर में फंसे हुए हैं।' डाक्टर ने दार्शनिक भाव से कहा और कुछ क्षणों के लिए चुप रह कर बोला,

'काली, यह हालत ज्यादा देर तक नहीं रह सकती। इन्कलाब आएगा जरूर आएगा और पूंजीपतियों, जागीरदारों और उनके एजेन्टों का खात्मा कर देगा, उनका नाम निशान मिटा देगा। फिर हर आदमी आजाद होगा। कोई चौधरी नहीं रहेगा और कोई कमीन नहीं होगा। अमीर और गरीब का फर्क मिट जाएगा। पैदावार के साधन सभी की मल्कियत होंगे। हर आदमी अपनी तौफीक के मुताबिक काम करेगा और अपनी जरूरत के मुताबिक पा लेगा।'

'इन्कलाब कब आएगा?' काली ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

देखा, जल्दी ही आएगा। कई देशों में आ चुका, कई में आ रहा है और कई में आने वाला है।' डाक्टर ने जोश से कहा।

काली ने कोशिश की कि इन्कलाब के बारे में सोचे कि वह कैसा होगा, किधर से आएगा और कैसे आएगा लेकिन जब वह असफल रहा तो डाक्टर से बोला

'डाक्टर जी, इन्कलाब में क्या होगा ?'

बहुत उथल पुथल होगी। पूंजीवाद और जागीरदारी सिस्टम इन्कलाब को असफल बनाने की कोशिश करेंगे। अपने एजेंटों की मारफत इन्कलाबी ताकतों में फूट डालेंगे, उन पर हमले करेंगे, खून-खराबा होगा, खून की नदियाँ बहेंगी, हजारों लोग मरेंगे।

उसकी बात सुनकर काली उदास हो गया और सोचता हुआ बोला

'पादरी जी भी कहता है कि इन्कलाब आ रहा है। वह कहता है कि इन्कलाब सिर्फ एक आदमी लाया है। वह सारी दुनिया के पाप अपने सिर पर लेकर स्वयं सूली पर चढ़ गया।

पादरी पाखण्डी है। वह मजहब की अफीम पिलाता है। वह लोगों को फर्जी किस्से कहानियाँ सुनाता है लेकिन मैं साइंटिफिक बातें करता हूं।' डाक्टर ने घृणा से कहा।

काली चुप हो गया और अपनी सोच में डूबा हुआ उनसे आगे निकल गया तो ओमा बोला

'काली, तू तो हल से छूटे हुए भैंसे की तरह भाग रहा है।' काली मुसकरा दिया और अपने कदमों को रोककर उनके साथ चलने लगा।

डाक्टर और ओमा अपने मुहल्ले की ओर मुड़ गए तो काली छलांगें लगाता हुआ अपनी गली में आ गया। वह बहुत खुश था और उसका अंग-अंग ऐंठ रहा था। वह तेज-तेज कदम उठाता हुआ अंधेरी गली में अपने घर की ओर बढ़ गया।

काली कभी खाट पर लेट जाता और कभी टहलना शुरू कर देता। मामूली सी सरसराहट पर उसके कान खड़े हो जाते और वह सावधानी से द्वार की ओर देखता। पहरेदार गांव के दो चक्कर लगा चुका था। कुत्ते भौंकते भौंकते थक कर सो गए थे परन्तु ज्ञानो अभी तक नहीं आई थी।

जब ज्ञानो ने दरवाजा खटखटाया तो उसका उत्साह खत्म हो चुका था। वह अनमना सा उठा और दरवाजा खोल दिया। ज्ञानो अन्दर आ गई तो वह उसके पास आ खड़ा हुआ। ज्ञानो ने बहुत धीमे स्वर में कहा

दीया जला दो।

काली के मन म एक अजीब सा कौतूहल उठना आरम्भ हो गया। वह चाहता था कि रात एकदम ही बहुत गहरी हो जाए ताकि वह ज्ञानो की प्रतीक्षा म अपने द्वार खुले छोड दे।

ज्ञानो के बारे म सोचकर काली के मन म गुदगुदी सी होने लगी। वह सोचने लगा कि यदि ज्ञानो उसे मना न करती तो वह चौधरी स पैसे लेकर सुबह की गाडी स गाँव छोड गया होता। ज्ञानो उसे क्या नही गाँव स जाने देना चहती ? इस प्रश्न के कई उत्तर उसके मन म आए परन्तु उसकी तसल्ली किसी स भी न हुई। बहुत सोचने के बाद उसके मन म केवल एक ही बात रह गई कि अधेरा गहरा होने पर लोग सो जाएँगे और ज्ञानो उसके पास आएगी।

जब वृक्षो के झुड का आकार अधेरे म खो गया और उसम सा सा की आवाज उठने लगी तो काली गाव की ओर चल पडा। वह अभी गाव से दूर ही था कि उसे डाक्टर बिशनदास और ओमा मिल गए। काली को देखकर डाक्टर प्रसन्नभाव से बोला

'सुना काली तू कहाँ रहता है। कभी कभी तो ऐसे छिप जाता है जसे सर्दियो म मक्खियाँ।'

डाक्टर जी मैं तो यहा हू, आप ही नही मिलते।

मैंने सुना है चौधरी हरनाम सिंह ने तुम्हे बहुत बुरा भला कहा और डराया धमकाया है।

वह गाव का चौधरी और मैं ठहरा चमार। वह चमारो को यू समझता ह जसे वे उसके खरीदे हुए दास हो।' काली ने कुछ उत्तेजित स्वर म कहा।

'काली दास दरअसल सारी खराबी कपिलिस्ट सिस्टम यानी पूजीवाद का है। हमारे देश म तो हालत और भी गम्भीर है। यहा अभी पूजीवाद भी पूरी तरह नही आया। दुनिया समाजवाद की तरफ बढ रही है और हम अभी तक जागीरदारी के चक्कर म फसे हुए हैं। डाक्टर ने दार्शनिक भाव से कहा और कुछ क्षणो के लिए चुप रह कर बोला

काली, यह हालत ज्यादा देर तक नही रह सकती। इन्कलाब आएगा जरूर आएगा और पूँजीपतियो जागीरदारो और उनके एजेंटो को खत्म कर देगा, उनका नाम निशान मिटा देगा। फिर हर आदमी आजाद होगा। कोई चौधरी नही रहेगा और कोई कामा नही होगा। अमीर और गरीब का फर्क मिट जाएगा। पदावार क साधन सांझी मल्कियत होगे। हर आदमी अपनी तौफीक क मुताबिक काम करेगा और अपने खच के मुताबिक पसे लेगा।'

इन्कलाब कब आएगा ?' काली न बहुत उत्सुकता स पूछा।

'देखा, जल्दी ही आएगा। वह देशा म आ चुका, कई म आ रहा है और कई म आने वाला है।' डाक्टर ने जोश स कहा।

काली न कोशिश की कि इन्कलाब के बारे मे सोचे कि वह कसा होगा, किधर स आएगा और कस आएगा लेकिन जब वह असफल रहा तो डाक्टर से बोला

डाक्टर जी, इन्कलाब म क्या होगा ?

बहुत उथल पुथल होगी। पूजीवाद और जागीरदारी सिस्टम इन्कलाब को असफल बनाने की कोशिश करेंगे। अपन एजेन्टा की मारफत इन्कलाबी ताकतो म फूट डालेंगे, उन पर हमले करेंगे, खून खराबा होगा, खून की नदिया बहगी, हजारा लाग मरेंगे।

उसकी बात सुनकर काली उदास हो गया और सोचता हुआ बोला

'पादरी जी भी कहता है कि इन्कलाब आ रहा है। वह कहता है कि इन्कलाब सिफ एक आदमी लाया है। वह सारी दुनिया के पाप अपन सिर पर लेकर स्वय सूली पर चढ गया।

पादरी पाखण्डी है। वह मजहब की अफीम पिलाता है। वह लोगा को फर्जी किस्से कहानिया सुनाता है लेकिन मैं साइटिफिक बात करता हू।' डाक्टर न घृणा से कहा।

काली चुप हो गया और अपनी सोच म डूबा हुआ उनसे आगे निकल गया तो ओमा बोला

'काली तू तो हल स छूटे हुए भैंस की तरह भाग रहा है।' काली मुसकरा दिया और अपने कदमा को रोककर उनके साथ चलने लगा।

डाक्टर और ओमा अपने मुहल्ले की ओर मुड गए तो काली छलाँगें लगाता हुआ अपनी गली म आ गया। वह बहुत खुश था और उसका अग-अग एठ रहा था। वह तज-तज कदम उठाता हुआ अँधेरी गली म अपन घर की ओर बढ गया।

काली कभी खाट पर लेट जाता और कभी टहलना शुरू कर दता। मामूली सी सरसराहट पर उसके कान खडे हो जाते और वह सावधानी से द्वार की ओर चलता। पहरेदार गाव के दो चक्कर लगा चुका था। कुत्ते भौंकते भौंकते थक कर सो गए थे परतु ज्ञानो अभी तक नहीं आई थी।

जब ज्ञानो ने दरवाजा खटखटाया तो उसका उत्साह खत्म हो चुका था। वह अनमना सा उठा और दरवाजा खोल दिया। ज्ञानो अदर आ गई तो वह उसके पास आ खडा हुआ। ज्ञानो न बहुत धीमे स्वर म कहा

दीया जला दो।'

काली के मन में एक अजीब-सा कौतूहल उठना आरम्भ हो गया। वह चाहता था कि रात एकदम ही बहुत गहरी हो जाए ताकि वह ज्ञानो की प्रतीक्षा में अपने द्वार खुले छोड़ दे।

ज्ञानो के बारे में सोचकर काली के मन में गुदगुदी-सी होने लगी। वह सोचने लगा कि यदि ज्ञानो उसे मना न करती तो वह पादरी से पैसे लेकर सुबह की गाड़ी से गांव छोड़ गया होता। ज्ञानो उसे क्या नहीं गांव से जाने देना चाहती? इस प्रश्न के कई उत्तर उसके मन में आए परन्तु उसकी तसल्ली किसी से भी न हुई। बहुत सोचने के बाद उसके मन में केवल एक ही बात रह गई कि अंधेरा गहरा होने पर लोग सो जाएंगे और ज्ञानो उसके पास आएगी।

जब वृक्षों के झुंड का आकार अंधेरे में खो गया और उसमें सांसों की आवाज़ उठने लगी तो काली गांव की ओर चल पड़ा। वह अभी गांव से दूर ही था कि उसे डाक्टर बिशनदास और जोमा मिल गए। काली को देखकर डाक्टर प्रसन्नभाव से बोला

सुना काली, तू कहां रहता है। कभी कभी तो ऐसे छिप जाता है जैसे सर्दियों में मक्खियां।

'डाक्टर जी मैं तो यहां हूं, आप ही नहीं मिलते।

मैंने सुना है चौधरी हरनाम सिंह ने तुम्हें बहुत बुरा भला कहा और डराया धमकाया है।

वह गांव का चौधरी और मैं ठहरा चमार। वह चमारों को यूं समझता है जैसे वे उसके खरीदे हुए दास हों। काली ने कुछ उत्तेजित स्वर में कहा।

'काली दास दरअसल सारी खराबी कपिटलिस्ट सिस्टम यानी पूंजीवाद की है। हमारे देश में तो हालत और भी गम्भीर है। यहां अभी पूंजीवाद भी पूरी तरह नहीं आया। दुनिया समाजवाद की तरफ बढ़ रही है और हम अभी तक जागीरदारी के चक्कर में फंसे हुए हैं। डाक्टर ने दार्शनिक भाव से कहा और कुछ क्षणों के लिए चुप रहकर बोला

काली, यह हालत ज़्यादा देर तक नहीं रह सकती। इन्कलाब आएगा ज़रूर आएगा और पूंजीपतियों जागीरदारों और उनके एजेंटों को खत्म कर देगा, उनका नाम निशान मिटा देगा। फिर हर आदमी आज़ाद होगा। कोई चौधरी नहीं रहेगा और कोई कामा नहीं होगा। अमीर और गरीब का फर्क मिट जाएगा। पैदावार के साधन सांझी मल्कियत होंगे। हर आदमी अपनी तौफीक के मुताबिक काम करेगा और अपने खर्च के मुताबिक पैसे लेगा।

'इन्कलाब कब आएगा?' काली ने बहुत उत्सुकता से पूछा।

'दखा, जल्दी ही आएगा। कई देशा म आ चुका, कई म आ रहा है और कई म आने वाला है।' डाक्टर ने जोश स कहा।

काली न कोशिश की कि इन्कलाब के बारे म सोचे कि वह कसा होगा, किधर स आएगा और कैस आएगा लेकिन जब वह असफल रहा तो डाक्टर से बोला

'डाक्टर जी इकलाब म क्या होगा ?

'बहुत उथल पुथल होगी। पूजीवाद और जागीरदारी सिस्टम इन्कलाब को असफल बनाने की कोशिश करेंगे। अपने एजेन्टा की मारफत इन्कलाबी ताकता म फूट डालेंगे, उन पर हमल करेंग, खून खराबा होगा, खून की नदिया बहगी, हजारा लोग मरेंगे।

उसकी बात सुनकर काली उदास हो गया और सोचता हुआ बोला

पादरी जी भी कहता है कि इन्कलाब आ रहा है। वह कहता है कि इन्कलाब सिफ एक आदमी लाया है। वह सारी दुनिया के पाप अपने सिर पर लेकर स्वय सूली पर चढ गया।

'पादरी पाखण्डी है। वह मजहब की अफीम पिलाता है। वह लोगा को फर्जी किस्से कहानिया सुनाता है लेकिन मैं साइटिफिक बातें करता हू।' डाक्टर न घणा से कहा।

काली चुप हो गया और अपनी सोच म डूबा हुआ उनमे आग निकल गया तो ओमा बोला

'काली तू तो हल से छूटे हुए भसे की तरह भाग रहा है।' काली मुसकरा दिया और अपन कदमा को रोककर उनके साथ चलन लगा।

डाक्टर और ओमा अपन मुहल्ले की ओर मुड गए तो काली छलागें लगाता हुआ अपनी गली म आ गया। वह बहुत खुश था और उसका अग-अग एठ रहा था। वह तज-तेज कदम उठाता हुआ अँधेरी गली म अपन घर की ओर बढ गया।

काली कभी खाट पर लेट जाता और कभी टहलना शुरु कर देता। मामूली सी सरसराहट पर उसके कान खडे हो जाते और वह सावधानी से द्वार की ओर बढता। पहरेदार गाव के दो चक्कर लगा चुका था। कुत्ते भौंकते भौंकते थक कर सो गए थ परन्तु ज्ञानो अभी तक नही आई थी।

जब ज्ञानो ने दरवाजा खटखटाया तो उसका उत्साह खत्म हो चुका था। वह अनमना सा उठा और दरवाजा खोल दिया। ज्ञानो अदर आ गई तो वह उसके पास आ खडा हुआ। ज्ञानो ने बहुत धीम स्वर म कहा

दीया जला दो।

'क्या ?'

'यह मैं बताऊँगी। पहले दीया जलाओ।'

काली ने दीया जलाने के लिए माचिस की तीली जलाई तो ज्ञानो के कान में पड़े टूम और उन पर बंधे जिम्पर का ध्यान कर बोली

'रहने दो दीया।'

और फिर बहुत ही उदास स्वर में बोली

'कर ली तैयारी ?'

'कैसी तैयारी ?'

'शहर जाने की।'

काली ने कोई उत्तर नहीं दिया। ज्ञानो अपनी जगह पर खड़ी सिसकियाँ लेती हुई रोने लगी। काली कुछ समय तक तो चुपचाप खड़ा रहा फिर उसके पास जाकर उसका सिर थपथपाने लगा। ज्ञानो उसका हाथ झटकती हुई दरवाज़े की ओर बढ़ गई। काली ने उसका रास्ता रोक लिया तो वह रोती हुई बोली

'तुम तो शहर जा रहे हो मेरी राह क्या रोकते हो ?'

'नहीं जा रहा नहीं जाऊँगा।' काली ने भरी हुई आवाज़ में कहा।

'अपनी मर्ज़ी से जा रहे हो या चौधरी के कहने पर ?' ज्ञानो ने पूछा।

'रोज़ की बक बक झक झक से तंग आकर सोचा था कि गाँव छोड़ दूँ। चौधरी ने तो यह कहा था कि गाँव में रहना है तो शरीफ़ों की तरह रहो।'

'और क्या कहा उसने ?'

'बहुत सी बातें कही थीं। सब याद नहीं रहीं।'

'हूँ।' ज्ञानो ने लम्बी साँस छोड़ी और फिर तीखी आवाज़ में बोली

'और तुमने गाँव छोड़ देने का फ़ैसला कर लिया। इसलिए पादरी से पैसे माँगने चले गए।'

काली चुप रहा तो ज्ञानो कहने लगी

'बोलते क्यों नहीं ?'

काली फिर भी चुप रहा तो वह क्रुद्ध स्वर में बोली

'मैं तो समझती थी कि तू जिगरे वाला आदमी है। तू आसानी से दबने वाला नहीं है। तेरे से गली के कुत्ते अच्छे हैं जो मारने पर आगे से घूरते तो हैं।'

ज्ञानो फूट फूट कर रोने लगी। काली लज्जित सा उसके सामने खड़ा रहा। जब रो रोकर ज्ञानो का मन हल्का हो गया तो वह काली से बोली

'सुना है कि मर्द तो मिट्टी का भी जोरावर होता है। तू तो तगड़ा है।'

काली शर्म से ज़मीन में गड़ने लगा। नानो उसे बाज़ू से पकड़कर झँझोड़ने लगी तो उसकी हल्की सी चीख निकल गई।

'क्या हुआ।' नानो घबराई सी बोली।

'बाज़ू जल गया, छाला पड़ गया है।'

'कैसे ?'

'रोटी पकाते हुए।

'हूं।' नानो ने उसका बाज़ू पकड़कर छाला टटोला और फूँकें मारती हुई बोली

'अब गाँव छोड़कर तो नहीं जाओगे ?'

नहीं जाऊँगा। जब तक तू गाँव में है मैं यहीं रहूंगा। जब तू चली जाएगी तो फिर सोचूंगा।

'खाओ मेरी सौगंध।

'तेरी सौगंध।'

काली ने नानो के सिर पर हाथ रखते हुए कहा।

इसके बाद वे बहुत देर तक बातें करते रहे। उनकी कानाफूसी कभी-कभी दबी-दबी हँसी में बदल जाती।

वे समय से बेअंदाज बातों में मग्न थे कि मुहल्ले में एक औरत की चीख गूंज उठी। वे दोनों चुप हो गए और उनका ध्यान उस चीख की ओर चला गया। शीघ्र ही एक मर्द ने कहा

क्या हुआ '

कुछ सुरक सुरक कर रहा था। शायद साँप था।' स्त्री ने बहुत घबराई आवाज़ में कहा।

नानो घबराकर उठ खड़ी हुई।

'बस घबरा गई हो ?' काली ने हँसते हुए कहा।

'तुम हौंसला रखोगे तो मैं कभी नहीं घबराऊँगी।

मुहल्ले में साँप निकलने की खबर से कई लोग जाग उठे। काली चिन्तित स्वर में बोला

'अब घर कैसे जाओगी ?

'चली जाऊँगी।

नानो ने दरवाज़ा खोल दिया और गली में चारों ओर देखकर अँधेरे में खो गई।

काली लाजी उठकर बन्तू के घर की ओर बढ़ गया। आंगन में ... में बैठकर ज्ञानो बोली

मैं बन्तू के घर से, मंगता मांग लिया है।

तू गोद में ... ही बड़ी पहुँच गई थी। ... में बहुत और ज्ञानो गोद की खोराई और मरजाई का मन ... ही ... अन्दर से मुस्काने लगी। काली के बातें सुनकर मुस्कराता दिन ... गली में इतना ... पर कदमों बढ़ाने लगा।

३५

आषाढ़ के बाद सावन आया और गाँव में हरियाली पैदा होने लगी। गली की जगह-जगह घास उग आई। उसके पत्तों पर शरीर पकने ... गली नालियाँ धुल कर बिलकुल बंद हो गई। गली के दोनों किनारे तलवार की धार की तरह तेज हो गए।

सावन के सात दिन निकल चुके थे लेकिन एक बार भी वर्षा नहीं हुई थी। सारा दिन कड़ाके की धूप पड़ती। नालियों के साथ रुका हुआ पानी सड़ने लगा और उस पर मच्छरों के दल के दल पैदा हो गए।

चमादड़ी की स्त्रियाँ दिन ढले गर्मी कम होने पर मुहल्ले के बीच में बड़ी के नीचे आ बैठतीं और चुगली निन्दा, हँसी मजाक, लड़ाई झगड़े और दुख सुख के वृत्तान्त के बाद अपने-अपने घरों को लौट जातीं।

सावन के महीने के आठवें दिन धूप बहुत ही तेज और हवा बंद थी। अधेड़ आयु की स्त्रियाँ अपनी कमीज़ें उतारकर और अपने धड़ पर कोई कपड़ा लपेटे हथपंखे की डंडी से पीठ को खुजातीं कभी परमात्मा से दया की भीख माँगतीं और कभी उसे गालियाँ देने लगतीं। चन्न हुकमा तो बहुत ही परेशान थी। उसका सारा शरीर पित्त से भरा हुआ था और वह मोटे बान की बुनी हुई खाट से पीठ रगड़ती हुई परमात्मा को गालियाँ दे रही थी। प्रीतो उसे टोकती हुई बोली

'बेब, रब का नाम ले, क्यों अपनी जबान खराब कर रही है। सावन के गीत

गा ताकि वारिश पड़े और तरी पित्त कुछ कम हो।

'मुझे तो आता नहीं तू ही सावन के गीत गा।' वन हुक्मा ने बाएँ हाथ से बाया बाजू खुजाते हुए कहा।

मुझे तो एक ही गीत आता है। कहकर प्रीतो मन्द स्वर में गाने लगी।

'सावन खीर ना खादिया

क्या जम्मया अपराधिया

घर न होव अपने

ते कित्थो खावा पापा।'

(सावन में खीर नहीं खाई तो अपराधी तूने जन्म क्या लिया। अपने घर में खीर न हो तो पापी—बता कहा से खाऊँ।)

सच कहती हो प्रीता। खीर तो सपना ही हो गई है। पहले जब लोग दूध पूत बचते नहीं थे तो चौधरियों के घर से गरीब गरबों को भी छमाही साल में पाओ आध पाओ दूध मिल जाता था। दूध नहीं मिलता था तो खरबूजा तरबूजा के बीज पीसकर उनका दूध बनाकर खीर पका लेते थे।'

वन हुक्मा ने अफसोस भरे लहजे में कहा और एकदम चुप हो गई जैसे उसके मुँह में पानी भर आया था।

चाची प्रीतो, तू जब भी बात करती है, खाने-पीने की करती है।' प्रसिन्नी ने हँसते हुए कहा।

भूखा आदमी जब भी बात करेगा तो रोटियों ही की करेगा।' फिर वह होठों पर जबान फेरती हुई बोली

मेरा जी चाहता है कि एक बार कटोरा भर कर खीर खाऊँ।'

श्राध आ रहे हैं पण्डित संतराम से बात कर ले। एक बार उसके चौबारे में झाड़ू लगा आ खीर भी खिलाएगा और दखना (दक्षिणा) भी देगा।'

'मोए के सिर पर झाड़ू न मारूँगी।

प्रसिन्नी की बात और प्रीतो का उत्तर सुनकर स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

प्रसिन्नी पण्डित संत राम और बग्गे की माँ रक्खो का किस्सा लहक लहक कर सुनाने लगी तो स्त्रियाँ हँसी के मारे लोटपोट हो गई। प्रसिन्नी संत राम की नक्ल उतारती हुई नाक में से आवाजें निकालती हुई बोली

'रक्खिए। मेरे चौबारे में झाड़ू लगा दे मैं तुम्हें दो आने के पैसे दूंगा।

जब रक्खो सीढ़ियाँ चढ़ गई तो संत राम भी पीछे-पीछे चला गया और उसकी कलाई पकड़कर बोला

'रखिए तू मरा काम र र " मैं तुम्हे नया गूट से दूंगा और साथ पसे भी दूंगा।

यह सुनकर स्त्रियाँ हँसी म मारे बर यान लगी। प्रीतो पर थो दबाती और हाँपती हुई बहुत कठिनाई स बोली

प्रभि ाए वस मर । मरा तो हँसत हँसत दम घुटने लगा है।

लेकिन प्रसिन्नी अपनी हँसी को रोकती हुई बोली

'रखवी सत राम को झाडू स मारती और उसका दाढी-न्ना करती हुई नीचे ले आई।

प्रसिन्नी यह कहकर प्रीतो स कहन लगी

'चाची प्रीतो तू एक बार फरमायश करके देख तो सही वह तेरे लिए खीर की बाल्टी ला देगा। दाना मिलकर खाना और सावन गाना।

इस बात पर फिर बहुत ऊँचे और लम्बे ठहाके उठे। प्रीतो अपनी सास ठीक करती हुई बोली

मोए का पाखण्ड देखो। बस हम दूर स ही देखकर थू थू और दुर-दुर करना शुरू कर देता है और उसका काम ।

प्रीतो की बाकी बात ठहाका म डूब गई।

'बडा काया आदमी है। उसकी छूत छात पानी और रोटी तक ही है। एक बार उसके हाथ म दूध की गडवी थी। मरा जी चाहा कि दूध मिल जाए तो चाय बनाकर पियू। मैंने जान बूझकर उसे छू दिया। उसन मुझे बहुत ज्यादा भला-बुरा कहा। मैं चुपचाप खडी सब कुछ सुनती रही इस उमीद पर कि वह दूध फकने लगेगा तो मिन्नत करके कहूँगी कि मुझे दे दे। लेकिन उसने दूध की गडवी मन्दिर के दरवाज़े पर रख दी और अन्दर से घास का तिनका लाकर उसम डाल दिया और फिर दूध उठाकर घर चल गया। प्रसिन्नी यह कह कर फिर बोली

वह घास के तिनके से हर चीज़ शुद्ध कर लेता है। तिनके से शुद्ध न हो तो गल्ल मार कर शुद्ध कर लेता है।

प्रीतो नाक सिकोडती हुई बोली

'बद से बदनाम बुरा। मेरे ख्याल म सत राम ऐसा आदमी नही है।

अगर तुम्हे यकीन नही तो तू उसके पास जाकर देख ले।

प्रसिन्नी ने प्रीतो की चुटकी लेते हुए कहा।

क्या तू हो आई है ?

प्रीता ने पूछा। व सब खिलखिलाकर हँसने लगी।

तुम वहुत वशम हो।'

थव हुस्मा ा उठन हुग यहा और टहारा ये वीच अय स्त्रियाँ भी चली गइ।

३६

मुहल्ले म अभी काफी चहल-पहल थी और चूल्हे गम थे जब पुर्वा चलने लगा और आकाश म गहर काले रग की घटा उठ आई। वषा आने की खुशी म बच्चे तालिया वजाते और शोर मचाते हुए गलियो म दौडने लगे। स्त्रियाँ छतो पर जाकर चलती घटा को देखने लगी। हवा के झोंके प्रति क्षण ठडे होने लगे। थोडी ही देर म बादल सारे आकाश पर छा गए और एकदम अधेरा हो गया। फिर मोटे मोटे छीटे गिरने लगे और देखते ही देखते वर्षा का शोर इतना बढ गया जस बाढ आ रही हो। गर्मी और उमस के सताए हुए लोगो ने सुख का सास लिया और दरवाजे खोलकर वर्षा का नजारा करते हुए सो गए।

सारी रात वषा होती रही। कभी कभी वषा थोडी देर के लिए रुक जाती जस थकावट दूर करने के लिए आराम कर रही हो और फिर जोर का छराटा आता। सब लोग बहुत देर तक खाटो पर लेटे रहे क्योकि बादलो की घन गज और वषा म किसी को समय का अनुमान नही रहा था। गली म पानी भर गया। छूने पर हर चीज गीली मालूम होने लगी। भीगने से कच्चे मकानो का रग बदल गया।

दिन चढे जब वर्षा कुछ थमी तो सारा गाव खेतो म आ गया। चो म टखनो तक गहरा पानी बह रहा था। बच्चे बहते पानी म छलागें मारते हुए नहा रहे थे। बडे भी बहते चो को देखने गए। चो के पानी को देखकर एक ने कहा

यह तो खेतो का पानी है। पहाडी पानी दोपहर तक पहुचेगा।'

धुले हुए वृक्षो नहाई हुई फसल की ताजगी, चो म पानी को देखकर लोगो के मन खिल उठे लेकिन साथ ही आकाश म घने बादलो और उनकी

धीमी धीमी घा गज सुनकर उनका हल्का सा भय भी महसूस होने लगा।

आधा घंटा बंद रहने के बाद बहुत ज़ोर की वर्षा आरम्भ हो गई। चमादड़ी की गलियों में गाँव के बड़े रास्ते में और चो में पानी चलने लगा। चमादड़ी नशेब में थी इसलिए वहाँ पानी बहुत ही तेज़ी से बह रहा था क्योंकि बाकी गाँव का पानी चो में जाने की बजाय अब यहीं जमा हो रहा था।

दोपहर के बाद वर्षा फिर बन्द हो गई और आकाश में कहीं-कहीं बादल फट गए। चो में पहाड़ी पानी आना शुरू हो गया। चमादड़ी की गलियों में टखने तक और बाहर कुएँ के पास कमर तक पानी था। सब लोग पानी में छप छप करते चो के किनारे जमा हो गए। पीले रंग का गहरा पानी काफी तेज़ी से बह रहा था और उसकी लहरों पर मटमैली झाग के साथ साथ वृक्षों की टहनियाँ तरकंडों के छप्पर, गले सड़े आम और चीड़ के वृक्षों के छपेरे तर रहे थे। चो में पानी प्रति क्षण बढ़ रहा था और पूर्व उत्तर में शिवालिक की पहाड़ियों पर अब भी ज़ोर की वर्षा हो रही थी।

शाम तक बादल फिर गहरे हो गए और जब लोग घरों को लौटे तो चमादड़ी के कुएँ के पास पानी कमर से भी ऊपर आ गया था और चो का मटमैला पानी गाँव के पानी में मिलने लगा था।

चमादड़ी में सब लोगों ने रात जागकर गुज़ारी क्योंकि गली का पानी घरों में भरने लगा था ऊपर से छतें टपक रही थीं। पानी को रोकने के लिए नालियाँ बंद कर दी गईं और दहलीज़ों के आगे मिट्टी की छोटी छोटी दीवारें खड़ी की गईं। सब लोग रातभर परमात्मा और ख़्वाजा पीर की मिन्नतें माँगते रहे।

प्रातः लोग घरों से बाहर निकले तो चमादड़ी का कुआँ कहीं नज़र नहीं आ रहा था। गली में खड़ा पानी घुटनों तक उठ आया था और कुएँ के आसपास छाती से भी ऊँचा था। कुएँ के पानी में डूब जाने पर चमादड़ी में कुहराम मच गया। सब के सामने प्रश्न था कि पीने के लिए पानी कहाँ से आएगा। चिन्ता-ग्रस्त लोग वर्षा में खड़े आपस में सलाह मशवरे करने लगे।

जाटों के दोनों कुएँ वहाँ से काफी दूर थे और वहाँ से चमारों को पानी भरना वर्जित था। मन्दिर का कुआँ सबसे नज़दीक था लेकिन वहाँ पण्डित सन्त राम था जो किसी चमार को कुएँ के निकट सौ गज़ तक फटकने नहीं देता था।

वे इसी सोच विचार में मग्न थे कि प्रीतो के लड़के अमरू ने खबर दी कि नन्द सिंह की लड़की पाशो पादरी के घर में नल से पानी लाई है। अमरू

अपनी वहन लच्छो को साथ लेकर पादरी के घर की ओर भाग गया । थोडी देर के वाद ही वे दोना दा घडे भर कर ले आए । इसके वाद दा-तीन स्त्रिया गइ और पानी भर लाइ । उनकी देखा-देखी पाच छ स्त्रिया घडे उठाकर पादरी के घर चली गइ । वे वापस आइ तो आठ-दस और वहा पहुच गइ ।

नल के इद गिद बहुत कीचड हो गया । चमादडी की स्त्रिया आपस म लडती-झगडती जोर-जोर स नल चला रही था । पादरानी द्वार म खडी उन की आर क्रोध भरी नजरा स देखती हुई चीख कर कहती

आहिस्ता चलाओ । इस तरह चलान स यह टूट जाएगा ।

परन्तु स्त्रिया उसकी डाट डपट से वपरवा दोनो हाथा से नल का हत्था ऊपर-नीचे उठा रही थी ।

पादरानी का क्रोध उस समय अपनी सब सीमाएँ पार कर गया जब एक औरत की गोद म बच्चे ने वही टट्टी कर दी ।

इसे साफ करो । इस घर म आदमी रहते है ।' पादरानी न नाक पर पल्लू रखते हुए बहुत क्रुद्ध स्वर मे कहा । उस स्त्री ने घवराकर हाथ से ही बच्चे की टट्टी साफ कर दी और जगह को पानी क दा घडे गिराकर धो दिया । पानी भरकर उसने बच्चे को धोए बिना ही गाद म ले लिया और चली गई ।

स्त्रिया पानी भरकर वाहर निकल गईं तो पादरानी अन्दर जाकर पादरी को बुला लाई और उसे नल के इद गिद कीचड दिखाकर वोली

अव मैं किसी को पानी नही भरने दूगी । इतनी तमीज नही है कि बच्चा को टट्टी यहा नही करानी चाहिए । पाव साफ करके अन्दर आना चाहिए । पादरानी ने झाडू उठाकर वह जगह धोई और अन्दर स साकल लगाकर वाली

अगर अव दरवाजा खोला तो मुझसे बुरा कोई नही होगा ।

अगर कोई आवाज देगा तो मैं दरवाजा खोलने से इन्कार नहा करूँगा ।' पादरी ने उत्तर दिया ।

पादरानी ने उसकी ओर बहुत क्रोध से देखा और बठक का दरवाजा खोलकर ड्योढी मे दरवाजे पर वाहर स ताला लगा दिया और वठक का दरवाजा अन्दर से वन्द कर कहने लगी

अव चुपचाप वठना । ये वसे ही गन्द लाग है कीचड म स होकर आत हैं अपने साथ पचास वीमारियाँ भी लात हागे ।

पादरानी ने कोई उत्तर नहीं दिया और चारपाई आंगन म सूखने वाले

दरवाज़े की ओर घसीटकर अजील पढ़न लगा।

थोड़ी ही देर के बाद दरवाज़े के सामने कई स्त्रिया की आपस म बातें करने की आवाज़ें आइ। ताला देखकर उन सब की जम साँस रुक गई थी। हाय हाय, यहाँ तो ताला लगा है। अब पानी कस लेंगे। मैं तो घड म जो थोड़ा बहुत पानी था वह भी गिरा आई हूँ।'

'व गए कहाँ ? एक स्त्री न ताले की ओर दखत हुए कहा।

कहाँ गए होग। पादरानी का दिमाग तो सातवें आसमान पर रहता है। बाहर से ताला लगाकर अन्दर बठी होगी।'

ये बातें सुनकर पादरी और भी ज्यादा ध्यान से अजील पढने लगा। पाद रानी उसके सिर पर खडी थी। कुछ दर के बाद स्त्रियाँ नामुराद और उदास-सी खाली घडे लेकर वापस चली गइ।

पादरी और पादरानी की इस हरकत पर चमादडी मे बहुत बचैनी फल गई। लोग अपनी बबसी पर क्रुद्ध उन्हे जी भरकर गालियाँ देत रहे और जब मन कुछ शान्त हो गया तो उनका ध्यान फिर इस प्रश्न की ओर गया कि पीन का पानी कहाँ से लेंगे। उन्होने सोचा कि चौधरिया की मिन्नत करके उन्हे कहे कि या तो कुए पर चढने दें या अपने-आप पानी भर दें। यह प्रस्ताव कई स्त्रिया न रखा परन्तु चौधरियो से ऐसा कहने का साहस किसी को नही हो रहा था।

बहुत सोच विचार के बाद उन्होंने निणय किया कि पण्डित सत राम की मिन्नत की जाए। ज़ोर की वर्षा के बावजूद कई स्त्रिया घडे उठाकर मन्दिर की ओर चली गइ। मन्दिर की चारदीवारी बहुत ऊँची थी। उसमें एक बडा और ऊँचा सदर दरवाज़ा था। सामने की दीवार से काफी पीछे एक और दीवार थी। इस दीवार म एक छोटा दरवाज़ा था जो दो ऊचे मन्दिरा के आँगन म खुलता था। मन्दिर की पीढी आँगन के मुकाबले मे बहुत ऊँची थी।

मन्दिर की दोना दीवारा के बीच म काफी खुली जगह थी जिसम बाइ ओर छोटी दीवार के पास कुआँ था। बाइ ओर एक दालान और पीछे दो कोठडियाँ थी जो कभी-कभार बारात घर के तौर पर और प्राय सत राम की गाएँ बाँधने और चाय रखने के काम आती थी। उसके साथ ही बाइ ओर पण्डित सत राम का घर था। वे बाहरी द्वार पर रुक गइ और पण्डित सत राम को आवाज़ें दी तो वह बाहर आ गया। मन्दिर के दरवाज़े पर भीड देख कर उसने अपना यज्ञोपवीत कान पर लपेट लिया और रुखाई स बोला

'यहा क्या आई हो ?'

'पण्डित जी हमारा कुआ पानी मे डूब गया ह। हमार पास पीन के पानी की एक बूद तक नही है। एक बुजुग स्त्री न हाथ जोडकर नम्रता से कहा।

तो तुम मन्दिर के कुएँ पर चढना चाहती हो ?' पण्डित सत न बहुत तल्ख लहजे म पूछा

नही पण्डित जी। उस स्त्री ने कान' को छूते हुए कहा।

'आप प्रकाश धेवर से कह दें कि वह कुएँ स पानी खीचकर हमारे घडे भर दे।

वह तुम्हारे बाप का नौकर है ? क्या वह तुम्हारा सेपी (कामा) है ?

'पण्डित जी, तो आप भर दो।' प्रसिन्नी ने कहा।

मैं तुम्हारा पानी भरूँ ?' पण्डित सत राम क्रोध से लाल-पीला हो गया और डडा उठाकर उनके पीछे दौडा।

स्त्रियाँ भय स भाग निकली। इस भगदड म कई नीच गिर गइ और उनके कच्च घडे टूट गए। पण्डित सत राम गालियाँ देता हुआ चमादडी की ओर मुडने वाले रास्त तक उनका पीछा करता रहा।

अपने मुहल्ले के निकट पहुचकर उन्हने दम लिया। उनके सास इतने फूले हुए थे कि मुह से बात नही निकल रही थी। क्रोध और बेबसी स कई स्त्रिया की आखो म आसू भर आए। उन्हान अपन ही परनाले स घडे भरे आर घर चली गइ।

दोपहर तक चो म पानी और भी चढ गया। गाव के चारो ओर पानी ही पानी था। बडे रास्त पर पानी स्कूल तक जा पहुचा। तकिया चो का एक हिस्सा बन गया और वहा भी पानी की लहरें उठने लगी था। तकिय के कोठे की छत बहुत पहले ही गिर चुकी थी। चो ने अब एक दीवार भी गिरा दी। बहत पानी का शोर गाव के दूसरे सिरे पर भी सुनाई दे रहा था।

दिन ढले सारा गाव फिर चो क किनार जमा था। पानी म लकडी का एक सुहागा, कई रस्से, मिट्टी का घडा और एक पजाली बहत जा रह थे।

चौधरी मुशी इन चीजा को बहुत ध्यान स दखकर बोला

किसी की हवेली बाबुद हो गई है।

लालू पहलवान न चिन्ता भरी हूँ म उत्तर दिया और बुझी हुइ आवाज म कहा

अगर पानी इसी तरह चढता रहा तो गाव का क्या बनेगा ?'

इसका उत्तर सबको मालूम था लेकिन कोई भी होठो पर नही लाना

चाहता था। चाहता था खवाजा पीर को बलि देने से शायद पानी थम जाए।

लालू पहलवान ने सुझाव दिया। चौधरी मुंशी बेला सिंह और वहां पर खड़े सब लोगों ने इस सुझाव की पुष्टि कर दी। फिर प्रश्न पैदा हुआ कि बकरा किस से लिया जाय। कई लोगों ने सुझाव दिया कि हर घर से चन्दा जमा करके बकरा खरीद लिया जाय।

'लेकिन इससे फिर बखेड़े खड़े होंगे कि चन्दा जमीन की ढेरी के मुताबिक हो या आदमियों की गिनती के मुताबिक।' लालू पहलवान ने कहा।

'यह बात भी ठीक है।' चौधरी मुंशी ने कहा।

बेला सिंह ने दो बकरियां पाल रखी थी। वह एक कदम आगे बढ़ता हुआ बोला

'अगर मेरी बात मानो तो मैं एक बकरी दे देता हूं।'

'तू अकेला क्या दे। चो से नुकसान सिर्फ तुम्हें नहीं पहुंचेगा। तेरा घर तो ऊँची जगह पर है। नुकसान सारे गांव का होगा।'

'मैं भी गांव में ही रहता हूं।'

बेला सिंह ने तीखी आवाज में कहा। बेला सिंह के जोर देने पर उसकी बात मान ली गई।

बलि की तैयारी शुरू हो गई। बेला सिंह का लड़का पाली बकरी खोल लाया। उसके माथे पर सिंदूर का टीका लगाया गया। दिलसुख अपनी कृपान उठा लाया। अब प्रश्न था कि बकरी को चो के धारे में कैसे फेंका जाय। बहुत सोच विचार के बाद वे इस निर्णय पर पहुंचे कि गुड़ पकाने वाला बड़ा कड़ाहा लाया जाय और उसके दोनों कुण्डों से रस्से बांधकर उसमें एक आदमी बैठ जाय। कड़ाहे को चो में उतार दिया जाय। लालू पहलवान हवेली से कड़ाहा और रस्से ले आया।

सब तैयारी हो गई तो वे बकरी को एक ओर ले गए। बकरी बहुत डरी बनी आवाज में मिमियाने लगी। लालू पहलवान ने हाथ जोड़ आंखें बन्द और आकाश की ओर मुंह उठाकर खवाजा पीर से मिन्नत मांगी कि वे उनकी भूल-चूक क्षमा करें और अपना कहर और क्रोध वापस ले लें। बाद में उसने दिलसुख को संकेत किया। बेला सिंह के लड़के ने बकरी के गले में बंधी रस्सी पकड़ी हुई थी और चौधरी मुंशी उसकी टांगों को थाम हुए था। दिलसुख ने बकरी के गले पर निशाना साधकर कृपाण चलाई लेकिन उसका सिर धड़ से जुदा नहीं हुआ बल्कि लटक गया।

'हट जा परे मा ने तुम्हे भी पूत जना था।' बेला सिंह ने उसके हाथ से करपान लेते हुए कहा और एक ही वार म बकरी का सिर धड से अलग कर दिया।

'असल म बकरी हिल गई थी।' दिलमुख ने खिसियानी सी हँसी हँसते हुए कहा।

तड़पती बकरी को बोरी म बन्द करके कडाह म रख दिया गया। दिलमुख बोला

'मैं जाता हूँ।'

'रहने दो। बकरी फेंकते फक्त वहीं आप भी न गिर जाना।

बला सिंह अपन बट को सम्बोधित करता हुआ बोला

'चल पुत्तरा, तू फक आ। साथ बग्गे को ले ले। दो जने हान से कडाहा डोलगा नही।

बग्गा और पालो कडाहे की ओर बढे तो दोना एक-दूसरे की ओर दख कर मुसकरा दिए। पिछले दिना दोना म लडाई के कारण बोल चाल बन्द थी।

कई लोगा ने मिलकर कडाहा पानी म उतार दिया। एक रस्सा दिल-मुख और बेला सिंह न पकड लिया और दूसरा रस्सा लालू पहलवान और चौधरी मुशी ने थाम लिया। व आहिस्ता-आहिस्ता रस्सा छोड रहे थे और बग्गा और पालो लठा से चो म पानी की गहराई मापते हुए कडाहे को धारे की ओर ले जाने लगे। जब वे धारे के पास पहुच गए तो उसम ऊऊँ और छर छर की आवाज पदा करती हुई एक लहर उभरी और कडाहा डोलने लगा। यह देखकर दोना के दिल दहल गए। वहाँ पानी काफी गहरा था क्योकि दोना के लठ कधा के बराबर ऊचे रह गए थे। लालू पहलवान ने रस्सा खींच लिया और उन्ह आवाज देकर बोला

आगे मत जाओ बोरी का मुह खोलकर पहले बकरी का सिर और बाद म धड पानी म फक दो।

बग्गा कडाहे म बठकर अपने लठ को चो की तह म दबाकर कडाहे को स्थिर रखने का यत्न करने लगा। पालो न जल्दी जल्दी बोरी का मुह खोल कर पहले बकरी का सिर और बाद म धड चो मे फक दिया। वह इस क्रिया म अपना वजन खो बठा और डावाडोल हो गया। किनारे पर खडे लोगा ने भयभीत होकर सँभालो-सँभालो की आवाजें लगाइ और बग्गे न अपना लठ पानी म ही छाड दिया और पालो को मजबूती से बाजुओं म थाम लिया।

वडाहा बुरी तरह डाल रहा था। किनारे पर खडे लोगा ने उसे बहुत तजी म अपनी ओर खीच लिया।

लोगा को विश्वास था कि बलि देने के बाद चो का पानी उतर जाएगा। शाम तक चो के किनारे पर लोगो की भीड इस उमीद म खडी रही कि शायद पानी उतरना शुरू हो जाए और वे यह देखकर जाएँ। लेकिन दिन ढले तकिए म चा के किनारे शीशम का बडा वक्ष पानी के वहाव की ताव न लाकर धडाम से गिर गया तो लोगा के दिल हिल गए।

वक्ष गिरन स बाढ का रख चमादडी की ओर बदल गया। कुछ ही समय के पश्चात पानी उस ओर जमीन काटने लगा। धीरे धीरे बाढ न खराल बनाना शुरू कर दिया। मिट्टी के ढेले धडाम की आवाज पदा करत हुए गिरत और अनेक छोटे-बडे भँवर उभरत जसे पानी ने मिट्टी के ढेला का पाचन कर लिया हो।

लोगा के देखत-देखते खराल इच इच करके चमादडी की ओर बढता गया। कुछ ही घटा म पानी की लहरा से उडने वाली छीटे बाबे फत्तू के कोठे की पिछली दीवार पर गिरल लगी। गाँव के लोग विशेषत चमादडी के वासी बाढ के क्रोध को सहमी हुई नजरा से देख रहे थे।

खराल म पानी के पेचताव खाते हुए भँवर देखकर चौधरी मुशी बोला अगर चो इसी तरह जमीन काटता रहा तो रात तक आधी चमादडी खा जाएगा।

हाँ चमादडी पानी म बह गई ता बाकी गाँव भी नही बचगा।

लाग बाढ स हो रही हानि पर टिप्पणी कर रहे थ कि जमीन का एक बहुत बडा टुकडा धमाके स पानी म गिरा और छीटे कुछ दूर खडे लोगा के पाँव म आकर गिरे और खराल बाबे फत्तू की दीवार के बहुत निकट पहुँच गया। बाबा फत्तू यह देखकर बहुत व्याकुल हो उठा और वहाँ पर उपस्थित चौधरिया के सामन हाथ जोडता हुआ बोला

मर माई बाप मैं मर गया। मरा कोठा नहा बचगा। मरे कोठे को बचाओ।

चौधरिया स कोई उत्तर न पाकर बाबा फत्तू निराश-सा खराल की ओर देखन लगा जहाँ चो की लहरें युवक पहलवान की तरह छाती म जोर पर उसकी दीवार को ललकार रही थी। वह चौधरिया के सामन फिर गिडगिडान लगा

चौधरियो जस भी हो मरे मरा कोठा बचाओ। मरा कोठा गिर गया

तो मुझसे दोबारा नही बनेगा और मेरे पास सिर छिपाने की भी जगह नही रहेगी।

बाबा फत्तू का इसरार बढता गया तो चौधरी मुंशी कुछ क्रुद्ध स्वर म बोला

'हम तो कोई सूरत नजर नही आती। तू कहे तो बाढ के आगे बाँह दे देते हैं।

बाबा फत्तू निराश होकर बुदबुदाता हुआ पीछे हट गया। चौधरी उसकी जिद पर टीका टिप्पणी करने लगे। चौधरी मुंशी उसके कोठे की ओर देखता हुआ बोला

'शोर तो ऐसे मचा रहा था जसे उसका सोने का महल गिर ।

अभी वह अपना वाक्य पूरा न कर पाया था कि तकिए म शीशम का एक और वक्ष तडाख-तडाख की आवाज पदा करता हुआ झुका और फिर धडाम से चो के बीच आ गिरा। बाढ के बहाव म वह खिसक खिसककर दूसरे वक्ष के साथ जा लगा। बाढ का जोर चमादडी की ओर कम हो गया और पानी लपकता हुआ बडे रास्ते म बहने लगा और स्कूल से आगे चौधरी हरनाम सिंह की हवेली के सामने से होता हुआ चौधरियों की हवेलियों और उनके निकटवर्ती खेतो म फलने लगा।

लोगो का हजूम चमादडी से हटकर बडे रास्ते पर इकट्ठा हो गया। पानी की लहरें और छोटे छोटे भँवर देखकर चौधरी गहरी सोच म डूब गए।

अब क्या होगा ? बेला सिंह न उपस्थित लोगो पर निगाह दौडाते हुए कहा।

'होगा क्या ? कोठे और हवेलियाँ गिर जाएगी और खडी फसल तबाह होगी। चौधरी मुंशी बोला।

सब चौधरी गुमसुम और भयभीत कुत्ते की तरह गुर्राते हुए पानी को देख रहे थे कि चौधरी हरनाम सिंह भी वहाँ आ पहुचा।

चौधरी अनथ हो गया। अगर बाढ का इसी तरह जोर बना रहा तो गाँव का निशान तक मिट जाएगा।'

चौधरी हरनाम सिंह सामने फैल रहे पानी की ओर देखने लगा। लालू पहलवान रुक रुककर कहने लगा

'गाव और फसल म से केवल एक ही को बचाया जा सकता है।'

यह सुनकर सब लोग उसकी ओर देखने लगे तो वह कुछ ऊँचे स्वर म बोला

'पानी गले-गले तक आ पहुँचा है। मेरे ख्याल म अगर तकिए से ऊपर परली ओर बध काट दिया जाय तो गाँव बच जाएगा।'

बध काटने का प्रस्ताव सुनकर कई चौधरी बिगडते हुए बोले

'मक्की की फसल का एक डठल तक नही बचगा।'

गाँव तो बच जाएगा। फसल तो हर दूसरे-तीसरे साल खराब होती ही रहती है। कभी ज्यादा बारिश से कभी पानी की कमी स।

लालू पहलवान का तक सुनकर सब लोग चुप तो हो गए परन्तु उसके साथ सहमत नही हुए। वे गुमसुम खडे बाढ से हो रही तबाही को घूर घूर कर देख रहे थे कि स्कूल की पुरानी और बोसीदा दीवार कीचड पर फिसले व्यक्ति की तरह जमीन पर बिछ गई और बाढ का पानी दबे पाँव स्कूल के आँगन म घुस गया।

जितनी ज्यादा देर करोगे उतना ही ज्यादा नुकसान उठाओगे। अभी स्कूल की दीवार गिरी है थोडी ही देर में किसी का कोठा बठ जाएगा।'

लालू पहलवान के ये शब्द सुनकर लोग चौंक गए और बध काटने के विषय म परामश करने लगे।

कुछ बहस मुबाहसे के पश्चात उन्होने तकिए से परे उस स्थान पर बध काटने का निणय किया जहाँ चो की चौडाई दो अढाई जरीब थी। गाव की ओर चो के किनारे के निकट पानी म ठहराव था और बाढ का जोर दूसरे किनारे की ओर था। वहा स आगे आकर चो तकिए की ओर मुड आता था।

सब लोग गलियो से होते हुए कुछ ही समय मे बध के उस स्थान के सामने पहुच गए जहा परले किनारे पर बध काटने का निश्चय किया गया था। मगू चौधरी हरनाम सिह की हवेली स कई रस्से और तीन चार कुदाल उठा लाया। चौधरी हरनाम सिह लालू पहलवान बेला सिह जाट चौधरी मुशी चौधरी फत्तू महाशय तीथराम इत्यादि रस्से छाँटने और खींचकर उनकी मजबूती जाचने लग। यह काम समाप्त करके वे सब इधर क किनारे पर शात और परले किनारे पर ठाठें मारते हुए पानी को देखने लगे।

मेरा ख्याल है दो आदमी उधर जाएँ।' चौधरी हरनाम सिह ने कहा।

दो भेज दो।' लालू पहलवान न उत्तर दिया।

'कौन-कौन जाएँगे ?

चौधरी मुशी न वहा पर खडे युवको पर नजर डालते हुए कहा। लालू पहलवान न भी युवको की ओर देखा और काली और हरम्ब को बुलाकर बोला

क्या तुम दोनो चो पार जाओग ?

'ज़रूर जाएँगे।' दोनों ने उत्साह से उत्तर दिया।

चौधरी हरनाम सिंह ने हरदेव को कपड़े उतारने के लिए कहा।

किसी को भेजकर सरसों का तेल मँगवा लो। तेल मलकर पानी में उतरोगे तो खारिश से बच रहोगे। गंदे पानी से खारिश होने का डर रहता है।

'इतना समय कहाँ है। खारिश हो गई तो बाद में इलाज करा लिया जाएगा।'

काली और हरदेव चो के किनारे पर आ गए। सबने मिलकर उनकी कमर के गिर्द रस्सा लपेटा और वे दोनों परमात्मा का नाम लेकर चो में कूद पड़े। दोनों एक-दूसरे का हाथ थामे आहिस्ता-आहिस्ता और फूँक-फूँक कर कदम उठाते हुए आगे बढ़ रहे थे। धार के निकट पहुँचकर पानी उनकी छाती तक पहुँच गया।

'रस्से मज़बूती से पकड़ लो।'

लालू पहलवान ने सब को चेतावनी देते हुए कहा और धीमे स्वर में प्रार्थना करने लगा।

धारे के पास पहुँचते ही पानी उनके गले तक आ गया। पानी का ज़ोर इतना ज़्यादा था कि उनके पाँव ज़मीन पर नहीं टिक रहे थे। हरदेव और काली ने एक-दूसरे को बहुत मज़बूती से पकड़ा हुआ था। कई बार बड़ी लहर का पानी उनके सिर के ऊपर से गुज़र जाता और वे एक-आध क्षण के लिए लोगों की नज़रों से ओझल हो जाते। वे पानी के बहाव के साथ साथ खिसकते हुए बहुत आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ़ रहे थे। किनारे पर सब लोग दम साधे खड़े अपने-अपने ढंग से परमात्मा से प्रार्थना कर रहे थे।

अचानक ही काली और हरदेव उनकी नज़रों से ओझल हो गए। उनका खून खुश्क हो गया और साँस जैसे गले में ही अटक गया था। चौधरी हरनाम सिंह घबराहट में एकदम आगे बढ़ गया लेकिन कुछ क्षणों के बाद पहले काली और उसके साथ ही हरदेव नज़र आ गए। काली ने हाथ उठाकर उन्हें संकेत दिया तो सबने लम्बी साँस ली।

कुछ देर के पश्चात काली बंध पर चढ़ गया और उसने हरदेव का हाथ पकड़कर उसे भी ऊपर खींच लिया। दूसरे बंध पर खड़े लोगों ने तालियाँ बजाईं। कुछ जोश में आकर बकरे बुलाने लगे।

चौधरी हरनाम सिंह के पीले चेहरे पर एक बार फिर सुर्खी झलकने लगी। लालू पहलवान ने एक रस्से के सिरे दो कुदालें बाँध दिए और उसे उस रस्से के साथ गाँठ दे दी जिसका एक सिरा काली की कमर के गिर्द लपेटा था। लालू पहलवान ने दोनों कुदालें उठाकर काली को दिखाईं और पानी में फेंककर उसे रस्सा खींचने का संकेत दिया। काली रस्सा खींचकर कुदालें अपनी ओर

ले आया। उसने एक कुदाल अपने पास रख ली और दूसरी हरदेव को दे दी।

काली कुदाल उठाकर दूसरे किनारे की ओर देखने लगा। चौधरी हरनाम सिंह मुह के गिर्द दोनो हाथ रख कर ऊँची आवाज म बोला

'थोडा आगे जाकर बंध काटो।'

काली कुदाल लेकर उस जगह जाकर रुक गया और दूसरे किनारे की ओर देखने लगा। चौधरी हरनाम सिंह ने उसे थोडा और आगे बढने का इशारा किया। फिर दो कदम पीछे हटने का सकेत दिया। जब काली वहाँ पहुचकर उसकी ओर देखने लगा तो उसने दोनो हाथो की मुट्ठियाँ भीचकर बाँध काटने का सकेत दिया।

वे दोनो शत बाँधकर कुदाल चलाने लगे। दूसरे बंध पर खडे लोग उनका उत्साह बढा रहे थे। आधे घंटे तक कुदाल चलाने के बाद काली और हरदेव ने बंध मे इतना शगाफ बना दिया कि उसम से पानी बहने लगा। खेत म गिरता हुआ पानी बंध की मिट्टी को खदेडने लगा था। काली कुदाल से शगाफ का मुह चौडा और गहरा बनाता रहा।

कोई एक घंटे के बाद आधा गज चौडा शगाफ तीन गज तक फल गया और उसकी हाथ-डेढ हाथ गहराई बंध की बुनियाद तक जा पहुची थी। चो का ज्यादा पानी शगाफ म स होता हुआ खेतो म फल रहा था। शगाफ म मिट्टी के बडे-बडे ढेले गिरते तो चौधरी मुह दूसरी ओर फेर लेते। दूसरे किनारे के साथ साथ पानी उतर रहा था। तकिए के पास भी पानी का जोर पहले स काफी कम हो गया। एक घंटे म गाँव के बराबर चो म हाथ डेढ हाथ पानी उतर गया।

दूसरे किनारे स लालू पहलवान न काली को आवाज दी कि वह रस्से के साथ दोनो कुदाल बाध दे। काली के ऐसा करने पर पहलवान ने रस्सा खीच लिया। इसक बाद हरदेव और काली पानी म उतर पडे। पहले जहाँ पर पानी म व नजर नही आते थ वहा अब पानी उनकी छाती से नीचे तक रह गया था। व दोनो एक-दूसरे का हाथ पकडे आसानी से चो पार करक दूसरे किनारे पर पहुच गए।

दिन ढल बादल फट गए। जब कभी बादलो की ओट से सूय बाहर आता तो धूप म वक्षो के गीले पत्ते गीले मकान चारो ओर फला हुआ मटमला पानी सब चमकने लगते। पूव म आकाश बिल्कुल साफ हो गया तो पश्चिम म जा रहे सूय की रोशनी म वर्षा स धुली हुई शिवालिक की पहाडियाँ बहुत ही भली मालूम होने लगीं। एसा लगता था जस वे भी चो क पानी म बहकर नजदीक

खिसक आई है। डूबते सूर्य की किरणों में आकाश पर तैरते हुए बादलों के आवारा टुकड़े, शिवालिक की पहाड़ियां, उनसे बहुत पीछे हिमालय की ऊँची बर्फानी चोटियां सब रुपहली और सुनहरी नज़र आ रही थीं। पक्षी तीन दिन तक अपने घोंसलों में बंद रहने के बाद चारों ओर उड़ रहे थे। चिड़िया चो के पानी में नहाकर वृक्ष या किसी वृक्ष की टहनी पर बैठकर पर फड़फड़ा रही थी।

गाँव में ऐसा वातावरण था जैसे वह किसी बहुत बड़ी प्रलय से बच गया हो। चो के पार अपने कोठों से बाजीगर उनकी स्त्रियाँ और बच्चे गांव आए तो लोगों ने उनका ऐसे स्वागत किया जैसे वे मौत के मुह से निकलकर आए हों। अधिकतर चौधरी चो के पार अपनी फसल देखने के लिए खेतों में चले गए।

सब लोग वर्षा और बाढ़ से होने वाले नुकसान का लेखा जोखा करते हुए मेंढकों के बहुत ज्यादा शोर के बावजूद रात को गहरी नींद सो गए।

३८

सुबह तक बाढ़ का ज़ोर खत्म हो गया लेकिन खेतों में चारों ओर पानी भरा हुआ था। मक्की की फसल मिट्टी नम हो जाने से जमीन पर बिछ गई थी। खेतों में बल खाती हुई पगडंडियाँ और रास्ते पानी में डूबे हुए थे और जहां तक नज़र जाती थी हरियाली के नीचे बिछी हुई पानी की चादर कहीं मैली और कहीं चमकदार दीख रही थी। ऐसा लगता था जैसे पानी ने गांव के गिर्द घेरा डाल रखा हो।

जिन स्थानों से बाढ़ का पानी उतर गया था वहां पतले कीचड़ की मोटी तह जम गई थी और उस पर रींगते हुए कीड़े मकौड़े और गंडोए-गंडोले पतली पतली राह बना रहे थे।

चो में पानी की पतली-सी लकीर रह गई थी। उसका गदलापन खत्म हो चुका था और इसका पाट कहीं पर पहले से ज्यादा चौड़ा और कहीं पर कम हो गया था। कहीं पर रेत भर गई थी और कहीं पर गढ्ढे बन गए थे।

चौधरी हरनाम सिंह चुपचाप गाँव की ओर चल पड़ा। चौधरी मुंशी और वेला सिंह भी उसके पीछे-पीछे हो लिए।

जब वे चमादड़ी के कुएँ के पास पहुंचे तो मुहल्ले के बहुत से मर्द और बच्चे मुँडेर के इर्द गिर्द खड़े थे। कुएँ के आस-पास पानी ही-पानी था और सामने गली कीचड़ से भरी हुई थी। उन्हें देखकर बाल्टियाँ रुक गई और सब हाथ चौधरियों को बन्दगी करने के लिए उठ गए। उनके पूछने पर कई लोगों ने एक साथ बोलना शुरू कर दिया कि कुआँ चो के पानी से भर गया था, इसे खाली कर रहे हैं।

'सब लोग तो कुआँ खाली नहीं कर रहे हो। दो चार आदमी कुदाल लेकर आओ। जहाँ बंध काटा था उसके आगे मिट्टी का ढेर बन गया है। उसमें रास्ता बनाना है ताकि खेतों में जमा पानी निकल जाए।

चौधरी की बात सुनकर कुएं पर खड़े सब लोग एक-दूसरे की ओर देखने लगे क्योंकि उनके सामने सबसे बड़ा प्रश्न कुआँ साफ करने का था। लेकिन जब चौधरी ने संतू, बंतू, जीतू और बग्गे के नाम पुकारकर आने के लिए कहा तो उन्होंने बाल्टियाँ छोड़ दीं और अपने घरों से कुदाल लेकर चौधरियों के पीछे चो की ओर चल पड़े।

बच्चों की एक पल्टन उनके पीछे हो ली। जब वे उनके बहुत नजदीक पहुंच जाते तो बेला सिंह पीछे मुड़कर ऊँची आवाज में उन्हें धतकारता तो वे भाग जाते लेकिन कुछ क्षणों के बाद फिर उनका पीछा शुरू कर देते।

बंध पर जाकर चौधरी लोग वहीं रुक गए और चमार बंध के शगाफ के सामने रेत के ढेर पर जाने के लिए खेतों में उतर गए और पानी में छप छप करते हुए आगे बढ़ते रहे। धूप से पानी मामूली-सा गर्म हो गया था और मक्की के पत्ते तलवार की धार की तरह तेज थे। बंध पर खड़े चौधरी मक्की के हिलते पत्तों को देखकर उनकी प्रगति का अनुमान लगा रहे थे। जब पत्तों की खड़खड़ाहट बन्द हो जाती तो वे समझ जाते कि चमार कहीं रुक गए हैं और वे कुछ क्षणों तक प्रतीक्षा करने के बाद उन्हें आवाज़ें देते।

उनकी आवाज़ें सुनकर संतू को क्रोध आ गया और वह बदले की भावना से मक्की के पौधों को रौंदता हुआ चलने लगा।

यह चौधरी मुंशी का खेत है। जीतू ने संतू से यह बात इस अभिप्राय के साथ कही कि वह उसके चौधरी की फसल को न उजाड़े।

किसी साले का हो। मुझे सिर्फ इतना पता है कि इस खेत की फसल मेरे घर में नहीं जाएगी। जीतू ने खिन्न स्वर में कहा।

लम्बा चक्कर काटकर वे रेत के ढेर पर पहुच गए। उन्हे देखकर चौधरी प्रसन्न हो गए और हाथ के सकेता के साथ-साथ आदेश देने लगे। थोडी देर म उन्होने रेत के ढेर मे नाली खोद दी और उसमे स पानी गढे म आने लगा। जीतू और सन्तू कुछ समय तक वहा खडे बहते पानी को देखते रहे और फिर गाव की ओर आ गए।

चो म पानी की पतली लकीर चौडी हो गई और बच्चे उसम दौडते हुए किलकारियाँ भरने लगे। चौधरी बध स नीचे उतरे और गाँव की ओर आते हुए उन्हान निणय किया कि बध के शगाफ को शीघ्र ही भर देना चाहिए क्याकि पानी सूखने पर फसल की नलाई शुरू हो गई तो यह काम बीच म ही रह जाएगा। न तो चौधरियो को अवकाश होगा और न चमार ही यह काम करेंगे। चमादडी के कुएँ के पास से गुजरते हुए उन्होने वहा उपस्थित सब लोगो से कहा कि कल शाहवेला (ब्रेक फास्ट) के बाद कुदाल और टोकरिया लेकर वहाँ पहुच जाएँ।

चौधरियो के इस आदेश मे चमारो मे खुशी की लहर दौड गई। उन्हे प्रसन्नता थी कि बाढ और वर्षा के बावजूद अब उन्हे बेकार नही बठना पडेगा। लेकिन साथ ही हैरानी थी कि उन्हे शाहवेले के बाद क्यो बुलाया गया है। अनुमान के घोडे दौडाने पर उनके मन म कई प्रकार की शकाएँ भी सिर उठाने लगी। लेकिन जब ताय बसन्त ने उन्हे यह तथ्य निकालकर बताया कि उन्हे दिहाडिया क नकद पसे मिलेंगे तो उनके मन प्रफुल्लित हो गए और व पहले स भी ज्यादा जोश स बाल्टियाँ खीचकर कुएँ से गन्दा पानी निकालने मे जुट गए।

३९

चमादडी के लोग अपनी टोकरिया और कुदालें लेकर शाहवले से पहले ही बध पर पहुच गए। युवक एक दूसरे पर मिट्टी फेंकते हुए आपस म खिलवाड करने लगे। अधेड और पकी उम्र के पुरुष बध पर खडे होकर शगाफ का सर्वेक्षण करते हुए उसमें भरे पानी की गहराई का अनुमान लगाने म व्यस्त हो गए। तेज

धूप के बावजूद उन्हें गर्मी महसूस नहीं हो रही थी और वे प्रतीक्षा भरी नज़रों से बार-बार गाँव की ओर देख रहे थे।

जब उन्होंने चौधरी हरनाम सिंह, लालू पहलवान, बेला सिंह, चौधरी मुंशी और महाशय तीर्थ राम को अपनी ओर आते देखा तो उनमें खुशी की लहर दौड़ गई। खेल खिलवाड़ और गपशप बंद हो गई और वे आँखों पर हाथों की छतरियाँ बनाकर उनकी ओर यूँ देखने लगे जैसे उनके कदम गिन रहे हों।

चौधरी जब चो में उतर आए तो कुछ लोग उनकी ओर बढ़ गए जैसे अगवानी करना चाहते हों। वे बंध पर आकर आपस में परामर्श करने लगे कि शगाफ को भरने के लिए मिट्टी कहाँ से खोदी जाय। चौधरी हरनाम सिंह ने सुझाव दिया कि मिट्टी परले किनारे की ओर से खोदी जाए क्योंकि इससे चो का रुख परली ओर हो जाएगा और बंध का यह हिस्सा भविष्य में बाढ़ की दस्तबुर्द से बचा रहेगा। लेकिन बेला सिंह को यह सुझाव स्वीकार नहीं था। बहुत देर तक बहस मुबाहसे के बाद वे इस निर्णय पर पहुँचे कि मिट्टी चो के बीच से खोदी जाए।

फैसला होते ही काम तनदेही से कुदालें चलाने लगे और मिट्टी से टोकरियाँ भर कर शगाफ में फेंकने लगे। चौधरी हरनाम सिंह ने उन पर नज़र डाली और बेला सिंह से बोला

ऐसा लगता है कि सब चमार नहीं आए हैं। इन लोगों को तो शगाफ भरने में छः सात दिन लगेंगे। तीन चार दिन के बाद फसल की नलाई भी ज़रूरी है। बेला सिंह ने उनकी गिनती करने का प्रयास करते हुए कहा

'हाँ, सारा मुहल्ला नहीं पहुँचा है।

चौधरी हरनाम सिंह ने ताए बसंत को अपने पास बुलाकर पूछा

'बसतया बाकी लोग कहाँ हैं ?'

'मेरे ख्याल में तो सब आ गए हैं। बसंत ने सरसरी नज़र डालते हुए कहा।

'नहीं, सब नहीं हैं काली नहीं है जीतू नहीं है बग्गा नहीं है।

चौधरी हरनाम सिंह को नाम गिनाता सुनकर कुछ चमार उसके पास आ गए और गिनती पूरी करने लगे।

'बग्गा नहीं है भजना नहीं है फीरी नहीं है निक्कू नहीं है मंगू नहीं है।

'मंगू का छोटा बेटा मेरी हवेली में काम कर रहा है। तुम जाकर सबको बुला लाओ उन्हें कहना कि टोकरियाँ लेकर जल्दी ही यहाँ पहुँच जाएँ।

'चमारों घरा म बठी अपन बच्चा स जुएँ निकाल रही होगी, उन्ह भी बुला लो। वे टोकरिया म मिट्टी भरकर फेंकती रहगी।' वला सिंह ने हँसते हुए सुझाव दिया। चौधरी हरनाम सिंह ने गाव की ओर दौड रहे अमरू को रोक लिया और आवाज दी कि चमादडी म स्त्रिया स भी कह दे कि वे टोकरियाँ लेकर यहाँ पहुच जाएँ।

'अमरू, मरी माँ को कह देना अपनी मामी स कह देना अपनी चाची से कह देना।' एक साथ ही कई आवाजें उठी और व अपन मन म सोचन लगे कि यदि बाढ आने से इस प्रकार काम मिल सकता है ता प्रतिदिन बाढ आनी चाहिए।

थोडी देर के बाद काली जीतू भगा और मुहल्ले के अन्य लोग आत दिखाई दिए। उनके पीछे कुछ स्त्रियाँ भी सिरा पर टोकरिया उठाए आ रही थी। उन्ह देखकर बध पर काम कर रह लोगा म कोलाहल मच गया और कुछ क्षणा के लिए कुदाल रुक गए। उनके आन क बाद वे फिर मिट्टी खदेड कर शगाफ म फकन म व्यस्त हो गए।

चौधरी बध पर खडे उन्हे आदेश द रहे थ और अगर चमारा के हाथ और कदम सुस्त पड जाते तो वे गाली गलाच पर उतर आत। उनम से काई फसल के नुक्सान का जिक्र करता तो शेष लोग उसके साथ सहमत होन हुए यह कहकर बात खत्म कर देत कि परमात्मा का शुक्र है कि चमादडी बच गई। इनके कोठे पानी म बह जाते ता सिर छिपाने के लिए भी जगह न रहती।

सूर्य सिर पर आ गया तो चौधरी चमारा का काम जारी रखने का आदेश दकर गाव की ओर बढ गए। उनके पीठ मोडत ही चमारो न कुदाल और टोकरिया फेंक दी और हाँफने हुए रेत पर बठ गए। गीली रेत स उठ रही भाप और उमस से उनके शरीरा म विचित्र-सी बेचनी फल रही थी। कुछ मिले-मिलाएगा या बगार म ही काम ले रह हैं? जीतू ने पूछा।

'चौधरियो ने कुछ कहा तो नहीं है लेकिन मेरे ख्याल म वे नकद दिहाडी देंगे।' सतू ने प्रसन्नभाव से उत्तर दिया।

शाहबला तो दिया नहीं इसलिए पूरी दिहाडी के पसे ही देंगे। बतू ने समर्थन किया।

कुछ कहा तो हागा?' काली ने पूछा।

एक आदमी का मामला हो तो कह भी दत। सारे गाँव का मामला है इसलिए पसे जमा करके ही बाँटेंगे। लाए बसत न सब की शकाआ का समाधान करत हुए कहा।

काली कुदाल लेकर उठा तो जीतू ने उसका हाथ पकड़ लिया।

'हम दिहाड़ीदार हैं काम की क्या जल्दी है। सौ टोकरी फेंकोगे तो भी उतने ही पैसे मिलेंगे पचास फेंकोगे तो भी उतने ही।

काली ठिठक गया और धीरे धीरे सब लोग रोटी खाने और प्यास बुझाने के लिए चमादड़ी की ओर आ गए।

दिन ढलने के बाद शगाफ की पूर्ति का काम एक बार फिर ज़ोर शोर से आरम्भ हो गया। सांय के समय बंध पर लोगों की अच्छी खासी भीड़ लग गई। चौधरियों के छोकरे ढोर डंगर को संभालने के बाद वहाँ जमा हो गए। उन्होंने मिट्टी खोदने का काम स्वयं संभाल लिया और चमार केवल मिट्टी ढोने में लग गए। वे आपस में शर्त बाँध कर मिट्टी खोदने लगे और चमार दौड़-दौड़कर टोकरियाँ फेंकने लगे। बंध पर खड़े चौधरी किलकारियाँ मारते हुए शोर मचाने लगे। शगाफ का पानी चो की ओर फैल रहा था लेकिन रेत उसे अनन्त के प्यासे की तरह पी रही थी।

सूर्यास्त तक शगाफ लगभग एक चौथाई भर गया। चौधरियों के मन प्रफुल्लित हो उठे और वे चमारों को सवेरे शीघ्र ही आने की ताकीद करके गाँव की ओर बढ़ गए। चमार वहीं खड़े हैरत से एक दूसरे का मुँह तकने लगे कि दिहाड़ी के पैसे कब मिलेंगे। चौधरी चो के पार चले गए तो चमारों में खुसर पुसर शुरू हो गई और ज्यों ज्यों चौधरियों से उनका फासला बढ़ता गया उनकी खुसर पुसर शोर में बदलती गई और पैसे न मिलने पर निराशा क्रोध में परिवर्तित होने लगी। वे हताश से रेत पर बैठकर चौधरियों को गालियाँ देने लगे।

धीरे धीरे लोग बुदबुदाते हुए चमादड़ी की ओर चल पड़े। सबके सामने यही प्रश्न था कि उन्हें आज की दिहाड़ी के पैसे मिलेंगे भी या नहीं—यदि मिलेंगे तो कब? ताया बसंता अब तक चुप था। जब कई लोगों ने उससे इस प्रकार पूछ ताछ शुरू की—जैसे उसकी जवाबतलबी कर रहे हों—तो वह भड़क उठा

'यूँ तो हर गरीब आदमी जन्म से ही ओछा होता है लेकिन तुम कुछ ज्यादा ही हो। आम की गुठली ज़मीन में दबाते ही चाहते हो कि उस पर फल लगना शुरू हो जाए और तुम उसे तोड़कर खा लो। तुमने आज काम किया है पैसे मिल जाएँगे। कल नहीं मिलेंगे तो परसों मिल जाएँगे।

ताया, उन्हें बताना तो चाहिए था। कम से कम यह बता देते कि दो चार या दस दिन के बाद पैसे देंगे। सन्तू ने कहा।

'तूने उनसे माँगे थे?'

नहीं।

'तो फिर शोर क्या मचा रहा है तुम्हें काम नहीं मिलता तो रोते हो, अगर मिलता है तो रोते हो।'

ताए बसन्त की बातें सुनकर वे चुप तो हो गए लेकिन उनकी तसल्ली नहीं हुई। काली उनके उदास चेहरा को देखकर बोला

शहर में पन्द्रह दिन के बाद मजदूरी मिलती है लेकिन फुटकर काम करने वाला को रोज के पैसे रोज मिल जाते हैं।' काली की शह पाकर ताया बसन्ता शेर हो गया और सबको बेतुकी सुनाने लगा। लोगों के तेवर एक बार फिर बदलने लगे तो काली बोला

कोई अँधेर-नगरी तो नहीं है। चौधरी बेगार अपने खरीदे हुए कमीन या चमार से ले सकता है, सारे गाव से नहीं ले सकता। कल शाम को अगर वे पैसे नहीं देंगे तो हम आप माग लेंगे।

ताया बसन्ता अपनी बिरादरी के ओछेपन को रोता हुआ आगे निकल गया और अन्य लोग कुछ अपने आप में लज्जित और कुछ चिन्ता-ग्रस्त उसके पीछे-पीछे चमादडी की ओर कदम उठाने लगे।

४०

दो दिन तक चमादडी के सब मर्द शगाफ भरने में लगे रहे। वे चौधरियों के जाने के बाद आपस में लड़ते झगड़ते लेकिन उनमें से किसी में भी इतना साहस न होता कि चौधरियों से दिहाड़ी के बारे में बात करें। रह रह कर वे ताए बसन्त को कोसते जो स्वयं या तो एक ओर बैठा हुक्का गुड़गुड़ाता रहता या फिर उन्हें आदेश देता रहता।

तीसरे दिन लोग नित्यप्रति की भांति शाहवेले के पश्चात बंध पर पहुँच गए लेकिन वे अपनी कुदालें और टोकरियाँ गली के नीचे दबाकर बैठे थे। बंध का शगाफ आधे से ज्यादा भर गया था। सब की नजरें गाँव की ओर लगी हुई थीं। ताया बसन्ता चुप था और उनकी अनाप शनाप बातों को बिना किसी प्रतिक्रिया के सुन रहा था।

जब गाँव के बाहर उन्हें तीन चार चौधरी बंध की ओर आते दिखाई दिए तो उनमें अजीब सी बेचैनी फैल गई। भय से उनका निश्चय डाँवाडोल होने लगा और वे ताए बसन्त के इर्द गिर्द एकत्रित हो गए।

'ताया, पिछली तीन दिहाड़ियों के पैसे मिलेंगे तो हम काम करेंगे।' सन्तू ने कहा। इसके बाद हर व्यक्ति ने ताए बसन्त से यही बात कही। वह फिर भी चुप रहा तो बन्तू भड़क उठा

ताया क्या तू अंतर्ध्यान हो गया है? इतनी बार किसी मुर्दे को बुलाते तो वह भी हूँ हाँ करने लगता।' ताए बसन्ते ने उसके कटाक्ष का भी कोई उत्तर न दिया।

ज्यों ज्यों चौधरी निकट आ रहे थे चमारों में भय और बेचैनी बढ़ रही थी। उनमें से कुछ ने अपनी कुदालें ऐसे सँभाल लीं जैसे मिट्टी खोदने के लिए तैयार हों।

काली अब क्या करना है? तीन दिन तक इस उम्मीद पर काम करते रहे हैं कि दिहाड़िया के पैसे मिल जाने पर उधार चुका देंगे। जीतू ने चिंतित स्वर में कहा। जब से काली ने चौधरियों का काम करना शुरू किया जीतू ने उसे बाबू जी कहना बंद कर दिया था। काली हाथ पीछे फेंक कर और टाँग पसारे हुए बैठा रहा। जीतू ने अपनी बात फिर दोहराई तो वह खिन्न स्वर में बोला

ताए बसन्त से पूछो।

चौधरी बहुत निकट आ गए तो चमारों में भय की भावना त्रास बन गई और वे एक-दूसरे की ओर देखते हुए उठ खड़े हुए। ताया बसंता विचारमग्न बैठा रहा। उसके माथे पर सब नसें तन गई थीं। चौधरी मुंशी ने चमारों का बेकार और बेकरार देख कर कहा बेकार क्यों बैठे हो। क्या सलामी लेने के बाद काम शुरू करोगे?

चमारों में मामूली सी हरकत हुई लेकिन उनके कुदाल और टोकरियाँ रेत में पड़ी रहीं। चौधरी हरनाम सिंह ने उनके बदले हुए तेवर देखकर कहा

ये बड़ी नामुराद कौम है। इनकी सब आदतें भैंस से मिलती हैं। सिर पर खड़े रहो तो ये हाथ हिलाते रहेंगे। नजर उधर कर लो तो बैठ जाते हैं।

चौधरी उनके बीच में आ खड़े हुए तो ताया बसंता भी अलसाया-सा उठ बैठा। चौधरी मुंशी कुछ क्रुद्ध स्वर में बोला

उमनयों यहाँ क्या अस्न (अस्थियाँ) चुनने आए हो जो इस तरह बैठे हो। उठो काम करो। सूरज पहले ही सिर पर आ गया है।

सब चमारों की नजरें ताए बसन्त पर लगी हुई थीं। वे मन ही-मन में

कापते हुए अधखुले होठों से उसकी ओर देख रहे थे ।

चौधरी हरनाम सिंह ने सबकी मा की गाली देते हुए कहा

य तो जूते के यार है । और फिर वह चमारों की ओर देखता हुआ क्रुद्ध स्वर म बोला

तुम्हारी क्या नीयत है ?'

काली अब भी हाथ पीछे फके और टागें पसारकर बैठा था । ताया बसता आगे बढता हुआ बोला

'चौधरी बात यह है कि तीन दिन से सारी चमादडी यहा काम कर रही है लेकिन किसी को अभी एक दिहाडी के भी पैसे नही मिले हैं । जो आदमी रोज का रोज कमाकर खाता है, उसे तीन दिन मजदूरी न मिले तो वह कहाँ से खाएगा ?'

तुम्हें किसने कहा था कि इस काम के पसे मिलेंगे ?' चौधरी हरनाम सिंह ने तल्ख स्वर म कहा और फिर वह चौधरी मुशी को सम्बोधित करता हुआ बोला

इनके दिमाग म जरूर कोई-न-कोई कीडा है जो कभी कभी इस किस्म की बातें करने लगते हैं ।

चौधरी मुशी भी भडक उठा और मोटी सी गाली देता हुआ बोला

कोई दिहाडी नही मिलेगी । उठो काम करो वरना मार मार कर एक एक का सिर तरबूज के खप्पर जसा बना दूगा ।

चौधरी, गालिया बाद म दे लेना, पहले मेरी बात तो सुन लो । ताए बसत ने सयम से कहा ।

क्या बात सुनू तेरी । सीधी तरह काम करो वरना । चौधरी मुशी ने जूता उतारते हुए कहा ।

चमादडी से चो की ओर आ रही स्त्रिया शोर शराबा सुनकर वापस पलट गई और उन्होने मुहल्ले म कुहराम मचा दिया । बाबा फत्तू लाठी टेकता हुआ बध की ओर चल पडा । गाँव के अन्य चौधरियो को इस घटना की सूचना मिली तो वे भी बध की ओर भाग गए ।

जब व वहा पहुचे तो क्रोध के कारण चौधरी मुशी के मुह स झाग बहने लगी थी और उसका साल फूल कुप्पा था और वह चमारों को धमकियाँ दे रहा था । चमार सहमे हुए खामोशी से सब-कुछ सुन रहे थे । बाबा फत्तू गिरता पडता वहा पहुचा और चौधरियो की बेतुकी गालियाँ सुनकर उन्हें हाथ से चुप रहने का सकेत करने लगा । लेकिन चौधरी गालियाँ देते हुए कह रहे थे कि

काम करने से इन्कार करने की चमारों को हिम्मत कैसे हुई।

काली बतुकी गालियाँ सुनकर क्रोध में फुक रहा था। वह उठकर चौधरियों के पास आ गया और ऊँचे स्वर में बोला

काम करने से कौन इन्कार कर रहा है? हमने सिर्फ अपनी दिहाड़ियों के पैसे माँगे हैं। इसमें इतना गाली गलौच करने की क्या बात है?

दिहाड़ी किस बात की? यह बंध अपने-आप नहीं टूटा था। इसे गाँव और चमादड़ी को बचाने के लिए तोड़ा गया था। हमारी कई घुमाओं फसल बरबाद हो गई। कपास की फसल देने वाले खेतों में रेत बिछ गई और वहाँ अब घास भी नहीं उगेगी। और तुम लोग इतने बेशर्म हो कि बंध में पड़े शगाफ में मिट्टी भरने के लिए पैसे माँग रहे हो। चौधरी हरनाम सिंह ने उत्तेजित स्वर में कहा। चमारों में से किसी के पास कोई उत्तर नहीं था।

ताया बसंता और बाबा फत्तू चुप थे। बाकी चमार खाली खाली नजरों से एक-दूसरे की ओर देख रहे थे। काली कुछ बोलने लगा तो चौधरी हरनाम सिंह ने उसे बहुत क्रुद्ध स्वर में टोक दिया

'ये सब तेरी शरारत है। वकीलों की तरह बहस कर रहा है।

'चौधरी जी इसकी बात तो सुन लो। बाबे फत्तू ने काँपती हुई आवाज में कहा। काली क्रोध में भूल गया कि वह क्या कहना चाहता था। वह चुप रहा तो बाबा फत्तू नम्र स्वर में बोला

'चौधरी जी आप की बात ठीक है। हम आप लोगों के चमार हैं। हमें आप नहीं बचाएँगे तो और कौन बचाएगा। लेकिन यह तो सोचो कि अगर आप दिहाड़ी नहीं देंगे तो हम लोग खाएँगे कहाँ से। एकाध दिन की बात होती तो ठीक था लेकिन इसमें छः सात दिन लग जाएँगे। इतने दिनों के लिए गरीब आदमी अपने घर से रोटी खाकर बेगार नहीं कर सकता।

फत्तू तेरा दिमाग भी खराब हो गया है। तू सयाना है कुछ अक्ल की बात कर। चौधरी हरनाम सिंह ने डाँटते हुए कहा।

सब चमारों को चौधरी हरनाम सिंह का लहजा बहुत बुरा लगा परन्तु वे चुप रहे। काली पीछे हटकर रेत पर जा बैठा। बाबा फत्तू रुआँसा-सा होकर चुप हो गया। चौधरी मंशी एक बार फिर गालियाँ देने लगा और कड़की हुई आवाज में बोला

'सात-आठ दिन तक वैसे भी तुम लोगों को कोई काम नहीं होगा। खेतों में पानी भरा है मजदूरी की मजाई बंद रहेगी। उन दिनों में यूँ भी तो खाली बैठकर अपने घरों से खाना।

'चौधरी जी, आपकी बात ठीक है लेकिन खाली बठने पर आदमी दो रोटियाँ खाकर दिन काट सकता है। लेकिन जो आदमी सारा दिन कुदाल चलाएगा और टोकरी ढोएगा उसका दो रोटियो स कुछ नहीं बनगा और फिर आप मालिक लोग है आपको किसी चीज की कमी नहीं है। हमारे लिए तो एक दिन काटना भी मुश्किल है।' ताए बसत न कहा।

लालू पहलवान अब तक चुप खडा था। वह बहुत गभीर और उदास सा सबकी बातें सुन रहा था। जब उसन देखा कि बात बढ़ती जा रही है तो वह चौधरियो को सम्बोधित करता हुआ बोला 'एसा करो कि हर घर अपने-अपने चमार को पसे या अनाज दे दे। ज्यादा शोर शराबे से कोइ फायदा नहीं।'

लालू पहलवान की बात सुनकर चौधरी हरनाम सिंह उत्तेजित हो गया।

'चमारो का दिमाग खराब क्या न हो उन्ह शह दने वाले जो मौजूद है।

मैं किसी को शह नहीं दे रहा, मैं तो सिफ हक की बात कह रहा हू।' लालू पहलवान ने कहा। 'बस जो फसला आप लोग करग, वही मेरा फसला होगा।

चौधरी हरनाम सिंह न अपने इद गिद खडे चौधरियो पर नजर दौडाई और हर मुहल्ले के दो चार आदमियो को उपस्थित पाकर बोला

तुम लोग एक मुट्ठी हो जाओ तो चमारो को एक दिन म सीधा किया जा सकता है लेकिन मुश्किल यह है कि हम लोगो म ही शह देने वाले मौजूद हैं।

उसने चमारो की ओर बढ़ते हुए कहा

देखो तुम आग से खेल रहे हो। भलमानसो की तरह काम शुरू कर दो वरना तुम्हारी कुत्तो से भी बुरी हालत करूँगा। कान खोलकर सुन लो यह काम तुम्हें करना है और इसम छ दिन लगें या दस एक पसा नहीं मिलेगा। चमार खामोश रहे तो चौधरी हरनाम सिंह न एक बार फिर उन्ह ललकारकर कहा और ताए बसते से बोला

बसतया क्या मशा है तुम्हारी ?

'चौधरी जी, पसे के बिना काम करके हम खाएँगे कहाँ से ?'

अपनी मा के सिर स खाओ मुझे इससे कोई मतलब नहीं। जो मैं पूछता हूँ उसका जवाब दो।

मैं क्या बताऊँ। सब लोग यहा खडे ह इनस पूछ लो। ताए बसते की नजरें बारी-बारी सब पर घूम गइ।

सब चमार खामोश खडे थे। चौधरी हरनाम सिंह जिसकी ओर देखता वह सिर झुका लेता और उसके प्रश्न का कोई उत्तर न दता। चौधरी न काली की

ओर देखा तो वह सशक्त स्वर में बोला

मैं बिना पैसे के काम नहीं करूँगा।' काली ने अपनी टोकरी उठा ली। चौधरी हरनाम सिंह ने उसे गाली दी तो वह भड़क उठा

चौधरी ये गालियाँ मुझे भी आती हैं। मुँह सँभालकर बात कर। हम मेहनत बेचते हैं, इज़्ज़त नहीं। माएँ बहनें सबके घर में हैं।'

यह सुनकर अन्य चौधरी भी क्रोध में आ गए। चौधरी मुंशी यह सोचकर आग पानी हो रहा था कि गाँव के चमार को इतना साहस कैसे हुआ कि उनके सामने मुँह खोले। वह दाँत पीसता हुआ बोला

इन सबको गाँव से निकाल दो।'

इनका खेतों में आना जाना बन्द कर दो।

इनकी औरतें खेतों में आएँ तो उन्हें वहीं घेर लो।

'चमार खेत में आए तो साले को जान से मार दो।'

कुत्ते चमारो तुम एड़ियाँ रगड़ रगड़ कर मरोगे। हम तुम्हें भूखा मार देंगे।' कई चौधरी एक साथ बोल उठे।

'चौधरियो आदमी किसी का राजक नहीं है। हमारा राजक भी वही है जो तुम्हारा है। तुम लोगों को ज़मीनों का अहंकार है। हमने तुम्हारी बहुत बातें सुन ली हैं लेकिन हर चीज़ की हद होती है। हम पत्थर नहीं हैं हम भी इंसान हैं।' काली ने आगे बढ़कर उत्तेजित स्वर में कहा।

बाबे फत्तू ने काली का समर्थन किया तो बला सिंह बोला

फत्तू मर तो तू वैसे ही जाएगा। क्या अपना खून किसी दूसरे के सिर पर थोपना चाहता है।

चौधरी, रहती दुनिया तक ज़िंदा रहने का पट्टा तेरे पास भी नहीं है। ताए बसंत ने कहा।

बसंतया तेरी यह मजाल कि हमारे सामने मुँह खोले। चौधरी मुंशी ने पाँव से जूता उतारते हुए कहा। काली टोकरी फेंककर ताए बसंत के सामने जा खड़ा हुआ। लालू पहलवान मामला बढ़ते देखकर सबको शान्त करने का यत्न करने लगा। चौधरी मुंशी उसकी ओर धकेलता हुआ बोला

मैं देखता हूँ काम करने से कैसे इन्कार करते हो?' वह अपने पास खड़े चमार को कंधे से पकड़ कर शामलात की ओर धकेलने लगा। तब उसने काली की ओर जूता लहराते हुए काम करने को कहा तो वह दृढ़ स्वर में बोला

मैं बिना पैसों के काम नहीं करूँगा। मैं किसी के पास गिरवी नहीं पड़ा हूँ जो बेगार करूँ।

काली अपनी टाक्री और कुन्दाल उठाकर गाव की ओर चल पडा। उसे जाते दखकर अय चमारा का साहस भी वढ गया और वे उसके पीछे पीछे आने लगे। चौधरियो न उन्हें जात देखा तो वे क्रोध स कापने लगे। चौधरी हरनाम सिंह ने बाइकाट की धमकी दी तो ताया बसंता बोला

'चौधरियो, अगर तुम्हारी यही मर्जी है तो म भी कर देखो।

चौधरियो का क्रोध शिखर तक जा पहुचा। वे नई-नई धमकियाँ और गालियाँ दे रहे थे और चमार उत्तर म बुदबुदाते हुए चमादडी की आर बढ रहे थ।

४१

वध स चौधरी महाशय की दूकान पर आ गए। व क्रोध म अनाप शनाप बोल रह थ लेकिन उनम से किसी का दिमाग भी स्पष्ट नहा था कि नई स्थिति का कसे सामना किया जाए। महाशय तीयराम चौधरियो को और भी ज्यादा भडका रहा था और छज्जू शाह उस विचार म मग्न था कि वह इस स्थिति स कसे लाभ उठा सकता है। डाक्टर विशनदास बहुत उत्तेजित था और हुक्के की नय को हाठो से अलग करते ही उसे दोबारा मुह से लगा लता।

छज्जू शाह न लालू पहल्वान को चुप देखा ता निकट जाकर उसके कान म बोला

पहल्वान जी तुम क्या चुप हो ?

'मैं क्या कहूं। ये लाग हवा म लाठियाँ घुमा रह हैं। छज्जू शाह हाठो मे मुसकरा दिया और इस प्रतीक्षा म बठा रहा कि चौधरी चुप हा तो वह बात करे।

शोर शराबा कुछ कम हाता तो कोई और चौधरी वहा आ जाता और नए सिरे से गाली गलोच शुरू हो जाता। वहा पर इतने लोग इकट्ठे हो गए कि महाशय की दूकान के चबूतरे पर तिल फेंकने की जगह न रही। प्रत्येक व्यक्ति चमारो को तहस नहस करने की बात कर रहा था। उन्हें दण्ड देने के नए नए तरीका को सुझा रहा था।

लालू पहलवान उठ कर खडा हो गया और सबका चुप रहन का सकेत

करता हुआ ऊँचे परन्तु गम्भीर स्वर में बोला

मेरी बात मानो तो चमारों को बुलाकर मामला रफा-दफा कर दो। दोनों में फिर पहले की तरह अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। उनका तुम्हारे बिना गुजारा नहीं है और तुम्हारा उनके बिना नहीं।

मंगू पहलवान की आवाज़ अधिकांश के कुद्ध स्वरों में डूब गई। चौधरी एक बार फिर गर्म उठे। छज्जू शाह इस अवसर को उपयुक्त जानकर बोला

'चौधरियो, मामला आप लोगों और चमारों का है। मुझे बीच में दखल देने का कोई हक रहा है लेकिन मैं इतना ज़रूर कहूँगा कि गुस्से को थूक और जोश को छोड़कर यह सोचो कि आगे क्या करना है?

छज्जू शाह की बात सुनकर चौधरी और भी ज़्यादा भड़क उठे और बहुत से लोग एक साथ बोलने लगे।

चौधरी हरनाम सिंह ने उन्हें शान्त रहने का इशारा किया और एक-एक शब्द पर ज़ोर देता हुआ बोला

छज्जू शाह ठीक कहता है। इस तरह शोर मचाने से कोई फायदा नहीं। अब यह सोचो कि चमारों को दण्ड क्या देना है?

चौधरी हरनाम सिंह ने अपनी बात समाप्त करके मंगू पहलवान की ओर देखा तो वह एक बार फिर गम्भीर स्वर में बोला

मेरी मानो तो चमारों को बुलाकर मामला रफा-दफा कर दो। मेरे उस्ताद ने यही पढ़ाया था कि झगड़े को बढ़ाना नहीं, घटाना चाहिए।'

चौधरी जोग शोर मचा रहे थे कि घड़म्म चौधरी वहाँ आ पहुँचा और उन सबको गुपचपाड़ा करते देखकर बोला

क्या हो गया है जो कौओं की तरह काँ काँ कर रहे हो।'

चौधरी चमारों से झगड़ा हो गया है। महाशय ने कहा।

तो थाने जाकर रप्ट दर्ज कराओ यहाँ क्या बैठे हो?' घड़म्म चौधरी सब पर उचटती सी नज़र डालता हुआ बोला

तुम्हारे साथ अपने गाँव के चमार ही झगड़ा करने लगे हैं तो बाकी गाँवों के जाट तुम्हें कच्चा खा जाएँगे।

घड़म्म चौधरी की बात सुनकर लोग एक बार फिर उत्तेजित हो गए। चौधरी मुंशी भी सुबह से बोल-बोलकर थक गया था। वह गला साफ करता हुआ बोला

खेतों में जाने घास खोदने और गाँव की गलियों में आने से मना कर दो।

'आज से कोई आदमी उन्हें अपने घर न आने दे। उनसे कोई काम न

कराए, साला को दो दिन फाके काटने पडे तो माये (माँ बाप) याद आ जाएँग।' चौधरी हरनाम सिह न कहा।

उनका चमारन्डी से बाहर आना जाना बद कर दो। एसी नाका बदी करो कि साले टट्टी-पेशाब करन के लिए जगह न पा सकें।' बन्ता सिह न सुझाव दिया।

तुम उन्ह चो और वडे रास्त पर आन जाने से नही रोक सकत। ऐसा करना जुम है।' घडडम चौधरी न कहा।

छज्जू शाह चौधरिया का निणय करत देखकर बाला, 'आप लागा ने ता चमारो के बाईकाट का फसला कर लिया है लेकिन हमारे बारे म क्या सोचा है। आप उन्ह बाहर नही निकलन देंगे ता हमारे डँगर भूख मर जाएँगे। हम उन्ह चारा कहा से डालेंगे। हम अपनी दुकानदारी करेंगे या डँगरा के लिए घास खोदते फिरेंगे।' छज्जू शाह न महाशय की ओर देखत हुए कहा।

छज्जू शाह बिल्कुल ठीक कह रहा है। आप दाना के झगडे म हमार जानवर भूखे मर जाएँगे। महाशय बोला।

चौधरी जोश मे थे। बेला सिंह न छज्जू शाह से कहा कि वह अपनी भस के लिए उसके गेत से बरसीम काट लिया करे। जिस दिन वह न जा सके उसका लडका बरसम का गट्ठा फेंक जाया करेगा। चौधरी हरनाम सिंह ने महाशय के लिए ऐसा ही प्रबध कर दिया तो छज्जू शाह और महाशय चमारा को गालियाँ देत हुए चौधरया का ताकीद करने लगे कि उन्ह ऐसा सबक सिखाएँ कि व भविष्य म उनके सामने आँख उठाने का भी साहस न कर सकें।

डाक्टर बिशनदास अब तक हुक्के से चिमटा हुआ था। महाशय न हुक्के की नय उसके हाथ से खीचते हुए कहा

तू तो हुक्क के साथ कीचड की तरह चिमट गया है।

इस बात पर हल्का सा ठहाका गूजा और चौधरी एक एक करक वहाँ स खिसक गए। जब महाशय की दूकान पर दा चार आदमा रह गए ता डाक्टर दार्शनिक भाव स बोला

'यह प्रोल्तारिया और पूजीपतिया की टक्कर ह। महाशय न उसकी बात का अनसुना कर दिया तो बिशनदास जोर-जोर म सिर हिलाता हुआ बाला

चाचा तीथ राम मेरी बात याद रखा यह वजमान गेत मजदूरा और जमीदारो की लडाई है। यह प्रोल्तारिया और पूजीपतिया का जग है।

महाशय तीथ राम ता चुप रहा परन्तु बिशनदास का अपना ही कही हुइ बात पर आश्चय हुआ। उस याद हा आया कि ससार म सफल और असफल

क्रांतियाँ एसी ही छोटी छोटी घटनाओ स आरम्भ हुई थी। जहाँ इन्कलाबी ताकतो को अच्छी लीडरशिप मिल गई वहाँ वे सफल हो गई और जहाँ क्रांति कारी ताकतें पूरी तरह सगठित न हो सकी, वहाँ उनकी हार हो गई। डाक्टर अपने मस्तिष्क म इतिहास के पन्ने पलटता हुआ, रूस, फ्रांस और स्पेन तक जा पहुचा। उसके मन मे प्रति क्षण उत्तेजना बढ रही थी। वह हुक्के के दो चार तेज-तेज कश खीचकर जल्दी से उठा और जूता घसीटता हुआ चमादडी की ओर आ गया।

डाक्टर बिशनदास चमादडी के कुएँ के पास पहुचा तो उसे मुहल्ले म कुछ लोग ऊँची आवाज म बातें करत हुए सुनाई दिए। वह वही ठिठक गया और ध्यान से उन आवाजो को सुनने लगा। फिर वह गली म आगे बढ गया। गली म सब मकानो के द्वार खुले थे लेकिन अन्दर कोई नही था। चौगान में उठ रहे शोर की ओर वह खिचता चला गया। वह चौगान से पीछे ही रुक गया। अब उसे आवाजें स्पष्ट सुनाई दे रही थी।

चमार भी चौधरियो की बाईकाट की धमकी से पदा होने वाली स्थिति स निपटने की विधिया पर विचार कर रहे थे। युवक चमार चाहत थे कि बाईकाट का उत्तर बाईकाट से दिया जाए। चौधरी बाद म मान भी जाएँ तो उन्ह अपना बाईकाट जारी रखना चाहिए। यह बातें सुनकर डाक्टर प्रसन्न हो गया और मन ही मन मे सोचने लगा कि मेहनतकश तबका (श्रमिक वग) जब जाग उठता है तो दुनिया की कोई ताकत उसका मुकाबला नहीं कर सकती।

बुजुग चमारो का व्यवहार कुछ नम था। उनका तक था कि चौधरियो क साथ हमेशा के लिए बिगाड पदा करके गाव म रहना सभव नहीं है। यह तो हो नही सकता कि रह इस गाँव मे और काम दूसरे गाव म करें। लेकिन जब युवक चमार अपनी बात पर अड गए तो बाबा फत्तू उन्ह समझाता हुआ बोला

'पुत्तरो यह भी तो सोचो कि दस दिन काम न मिला तो खाएँगे कहाँ से। तुम काम करो या न करो लेकिन पेट तो रोटी माँगगा।'

'बाहर जाकर महनत मजदूरी कर लेंगे।' कई आवाजें एक साथ आई।

'तुम अभी बच्चे हो तुमने दुनिया नहीं देखी है। चोरो म चोर यार और जाटो के जाट यार तुम्हे दूसरे गाँव म कोई काम नहीं देगा। फिर दूसरे गाँव म भी तो चमार बसते हैं। उनकी जगह तुम काम कराग तो वे कहाँ जाएँगे?' बाबे फत्तू ने कहा।

'घास खोदकर बचेंगे।'

घास आसमान पर से तो खोदोगे नही चौधरी अपनी जमीन से घास नही खोदने देंगे तो क्या करोगे ?'

'भूखे रहकर दिन काट लेंगे।'

तुम्हारी मर्जी।' काले फत्तू ने निराश स्वर म कहा।

डाक्टर का मन यह सोचकर प्रफुल्लित हो उठा कि प्रोलतारी वग सघष के लिए दृढ़ निश्चय किए बठा है। वह जोश म दो चार कदम ओर आगे बढता हुआ सोचने लगा कि अगर इन्हें अच्छी लीडरशिप मिल जाए तो इनका सघष सफल हो सकता है। वह अपनी सोच को छोडकर फिर उनकी बातें सुनने लगा। अब चमारो के सामने यह समस्या थी कि कल प्रात उनकी स्त्रियाँ चौधरियो की हवेलियो से गोबर उठाने जाएँ या नही। युवक चमार न जाने के पक्ष म थे जबकि प्रौढ चमार चाहते थे कि एक बार जाना चाहिए यदि चौधरी मना कर दें तो उसके बाद बिलकुल नही जाना चाहिए। इस मामले पर बहुत देर तक बहस करने के बावजूद वे किसी निणय पर नही पहुच पा रहे थे।

जब बात लम्बी होती गई और वे आपस म ही उलझने लगे तो काली जो अब तक चुप था सबको शान्त करता हुआ बोला

'देखो शोर उठाने से कोई फायदा नही। चौधरियो की ज्यादती के आगे बिल्कुल नही झुकना चाहिए लेकिन हम पहल नही करनी चाहिए। आज भी उन्होंने पहल की है। कल भी उन्ह ही पहल करने दो।

काली के समझाने-बुझाने पर कतू सतू इत्यादि मान गए। जब यह घोषणा की कि कल प्रात मुहल्ले की स्त्रियाँ नित्यप्रति की तरह चौधरियो की हवेलियो म काम-काज के लिए जाएँगी तो डाक्टर सटपटा उठा। उसे क्रोध आ रहा था कि काली ने चमारो का इन्कलाबी जोश ठडा कर दिया है। वह सोचने लगा कि शहर मे चार पसे कमा लेने के बाद वह कुछ बुजबा विचारा का बन गया है।

चौगान से बच्चे और स्त्रिया बिखरने लगे तो डाक्टर बाहर कुएँ के पास आ गया। वह चो की ओर जाता परन्तु थोडे ही समय के पश्चात फिर पलट आता। वह काली की प्रतीक्षा म था कि वह इधर आए तो उससे बात करे और उसके अन्दर इन्कलाबी स्प्रिट उभारे।

कुछ समय के बाद कुएँ पर लोगो का आना जाना शुरू हो गया। डाक्टर कुछ दूर खेतो म जाकर बठ गया और काली की प्रतीक्षा करने लगा। वह यह

नहीं चाहता था कि किसी को यह एहसास हो कि वह काली की प्रतीक्षा कर रहा था ? वह यह भी चाहता था कि काली के साथ उसकी मुलाकात को अन्य लोग सहजभाव मे लें। काली जब कुएँ पर आया तो डाक्टर खेता स निकलकर आहिस्ता आहिस्ता कदम उठाता हुआ उस ओर चल पडा।

जब वह कुएँ के बराबर पहुचा तो काली स्नान के पश्चात अपना साफा निचोड रहा था। उसे देखत ही काली न बदगी की तो डाक्टर रुक गया और सहज स्वर मे बोला

'सुनाओ डाक्टर जी' काली बालटी उठाकर उसकी ओर बढ आया।

'आज चौधरिया और तुम लोगा का झगडा कैसे हो गया ?

आपका नही पता ? काली न आश्चय से पूछा और फिर डाक्टर को पूरी बात बता दी। डाक्टर लम्बी सी हूँ के पश्चात बोला

'पूजीपति और जिमीदार हमेशा स मेहनतकशा और प्रोलतारी तबके पर जुल्म करते आए हैं, उसको एक्सपलायट करते रहे हैं। लेकिन जब प्रोलतारी तबके म इन्कलाबी स्प्रिट जाग उठती है तो वह बाढ बनकर इन ताकता को तिनका की तरह बहा ले जाता है।'

काली जू जू चौधरिया की ज्यादतिया का जिक्र कर रहा था डाक्टर का जोश बढ रहा था। वह काली को टाकता हुआ बोला

मुझे सब मालूम है। महाशय की दुकान पर सब बातें मेरे सामने हुई है। गाँव के जिमीदारा के साथ गाव के पूजीपति भी मिल गए हैं। लेकिन विश्वास रखो जीत प्रोलतारी तबक की ही होगी। बस तुम्हे अच्छी लीडरशिप की जरूरत है। उसका बन्दोबस्त मैं कर दूगा।

डाक्टर बिशनदास काली से साय को फिर मिलने का वचन देकर तेज-तेज कदम उठाता हुआ कधाले की ओर बढ गया। वहा उसका मित्र और इलाके का सबस पुराना कामरेड टहल सिह रहता था। डाक्टर चाहता था कि घोड वाहा के चमारा के वग सघष का नेतृत्व पार्टी के हाथ म आ जाए। वह स्वय इसलिए सामन नही आना चाहता था क्योकि उसक अपन गाँव का मामला था। टहल सिह अन्य गाँव का रहन वाला और दूसरे जाट था। गाँव वाला को पता चल भी गया तो व उसका कुछ बिगाड नही सकेंगे।

डाक्टर बिशनदास का कामरेड टहल सिह घर पर ही मिल गया। दोना न मुक्का दिखाकर एक-दूसर का लाल सलाम किया और हाल अहवाल पूछकर खाट पर बठ गए। टहल सिह अधेड आयु का तिरछी हुई दाढी वाला सिख था। उसन डाक्टर स चाय-पानी क लिए पूछा तो वह उत्तेजित स्वर म बोला

चाय पानी किसे सूझता है ? हमारे गाँव में आज जबरदस्त झगड़ा हो गया है।

क्या हो गया ?" टहल सिंह ने बेचैनी से पूछा।

चमारों और चौधरियों का झगड़ा हो गया।

'यह तो रोज़ की बात है। टहल सिंह ने हँसते हुए कहा।

यह वैसा झगड़ा नहीं है। दोनों ने एक-दूसरे का बाइकाट कर दिया है। डाक्टर की उत्तेजना और भी ज्यादा बढ़ गई।

डाक्टर बिशनदास झगड़े का विस्तारपूर्वक वर्णन करने लगा। टहल सिंह बहुत ध्यान से सुनता रहा था। जब डाक्टर ने अपने आने का अभिप्राय बताया तो वह सोच में पड़ गया और गम्भीर स्वर में बोला

इन चमारों का कोई भरोसा नहीं है। पहले अकड़ते हैं और फिर झाग की तरह बैठ जाते हैं।

ऐसी बात नहीं है। मामला बहुत संजीदा है। गाँव के दूकानदार भी चौधरियों का साथ दे रहे हैं। गाँव के मेहनतकशों के खिलाफ ज़िमींदार और बुर्जुवा दोनों मिल गए हैं।

टहल सिंह और डाक्टर बिशनदास बातें करते-करते उठ खड़े हुए और दोनों गाँवों के बीच चो के किनारे शीशम के वृक्षों में आ बैठे। बहुत सोच-विचार के बाद दोनों इस निर्णय पर पहुँचे कि उनकी सहायता के लिए अँधेरा होने पर उसकी दूकान में मीटिंग हो। काली बन्तू और सन्तू को बुलाया जाए। ओमा और ऊँचे मुहल्ले वाले चन्नन सिंह भी आ जाएँगे।

डाक्टर बिशनदास ने ओम और चन्नन सिंह को सूर्यास्त से पहले ही बुला लिया। वह काली और टहल सिंह की प्रतीक्षा करता ओमे और चन्नन सिंह को देश में घटने वाली क्रांतिकारी घटनाओं के बारे में समझाने लगे कि किस प्रकार देश के कोने-कोने में दूर-दूर के प्रदेशों में, गाँवों और शहरों में प्रोलतारी और इन्कलाबी ताकतें पूँजीपतियों के षडयन्त्र को असफल बनाकर इन्कलाब का निकट ला रही हैं।

टहल सिंह के आने पर डाक्टर चुप हो गया। टहल सिंह तीनों को वर्ग-संघर्ष की विधि, रूस में व्यापत शांति की मिसालें देकर समझाने लगा। टहल सिंह बोलते-बोलते थक गया और ओमा सुनते सुनते ऊँघने लगा तो डाक्टर को एहसास हुआ कि अँधेरा गहरा हो गया है। टहल सिंह तिली के फूलों की तरह आकाश पर फैले हुए तारे देखकर चिन्तित स्वर में बोला

कामरेड, तेरे आदमी अभी तक नहीं आए।' और फिर वह निर्णयात्मक

स्वर मे बोला

कामरेड, चमारो को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। इन लोगो म जद्दोजहद (सघर्ष) करने का दम खम नही है। जोरावर तबके के साथ हस्त पंजा लेने के लिए बहुत हौसला चाहिए।

कामरेड, तुम्हारी बात ठीक है लेकिन काली हौसले वाला जवान है। वह छ साल शहर मे भी रह आया है। इस टक्कर मे हम चमारो म केडर (पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता) तलाश और तयार करने का मौका मिलेगा। हमारे सल मे जाट खतरी, ब्राह्मण सब जातियो के कामरेड है लेकिन चमार एक भी नही है।' डाक्टर ने कहा।

काफी देर तक प्रतीक्षा करने पर भी चमाद्डी स कोई नही आया तो चनन सिंह स्वय जाकर काली और बन्तू को बुला लाया। डाक्टर से इस मीटिंग का अभिप्राय सुनकर काली को बहुत प्रसन्नता हुई कि उनकी सहायता के लिए कुछ लोग तयार हैं।

उन्होने गर्मी के बावजूद द्वार बन्द कर लिया। व एक मले-स दीपक के इद गिद बठ गए। डाक्टर ने टहल सिंह का काली और बन्तू स परिचय कराया। थोडी देर तक इधर-उधर की बातें करन क बाद टहल सिंह ने उन्ह विशेष रूप से काली और बन्तू का वग सघर्ष का महत्त्व समझाया। थोडी ही दर म डाक्टर, टहल सिंह और चन्नन सिंह अच्छी खासी बहस म उलझ गए। दोनो सिगरेट फूंकत हुए माक्स एजल्स, लेनिन और दूसरे बडे-बडे कम्यूनिस्ट नताओ के हवाल द रह थे। आमा फिर ऊँघन लगा था। टहल सिंह डाक्टर को उँगली स अकित करता हुआ जोश म बोला

कामरेड, तरी अप्रोच (व्यवहार) ट्राटस्की लाईन मे मिलती-जुलती है।'

डाक्टर ने उत्तर म और कई नाम गिनवा दिए और व अपन-आप पास बठे हुए व्यक्तियो को भूलकर फिर बहस म फस गए।

इस सारी बहस का कारण यह था कि डाक्टर काली के इस कथन का समथक था कि चमारो को अगर फाके न काटने पडे तो य बहुत दिनो तक जाटो के बाईकाट का मुकाबला कर सकेंगे। परन्तु टहल सिंह का विचार था कि काली की यह सोच प्रोलतारी स्पिरिट क विरुद्ध है क्योकि इसमे यह आभास मिलता है कि य लोग काम चोर हैं। इन्कलाबी स्पिरिट का मतलब यह है कि फाके काटकर गालियाँ खाकर और जिन्दगी को हथली पर रखकर सघर्ष किया जाय।

बहुत लम्बी चौडी बहस क बाद यह निर्णय किया गया कि सबस पहल

गाँव म चमारा के पक्ष मे प्रापेगण्डा किया जाय। बाकी बात बाद म सोची जायँ। ओमा इस समय तक गहरी नीद सोया हुआ खुर्राटे ले रहा था। डाक्टर ने उसे बहुत कठिनाई से जगाकर घर भेजा। टहल सिंह अगले दिन मिलने के लिए कहकर जल्दी जल्दी बाहर निकल गया।

चमादडी की ओर आते हुए बन्तू काली स बोला

ये ता थूक स पकौडे पकात रहे हैं।

'देखने जाओ, शायद कल तल भी आ जाए। काली न उत्तर दिया और वे चमान्डी की ओर मुड गए।

४२

चमारनें अपने मर्दों के कहने के अनुसार मुह अधेरे ही चौधरिया की हवेलिया की ओर चल पडी। कुछ मद चौधरिया की प्रतिक्रिया जानन के लिए चौगान म इकट्ठे हो गए और बाकी लोग घास खाने के लिए अपनी चादर और खुर्पे लेकर बाहर निकल गए।

चमारनें उल्टे पाव वापस आ गइ और अपन मर्दों का कोसती हुई चौधरिया को गालियाँ देने लगी। चौधरिया ने उन्ह चमादडी स बाहर कुएँ के पास से ही वापस कर दिया और साथ ही उन्ह बहुत बुरी बातें कही। प्रसिन्नी अपना टोकरा फेंकता हुई क्रुद्ध स्वर म बाली

'मूल निकले माए चौधरिया को। हम स काम नही कराना है ता न सही, अवातबा बकने का क्या हक है।

फिर वे रोती हुइ आवाज म कहने लगी

मोयो के अपने घरो म भी माएँ बहनें हैं बुरा काम उनके साथ करें।'

चमारन चौधरिया का गालियाँ देती हुइ अपनी-अपनी आप-बीती सुना रही था कि घास खोदन के लिए बाहर गए हुए मद भी वापस आ गए। वे बहुत भिन्नाए हुए थ। उनक आने पर स्त्रिया का शोर बन्द हो गया। ताया बसता धरती पर अपनी चादर फेंककर बठ गया और अपन सिर को दोनो हाथा म पकडता हुआ बोला

'कहर खुदा का आदमी, आदमी का राजक' (रोटी रोजी देने वाला) बन बैठा है। इतना अहंकार तो शायद बादशाहों को भी नहीं होता होगा जितना इस गाँव के चौधरियों का हो गया है।

क्या हुआ ताया ?' सन्तू ने उत्सुकता से पूछा। उसके उत्तर देने से पहले ही काली और जीतू भी कंधों पर चादरें रखे और हाथों में खुर्पे लटकाए हुए आ गए। ताए बसंत ने उन्हें देखते ही पूछा

'तुम किधर गए थे ?

गाँव के पश्चिम में गप्पियों के खेतों की तरफ।

'क्या हुआ वापस क्यों आ गए ?'

'वो तक तो किसी ने कुछ नहीं कहा। बड़े रास्ते पर चलते रहे तब भी किसी ने नहीं रोका लेकिन ज्यू ही हम खेतों की ओर मुड़े तो गप्पियों के लठबन्द लड़को ने रोक दिया। काली ने उत्तर दिया।

मैं दक्खिन में गया था। मेरे साथ निक्कू का अमरू भी था। हम तकिए से परे जाकर पगडण्डी की ओर मुड़े तो चौधरी मुंशी का पुत्तर मेरी तरफ लाठी उठाता हुआ बोला कि उसके खेत में आया तो टाँगें तोड़ देगा।

चारों तरफ नाकाबंदी की हुई है। सवेरे मुहल्ले की कुछ औरतें जंगल पानी के लिए खेतों में जाकर बैठी ही थी कि चौधरियों के लड़कों ने उन्हें उठा दिया और वे हाथों में नाले (आजार बन्द) थामे हुए कुएँ की ओर भाग आई।'

इतनी देर में नानो ने सिर से टोकरा उतारकर दरवाजे से पटक दिया और बफरी हुई आवाज में बोली

मैं मोए बन्ता सिंह और मुंशी के घरों में कभी नहीं जाऊँगी। मोया पाले लाठी लेकर मेरे पीछे दौड़ा और मेरी गुत (चोटी) पकड़ ली। मैंने भी मोए को टोकरे से मारा। नानो को यह कहते-कहते अपनी छातियों में कसक सी महसूस हुई और उसका गुस्सा और भी बढ़ गया। मोए बेइज्जती करने पर उतारू हो गए हैं।

सब लोग नानो की ओर देखने लगे। जो स्त्रियाँ चौधरियों की हवेलियों की ओर गई थी उन्होंने अपना-अपना दुखान्त सुनाया तो ताया बसंता ऊँचे स्वर में बोला

हमारी बहू बेटियों की बेइज्जती करने वाले ये कौन होते हैं। हम इनकी बहू-बेटियों की बेइज्जती करेंगे।'

उसके पास खड़े युवक चमारों की रगें फड़कने लगी। बन्तू काली को बाजू से पकड़ता हुआ बोला

'काली, चलो लाठियां लेकर साला जो भी रास्ते मे आए उसका सिर फोड दो। आज घर म मरने या मारने का फसला करके चलो।

काली का ध्यान पालो की ओर था और वह बहुत गम्भीरता से सोच रहा था कि उसस नानो की बेइज्जती का बदला लेकर रहेगा। उसने बन्तू की ओर ध्यान से देखा और सब लोगो को सम्बोधित करता हुआ बोला

काम करना और कराना उनकी और हमारी मर्जी पर है लेकिन उन्हें हमारे मुहल्ले की औरतो और लडकियो की बेइज्जती करने का कोई हक नही है।

बाब फत्तू और तुमने ही यह सलाह दी थी कि औरतो को सवेरे चौधरियो की हवेलियो म काम करने के लिए जाना चाहिए।' बन्तू ने कटाक्ष करते हुए कहा।

हम क्या पता था कि वे इनकी बेइज्जती करने पर उतर आएँगे।'

सब लोग चौधरियो की इस ज्यादती का उचित उत्तर देन के बारे म सोच रह थे कि बग्गा दौडा हुआ चौगान म आया। उसका सास फूला हुआ था। उसके पीछे पीछे गालियां देता हुआ पालो आ रहा था। उस दखत ही काली भडक उठा और लपककर उसकी ओर बढता हुआ बोला

खडा रह अपनी मा के यार। मैं तेरी बदमाशी निकालता हू।'

पकड लो साले को। जब ये हम अपने मुहल्ले और खेतो म आने स रोक सकते है तो इनका हमारे मुहल्ले म आने का क्या काम है ?

काली को अपनी ओर आता दखकर पालो ठिठक गया और फिर पीछे मुड पडा लेकिन काली न दौडकर उसे गली क नुक्कड क पास पकड लिया और सिर के बालो स पकडकर झँझाडता हुआ बोला

तेरे ऊपर कोई अनोखी जवानी नही आई है। उम अपनी मा पर तूने हाथ उठाया। मैं तेरा खून पी जाऊँगा।

काली ने पालो को अच्छी तरह झँझोडा और उसक चुतडो पर लात मारता हुआ बोला

अगर फिर कभी एसी हरकत की तो कच्चे को खा जाऊँगा।

काली जब चौगान मे वापस पहुचा तो बहुत सन्तुष्ट था। बग्गे का सास दुरुस्त हुआ तो कई लोगो ने एक ही साथ उस पर प्रश्नो की बौछाड कर दी। वह हकलाता हुआ बोला मैं चो म बठा था, पालो चारे का गटठा उठाकर आ रहा था। वह मेरे नजदीक गटठा फेंककर दम लेन लगा और सुस्ताने के बाद मुझे गटठा उठवाने के लिए कहा। मेरे इन्कार करने पर उसने मुझे गालियां

गा। मैं भी उनसे [illegible] [illegible]। [illegible]

लोग तिलमिलाकर [illegible] और कुछ [illegible]। [illegible] हुआ [illegible] की [illegible] लगा।

चमारों का यह [illegible] की पंचायत में ही तय हुआ था कि नत्थू चौधरी [illegible] हुआ आ गया और [illegible] चमारों के चौबारे में [illegible] बोला

कई चमार चौधरियों के घरों में [illegible] मुहल्ले की [illegible] की दुकानों पर नहीं आ सकता। जो [illegible] भी [illegible]।

उनसे [illegible] अपनी [illegible]। [illegible] हो गया और उनके आस-पास [illegible] खड़े हो गए।

नत्थू [illegible] ठिकाने [illegible] चौधरियों के मुहल्ले की ओर मुड़ गया। वह [illegible] समय के बाद ऊँची आवाज़ में [illegible]

गाँव की पंचायत ने फैसला किया है कि कोई ठिकानेदार दुकानदार चमारों को अपनी हवेली मकान, घर और दुकान पर न आने दे। उनको काम पर न लगाए। जो कोई ऐसा करेगा गाँव वाले उसका हुक्का पानी बंद कर देंगे।

ठिकाने के वाले डाक्टर बिशनदास ने हुक्के की नय छोड़ दी और चन्नन सिंह की ओर [illegible] संकेत करता हुआ बोला

चाचा तीर्थ राम, इन ठिकारों का कोई फायदा नहीं है। प्रोलतारी तबके के साथ ज्यादती हो रही है।' महाशय की दुकान पर बैठे चौधरी डाक्टर पर नज़र डालकर एक-दूसरे की ओर देखते हुए मुसकरा दिए। डाक्टर हुक्के के दो चार कश खींचकर फिर बोला

सारी दुनिया चमारों के साथ है। क्यों चन्नन सिंह?

उसने हाँ में सिर हिलाया तो महाशय हँसता हुआ बोला

आत्मा और परमात्मा में तो सारी सृष्टि मानी जाती थी, तू और चन्नन सिंह सब से सारा संसार बन बैठे हो।

डाक्टर ने आवेग में आकर कहा

मैं गलत नहीं कह रहा हूँ। सारे देश के मेहनतकश सारी दुनिया के लोग, गाँव के चमारों के साथ हैं। हमारे गाँव में इन्कलाब की ओर यह पहला कदम है। जितना ज्यादा जुल्म बढ़ेगा उतनी ही क्लास स्ट्रगल तेज होगी और

आखिर में प्रोलतारी तावे की जीत होगी और पैदावार के तमाम साधन— जमीनें, मशीनें जनता की मल्कीयत हो जाएंगी।

वहाँ पर बैठे लोग डाक्टर के मुंह से इस प्रकार की बातें पहली बार नहीं सुन रहे थे। परन्तु जब वह गाँव के लोगों के बारे में बोलने लगा तो महाशय भड़क उठा

'जा तू भी अपना बिस्तरा डेरा उठाकर चमारली में चला जा। तू उन्हें सगे शरीकेदार बना रहा है।

डाक्टर महाशय को उत्तेजित देखकर और भी ज्यादा जोश में आ गया और उसे रूस के इन्कलाब से उदाहरण देकर समझाने लगा। जब डाक्टर बोलता ही गया तो महाशय उसे डाँटता हुआ कहने लगा

देख बिशनदास तू अपना अज़ीज़ (निकट सम्बन्धी) है। मुझे केवल इतना बता दे कि क्या तू चमारों के सहारे गाँव में जिन्दगी काट सकता है ?

डाक्टर के उत्तर देने से पहले ही मंगू ने चारे का गट्ठा महाशय के चबूतरे पर फेंक दिया। महाशय हरा चारा देखकर प्रसन्न हो गया और उसकी ओर बढ़ता हुआ बोला

'चौधरी हरनाम सिंह से बोलना कि मौका निकालकर इधर का भी चक्कर लगा जाए।'

महाशय जी आज बहुत काम है। चौधरी जी आप भी पट्ठे-दत्थे में लगे हुए हैं।

मंगू के जाने के बाद डाक्टर बोला

यह चमारों में काली भेड़ है फिक्स्ड कालमिस्ट है रिएक्शनरी बुर्जुवा का पिट्ठू है। ऐसे लोग ही प्रोलतारी इन्कलाब को सावोताज करते हैं।

महाशय डाक्टर की बात को अनसुना करता हुआ चौधरी मुंशी से बोला

'चौधरी देख लो मंगू के बाप ने चौधरी हरनाम सिंह से पाँच सौ रुपये उधार लिए थे। वह सारी उम्र काम करता मर गया लेकिन करजा नहीं उतरा। पाँच-सात साल तो इसे भी चौधरी का काम करते हो गए होंगे। तू भी ऐसा कामा रख लेता तो आराम से रहता। सारी चमारली ने काम करने से इन्कार कर दिया है लेकिन मंगू इन्कार नहीं कर सकता।

यह स्लेवरी (गुलामी) की निशानी है। स्लेवरी के बाद जागीरदारी सिस्टम आया। इसके बाद पूंजीवाद और इसका खात्मा करके अब समाजवाद आएगा। डाक्टर ने कहा।

बिशनदास हमें भी बात करने दे। जब से तू आया है टर टर लगा रखी

है। अगर तू चमारों में हर में उनसे बातें करेगा तो तेरा हुक्का पानी बन्द कर दिया जाएगा।' चौधरी मुंशी ने कुद्ध स्वर में कहा।

'हम घर घर में गली-गली में, गाँव गाँव में इस हुक्म की खबर पहुँचा देंगे और सारा इलाका तुम्हारे खिलाफ खड़ा हो जाएगा।' मास्टर ने जोश में कहा।

'ऐसी बात तेरे घर में कोई नहीं सुनता बाहर कौन सुनेगा।' महाशय ने उसकी खिल्ली उड़ाते हुए कहा।

दोपहर के पश्चात् बहुत से चौधरी काम-काज से निवृत्त होकर महाशय की दुकान पर एकत्रित हो गए। चौधरी कर्म सिंह ने बताया कि आज चमारों की पूरी नाराजगी की गई। चमारनें काम करने आई तो उन्हें गालियाँ देकर वापस कर दिया। जो चमार घास खेतों में आए उन्हें दौड़ा लिया। सवेरे चमारनें जगत पानी के लिए खेतों में आई तो लड़कों को देखकर व नाल हाथों में पकड़ कर भाग गई। सालों को दो दिन में होश आ जाएगा। कल तक बात पकड़कर नाक में रगड़ें तो काम बन्द देना।

डाक्टर उनकी बातों में दखल देने की कोशिश करता तो उनमें से कोई-न-कोई उसे झाड़ देता और वह उदास और खिसियाना-सा होकर हुक्का गुड़गुड़ाता हुआ यह सोचकर अपने-आप को तसल्ली दे लेता कि क्रान्ति आने के बाद वह एक एक से बदला लेगा।

चन्नन सिंह चमारों के पक्ष में बोलने लगा तो बहुत से चौधरी एक साथ उसे गालियाँ देने लगे और वह भी खिसियाना सा होकर चुप हो गया। डाक्टर उसे उठने का संकेत करता हुआ बोला

इस तबके के दिन अब पूरे होने वाले हैं। रिएक्शनरी तबका जब खत्म होने पर आता है तो उसमें फ्रस्टरेशन आ जाती है।

डाक्टर लोगों की दुर दुर के बीच में चन्नन सिंह को साथ लेकर अपनी दूकान पर आ गया।

शाम को चौधरी और चमार एक दूसरे से अलग अपने-अपने काम-काज में व्यस्त हो गए। डाक्टर बिशनदास अपनी दूकान पर बैठा गाँव में चल रहे वर्ग संघर्ष को व्यापक रूप देता हुआ इन्कलाब के कदमों की चाप सुनता रहा।

चौधरियों के बाईकाट के पहले कुछ दिन चमारों का व्यवहार ऐसा रहा जैसे वे छुट्टी पर हों। चमारनें चौगान में बरी के नीचे बैठकर मूंज की अट्टियां बनाती हुई आपस में गपशप लड़ातीं और चौधरियों को गालियां देतीं। मर्द छक्कड़ी, चौपट और ताश खेल कर दिन गुज़ारते। जीतू और बन्तू इस बीच में शहर का भी चक्कर लगा आए।

चौथे दिन चमादड़ी पर बाईकाट का प्रभाव महसूस होने लगा। अनाज के साथ ईंधन और उपले भी खत्म होने लगे और उन्हें चिंता हुई कि अगर बाईकाट खत्म न हुआ तो शायद फाकों तक नौबत आएगी। परन्तु वे एक-दूसरे का साहस बँधाते। इस स्थिति ने उनको परस्पर बहुत निकट कर दिया। स्त्रियां आपस में बहुत कम लड़तीं झगड़तीं। वे सब किसी दुर्ग में घिरी हुई सेना की तरह चौकस रहते हुए एक दूसरे का हाथ बटाते।

पांचवें दिन प्रीतो के घर में खाने के लिए कुछ नहीं था। वह चोरी छिपे मंगू के पास गई और रोती हुई फरियाद करने लगी कि निक्कू और अमरू को चौधरी की हवेली में काम दिलवा दे। मंगू ने मुहल्ले के लोगों की ओर से आपत्ति का ज़िक्र किया तो वह भड़क उठी

'आग लगे मुहल्ले को। मेरे बच्चे भूख से बिलख रहे हैं। वे मुझे कौनसा पकवान पका कर भेजते हैं। तू उन्हें काम दिल्वा दे, मुहल्ले को मैं अपने आप सँभाल लूंगी।

मंगू घर से निकला ही था कि ज्ञानो ने काली को खबर दी कि प्रीतो ने निक्कू और अमरू को चौधरी की हवेली में काम दिल्वाने के लिए मंगू से कहा है। काली तुरन्त ही प्रीतो के घर गया लेकिन उसके भूख से बिलख रहे बच्चों को देखकर उलटे पांव वापस आ गया। उसने अपना अनाज का मटका उठाया और प्रीतो के पास ले जाकर बोला

चाची ले बच्चों को रोटी पकाकर खिला। यह मुसीबत हमने माँगी नहीं है हम पर जबरदस्ती ठूंसी गई है। हौसला रखो। अगर रोटी खाएँगे तो सब खाएँगे भूखे रहेंगे तो सब रहेंगे।

काली की बातें सुनकर प्रीतो का मन खिल उठा और वह अपनी हरकत पर लज्जित-सी बोली

देखो ना, मैं आटा मांगने मंगू के घर गई थी। वह ठहरा चौधरी का पिच्छलग्गू कहने लगा, फाके क्यों काट रही हो—चौधरी से कहकर अमरू

और उसके बापू को काम दिलवा देता हू। मैंने मना कर दिया मैंने साफ कह दिया है कि फाके काट लंगे लेकिन मुहल्ले का साथ नही छोडेंगे।'

काली चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा और उसका साहस बढाकर बाबू फत्तू के घर चला गया। बाबे के घर म भी खाने के लिए कुछ नही था और कमजोरी के मारे उसके गले से आवाज नही निकल रही थी। वहा से वह ताई निहाली के पास गया तो वह भी ऐसा ही दुखडा लेकर बठ गई। बन्तू का जोश भी बहुत ठडा पडा हुआ था। ताए बसते के पास पहुचा तो वह भी उदास सा खाट पर लेटा था। काली ने हाल पूछा तो उठने की कोशिश करता हुआ बोला

पहले दो रोटी खाता था फिर एक पर आया, अब आधी पर, कल चप्पा रह जाएगी और परसो शायद फाका काटना पडेगा।

काली चिंता मे डूबा हुआ अपने घर आ गया और कुछ देर तक बठा रहा उसे महसूस हो रहा था कि मुहल्ले के लोगो का साहस टूट रहा है। कुछ मिले मिलाएगा भी नही और बेइज्जती अलग होगी।

खेता म बाढ का पानी सूख गया था और चिकनी जमीन पर पपडिया सी बन गई थी। मक्की के डठलो की जडें जसे उसम जकडी हुई थी और वे कुम्हलाने लगे थे। चौधरियो ने अपने स्कूल म पढने वाले बच्चो को भी नलाई के काम पर लगा लिया था। चौधरानियो ने ढोर डगर सँभाल लिए थे। लेकिन उनकी अनथक कोशिशो के बावजूद मक्की की रही-सही फसल बरबाद हो रही थी।

हर चौधरी बाजीगरो के कोठो तक हो आया था। अव्वल तो बाजीगर नलाई गुडाई का काम करना नही चाहते थे। हजार हजार नखरे करने के बाद कोई मानता था तो दुगनी दिहाडी माँगता था। बाहर से काम करने के लिए कोई चमार तयार नही था क्योकि एक तो उनके लिए अपने गाँव म बहुत काम था, दूसरे अपनी बिरादरी का भी लिहाज था। गर्मी के सताए हुए और थकावट से चूर चौधरी चमारो को गालियाँ देते हुए उनकी हठधर्मी और मूर्खता को कोसते रहते और मन ही मन म चाहते कि झगडे का जल्दी से जल्द निपटारा हो जाए। चमार सूख रही मक्की को देखकर दिल ही दिल म कुढते और चौधरियो को बुरा भला कहते कि अपने हठ से फसल बरबाद कर रहे हैं।

इस झगडे के शुरू के दिनो म छज्जू शाह और महाशय दोनो प्रसन्न थे। उन्हे ज्यादा खुशी इस बात की थी कि घर बठे बिठाए ही मुफ्त चारा मिल

रहा था। तीन दिन तक तो चौधरी उनके घर चारा पहुंचाते रहे लेकिन बाद में उन्होंने बंद कर दिया। छज्जू शाह ने चौथे दिन बल्ला सिंह से शिकायत की तो वह भड़क उठा और छज्जू शाह से तल्ख स्वर में बोला कि वह उसकी भैंस के लिए चारा लाए या अपनी ढोर डँगर को सँभाले। जरूरत है तो स्वयं जाकर उसके खेत से चारा काट लाए। वह उसका नौकर नहीं है।

छज्जू शाह का दूसरा नुकसान यह हुआ कि उसकी दूकान पर बिक्री कम हो गई। चौधरी लोग नमक तेल के सिवा कम चीजें ही खरीदते थे। उसके ज्यादा ग्राहक चमार ही थे जिन्हें अपनी हर जरूरत के लिए उसके पास आना पड़ता था।

पांचवें दिन चौधरी हरनाम सिंह के खेत से चारा लाते हुए रास्ते में महाशय तीर्थ राम की गर्दन में बल पड़ गया। वह बड़ी कठिनाई से गांव तक पहुंचा और अपनी दूकान से थोड़ा परे ही चारे का गट्ठा फेंककर बैठ गया। उसे निढाल देखकर धड़ाम चौधरी चबूतरे से नीचे उतर आया और हँसता हुआ बोला

रंडियों को भी चरखा कातना पड़ गया है। महाशय चारा ढोना इंडी मारने और सूदखोरी के बस की बात नहीं है।

महाशय को क्रोध तो बहुत आया परन्तु वह बात टालता हुआ बोला

इन चमारों ने नाक में दम कर दिया है। साले फाके काट रहे हैं लेकिन सीस (सिर) नहीं निवाते।

डाक्टर बिशनदास चहकता हुआ बोला

चाचा तीर्थ राम प्रोलतारी दुनिया की सबसे बड़ी इन्कलाबी ताकत है। उनके आगे कोई नहीं ठहर सकता। उनका मुकाबला लाखों करोड़ों फौजों के मालिक रूस का महाराजा जार न कर सका तो इस गांव के चौधरी किस बाग की मूली हैं?

महाशय ने घूर कर डाक्टर की ओर देखा और तल्ख स्वर में बोला

बिशनदास इस समय दौड़ जा यहाँ से। सारी उम्र की रखी रखाई बिगड़ जाएगी।

'इम्पिरियलिस्ट और कपिटलिस्ट तबके अपनी हार से पहले बुखलाहट का शिकार हो ही जाते हैं। उस समय उन्हें अपने पराए का होश नहीं रहता।

डाक्टर महाशय के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही तेज तेज कदम उठाता हुआ गली में बढ़ गया ताकि कामरेड टहल सिंह के साथ नई स्थिति के

बारे में बातचीत कर सके।

चमादड़ी के कुएँ पर बैठा काली डाक्टर को देखते ही उछलकर उसकी ओर बढ़ा।

'डाक्टर जी, मैं आपकी ही राह देख रहा था।'

'तुम मेरे साथ मत आओ। चो के रास्ते से शीशमों के कुंज में पहुंच जाओ। मैं कामरेड टहल सिंह को लेकर वहां आता हूं। वहीं मीटिंग करेंगे।' डाक्टर आगे बढ़ गया।

काली को डाक्टर के व्यवहार पर कुछ हैरानी भी हुई और कुछ क्रोध भी आया और वह वहीं पर ठिठक गया। परन्तु इस आशा के साथ वह कुंज की ओर चल पड़ा कि शायद वे कुछ सहायता दे सकें और फाका तक नौबत न आए।

दिन काफी ढल गया था जब काली को डाक्टर और कामरेड टहल सिंह कुंज की ओर आते दिखाई दिए। वह उत्सुकता से उनकी प्रतीक्षा करने लगा और उनकी गति सुस्त देखकर वह उनकी ओर चल पड़ा। वह उनके निकट पहुंचा तो कामरेड टहल सिंह ने लाल सलाम करके काली के साथ हाथ मिलाया। उसे टहल सिंह के साथ हाथ मिलाकर अजीब सी खुशी महसूस हुई क्योंकि निर्धन से निर्धन जाट भी चमार के साथ हाथ नहीं मिलाता था।

कुंज के पास आकर वे बाएँ ओर घूमकर चो में गहरे गढ़े की ढलान में जा बैठे। कामरेड टहल सिंह ने डाक्टर और काली को सिगरेट देकर स्वयं भी सिगरेट सुलगा लिया और दो बार कश खींचकर बोला

'कामरेड क्या पोजीशन (स्थिति) है। डाक्टर पहले तुम बताओ कि कैपिटलिस्ट कैम्प का क्या हाल है?'

'उनके कदम डगमगा गए हैं। अपनी हार से पहले वे बौखलाहट का शिकार हो गए हैं। उनमें आपस में फूट पड़ने लगी है।' डाक्टर आवेग में आ गया। 'उन पर थोड़ा-सा दबाव और डाला जाए तो वे मैदान छोड़ देंगे।'

कामरेड टहल सिंह डाक्टर की हर बात पर सिर हिलाता रहा और पहला सिगरेट खत्म हो गया तो उसके साथ ही नया सिगरेट सुलगा कर काली की ओर देखता हुआ बोला

'कामरेड तेरे मुहल्ले में क्या पोजीशन है?'

'बहुत बुरी है।' काली ने तुरन्त उत्तर दिया और फिर अपने कथन की व्याख्या करता हुआ बोला

'कुछ लोगों के पास चूल्हे में जलाने के लिए ईंधन और पकाने के लिए

अनाज नही है। उनके हौसले टूट रह है। एक औरत तो चौधरी हरनाम सिंह के कामे (नौकर) मगू के घर गई थी कि वह उसके घर वाले और पुत्तर को काम दिल्वा दे। मैंने उसे अपना सारा अनाज दिया तो फिर कहीं जाकर उसने अपना इरादा बदला।

'कामरेड तुम्हारी अपरोच रिफार्मिस्ट (सुधारवादी) है। एसी बातो से प्रोल्तारी तबके की इन्क्लाबी स्प्रिट कमजोर पडती है। उन्हे समझाओ कि कुरबानी के लिए तयार रहे अच्छा आगे कहो।'

काली हैरानी मे उसकी ओर देखता हुआ बोला

'अगर यही हाल्त रही तो लोग ज्यादा-से-ज्यादा एक दो दिन और निकाल लेंगे। काम धधा मिल्ता नही, पहले पसा नही है ऐसी हाल्त म वे कितने दिन मुकाबला करेंगे। एक दिन फाका काटना पडा तो वे चौधरियो के पाँव पर जा गिरेंगे।

कामरेड टहल सिंह सोच म पड गया और डाक्टर को सम्बोधित करता हुआ बोला

कामरेड, एसा लगता है कि तेरे गाँव म प्रोलतारी तबके का सगठन कमजोर है और इसका सगठन उसी समय कमजोर होता है जब उनके जेहन साफ न हो और वे आईडिलाजीकली अभी कच्चे हो। मेरे ख्याल म तुमने समय से पहले ही स्ट्रगल शुरू करा दी है।'

कामरेड मेरा ख्याल है कि प्रोलतारी तबके का जेहन स्ट्रगल के दौरान ही पुख्ता (पक्का) होता है। यह बात तारीखी एतबार से भी सिद्ध हो जाती है। रूस म पहला इन्क्लाब इसलिए कामयाब नही हुआ था क्योंकि वहाँ की जनता न पहले कोई स्ट्रगल नही की थी।

लेकिन दूसरे कामयाब इन्कलाब से यह बात भी सिद्ध होती है कि प्रोल्तारी तबके के जेहन साफ हो और वे आईडिलोजीकली पुख्ता हो तो कामयाबी यकीनी है। कामरेड टहल सिंह ने उत्तर दिया।

अँधेरा बढ रहा था और उनकी बहस का कोई अत नजर नही आता था। काली बेचनी से पहलू बदलता हुआ बोला

अगर आप अनाज का बन्दोबस्त कर दें तो बाईकाट जारी रखा जा सकता है।

कामरेड मैं तुम्हे पहले भी समझा चुका हूँ कि यह बात इन्कलाबी स्प्रिट के खिलाफ है। मेरे ख्याल म इसे प्रापेगण्डे की रफ्तार तेज कर देना चाहिए। इस मुकामी (स्थानीय) स्ट्रगल को 'मास मूवमैंट (जनता का व्यापक सघर्ष)

सन्तू और जीतू बाईकाट खत्म करने और चौधरियों से माफी माँग लेने के लिए ज़ोर दे रहे थे कि काली वहाँ से उठकर चला गया। वह थोड़ी दूर ही गया था कि बन्तू की ओर झुकता हुआ सन्तू बोला

'कौन लाता है इसके लिए पकवान ?'

'मानो ।' उसने सन्तू के कान में कहा।

'मैंने यह तो सुना था कि दोनों का आपस में आंख-मटक्का चल रहा है।' सन्तू बोला।

'आँख मटक्का तो पुरानी बात हो गई है प्रीतो से कभी पूछना, वह तुम्हें पूरी कहानी सुनाएगी।'

काली चौक में से होता हुआ लालू पहलवान की हवेली चला गया। लोहे की चादरों का फाटक बंद था। काली ने धीरे से उसका एक पट खोला। पहलवान बरामदे के बाहर अकेला लेटा हुआ था। काली को अपनी ओर आता देखकर वह उठ बैठा और ऊँची आवाज़ में ललकारता हुआ बोला

'कौन है ?'

'मैं हूँ काली, माखे का पुत्तर।' काली ने उसकी ओर तेज़ कदमों से बढ़ते हुए कहा। लालू पहलवान का लहजा एकदम नर्म हो गया। काली जब उसकी खाट के पास जा खड़ा हुआ तो लालू पहलवान ने पूछा

'सुनाओ कैसे आए हो ?'

'बहुत ज़रूरी काम से आया हूँ।' कहकर काली रुक गया।

काली ने कुछ क्षणों के लिए कोई उत्तर न दिया तो पहलवान ने फिर पूछा। काली रुक रुक कर बोला

'चमादड़ी में कई घरों में अन्न का एक दाना नहीं है। किसी ने आधी रोटी खाई है और किसी ने चप्पा कुछ लोगों ने तो पानी पी-पीकर पेट भरा है।'

लालू पहलवान सोच में पड़ गया और कुछ क्षणों के पश्चात बोला

'तो फिर मुझसे क्या चाहते हो ?'

'अगर आप दो मन अन्न दे दें तो हम लोगों के दो चार दिन निकल जाएँगे।'

लालू पहलवान फिर सोच में पड़ गया और बहुत उदास स्वर में बोला

'काली दास, मैं तुम्हें दो की बजाय चार मन अनाज दे देता लेकिन मैं वचन का बाँधा हुआ हूँ। जब तक बाईकाट जारी है मैं तुम्हें पाव भर अनाज नहीं दे सकता। बाईकाट खत्म हो जाए तो चाहे दस मन ले जाना।

लालू पहल्वान का उत्तर सुनकर काली चुप हो गया और कुछ क्षणा के बाद उसे बदगी करके चमादडी की ओर वापस आ गया। वह सोच रहा था कि मुहल्ले क लोगा के पास खाने के लिए अनाज होता तो शायद उन्हें नानो के रोटी लाने की बात इतनी न चुभती। अगर किसी को पता भी था तो भरी महफिल म इसकी चर्चा न की जाती। अगर उसे पहल्वान से मन दो मन अनाज मिल जाता और वह सबम बाँट देता तो उठी हुई बात भी दब जाती। उसका मन घणा से भर गया और वह ताए बसते के शब्दा 'जाटा क जाट यार चोरा क चोर यार' को दोहराता हुआ सारी रात करवटें बदलता रहा।

४४

मुह अँधेरे नानो काली को रोटी देने आई लेकिन उसने रोटी समेत उसे वापस जान के लिए कहा। नानो ने उसके साथ बात करनी चाही लेकिन काली ने उसे द्वार स बाहर निकाल अन्दर से साँकल चढा ली।

काली की समझ म नहा आ रहा था कि वह क्या कर। दोपहर तक वह घर म लेटा रहा। जब भूख का एहसास ज़ोर पकडता तो वह उठकर पानी पी लेता और फिर लेट जाता। शायद वह शाम तक इसी तरह लेटा रहता लेकिन उसे नद सिंह का बुलावा आन पर घर से बाहर निकलना पडा।

नद सिंह का सदेश पाकर उस तुरत ही पादरी का ख्याल आ गया। वह अपने-आप को धतकारन लगा कि डाक्टर के पीछे भागने और लालू पहलवान के आगे हाथ फलाने से तो बेहतर था कि वह पादरी के पास जाता उससे मदद मागता और शायद कुछ न कुछ पा लेता।

वह इन्ही विचारा म मग्न नद सिंह की दूकान पर पहुँच गया। पादरी भी वही उपस्थित था। काली का उतरा हुआ चेहरा देखकर वह नम्र स्वर म बोला

कहो काली दास, ठीक हो ना?'

ठीक हूँ पादरी जी।' काली ने उसे बदगी करत हुए उत्तर दिया। पादरी

न उसकी ओर मुंह फिराते लिया और पंडत का मनन करता हुआ बोला

कहा, चौधरिया में गाय कोई फसला हुआ या नहीं ।

'अभी तो कोई फसला नहीं हुआ । लेकिन अगर यही हाल रहा तो शायद आज कल में हो जाएगा ।

मैं तुम्हारी बात समझा नहीं ।' पादरी ने चौंक कर पूछा ।

यही कि कुछ लोग फाके काट रहे हैं और कुछ आधी रोटी खाकर गुजारा कर रहे हैं । मुहल्ले में शायद ही कोई ऐसा घर होगा जो आजकल पूरी रोटी खाता हो ।

'योसू मसीह रहम करें । अपने बन्दों की मुसीबतें दूर करें ।' पादरी ने छाती पर क्रॉस का चिह्न बनाते हुए कहा और फिर काली की ओर झुकता हुआ बोला

गरीब आदमी को भूखा मारना सबसे बड़ा पाप है । ऐसे आदमी को बहिश्त (स्वर्ग) में कभी जगह नहीं मिल सकती । चौधरियों की ज्यादती है ।

यह सुनकर नंद सिंह ने भी कुछ कहना चाहा लेकिन पादरी ने उसे हाथ के संकेत से मना कर दिया और एक एक शब्द पर जोर देता हुआ बोला

अगर चमार ईसाई बिरादरी में शामिल हो गए होते तो हमारा मिशन इन पर फाकों की कभी नौबत न आने देता । हम बंदे को बंदे का राजक नहीं मानते । लेकिन हमारे लिए मजबूरी है । मैं किस रिश्ते से तुम्हारे मुहल्ले वालों की मदद करूँ ।

काली के पास पादरी की बात का कोई उत्तर नहीं था लेकिन वह फिर भी बोला

पादरी जी, अगर आप कुछ अनाज दे सकते हैं तो जरूर दें ।

'अनाज की तो बोरियाँ भिजवा दूं लेकिन सवाल है किस रिश्ते से । गाँव वाले कहें तो ला सकता हूँ । वे कहेंगे नहीं ।'

काली चुप रहा तो पादरी फिर बोला

तेरी बात और है, तू चाहे तो दस बीस सेर अनाज तुझे दे सकता हूँ ।

काली ने कोई उत्तर नहीं दिया । उसके मन में बार-बार विचार आ रहा था कि पादरी से अनाज लेकर मुहल्ले में बाँट दे । सबका कम से कम एक डंग तो निकल जाएगा । पादरी ने जब अपनी बात दोहराई तो काली ने हाथ जोड़ दिए और उठता हुआ बोला

'आपकी मेहरबानी है । मुझे अभी जरूरत नहीं ।

काली नंद सिंह के घर से निकलकर चौगान में आ गया । वहाँ पर भूख

से सताए हुए नढाल लोग आपस म झगड रहे थे । काली चुपके से एक ओर जा बैठा । वह बहुत ही उदास था । मुहल्ले के सब लोग बाव फत्तू और ताए बसते को घेरकर बैठे थे और उनसे अपनी समस्या का समाधान चाहत थे ।

ताया बसता उनके बार-बार पूछने पर रुहासा हाकर बोला

और क्या किया जा सकता है । मैं और चाचा फत्तू जात हैं और चौधरियो के पाव पर अपने साफे रखकर माफी माग लेत है ।

कुछ भी करो हमसे भूख से बिलखते हुए बच्चे नही देखे जात । पास ही बठी स्त्रिया मे से एक ने कहा ।

'अगर बुढापे मे हमारी नाक कटवाना चाहत हो तो तुम्हारी मर्जी लेकिन एक बात सोचो अगर सूखा पड जाता ता फिर क्या करत पुत्तरा, तुमने वे दिन नही देखे जब हमने वृक्षा के पत्ते, सूखे घास की जडें और आम की गुठलिया खाकर दिन काटे थ । ताया बसता चुप हो गया । उसकी काली पर नजर पडी तो वह उसकी ओर मुडता हुआ बोला

'काली पुत्तरा तू पढा लिखा है देस देसावर घूम आया है तू ही कुछ बता ।

ताए बसत की बातें सुनकर सब लोग गम्भीर हो गए थे । इसलिए किसी को काली पर कटाक्ष करने का ख्याल नही आया । काली की आखें भीगी हुई थी । वह जमीन की ओर घूरता हुआ बहुत धीमे स्वर म बोला

मैं क्या बता सकता हूँ । मेरी समझ म कुछ नही आता । मुझे उम्मीद थी कि डाक्टर हमारी कुछ मदद करेगा । वह रोज कहता है कि वह गरीबा के पक्ष म है । उससे अनाज मागा तो उसने जवाब दिया कि वह हमारे हक मे जल्सा करेगा । वह बहुत लम्बी चौडी बातें करता है जो मेरी समझ म नही आती । काली रुककर फिर बोला

'मैं लालू पहलवान के पास भी हो आया । सोचा था वह दयालु आदमी है, मन-दो मन अनाज दे देगा लेकिन वह वचनबद्ध है । वह कहता है कि जब तक बाईकाट जारी है वह एक पाओ अनाज नही दे सकता । बाइकाट खत्म हो जाए तो चाहे मन अनाज ले जाना ।

काली की बातें सुनने के लिए स्त्रियाँ नजदीक खिसक आई । मर्दों पर गहरी खामोशी छा गई । काली सब पर सरसरी नजर डालता हुआ बोला

उसके बाद मैं पादरी से भी मिला । यहाँ आने से पहले उसने अपने-आप ही मुझे नद सिंह के घर बुलाया था । उससे मदद माँगी तो वह बिरादरी की बातें करने लगा । वह कहता है कि तुम्हारी किस रिश्ते से मदद करूँ ।'

वह तो चाहता है कि हम इसाई बन जाएँ । ताए बसत ने क्रुद्ध स्वर

म कहा। काली कुछ देर चुप रहकर कहने लगा

मेरी समझ म तो कुछ नही आता। चौधरी भी सुखी नही हैं, वे भी बहुत तग हैं। अगर म यह कहता हू कि हम चौधरियो के पास नही जाना चाहिए तो बहुत से लोगो को मेरी बात बुरी लगेगी। यह कहने को मेरा मन नही मानता कि हम चौधरियो के पाव पड कर माफी माग लें। गाव मे पहले ही हमारी कोइ इज्जत नही है ऐसा करने से सारी उम्र उनकी बातें सुननी पडेगी। हम कभी अपना हक भी नही माग सकेगे। लोगो को फाके मारते और बच्चो को भूख से बिलखते देखता हूँ तो जी चाहता है कि अभी जाकर माफी माग लें। काली ने लम्बी सास छोडी और ताए बसते की आखो म झाकता हुआ बोला

'आप सब मेरे घर चलें। एक एक चीज की तलाशी ले ल। जो कुछ मिले आपस म बाट कर खा लें। मेरे पास पसे थे कुछ डयोढी बनाने पर लग गए कुछ चाची के दवा दारू पर खच हो गए। बाकी चोरी हो गए और जो बचे थ व चाची के मरने पर चले गए।'

काली के बात खतम करन के बाद बहुत देर तक सब लोग चुप बठे रह। स्त्रिया म बठी मगू की मा आसू पोछती हुई बोली

'इन चार दिनो म ही मेरा मगू सूख कर आधा रह गया है। अव्वल तो रात को घर आता नही। अगर कभी आता है तो सारी रात हाय हाय करता है।

फिर वह प्रीतो के कान के पास मुह ले जाकर बोली

मगू कह रहा था कि अमरू को भेज दो।

'ना ना। प्रीतो ने उसकी बात काटते हुए कहा। जब सारा मुहल्ला जाएगा।

दिन ढल गया तो लोग उठ खडे हुए। स्त्रियाँ घरो को चली गइ। व कुएँ से पानी भर लाइ तो मद स्नान के लिए वहाँ पहुच गए। इतने-दुत्ता चौधरी सिर पर चारे का गट्ठा उठाए बड रास्ते स गुजर रहा था। कुए पर नहा रहे चमार उसे आँखें भरकर देखने और फिर नहाने म व्यस्त हो जाते।

सूय की किरणें वृक्षो की छतरियो पर थी जब चौधरी मुशी और उसके पीछे उसका स्कूल म पढ़ता बेटा निरजन सिर पर चारे के गट्ठे उठाए हुए कुएँ के पास पहुँचे। उनके पीछे बन्ता सिंह हरनाम और उजागर थे रहे थ। कुएँ के बराबर आकर निरजन ने सिर से चारे का गट्ठा नीचे फेंक दिया। चौधरी मुशी ने पीछे मुड कर देखा और उसे गाली देकर बोला स्कूल म क्या पढ़ता है। घर के कामकाज से निकम्मा रह गया है। दम भर

बोझ उठाने पर ही इसकी गर्दन टूटने लगती है।'

चौधरी, लड़का एक ही काम करेगा। या चारा उठाएगा या अखर (अक्षर) उठाएगा।' बेला सिंह ने भी अपना गट्ठा फेंकते हुए कहा

तीन-तीन फेरे लगाने पड़ते हैं, गर्दन तो टूटेगी ही।'

लेकिन तुम इन चमारों का हाल देखो। अपनी मां के खसम फाके काट रहे हैं लेकिन काम पर नहीं आते। चौधरी मुंशी ने कुएँ की ओर देखते हुए कहा और फिर वह ऊँची आवाज में बोला

ओए बसतया तू यह बता तुम्हारा हमारे बगैर गुजारा है? चौधरी मुंशी ने दो तीन गालियाँ और सुना दीं।

चौधरी हमने कब कहा है कि हमारा तुम्हारे बिना गुजारा है। हम तो सदा यही कहते आए हैं कि तुम हमारे मालिक हो और हम तुम्हारे कामे। हम लोगों ने तो सिर्फ इतनी फरियाद की थी कि काम करवा कर मजूरी नहीं दोगे तो हम खाएँगे कहाँ से तुम लोगों ने बाईकाट कर दिया।'

बसतया तू उस समय ऐसे बात कर रहा था जैसे फौज का सूबेदार हो।

चौधरी तू भी तो कप्तान बना हुआ था।

चमार कुएँ से उतरकर चौधरियों के नजदीक आ गए। चौधरी मुंशी और बेला सिंह इत्यादि भी कुछ आगे बढ़ आए। बेला सिंह गालियाँ देता हुआ बोला

ओ कुत्तया चमारो कुछ शर्म करो कुछ फसल बाढ़ ने बरबाद कर दी है और बाकी नलाई न होने की वजह से सूख रही है। अगर प्राण देने पर उतारू हो तो गाडी के नीचे जाकर सिर दे दो।

तुमने हमें फसल की नलाई के लिए बुलाया है? ताए बसते ने कहा।

अच्छा यह बताओ अब तुम्हारी क्या मर्शा है?'

हमारी क्या मर्शा होगी। मर्शा मालिकों की होती है। जो तुम्हारी मर्शा है वह बता दो।

ताए बसते का उत्तर पाकर चौधरी मुंशी ने निरंजन को वेहड़े की ओर दौड़ा दिया कि वहाँ से चौधरी हरनाम सिंह को बुला लाए। निक्कदार को लालू पहलवान को बुलाने के लिए भेज दिया और स्वयं चारे के गट्ठे पर बैठता हुआ अपने घुटनों को दबाने लगा। वह अनाप शनाप गालियाँ दे रहा था और इर्द गिर्द खड़े लोग हँस रहे थे।

थोड़ी देर के बाद गाँव के सब चौधरी वहाँ इकट्ठे हो गए और एक बार फिर गाली-गलौच शुरू हो गया। लालू पहलवान चौधरी हरनाम सिंह और चौधरी मुंशी को एक ओर ले गया और धीमे स्वर में बोला

'यही फैसला कर लो। इस झगड़े में न उन्हें कुछ मिला है और न हमें कोई लाभ हुआ है।'

डेढ़ दिन के पैसे दे दो तो वे खुश हो जाएँगे। बेचारे गरीब आदमी हैं। कोई पराए नहीं अपने ही चमार हैं।' चौधरी हरनाम सिंह ने कहा।

हर घर अपने-अपने चमार को पैसे दे दे। लालू पहलवान के इस सुझाव का सबने समर्थन किया और चमारों के पास आकर चौधरी हरनाम सिंह ने निर्णय सुना दिया। ताए बसंत ने बारी-बारी सब चमारों की ओर देखा और उनकी अनुमति पाकर सिर झुकाता हुआ बोला

हम लोग आप के दास हैं।'

फिर कल सवेरे से काम पर आ जाओ।

कल क्या अभी से।' चौधरी मुंशी ने कहा और जीतू को गाली देता हुआ बोला

'ले यह गट्ठा हवेली में फेंक आ।

यह खबर आँधी में उड़ती धूल की तरह तुरंत ही सारे गाँव में फैल गई। चमादड़ी की स्त्रियाँ चौधरानियों के घरों की ओर दौड़ गई। मर्द सौदा लेने के लिए दुकानों पर चले गए। गलियों में चमार और चौधरी आपस में ऐसे मिलते जैसे मुद्दत के बिछड़े हुए हों। चौधरानियाँ अपनी चमारनों को देखकर प्रसन्न भाव से कहती

'नी तू पाँच छः दिन नहीं आई तो मन उदास होने लगा था।

साँझ होते ही गाँव पर धुएँ की चादर गहरी होती गई। चमादड़ी के हर घर में आज दो तीन दिन के बाद चूल्हे जले थे। गाँव से खुली हँसी, खिलवाड़ और गालियों की आवाज़ आ रही थी।

डाक्टर बिशनदास चौक में खड़ा सोच रहा था कि इस गाँव के चमारों की जेहनीयत भी सुधारवादी है जो संघर्ष करने की बजाय समझौते पर उतर आए।

४५

चमादड़ी के सब मर्द काम पर चले गए थे, स्त्रियाँ गोबर और कूड़ा-करकट उठाने के लिए चौधरियों की हवेलियों में पहुँच गई थी। छोटे बच्चे अपनी

मानाओं या वहना के साथ थ और वड़े वच्चे चौगान म शोर मचाते हुए गुल्ली-डंडा खेल रहे थे।

काली डयोढी का द्वार बद किए खाट पर लेटा करवटें बदल रहा था। उसका पूरा शरीर टूट रहा था और उसे या महसूस होता था जैसे वुखार हो। पिछले एक सप्ताह म घटित घटनाएँ उसके दिमाग पर छाई हुई थी। उन सात दिनो का एक एक क्षण उसकी आखो के सामने घूम रहा था लेकिन जब उस मगू के ये शब्द याद आए कि उसे पक्के-पकवाए पकवान मिल रहे हैं तो उसका दिमाग वही रुक गया। नानो के प्रेम और स्नेह के बारे म सोचकर कभी वह डर स कापने लगता और कभी इतना खुश होता कि उसका जी चाहता कि उछल कर छत को छू ले।

वह पानी पी पी कर भूख को मिटाने का यत्न करता रहा लेकिन जब पानी पेट म घुर घुर करता हुआ ढोल की तरह वोलन लगा तो वह उठ बैठा। उसके घर म आटे की एक चुटकी भी नहीं थी। उसे पछतावा होन लगा कि उसने प्रीतो को खाह मुखाह अपना सारा आटा दे दिया लेकिन यह सोचकर अपने आप को तसल्ली दे ली कि वह मौका ही ऐसा था। यह याद करके वह हैरान रह गया कि कल सवेरे से उसन कुछ नही खाया केवल पानी पी-पीकर पेट भरा है। उसने सोचा कि लालू पहलवान की हवेली चला जाए लेकिन उसका मन नहा माना। लालू पहलवान न उसके साथ कौन सी नेकी की है। कठिनाई म जो काम न आए वह आदमी किस काम का। अगर वह बुलाएगा तो सोचूगा।

वह करवट वदलता तो उसके शरीर क कई हिस्सो म टीसें-सी उभरती और वह चित्त लेट जाता। उसे ख्याल आया कि शायद वुखार न हो भूख के कारण शरीर टूट रहा है यह सोचकर उसकी भूख एकदम चमक उठी। वह उठकर वठ गया और सोचने लगा कि यदि नद सिह के घर चला जाए तो शायद वह रोटी खिला दे। परन्तु मन म यह विचार आते ही वह उदास हो गया कि नद सिंह क्यो रोटी खिलाएगा, वह ईसाई ठहरा उसके साथ क्या रिश्ता है। गाव म उसका किसी के साथ भी कोई रिश्ता नहीं है। यह सोचकर वह फिर उदास हो गया। नानो के साथ रिश्ता है लेकिन उसे कौन मानता है। उसन एक डग रोटी दी तो लोग तोहमत लगाने लगे।

काली सोच सोचकर तग आ गया। इससे भूख कम होने की बजाय वढती गई। वह अपने आपको घसीटता हुआ उठा और द्वार के दोना पट खोलकर दहलीज म खडा हो गया। तेज धूप मे उसकी आखें पूरी तरह नही खुल रही

थी। उसने गली में झाँककर देखा वह बिलकुल खाली थी। इसके एक किनारे से नंद सिंह के चमड़ा कूटने और दूसरे किनारे से बच्चों के गुल्ली डंडा खेलने और लड़ने झगड़ने की आवाजें आ रही थीं।

वह दहलीज से उतरकर गली में आ गया। उसने प्रीतो के द्वार पर निगाह डाली। किवाड़ खुले थे लेकिन अंदर कोई नहीं था। उसका जी चाहा कि अंदर जाकर देखे कोई रोटी पड़ी है। अपने इस ख्याल पर वह हँस दिया। वह गली में हटकर फिर दहलीज पर आ गया।

कुछ समय के बाद उसे कुएँ की ओर से ज्ञानो आती दिखाई दी। काली ने गली की दूसरी ओर जल्दी से एक नजर डाली और मुसकराता हुआ ज्ञानो की ओर देखने लगा। वह सिर पर टोकरा उठाए बहुत गम्भीर भाव से चल रही थी और उसकी चोली में पड़ी रोटियाँ यों हिलती थीं जैसे साँस ले रही हों। काली बहुत प्यार और दिलचस्पी से उसकी ओर देखता रहा लेकिन जब ज्ञानो का चेहरा और भी गम्भीर हो गया और वह उसकी ओर देखे बिना ही गुजरने लगी तो वह गली के दोनों ओर एक बार फिर देखकर बहुत धीमे स्वर में बोला

ज्ञानो।

ज्ञानो ने उसकी ओर आँख तक उठाकर न देखा लेकिन एक क्षण के लिए उसके कदम रुक गए। काली ने फिर उसका नाम लिया तो वह चौंककर रुक गई।

बोलती क्यों नहीं ?

काली ने थोड़ी ऊँची आवाज में कहा। ज्ञानो आगे बढ़ने लगी तो काली ने दहलीज से उतरकर उसकी राह रोक ली। वह एक ओर हटती हुई बोली

तू समझता है कि जब तेरा जी चाहे मुझे बुला ले और जब जी चाहे दुतकार दे।

उसकी यह बात सुनकर काली कुछ लज्जित सा हो गया और कोई उत्तर दिए बिना ही अपने द्वार की ओर मुड़ आया। ज्ञानो ने चार कदम आगे बढ़कर रुक गई और फिर उसकी ओर पलटकर झोली में पड़ी रोटी उसके हाथ में थमाकर तेजी से आगे बढ़ गई।

काली दहलीज में खड़ा उसे देखता रहा और जब वह अपने घर में दाखिल हो गई तो अन्दर जाकर खाट पर बैठ गया और रोटियों की तह खोलने लगा। रोटियों में गुड़ की डली लिपटी हुई थी। गुड़ देखकर उसका मन ललचा गया

और उसने गुड मुह की ओर बढाया लेकिन रुक गया । वह सोच म डूबा हुआ राटिया को घूरता रहा और उसके अदर भूख का एहसास एकदम मिट गया ।

ज्ञानो घर म टोकरा फेंककर उल्टे पाँव काली के पास आ गई और द्वार के दोना पट बद करके उसके सामने आ खडी हुई । काली उदास सा बठा रहा । ज्ञानो उसके हाथा म रोटी देखकर कुछ तल्ख स्वर म बोली

'इसे खा लो ।

काली चुप रहा तो ज्ञाना ने उसके हाथ स रोटी लेकर एक नवाला तोडा और उसके मुह म ठूसती हुई बोली

'अन को मत धतकारो । सात दिन सिर्फ इसलिए फाके काटते रह हो ताकि पेट भर रोटी मिल सके । काली हँस दिया और नवाला जल्दी-जल्दी चबाने लगा । ज्ञानो पास बठकर उस पखा करने लगी । काली उसकी ओर मुसकराता हुआ बोला

घडी भर पहले तो मुझे ऐसे धतकार कर गई थी जसे मेरी शक्ल स ही नफरत हो ।'

ज्ञानो चुपचाप पखा हिलाती रही और फिर तीखे स्वर म बोली

'मैंने कभी तुम्हें धक्के नही दिए, कुत्ता की तरह नहा झिडका है ।'

काली के मुह का नवाला गले म रुक गया और वह उस कठिनाई म नीचे उतारता हुआ बोला

'तुम्हे क्या पता मेरा कभी-कभी क्या हाल होता है । लोग मुझ पर तोहमतें लगाते हैं ठट्ठे करते हैं कल तू मुझे रोटी देकर गई ता शायद तुम्हे प्रीतो न देख लिया था या सन्तू न देखा था चौगान म सबके सामने मेरे मुह चढकर कहा कि तू तो बाईकाट जारी रखना चाहेगा क्योकि तुझे पके-पकवाए पकवान मिलते हैं ।

ज्ञानो उसकी ओर ध्यान से देखती हुई बोली

ताहमतें दूसरे लगाते हैं और तुम गुस्सा मुझ पर निकालते हो ।'

काली उसे समझाता हुआ बोला

मैं नही चाहता तेरे खिलाफ कोई बुरी बात कहे मुझसे बदाश्त नही हाता ।

और उनके सामने चुप रहते हो और मुझ पर रोब डालते हा मुझे भी मुहल्ले की स्त्रियाँ बहुत कुछ कहती हैं । यह राँड प्रीतो ता राज मेरी मा के काना म फुसफुसाती है । चौधरिया के लडके बोलियाँ मारते (आवाजें कसते) है । अपने मुहल्ले के लडके मुझे देखकर खाँसते हैं । मुझ भी गुस्सा आता है

लेकिन मैं तुम पर नहीं निराग्ती। जो हुग स बढ़े उसका वही दाना-पानी कर देनी हूँ।

काली के पास उसकी बाता का कोई उत्तर नही था। वह लज्जित और उदास-सा हाथा म रोटी पकड़े बठा रहा।

'रोटी तो खा लो या अब इसके साथ भी नाराज हो गए हो ?' नानो न मुसकरात हुए कहा।

काली गहरी सोच म डूबा हुआ अनमना-सा राटी खान लगा।

उसन रोटी खा ली तो नानो उठती हुई बोली

मैं जाती हूँ वरना थाडी दर के बाद फिर धक्के देकर निकालाग। नानो द्वार की ओर बढ्ने लगी लेकिन काली ने बाह पकडकर उसे अपनी ओर खीच लिया और अपने बाजुआ म भीचकर लम्बे-लम्बे सांस लेता हुआ उसके शरीर की गर्मी को अपने अन्दर सजोता रहा।

कुछ समय के बाद काली के हाथ ज्ञानो के शरीर के कई हिस्सा पर रीगने लगे। वह उम पीछे धकेलती हुई बोली

बस इसी काम के लिए तुम्हे मैं अच्छी लगती हूँ।' काली उसकी ओर बढा तो नानो एक कोने मे जा खडी हुई। काली उस ओर लपका तो वह फुदककर दूसरे कोने मे चली गई। वह उस ओर बढा तो नानो वहाँ से भी दौड पडी लेकिन उसकी चोटी काली के हाथ मे आ गई। ज्ञानो दबी जबान मे हँसती हुई अपने आपको छुड़ाने लगी लेकिन काली ने उसका शरीर सीधा करके उसे अपनी छाती से लगा लिया और पूरे जोर से भीचता हुआ बोला

'क्या तू अपन आपको मुझसे ज्यादा जार वाला समझती है ?'

'अगर एसा समझती तो बार बार धतकारन पर भी तेरे पास न आती।' नानो ने हारी हुई आवाज म कहा।

काली हँसता हुआ खाट पर बठ गया और ज्ञानो एक मटका उलटा रखकर उस पर बैठ गई। काली बहुत प्यार स उस निहारता हुआ बोला

लोगा की तोहमतें सुनकर मैं कभी फमला करता हूँ कि तरे साथ काई मल जाल नहा रखूगा। मैं नही चाहता कि मेरी वजह स तरी बइज्जती हा।'

और तू मरी बइज्जती जब मौका मिले कर ले।'

मैंन तरी बइज्जती कब की है ?'

अभी क्या करन लगा था। तू क्या समझता है इस काम स मेरी इज्जत बनती है।

काली और नानो बाता म खोए हुए थ कि गली म लाठी पटकने और

खाँसने की आवाजें सुनाई दीं। वे दोनों चौंक गए। काली के चेहरे का रंग बदलने लगा और वह कुछ कहने ही वाला था कि नानो ने होंठों पर हाथ रखकर उसे मना कर दिया। मंगू निकल गया तो काली सहमी हुई आवाज़ में बोला

'मंगू गया है।'

नानो उसका भयभीत और सहमा हुआ चेहरा देखकर बोली

'डर गया ?'

'नहीं, तू चाहे तो मैं दरवाज़ा खोलकर भी तुम्हें यहां बिठा सकता हूं।'

नानो मुसकराती हुई द्वार की ओर बढ़ी लेकिन काली ने उसे लपककर पकड़ लिया और बाजुओं में भींचता हुआ उसके गालों को चूमकर बोला

'रात को आना।'

नानो अपने गालों को हाथ से पोंछती हुई 'हां' कहकर गली में चली गई।

४६

मक्की और बाजरे की फसल बढ़ने के साथ-साथ नानो और काली के प्रेम के चर्चे भी फलते गए। फसल की नलाई के दौरान घास निकाल दिया जाता ताकि उसे कोई हानि न पहुंचे। घास-फूस फिर उग आता तो दोबारा नलाई कर दी जाती। नानो और काली के प्रेम की कहानियां फैलने लगतीं तो नानों की मार-पीट और फटकार से उन्हें कम करने का यत्न किया जाता। दोनों की मुलाकातें बंद हो जातीं लेकिन कुछ दिनों के बाद यह सिलसिला फिर शुरू हो जाता।

दोनों की मुहब्बत के चर्चे चमादड़ी से बाहर खेतों, हवेलियों और दुकानों पर भी होने लगे। गांव के युवकों ने नानो के रंग-रूप और चाल-ढाल के अनुसार उसे 'मोरनी' का नाम दे दिया। और जब लोगों को विश्वास हो गया कि मारपीट और प्रतिबंधों के बावजूद भी उनका प्रेम नहीं टूटा और वे चोरी-छिपे अँधेरे-सवेरे, गलियों में, खेतों में, तकिए के झाड़-झखाड़ में और कोठों की छतों पर मिलते रहते हैं तो उन्होंने ज्ञानो के नए नाम में थोड़ा-सा परिवर्तन करके

उसे 'काली की मोरनी' कहना शुरू कर दिया।

चमारलड़ी के युवकों के साथ जाटों के लड़कों ने भी इन बातों से फायदा उठाना चाहा। उन्होंने ज्ञानो से छेड़छाड़ शुरू कर दी, उस पर फब्तियाँ कसीं लेकिन वह पहले से भी ज़्यादा मुँहफट और निडर बन गई। गली हो या पगडण्डी, खेत हो या हवेली जहाँ भी उसे कोई छेड़ता वह गालियाँ सुना देती और कई बार तो हाथापाई के लिए भी तैयार हो जाती।

चमारों के लड़के काली के सामने तो चुप रहते लेकिन उसकी अनुपस्थिति में बहुत चस्के ले-लेकर दोनों के बारे में बातें करते। ये बातें काली तक भी पहुँचतीं और वह अपना गुस्सा निकालने के लिए किसी न किसी बहाने सबसे लड़ चुका था। जाटों के लड़के उसे घेरकर पूछते कि उसके पास कौन-सी गिदड़सिंगी (ऐसी चीज़ जिससे किसी युवती को वश में किया जा सकता है) है जिससे उसने ज्ञानो को वश में कर रखा है, कौन-सा जादू, टोना मन्त्र या तावीज़ है जिससे उसने ज्ञानो के तन-मन पर अधिकार कर लिया है। काली कभी हँसी में बात टाल दिया करता और अगर कोई ज्ञानो के सम्बन्ध में अनुचित बात कहता तो वह मरने मारने पर भी तयार हो जाता।

चमारों के लड़के डर के मारे मगू को तो कुछ न कहते लेकिन जाटों के लड़के उसे किसी न किसी तरह जताते रहते कि उसकी बहन काली के साथ फँसी हुई है। मगू उनको तो कोई उत्तर न देता लेकिन ज्ञानो को पीटता और माँ को डाँटता। काली को उसे देखकर बहुत क्रोध आता लेकिन इस ख्याल से चुप रहता कि बात बढ़ गई तो गाँव के बड़े बूढ़ों तक भी जा पहुँचेगी।

लोगों को यह तो पता था कि ज्ञानो और काली आपस में मिलते रहते हैं लेकिन आज तक उन्हें किसी ने देखा नहीं था। चमारों और जाटों के लड़कों को खेतों में घूमते हुए कहीं पर बाजरे या मक्की के पाँच-दस डण्ठल झुके या टूटे हुए दीख पड़ते तो वे एक-दूसरे को आँख दबाकर मुसकराते हुए कहते कि 'काली की मोरनी' शायद यहाँ नाचकर गई है।

लोगों की ताक-झाँक बढ़ने लगी तो उन्होंने मुलाकात के तरीके और स्थान बदल दिए। काली अधिकतर लालू पहलवान की हवेली में रहने लगा। वह रात टिक जाने के बाद दबे पाँव मुहल्ले में आता और बाबे फत्तू के कोठे से होता हुआ मगू के घर पहुँच जाता।

जब लोगों को इस बात का भी पता चल गया तो वे बहुत सवेरे खेतों में मिलने लगे। वे दोनों अलग-अलग रास्तों से आते और निश्चित स्थान पर मिल जाते। दोनों ने कई बार एक-दूसरे से पीछे हटने की कोशिश की और

कभी न मिलने का सकल्प भी किया लेकिन यह सकल्प दो चार दिन के बाद ही टूट जाता।

एक दिन काली और नानो सुबह-सवेरे तकिए के पास झाड झखाड म बठे थ। उह न तो भूत प्रेतो का डर था, न साप-सँपोलिये का ही। उह यह भी याद नही था कि पौ फट चुकी है। लेकिन कुछ फासले पर उह किसी के खँखारने की आवाज सुनाई दी तो वे चौंक गए। जब उहाने देखा कि वह व्यक्ति उसी और आ रहा है तो वे उठ खडे हुए। काली तकिए के पीछे खेतो की ओर निकल गया और नाना झाड-झखाड से बचाती-बचाती चो की ओर आ गई। वह व्यक्ति झाड झखाड से बाहर खडा था। ज्ञाना उसे अपने सामने देखकर ठिठक गई तो उसने आगे बढकर ज्ञानो का हाथ पकड लिया और ऊँची आवाज म बोला

'हो गई तसल्ली, अपने यार को कहा दौडा दिया ?' घडडम चौधरी खी-खी करके हँसता हुआ बोला

मोरनिये तरे अदर कितनी आग है जो बुझने म नही आती।

ज्ञानो हाथ छुडाकर कुछ कहे बिना गाँव की ओर दौड आई और घड्डम चौधरी सारे गाँव को गालिया देता हुआ आगे बढ गया।

दिन चढ़ने तक घडडम चौधरी ने इस बात को सारे गाँव म फला दिया। मगू के घर आकर घडडम चौधरी ने उसे और उसकी मा जस्सो को बहुत गालियाँ दी। उसके जाते ही मगू द्वार बद करके नाना को लाठी स पीटने लगा। उसकी चीखें सारे मुहल्ले पर छाई हुई थी और युवको को यह चीखें सुनकर अजीब सा इत्मीनान महसूस हो रहा था।

बाबा फत्तू और ताया बसता जमाने को बुरा भला कह रहे थे। ज्ञाना की चीखें सुनकर बाबा फत्तू ने पूछा

यह कौन रो रही है ?

ताया बसता अफसोस भरे स्वर मे बोला

'यह खुशिये की घर वाली पुन्नो होगी या फिर मगू की बहन ज्ञानो। ऐसी चीख या तो बाँझ औरत की होती है या फिर प्रेम की मारी मुटियार की। बंजर जमीन बाँझ औरत और प्रेम की मारी मुटियार का कोई पसन्द नही करता।

मुहल्ले म बहुत गद फलने लगा है। मगू को समझाओ कि लडकी का कहा ठिकाना करे। बाबा फत्तू ने कहा।

उसे तो तब समझाऊँ अगर उसे पता न हो। ताये बसत ने उत्तर दिया और जब नानो की चीखें दहाड म बदल गइ तो वह गालियाँ देता हुआ मगू

से घर की ओर चला गया।

यहाँ स्त्रियों और बच्चों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी। ताए बसते को देखकर स्त्रियाँ पीछे हट गईं और बच्चों को उसने झिड़ककर भगा दिया। वह द्वार पीटता हुआ मंगू को आवाजें देने लगा।

ज्ञानो के साथ-साथ जस्सो भी विलाप कर रही थी। वह ज्ञानो की बजाय मंगू को गालियाँ देती हुई कहने लगी

'मोया बस मार क्या लगेगी जान लेकर ही छोड़ेगा। मारा इसका चौधरी तो सयाप की नानी है।'

ताए बसते ने द्वार पर जोर से पाँव मारा और मंगू को बहुत ऊँची आवाज में पुकारता हुआ बोला

'आए चमारों की रूमना दरवाजा तो खोल।' मंगू ने फिर भी कोई उत्तर न दिया तो वह उसे गालियाँ देता हुआ बाबे पालू की छत पर जा चढ़ा और वहाँ से मंगू की छत पर आ गया।

कुछ समय तक वह मुँडेर पर बैठा नीचे देखता रहा। ज्ञानो फर्श पर अधमोई सी लेटी हुई थी। जस्सो मंगू को पकड़े खड़ी थी और वह हाँफता हुआ दाँत पीस रहा था। मंगू का साँस थोड़ा दुरुस्त हो गया तो उसने जस्सो को धक्का देकर परे फेंक दिया और ज्ञानो का गला दोनों हाथों में पकड़कर दबाने लगा।

ताया बसता लकड़ी की सीढ़ी के तीन डण्डे एक साथ उतरता हुआ नीचे आ गया। उसे देखकर जस्सो ने छोटा सा घूँघट निकाल लिया और फुफककर रोने लगी। ताया बसता मंगू के हाथ पकड़ता हुआ क्रुद्ध स्वर में बोला

'पागल हो गया है? बराबर की बहन पर हाथ उठाता है? तेरे सामने खड़ी हो जाए तो तेरी क्या इज्जत रहेगी?'

मंगू ने ताए बसते को धक्का देकर परे कर दिया। वह बड़ी कठिनाई से अपने-आपको सम्भाल सका और मंगू के कन्धों पर दोनों हाथों से दोहत्थड़ मारता हुआ बोला

'तुझे अपने से बड़ों का भी लिहाज नहीं। इसे तू मार देगा तुम्हें पुलिस फाँसी लगा देगी इस बेचारी का क्या बनेगा?' ताए बसते ने जस्सो की ओर संकेत करते हुए कहा।

यह सुनकर जस्सो और भी फुफककर रोने लगी।

'साया लोगों के सिखाए-पढ़ाए बहन की जान का दुश्मन हो गया है।'

ताए बसते ने बहुत मुश्किल से मंगू को उठाया और उसे परे धकेलता हुआ

ज्ञाना के सिर पर झुक गया और उसे अच्छी तरह देख भालकर जस्सो से बोला

'पुत्तरा, इसे पानी पिला। रो रोकर इसका गला सूख गया है।'

ताया बसता मगू को कोठड़ी म ले गया और उसे समझाता हुआ बोला

बराबर की बहन पर हाथ नहीं उठाना चाहिए।'

ताया, मैं लोगों की बातें सुनकर तंग आ गया हूँ। इसने मेरी इज्जत मिट्टी म मिला दी है। जहा जाता हू एक ही बात कान म पड़ती है। मैं उस अपनी मां क खस्म की भी बोटिया उडा दूगा। मगू लाठी उठाने के लिए लपका।

ताए बसते न उसे अपने बाजुओ म ले लिया और समझाता हुआ बोला

'पहले मेरी बात सुन ले फिर जिस मा के खस्म की चाहो बोटिया उडा दो।

मगू हाँफता हुआ ताए बसते की ओर देखने लगा।

मैं तुम्हें यह कहना चाहता हू कि यह तरीका ठीक नहीं है। तू सारी दुनिया को तमाशा दिखा रहा है। ऐसे मामलो म पर्दापोशी से काम लेते हैं, शोर नहीं मचाते। इससे तेरी और भी ज्यादा बेइज्जती होगी। जरा दरवाजा खोलकर देख सारा मुहल्ला वहा खड़ा है। मैं तेरी बात समझता हूँ लेकिन इसका यह इलाज नहीं जो तू कर रहा है।

ताया बसता कुछ समय तक चुप रहा और फिर जस्सो को अन्दर बुलाकर धीमे स्वर म बोला

'कोई लड़का तलाश करके इसे ठिकाने लगाओ। कुँवारा नहीं मिलता तो दुहाजू देख लो। भटके हुए आदमी को सीधी राह दिखानी चाहिए उसे मारना नहीं चाहिए। तू लड़की पर नजर रख। बगैर मतलब बाहर मत निकलने दे इस तरह शोर मचाओगे तो नुकसान म रहोगे।

ताये बसते की बातें सुनकर मगू कुछ नर्म पड गया। जस्सो ने नानो को उठाकर खाट पर लिटा दिया। ताया बसता उसके पास आकर बहुत सख्त स्वर मे बोला

देख हर आदमी की इज्जत अपने हाथ म होती है। अगर मैंने फिर कभी तेरे बारे म बुरी बात सुनी तो मेरे से बुरा कोई नहीं होगा। जिसको माँ-बाप और भाई बहन की इज्जत का ख्याल न हो वह औलाद किस काम की।'

ताया बसता, मगू जस्सो और नानो को एक बार फिर अपने कर्तव्य-पालन का उपदेश देकर काली के घर की ओर आ गया। वहाँ ताला देखकर वह

लालू पहलवान की हवेली की ओर बढ गया। काली वहाँ भी नही था। लालू पहलवान से पूछा तो वह केवल इतना बता सका कि शायद शीशम वाले खेत म होगा, अगर वहा नही गया तो कीकर वाले खेत मे होगा।

ताया बसता हवेली से बाहर जाने के लिए मुडा तो लालू पहलवान ने उसे रोक लिया और बहुत गम्भीर स्वर म बोला

'बसतया तू सयाना आदमी है शायद कुछ बता सके। काली म मैं कुछ दिन से एक बात देख रहा हू कभी-कभी वह सारा दिन काम को हाथ नही लगाता या फिर इतना काम करता है कि उसे रोटी पानी की भी सुध बुद्ध नही रहती मैं पहले समझता था कि शायद उसे अपनी चाची याद आती होगी लेकिन आज सवरे नत्या सिंह (धडडम चौधरी) मुझे कुछ और ही बता गया है।

लालू पहलवान दिलचस्पी से उसकी ओर देखने लगा। ताया बसता उसकी आदत से परिचित था। पहलवान की सारी खेती बरबाद हो जाए वह परवाह नही करेगा लेकिन एसे आदमी को नही रखेगा जो लँगोट का ढीला हो। वह बहुत इत्मीनान से बोला

पहलवान जी, तुम नत्या सिंह को जानते ही हो कोई बच्चा कुतिया के पीछे दौडा जा रहा हो तो उसे शक हो जाता है। तुम सोचो औरतें जगल पानी के लिए झाड झखाड या फसल म नही बठेंगी तो क्या खुली चो म बठेंगी।

मैं समझ गया मैं पहले ही जानता था कि सारी बात नत्या सिंह के दिमाग का खलल है।

सबसे पहले ताया बसता लालू पहलवान के शीशम वाले खेत म गया। वहाँ स कीकर वाले खेत म और फिर आम वाले खेत म। आवाज देने पर काली बाहर आ गया और ताये बसते को देखते ही उसका रग पीला हो गया।

'दोपहर हो गई है क्या गाँव नही जाओगे ?

मरले डेढ मरले की नलाई रह गई है। काली ने पसीना पोछते हुए कहा।

काली मन-ही मन काँप रहा था कि ताया बसता अभी-अभी गुरुद्वारे की घटना का जिक्र छेड देगा। उसके चेहरे पर एक रग आ रहा था और एक रग जा रहा था। अगर ताया बसता उससे सीधा प्रश्न पूछता कि सवेरे क्या हुआ था तो शायद काली उसके पाँव पकडकर माफी माँग लेता लेकिन उसके इधर उधर से बातें करने स काली को सँभलने का अवसर मिल गया। वह धडडम चौधरी की फसाद हुई बात और थाना की मारपीट की बहाना इस तरह इत्मीनान

मे सुनता रहा जैसे उसका कोई सम्बन्ध नही था ।

उसके एक ही बार कहने पर काली गाँव जाने पर राजी हो गया तो ताया बसंत को विश्वास-सा होने लगा कि उसकी जगह शायद कोई और लडका होगा । लेकिन फिर भी उसने काली को शराफत मुहल्ले मे प्रत्येक क्वारी मुटियार को बहन समझने का उपदेश दिया । काली उसकी बात पर सिर झुकाता हुआ ज्ञानो से मिल पाने की तरकीब सोचता रहा ।

शाम होते ही काली ताला लगाकर सब के सामने गली से होता हुआ लालू पहलवान की हवेली चला गया । लोगो को अब ज्ञानो के साथ सहानुभूति और काली से घृणा होने लगी थी । ज्ञानो ने लगभग पक्का संकल्प कर लिया कि वह अब कभी काली से नही मिलेगी । लेकिन जब उसने रात गए अपनी सीढी पर नीचे उतरती हुई छाया-सी देखी तो उसका दृढ संकल्प एक क्षण मे ही टूट गया और वह काली की बाहो मे लिपटी खामोशी से रोती हुई अपने सब दु ख धोती रही ।

४७

प्रीतो को जब पता चला कि जस्सो ज्ञानो की मगनी करने के लिए उतावली है तो वह उसके घर गई और इधर उधर की बातें करने के बाद वह जस्सो के कान मे बहुत धीमे स्वर मे बोली

सुना है तुम ज्ञानो की कुडमाई (मँगनी) कर रही हो ?

जस्सो ने हाँ मे सिर हिलाया तो प्रीतो कुछ ऊँचे स्वर मे बोली

मैंने तुम्हे पहले भी कई बार कहा था लेकिन तू मेरी बात पर कान नही धरती थी ।

प्रीतो यह काम मर्दों के हैं । मैं मगू को पिछले छ महीने से कह रही हूँ कि ज्ञानो बडी हो गई है । इसका कही ठिकाना करो । जस्सो ने दृढ स्वर मे कहा ।

सच तो यह है कि जवान बहनें और बेटियाँ ससुराल मे ही अच्छी लगती हैं । जब तक ब्याह न हो जाए हर समय धुडकू लगा रहता है । मैं यह नही कहती कि हर जवान लडकी बदमाश होती है । लेकिन एक कच्ची उम्र दूसरे

पराए घरा और खेता मे आना जाना। एसी हालत मे कई लडकिया अपना हाण लाभ (हानि लाभ) भूल जाती हैं। '

'सच कहती हो। जस्सो ने बुझी हुई आवाज म उत्तर दिया।

तूने नानो को छुट्टी भी वहुत दे रखी थी। फसल के इद गिद वाड न हो तो राह जात जानवर भी मुह मारते हैं। जिसे आदत पड जाए वह तो सौ कोस का वल खाकर भी वहा पहुचेगा। मार कर परे करो तो मौका मिल्त ही फिर आ जाएगा।

प्रीतो की बात सुनकर जस्सो को क्रोध तो आया परन्तु वह उसे पी गई और लम्बी सास खीचती हुई बोली

'कोई अच्छा सा लडका मिल जाए तो आज ही कुडमाइ कर दू।'

'लडका तो है।

कौन सा ?' जस्सो ने चौंक कर पूछा।

घर भी अच्छा है। वे अपना ही काम करत है। लडके का वाप खड्डी चलाता है और लडका जूते सीता है। व ग्यारह भाई वहन थे लेकिन अब सात रह गए हैं।' प्रीतो बोली।

'कहा के रहन वाले हैं उनका कोई अता पता तो होगा। जस्सो की जिज्ञासा जाग उठी।

यहाँ से वहुत दूर नही रहत। ननोवाल यहाँ स दो कोस है ननोवाल से सीकरी एक कोस है सीकरी से डेढ कोस पर शेरपुर है। वहाँ रहत हैं वे। प्रीतो ने कहा।

तरी उनमे जान-पहचान है ?'

'जान पहचान ? मेरे तो नजदीकी रिश्तदार हैं। लडका है कमाऊ पहले देशी जूत बनाता था अब विलायती बूट बनाने लगा है। प्रीतो बात को लटकाती हुई बाली।

जस्सा उस लडके के वारे म एक ही बार सब-कुछ जान लना चाहती थी लेकिन प्रीतो इधर-उधर की ऊपरी-ऊपरी बातें ज्यादा बना रही थी।

'लडके की उम्र क्या हागी ?'

'पक्का ता मुझे याद नही नानो का हाण प्रवाण (हम उम्र) ही हागा। दो चार साल बडा हागा। जब मरा ब्याह हुआ था ता वह मर छोटे अमरू जितना बडा था। अमरू अगले बमाख म बारह साल का हो जाएगा। आग हिसाब तुम लगा लो। प्रीता न सोचत हुए उत्तर दिया।

इतना बडा हो गया है अभी तक उसका विवाह नहीं हुआ ? क्या अग रग

ठीक है ?' जस्सो ने पूछा।

'जो इतना कमाऊ है उसका अग रग ठीक नही होगा। अब तो उसने अपने साथ दो लडके शागिद पशा भी रख लिए है।'

जस्सो बार बार अग रग के बारे म पूछती और प्रीतो उसकी कमाइ के बारे मे व्याख्यान देना शुरू कर देती। जब जस्सो जोर देकर पूछने लगी तो प्रीतो कुछ खीझ कर बोली

देख, नानो के लिए ठीक रहेगा ?'

'क्या मतलब ? जस्सो ने भी सख्त स्वर म पूछा।

'मतलब यह है कि बचपन मे उसे बडी माता निकली थी। उसम उसकी एक आख चली गई थी। लेकिन दूसरी आख किशोर की तरह साफ है। प्रीतो ने कहा।

'साफ़ी तरह क्यो नही कहती कि लडका काना है । जस्सो ने क्रुद्ध स्वर म कहा।

'अपनी लडकी कान का दे दू बडा रिश्ता बता रही है।' जस्सो जसे फूट पडी।

'तेरी लडकी भी तो कोई मुच्चा मोती नही है। खोटे माल को कोई काना, लँगडा-लूला ही कबूल करेगा।' प्रीतो ने भी तल्ख स्वर मे उत्तर दिया और बाहर चली गई।

मुहल्ले की कुछ दूसरी औरतो ने भी लडको का पता दिया लेकिन उनम कोई चेचक का खाया हुआ और कोई टाइफाईड का मारा हुआ था। जस्सो परेशान होकर रो उठती और नानो को बुरा भला कहती। परन्तु आशा का आचल थाम कर फिर कोशिश शुरू कर देती।

एक दिन वह घर मे अकेली ही बठी थी कि प्रमिन्नी आ गई। वह इधर-उधर की बातें करने के बाद जस्सो स कहने लगी

'चाची, मैं तेरे साथ एक बात करने आई हूँ।'

जस्सो हैरानी और भय स उसके मुह की ओर तकने लगी तो वह मुसकराती हुई बोली

मैं किसी पर एहसान करने नही आई। ऐसी बातें तो वही लोग करते हैं जिनका अपना कम खोट है।'

जस्सो के चेहरे पर फिर इत्मीनान झलकने लगा तो प्रमिन्नी बोली

मेरी पनोरी वाली मौसी का लडका है। उम्र कोई बीस साल होगी। अग रग सब ठीक है। साल म छ महीने हमीरे के गन्ना मिल म काम करता है

और छः महीने गांव में मेहनत मजदूरी। छः भाई बहन हैं। वह सबसे बड़ा है। कहो तो नानो के बारे में बात करूं।'

जस्सो सोच में पड़ गई। प्रसिन्नी उसके मन का भय भांपती हुई बोली

'लड़के का अंग रंग सब ठीक है। मुझ पर यकीन नहीं है तो आप जाकर देख आओ या मंगू को भेज दो। आजकल वह गांव में ही है।'

प्रसिन्नी को विश्वस्त स्वर में बात करते देखकर जस्सो की शंका दूर हो गई और वह निर्णयात्मक स्वर में कहने लगी 'तेरी तसल्ली है तो मेरी भी तसल्ली है। तूने लड़का अच्छी तरह देखाभाला हुआ है ना?'

'मैं तो पिछले साल मौसी के घर में महीनाभर रहकर आया हूं। यह काम हो जाए तो नानो सुख पाएगी। कच्ची उम्र में कौन गलती नहीं करता। ये जो बढ़ चढ़कर बातें बनाती हैं इन्हें अपने दिन याद नहीं रहे। चलो वे न सही अपनी औलाद की करतूतों को क्या नहीं देखतीं?'

जस्सो पर फिर उदासी छाने लगी तो प्रसिन्नी ने बात का रुख पलट दिया। और लड़के और उसके मां-बाप के बारे में विस्तार से बताने लगी। जस्सो ने अपनी तसल्ली करने के बाद अनुमति दे दी तो प्रसिन्नी सिर हिलाती हुई बोली

'पर एक शर्त है।'

'क्या?' जस्सो चौंक गई।

'मेरे ताये की लड़की का रिश्ता मंगू के लिए लेना होगा।'

प्रसिन्नी जस्सो के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही तेज स्वर में बोली

'लड़की सोलहवें साल में है। रंग मेरे रंग से साफ है। लेकिन आंखें में कुकरे हैं। बड़ी हो जाएगी तो अपने आप ठीक हो जाएंगे। सुर्मा डाल लें तो उनका अब भी पता नहीं चलता। देखने में दुबली-पतली लेकिन काम में गड्डा है। तेरे घर से एक नानो जाएगी और दूसरी आएगी। उसका नाम भी नानो है।'

जस्सो उसकी ओर देखती हुई बोली 'यह तो अट्टा-सट्टा हो गया।'

'अट्टा-सट्टा कैसा? नानो मेरी मौसी के घर जाएगी और मेरे ताये की लड़की तेरे घर आएगी।'

'अच्छा, तेरे ताये की लड़की है। मैं समझी थी मामे (मामू) की है।' जस्सो ने खुश होते हुए कहा और प्रसिन्नी से बोली

'मुहल्ले में अभी किसी से बात न करना। शगुन चला गया तो लोगों का

अपने-आप ही पता चल जाएगा।

चाची मैं इस मुहल्ले को अच्छी तरह जानती हूँ। तू चिंता न कर।'

तू आजकल में ही पण्डोरी चली जा। उधर बात पक्की करके ज्ञानो का शगुन ले जा और फिर अपने मके जाकर मगू के लिए शगुन ले आ। तू ये काम पक्का करा दे तो मैं सारी उम्र तेरे गुण गाऊँगी।'

सात दिन के बाद ताया बसता और मगू ज्ञानो का शगुन दे आए। दोनों को लड़का पसंद आया और वे उसकी बहुत प्रशंसा कर रहे थे। कुछ दिनों के बाद प्रसिन्नी का भाई मगू को शगुन दे गया।

ज्ञानो की मँगनी के बाद प्रसिन्नी का उनके घर आना जाना बहुत बढ़ गया। प्रसिन्नी ज्ञानो के पास बैठती तो हमेशा उसके मंगेतर की बातें करती। उसके गुण गाती और उसे विश्वास दिलाती कि वह उसे उँगली के छल्ले की तरह रखेगा। ज्ञानो अपने ही खयालों में खोई हुई सिर हिलाती रहती।

काली अधिकतर लालू पहलवान की हवेली में रहता। वहीं खाता-पीता और वहीं सो जाता। मुहल्ले में जिस समय भी आता तो कोई न-कोई उसे यह खबर ज़रूर सुनाता कि ज्ञानो की मँगनी हो गई है। बात सुनाने का ढंग ऐसा होता जैसे पूछ रहा हो कि अब उसका क्या बनेगा। जाटों के लड़के उसे आवाज़ देकर बुलाते और मज़ाक उड़ाते हुए कहते

'चमारा, तू मोरनी के जीते जी रंडा (रँडवा) हो रहा है।

दूसरा पुचकार कर कहता, तू इसे नहीं जानता यह चमादड़ी का राँझा है। यह कोई और हीर तलाश कर लेगा।

लोगों की बातें सुनकर काली को संदेह होने लगा कि ज्ञानो अपनी मँगनी पर संतुष्ट है। वह रात को उठकर हर उस स्थान पर जाता जहाँ वे मिला करते थे। मुहल्ले में जाता तो भी ज्ञानो गली में नज़र न आती। यह सब-कुछ देखकर उसका संदेह विश्वास में बदलने लगा। कभी कभी यह सोचकर उसके दिल में हूक सी उठती कि ज्ञानो ने मँगनी के बाद उससे मुँह मोड़ लिया है। उसका जी चाहता कि वह कम से-कम एक बार मिल जाए ताकि वह अपनी आँखों से देख सके अपने कानों से सुन सके कि वह प्रसन्न है।

गलियों में अँधेरा छा गया था और घरों में दीये जल रहे थे। काली लालू पहलवान की हवेली से अपने घर आ रहा था। बाबू के घर के सामने से गुज़र कर वह मोड़ पर पहुँचा तो उसके पाँव रुक गए। थोड़ी दूरी पर ही ज्ञानो का घर था। परन्तु वह सिर को झुकाता हुआ आगे बढ़ने लगा। ज्ञानो के घर के द्वार के दोनों पट खुले थे। आँगन में एक ओर मिट्टी के ढेर के

दीया जल रहा था और वह चूल्हे के पास दोनों घुटनों पर ठोडी रखे बैठी थी। उसके चेहरे के एक हिस्से पर चूल्हे में जल रही मद्धम आग की रोशनी पड रही थी और बालों की लटें चेहरे पर झुकी हुई थीं।

काली उसे देखकर ठिठक गया और फिर उसकी दहलीज की ओर बढ़ता हुआ बहुत धीमी आवाज में बोला

'ज्ञानो।'

वह उसी तरह चुपचाप और गुम सुम बैठी रही तो उसने एक कदम आगे बढ़कर उसे फिर आवाज दी। ज्ञानो ने चौंक कर उसकी ओर देखा और एकदम उठ खडी हुई और तेजी से उसके पास आ गई। उसकी आँखें फटकर बहुत बडी लग रही थीं। होंठ कँपकँपा रहे थे। वह एकटक उसकी ओर देखती रही।

काली कुछ क्षण तक खडा उसे तकता रहा और फिर लम्बी साँस छोडता हुआ सिर झुकाए द्वार की ओर मुड पडा। ज्ञानो ने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड लिया।

वे अभी कोई बात न कर पाए थे कि ताई निहाली आ गई और काली को वहाँ खडा देखकर तीखे स्वर में कहने लगी

'वे तू यहाँ क्या कर रहा है ?' फिर वह जस्सो को आवाजें देती हुई ऊँचे स्वर में बोली

'जस्सो रंडी का भी कोई ठिकाना नहीं है। लडकी पहले ही मुशटंडी है और ऊपर से वह उसे अकेली छोड कर चली जाती है। ताकि वह याराने पाल सके।'

ताई निहाली की आवाज सुनकर मुहल्ले के कई लोग इकट्ठे हो गए। काली का तन और मन काँपने लगे। वह जहाँ खडा था वहीं खडा रहा। ज्ञानो उसका हाथ छोड कर पीछे हट गई। जस्सो आते ही काली को दोहत्थडें मारने और गालियाँ देने लगी। काली चुपचाप खडा रहा। मंगू ने काली की गर्दन दबोच ली और जोर-जोर से मारने लगा। यह देखकर ज्ञानो तडप उठी और उसे छुडाने के लिए आगे बढ़ी लेकिन जस्सो ने धक्का देकर उसे पीछे हटा दिया।

मंगू की देखा देखी जीतू बन्तू सन्तू और बग्गे ने भी काली को मारना शुरू कर दिया तो वह जोश में आ गया। उसने बन्तू की कलाई मरोड दी। जीतू की कनपटी पर मुक्का मारा और सन्तू को धक्का देकर पीछे फेंक दिया लेकिन मंगू से वह चुपचाप मार खाता रहा।

ताये बसते ने मंगू को मना कर दिया और काली को बालों से पकडकर

झँझाडता हुआ बोला

'कुत्ते के पुत्तरा, यहा क्या लेन आया था ?'

काली ने कोई उत्तर नही दिया तो ताय बसत ने उसे खूब झझोडा और उसके मुह पर दो-तीन थप्पड मारे। स्त्रिया गली म खडी काली को भात भात की गालियाँ देती हुई शोर मचा रही थी। मगू लोगा की शह पाकर काली का खून करन पर तैयार था।

बाबा फत्तू आ गया तो ताया बसता पीछे हटता हुआ बोला

चाचा, माखे का पुत्तर तो अनथ कर रहा है। न शम न हया देखो हनेर (अँधेर) साइ का ।'

बाबे फत्तू ने सबको चुप रहने का सकेत किया और बहुत सयत स्वर म बोला

'तू यहा किसलिए आया था ? क्या मगू स कोई काम था ?

काली ने इकार म सिर हिला दिया तो वह बोला

'क्या कुछ मांगन आया था ?

'नही।

क्या चोरी करने आया था ?'

नही ?'

तो फिर यहाँ अपनी मा । ताय बसते ने क्रोध से कहा। बावे फत्तू न उसे खामोश करते हुए काली से पूछा

क्या बदमाशी करने आया था ?

नही।'

तो फिर आप ही बता दे किसलिए आया था। काली का उत्तर सुनन के लिए लोगा ने सास तक रोक ली और वे आगे बढकर एक दूसरे के साथ फँस कर खडे हो गए।

काली ने कोइ उत्तर न दिया तो वह उसे समझाता हुआ बोला

देखो जिस समय तुम मगू के घर म आए तो वहा ज्ञानो अकेली बठी थी। अगर तुम्हारे मन मे कोई पाप नही था तो तुम यह कह दो कि ज्ञानो तुम्हारी बहन लगती है। हम सबकी तसल्ली हो जाएगी और मामला रफा दफा हो जाएगा।

बावे फत्तू न अपना प्रश्न कई बार दोहराया तो काली धीमे स्वर म बोला

पहले ज्ञानो से पूछो।

उससे पूछ लेते हैं। बाबा फत्तू ज्ञानो को पुकारता हुआ बोला। पुत्तरा,

दीया जल रहा था और वह चूल्हे के पास दाना चुग्ना पर ठोडा रखे बठी थी। उसके चेहरे के एक हिस्से पर चूल्हे म जल रही मद्धम आग की रोशनी पड रही थी और बालो की लटें चेहरे पर झुकी हुई थी।

काली उसे देखकर ठिठा गया और फिर उसकी दहलीज की ओर बढ़ता हुआ बहुत धीमी आवाज म बोला

'ज्ञानो।'

वह उसी तरह चुपचाप और गुम गुम बठी रही तो उसने एक कदम आगे बढकर उसे फिर आवाज दी। ज्ञानो ने चौंक कर उसकी ओर देखा और एकदम उठ खडी हुई और तेजी से उसके पास आ गई। उसकी आँखें फैलकर बहुत बडी लग रही थी। होठ कँपकँपा रहे थे। वह एकटक उसकी ओर देखती रही।

काली कुछ क्षण तक खडा उसे तकता रहा और फिर लम्बी साँस छोडता हुआ सिर झुकाए द्वार की ओर मुड पडा। ज्ञानो ने आगे बढकर उसका हाथ पकड लिया।

वे अभी कोई बात न कर पाए थे कि ताई निहाली आ गई और काली को वहाँ खडा देखकर तीखे स्वर म कहने लगी

वे, तू यहाँ क्या कर रहा है ? फिर वह जस्सो को आवाजें देती हुई ऊँचे स्वर मे बोली

'जस्सो रडी का भी कोई ठिकाना नही है। लडकी पहले ही मुशटडी है और ऊपर से वह उसे अकेली छोड कर चली जाती है। ताकि वह याराने पाल सके।

ताई निहाली की आवाज सुनकर मुहल्ले के कई लोग इकट्ठे हो गए। काली का तन और मन काँपने लगे। वह जहाँ खडा था वही खडा रहा। ज्ञानो उसका हाथ छोड कर पीछे हट गई। जस्सो आते ही काली को दोहत्थडें मारने और गालियाँ देने लगी। काली चुपचाप खडा रहा। मगू ने काली की गदन दबोच ली और जोर जोर से मारने लगा। यह देखकर ज्ञानो तडप उठी और उसे छुडाने के लिए आगे बढी लेकिन जस्सो ने धक्का देकर उसे पीछे हटा दिया।

मगू की देखा देखी जीतू, बतू सतू और बग्गे ने भी काली को मारना शुरू कर दिया तो वह जोश म आ गया। उसने बतू की कलाई मरोड दी। जीतू की कनपटी पर मुक्का मारा और सतू को धक्का देकर पीछे फेंक दिया लेकिन मगू से वह चुपचाप मार खाता रहा।

ताये बसत ने मगू को मना कर दिया और काली को बाहो से पकडकर

घॅंघाडता हुआ बोला

'कुत्ते के पुत्तरा, यहा क्या लन आया था ?'

काली ने काइ उत्तर नही दिया तो ताये वसत ने उसे खूब झझोडा और उसके मुह पर दो-तीन थप्पड मारे। स्त्रिया गली म खडी काली को भाँत भाँत की गालियाँ देती हुई शोर मचा रही थी। मगू लोगा की शह पाकर काली का खून करने पर तयार था।

बाबा फत्तू आ गया तो ताया बसता पीछे हटता हुआ बाला

चाचा, माबे का पुत्तर तो अनथ कर रहा है। न शम न हया देखो हनेर (अँधेर) साईं का ।

बावे फत्तू ने सबको चुप रहने का सकेत किया और बहुत सयत स्वर म बाला

'तू यहा किसलिए आया था ? क्या मगू स कोइ काम था ?

काली ने इकार म सिर हिला दिया तो वह बोला

'क्या कुछ मागने आया था ?'

'नही।

क्या चारी करने आया था ?'

'नही ?'

'तो फिर यहा अपनी मा । ताय बसत ने क्रोध स कहा। बावे फत्तू ने उसे खामोश करते हुए काली से पूछा

क्या बदमाशी करने आया था ?

नहा।'

'तो फिर आप ही बता दे किसलिए आया था।' काली का उत्तर सुनने के लिए लागा ने सास तक रोक ली और व आगे बढकर एक दूसरे के साथ फँस कर खडे हो गए।

काली ने कोई उत्तर न दिया तो वह उस समझाता हुआ बोला

देखो, जिस समय तुम मगू के घर म आए ता वहा नानो अकेली बठी थी। अगर तुम्हारे मन म कोई पाप नही था तो तुम यह कह दो कि ज्ञानो तुम्हारी बहन लगती है। हम सबकी तसल्ली हो जाएगी और मामला रफा दफा हो जाएगा।'

बाबे फत्तू न अपना प्रश्न कई बार दोहराया तो काली धीमे स्वर म बोला

पहले नानो से पूछो।

'उससे पूछ लेते हैं।' बाबे फत्तू नानो का पुकारता हुआ बाला। पुत्तरा,

पहले तू यह दे कि यह तेरा भाई लगता है।
नाना चुप रही तो जसा चीख़ कर बोली
सिरमुनिय, बाल्ती क्या नहीं।'
नाना न सब पर नज़र डाली और काली की ओर संकेत करती हुई बोली
'अगर वह अपनी छाती पर हाथ रख कर कह दे कि वह मुझे अपनी बहन समझता है तो मैं मान लूंगी।
काली न चौंक कर नाना की ओर देखा और ताय बसत की गिरफ्त से अपने हाथ छुड़ाता हुआ बोला
नहीं, मैं नहीं कहूँगा।'
लोग एक बार फिर शोर मचाने लगे। काली हुजम को चीरता हुआ तेज़-तेज़ कदमों से आगे निकल गया।

४८

अगले ही दिन लालू पहलवान ने काली को निकाल दिया। तीन दिन के बाद प्रसिन्नी ने नानो और मगू दोनों की मँगनियाँ तोड़ दीं। कुछ दिन के लिए नानो और काली दोनों को बहुत कष्ट उठाने पड़े। काली को गाँव का कोई चौधरी और दुकानदार काम देना तो दरकिनार मुँह लगाने को भी तैयार नहीं था। मुहल्ले का कोई व्यक्ति उस की शक्ल नहीं देखना चाहता था। वह सारा दिन घर के अन्दर बन्द रहता और गली में आते जाते लोगों की गालियाँ और आवाजें सुनता रहता।
मगू, जसो और मुहल्ले के लोग नानो पर कड़ी निगरानी रखने लगे। वह बाहर जाती तो जसा उसका पीछा करती। रात को खाट पर लेटती तो उसके हाथ-पाँव रस्सी से बाँध दिए जाते।
परन्तु आहिस्ता-आहिस्ता ताज़ा घटना की चर्चा कम होने लगी। लोगों के अन्दर नानो और काली के प्रति घृणा की भावना का स्थान उपेक्षा ने लेना

शुरू कर दिया। काली टाडा उडमुड के अड्डे पर मेहनत मजदूरी करने लगा। वह सूर्योदय से पूर्व ही गाँव से चला जाता और रात गए वापस आता। ज्ञानो भी कामकाज के लिए गली मुहल्ले मे आने-जाने लगी।

कुछ दिन गुजर गए तो जस्सो ने नानो की मँगनी की नए सिरे से बातचीत आरम्भ कर दी। वह प्रीतो के घर उसके उसी रिश्तदार लड़के का रिश्ता मागने गई जो काना था। लेकिन प्रीतो ने उसे ठुकरा दिया। वह नाक सिकोड़ती हुई बोली

अनजाने मे तो मक्खी निगली जा सकती है लेकिन आखो से देखकर कौन निगलेगा। जो लड़की आज कुडमाई छोड सकती है कल वह शादी भी तोड सकती है।'

प्रीतो की जली कुटी बातें सुनकर जस्सो घर लौट आई और उसने ज्ञानो को बहुत पीटा और स्वय भी खूब रोई। वह उसके लिए केवल वर चाहती थी। अब इस बात की चिन्ता नहीं थी कि वह काना है या लँगडा, लूला है या अपाहिज। आखिरकार उसे एक तीन बच्चो का रडवा बाप मिल गया जिसे ज्ञानो के साथ विवाह के लिए मनाया जा सकता था।

जस्सो उसके बारे म बातचीत चला रही थी कि एक दिन चौधरी मुशी की पत्नी ने बुला भेजा। चौधरानी उसे एक ओर ले जाकर गोपनीय स्वर म बोली

नी जस्सो, तरी लडकी का कही पाव तो भारी नही है ?

क्या ? जस्सो का मुह खुला का खुला रह गया।

कल वह यहाँ काम करने आई तो इस तरह उलटिया करने लगी जस लडकिया पहली बार गभवती होन पर करती है। मैंने पूछा तो कहने लगी कि उसका जी खराब है और पेट मे गडबड की वजह से उसे कई बार उलटी आ जाती है मुझे शक है तुम उससे पता करना। चौधरानी समझाती हुई फिर बोली

'लडकी पराया धन होती ह। अगर मेरा शक ठीक निकला तो बहुत बुरी बात है। लडकी सारी उम्र के लिए दागी (दागदार) हो जाएगी।

चौधरानी ज्यादा पूछताछ करने लगी तो जस्सो वापस आ गई। क्रोध और भय से उसका सारा शरीर काँप रहा था। वह गिरती-पडती अपन घर पहुची और सिर पकडकर बठ गई। वह नानो को घर का काम-काज करते हुए बहुत ध्यान से देखती रही। उसे समझ म नही आ रहा था कि इस बारे म नानो से किस तरह पूछे। वह चौबीस घटे इसी चिन्ता म घुलती रहती। अगर

पानो यदि गर्भवती हुई तो इसका पता चलेगा। फिर कोई विवाह नहीं करेगा और वे गली मुहल्ले में मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहेंगे। मगू का भी कोई लम्बी देर के लिए तैयार नहीं होगा।

रात को पानो सो गई तो जस्सो उठकर उसकी खाट पर आ बैठी और उसका पेट टटोलना शुरू कर दिया। पानो की आँख खुल गई और वह हैरानी से अपनी माँ को घूरती हुई बोली

'माँ, क्या है ?'

जस्सो ने पहले तो इधर उधर से पूछने की कोशिश की लेकिन जब पानो की समझ में बात नहीं आई तो उसने सीधी तरह पूछ लिया।

पानो का रंग उड़ गया और वह गहरी चिंता में डूबी हुई बोली

'माँ, मुझे पता नहीं है।'

जस्सो उसे दुलारती हुई बोली

'पुत्तरा, इसमें सबकी भलाई है। इसी में सबकी इज्जत है कि तू साफ साफ बता दे।' जस्सो साथ ही साथ परमात्मा से प्रार्थना कर रही थी कि चौधरानी का संदेह निराधार सिद्ध हो।

पानो कुछ बताने में असफल रही तो जस्सो खोज खोजकर प्रश्न पूछने लगी ताकि उसके उत्तरों से किसी परिणाम पर पहुँच सके। धीरे धीरे जस्सो ने उससे मासिक धर्म के बारे में पूछा और पानो का उत्तर पाकर कई वर्षों के अपने अनुभव ने उसे बता दिया कि चौधरानी का संदेह ठीक है। वह चीखकर बोली

'सिरमुनिए, तूने अनर्थ कर दिया। तू पैदा होते ही मर जाती तो अच्छा था।'

जस्सो रोती हुई कभी पानो को दुहत्थड़ें मारती और कभी अपना सिर पीटना शुरू कर देती।

वह इस मामले के बारे में जितना ज्यादा सोचती उतना ज्यादा ही उसे भय महसूस होने लगता। कई बार उसके मन में विचार आता कि उसका विवाह काली के साथ कर दे लेकिन यह सोचकर ही वह सिहर उठती कि अपने ही गाँव, अपने ही मुहल्ले, अपनी ही गली और अपने ही गोत्र के लड़के से कैसे विवाह कर सकती है। ऐसा आज तक कभी नहीं हुआ है। मुहल्ले वाले यह सुनते ही खा जाएँगे और उन्हें इलाके में तो क्या, शमशान भूमि में भी जगह नहीं मिलेगी।

जस्सो के सामने दूसरी बड़ी समस्या थी कि मगू को बता दे या इस बात

को अपने तक ही रखे। नानो को उठते-बैठते देखकर वह रो पडती। अगर विवाह के पश्चात् वह गर्भवती होती तो लोग उसके घर बधाई देने आते। वह स्वयं लोगों को बताती कि उसकी बेटी मां बनने वाली है। गली मुहल्ले की स्त्रियां उसका दिल बहलाती और उससे छेड छाड करती। इसके ससुराल कपडे भेजते।

ज्ञानो अपनी जगह पर बहुत ही ज्यादा चिंतित थी। उसे मालूम था कि इस गाँव मे रहते हुए काली के साथ उसका विवाह नही हो सकेगा। उसके लिए तो काली से मिलना भी बहुत कठिन हो गया था। वह बहुत रात गए आता और सुबह सवेरे ही निकल जाता था। उसे समझ मे नही आ रहा था कि किस तरह उसे यह खबर पहुचाए कि वह बहुत मुश्किल म फँस गई है।

जस्सो ने निर्णय किया कि अभी वह मगू को कुछ नही बताएगी। उसे चौधरानी ने फिर बुलाया तो वह उसे कह आई कि उसका संदेह निराधार है। परंतु यह कहते हुए उसकी जबान काप गई और चौधरानी का संदेह और भी पक्का हो गया। उसने चमादडी की अन्य स्त्रियों से बात कर दी। उनकी भी जिज्ञासा जाग उठी और वे ज्ञानो को आते जाते बहुत ध्यान से देखने लगी।

उसने ज्ञानो को गर्म चीजों का वह काढा पिलाना शुरू कर दिया जो पशुओं को सर्दी लगने पर दिया जाता है। नानो कडवा और कसैला काढा भी चाव से पीती रही। जस्सो ने उसे सख्त हिदायत कर दी कि वह घर से बाहर और किसी के सामने पेशाब न करे। वह जितनी बार पेशाब करती जस्सो ध्यान से उसका निरीक्षण करती और उसमे रक्त की आमजश न पाकर निराश हो जाती।

तीन दिन तक काढा पीने के बाद नानो का पेट सख्त खराब हो गया और उसे दस्त आने लगे। जस्सो की निराशा आशा मे बदल गई। ज्ञानो को कई बार रात को भी बाहर जाना पडता। जस्सो दो चार बार उसके साथ गई लेकिन बाद म नानो अकेली ही जाने लगी।

नानो रात को खेतों से वापस आ रही थी कि काली के घर म उसे रोशनी दिखाई दी। वह बे झिझक उसके द्वार की ओर बढ गई। पहली ही दस्तक पर उसने द्वार खोल दिया। नानो को बहुत कमजोर, परेशान और हताश देखकर काली का कलेजा धक से रह गया। उसका उडा हुआ यौवन और रंगरूप देख कर नानो को भी बहुत दुख पहुचा।

नानो उसके निकट आ गई और कुछ समय तक दोनो खामोश बैठे रहे।

पहले वे मिलते तो अपने सब दुख-दर्द भूलकर खुशी में डूब जाते थे लेकिन आज दोनों का दुख पहले से बहुत ज्यादा बढ़ गया। ज्ञानो नजरें झुकाए बैठी थी। काली ने साहस करके उसका चेहरा ऊपर उठाया तो उसकी आँखों में छलक रहे आँसू गालों पर बहने लगे। वह आँसू पोंछती हुई याचना भरे स्वर में बोली

'मुझे यहाँ से ले चलो। बात बहुत बिगड़ गई है।

ज्ञानो ने काली को अपने गर्भ के बारे में बताया तो उसकी आँखें फैल गईं। वह भय से काँपने लगा। धीरे धीरे उसने अपने आप पर काबू पा लिया और अपनी आवाज को सशक्त बनाने का प्रयास करता हुआ बोला, मैं एक दो दिन में कुछ-न कुछ करूँगा।' कहकर काली सोच में पड़ गया और फिर ज्ञानो का सिर सहलाता हुआ बोला

'तू ईसाई बनने के लिए तैयार है ना ?

'तेरे साथ तू जो कहेगा बन जाऊँगी लेकिन मुझे यहाँ से निकाल ले।

अच्छा, कल बताऊँगा, तू मुझे पहरा शुरू होने के समय तकिए से परे मिलना। मैं तुम्हारा वहीं इंतजार करूँगा।

काली सुबह उठते ही पादरी के पास गया। वह हमेशा की तरह प्रसन्न भाव से मिला और इधर उधर की बातें करने के बाद काली से उदास स्वर मे बोला

'यह गाँव बहुत खराब है। यहाँ के लोगों के ख्यालात बहुत गंदे हैं। अच्छे भले आदमी में कीड़े निकालते हैं। यीशू मसीह इन पर रहम करें।' पादरी ने छाती पर हाथ से क्रास बनाकर कहा।

काली पादरी के मुंह से सान्त्वना भरे शब्द सुनकर धीमे स्वर में अपने मन की बात बताने लगा। पादरी की सहानुभूति उससे बराबर बढ़ती जा रही थी। काली ने जब ईसाई धर्म ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की तो पादरी का चेहरा खिल उठा और वह प्रसन्नभाव से बोला

मुझे यकीन था कि एक-न एक दिन तेरे अन्दर यीशू मसीह का प्रेम जागेगा और तुम उस मुकद्दस बाप के कदमों में आ गिरोगे।

मैं अकेला ही ईसाई नहीं बनूंगा, मेरे साथ ज्ञानो भी ईसाई बनेगी।

'उसकी माँ और भाई भी ? पादरी ने उत्सुकता से पूछा।

वे नहीं बनेंगे। ईसाई बनने के बाद मैं और ज्ञानो शादी करेंगे ईसाई धर्म में ऐसी शादी की मनाही तो नहीं है ?

नहीं मनाही तो नहीं है लेकिन ज्ञानो की उम्र छोटी है, वह नाबालिग

है वह अपनी माँ की इजाजत के बिना अपना धर्म नहीं बदल सकती।'

पादरी की बात सुनकर काली बहुत उदास हो गया और उसके घुटनों की ओर झुकता हुआ याचना भरे स्वर में बोला

'पादरी जी, हमारी मदद करो हमें कोई रास्ता बताओ घर से भागते हैं तो पुलिस पीछा करेगी फिर भागकर जाएँगे कहाँ ?' काली की आँखों में आँसू छलकने लगे। पादरी उसके सिर पर हाथ रखता हुआ बोला

'मैं इस मामले में तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता तुम्हारे लिए सिर्फ दुआ माँग सकता हूँ।'

काली पादरी के घर से सीधा टांडा उड़मुड़ चला गया। वह सारा दिन बड़डे के साथ आमों के बाग में लेटा सोच में डूबा रहा। ज्ञानो को साथ लेकर भाग जाने की बात सोचता तो उसकी आँखों के सामने पुलिस के सिपाहियों की सख्त शक्लें घूम जातीं और कानों में उनकी गालियाँ और मार गूँजने लगती और उसका साहस टूट जाता। कभी वह चाहता कि अकेला ही गाँव छोड़कर भाग जाए लेकिन इस बात के लिए भी उसका मन न मानता।

रात को वह अनमना सा तकिए से परे फसल में बैठा ज्ञानो की प्रतीक्षा करता रहा। उसका दिल धक धक कर रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या उत्तर देगा। इस कठोर समस्या का कैसे समाधान करेगा। पत्ता भी हिलता तो उसके कान खड़े हो जाते और साँस रुकने लगती। गाँव में पहरा शुरू हो गया लेकिन ज्ञानो नहीं आई। वह कुछ समय तक दुबका बैठा रहा। पहरेदार गाँव के दूसरी ओर पहुँच गया था लेकिन ज्ञानो अभी तक नहीं आई थी। वह फसल से बाहर आ गया और दबे पाँव गाँव की ओर चलने लगा। वह ज्ञानो के द्वार के सामने कुछ क्षणों के लिए रुक गया और वहाँ बिलकुल खामोशी पाकर आगे बढ़ गया। खाट पर लेटते ही उसे इस चिंता ने घेर लिया कि पता नहीं ज्ञानो क्यों नहीं आई। वह वचन करके पीछे हटने वाली तो नहीं है। वह सारी रात सोता जागता इसी सोच में डूबा रहा।

सात दिन तक काढ़ा पिलाने के बाद भी ज्ञानो को कोई फायदा नहीं हुआ तो जस्सो बौखला गई। उसने ज्ञानो को बहुत पीटा और स्वयं भी आठ-आठ आँसू रोई। वह कोठरी में पड़ी ऐसे विलाप करती रही जैसे उसका युवक बेटा मर गया हो। उसने मंगू को चौधरी की हवेली से बुला भेजा और उसे कोठरी में ले जाकर द्वार बन्द कर दिया और अपनी छाती पीटती हुई बोली, 'पुत्तरा अनर्थ हो गया है।' फिर वह मंगू के कानों में खुसर फुसर करने लगी।

मंगू उसकी बात सुनकर भिन्ना गया और दाँत पीसता हुआ बोला, 'मैं

दोनो को जान से मार दूगा।' जस्सो उसके मुह पर हाथ रखती हुई दबी आवाज म बोली

शोर क्यो मचाता है। इज्जत पहले ही खराब हो गई है अब मिट्टी भी खराब करना चाहता है। अपनी ही चीज खोटी थी। दूसरे को दोष किस बात का।

मगू कुछ शात हो गया तो जस्सो उदास स्वर म बोली

मैंने सब ओढ पोढ (टोटके) करके देख लिए हैं उनसे कुछ नही हुआ। मुहल्ले म भी लोगो को सदेह हो गया है। मुझसे अभी तक किसी न कहा तो नही लेकिन आपस म खुसर फुसर जरूर करती है। तू कही स मुझे सखिया (जहर) ला दे, मैं उसको दे दूगी। यह मर गई तो सारी बात खत्म हो जाएगी। अगर इस हाल मे जिदा रही तो तुम्हे भी कोई लडकी नही देगा।

यह सुझाव देकर जस्सो रोने लगी। मगू सोच म पड गया और फिर उठ कर बाहर चला गया।

तीन दिन के बाद मगू ने अपनी मा को सखिया की डलिया ला दी। जस्सो उस पुडिया को हाथ म पकडे बहुत देर तक बैठी रोती रही। कई बार उसके जी म आया कि उस पुडिया को नाली मे फेंक दे लेकिन जब यह सोचती कि सात आठ महीने के बाद उसकी कँवारी बेटी के बच्चा जन्म लेगा तो वह काँप जाती।

उसने ज्ञानो को तीन दिन और भी ज्यादा सख्त काढा दिया। वह दिन रात परमात्मा से प्रार्थना करती कि ज्ञानो का गर्भ गिर जाए। उसे पूरी आशा थी कि तीसरे दिन काढा ज़रूर असर करेगा लेकिन वह दिन गुजरने के बाद भी ज्ञानो अच्छी भली रही तो जस्सो ने सखिया देने का फसला कर लिया। उसने मगू को बता दिया। जस्सो खामोशी से रोती हुई सखिए की डलिया का गुड म लपट कर उँगलियों मे गोल करती रही।

साय को मगू घर आया और ज्ञानो को रोटी पकाता देखकर उसकी आखो म आँसू छलक आए। वह दीए की रोशनी से उठकर अँधेरे म जा बैठा और एकटक उसकी ओर देखता रहा। उसने ज्ञानो के हाथ से लेकर रोटी खाई। आज शायद मगू की जिंदगी म पहला दिन था कि ज्ञानो को उसने गाली गलौच नही किया। उसने सोचा कि वह घर पर ही सोयेगा लेकिन बाद म इरादा बदल लिया।

जस्सो ज्ञानो के बहुत ही चाव लाड कर रही थी। उसे पुत्तर कहकर पुकार रही थी। ज्ञानो की समझ म कुछ नही आ रहा था कि आज मा के

व्यवहार म तवदीली क्या आ गई है। वह खुश थी कि उसकी मा और भाई दोना क्रोध म नही हैं।

जस्मो ने अपने आप ज्ञानो की खाट आगन म बिछाई और जब वह सोने लगी तो उसके हाथ पर गोली रखकर पानी का गिलास देकर कापती आवाज म बोली

'ले पुत्तरा खा ले, इससे आराम । जस्मो आगे कुछ न कह सकी और मुह मे पल्लू लेकर रोने लगी।

नानो न चुपचाप गाली खा ली। कुछ समय तक वह आराम से लेटी रही। फिर उस महसूस हुआ जस उसके पेट म काई तज चीज काट रही हो। उसका सारा शरीर ऐंठने लगा। वह खाट पर पडी तडपन लगी और जस्मो उसके इद गिद घूमती हुई आँसू बहाती रही।

गली के बाहर चौथा पहर आया ता नाना को जार की उलटी आई। जस्मो अपना रोना पीटना भूल गइ और दीया जलाकार नाना पर झुक गई। वह बिल्कुल बेहोश पडी थी और उसकी सास उखड गई थी। थोडी ही दर के बाद उसे एक और उलटी आइ और वह खाट पर लुढ़क गई।

जस्सा ने अपना सिर पीट लिया और उसक साथ लिपटी हुई विलाप करती रही। आखिरी पहर स पहले मगू भी घर आ गया और माँ को रोता देखकर वह समझ गया कि नानो अपनी जिदगी का दाग साथ लेकर हमेशा के लिए इस ससार मे चली गई है। उसे देखने ही जस्सो फूट पडी। अब तक वह थोडा बहुत सयम बनाए हुए थी लकिन मगू के आने से जस उसे छुट्टी मिल गई और वह अपनी चीख को दबाती हुई निढाल-सी हो गई। मगू नानो के ऊपर झुक गया और उसका चेहरा अपने आसुआ से नहला दिया। जब उसे याद आया कि यह सब काली की वजह से हुआ है तो उसके अदर बदला लन की प्रबल भावना जाग उठी। वह लाठी उठाकर गली म आ गया। लेकिन जस्सो ने गिरते पडते उसे आ पकडा और बहुत धीमी और कमजोर आवाज मे बोली

पुत्तरा, पहले इस काम को सहेज ले। उसे बाद म देख लेंगे। वह इस गली म जिदा नही रह सकता। जो मा अपनी कोख जाई बटी को जहर दे सकती है वह उसे भी जीता जागता नही रहने दगी।'

माँ-बेटा अदर आ गए। जस्सो ने खून के सब चिह्न मिटा दिए और फश पर लेप कर दिया। जब पौ फट गई तो उसने आँगन म खडे होकर दहाड मारी

दोनों को जान से मार दूँगा ।' जस्सो उसके मुँह पर हाथ रखती हुई दबी आवाज़ में बोली

'शोर क्या मचाता है । इज़्ज़त पहले ही खराब हो गई है अब मिट्टी भी खराब करना चाहता है । अपनी ही चीज़ खोटी थी । दूसरे को दोष किस बात का ।'

मंगू कुछ शांत हो गया तो जस्सो उदास स्वर में बोली

मैंने सब ओढ पोढ (टोटके) करके देख लिए हैं उनसे कुछ नहीं हुआ । मुहल्ले में भी लोगों को संदेह हो गया है । मुझसे अभी तक किसी ने कहा तो नहीं लेकिन आपस में खुसर फुसर ज़रूर करती हैं । तू कहीं से मुझे संखिया (ज़हर) ला दे, मैं उसको दे दूँगी । यह मर गई तो सारी बात खत्म हो जाएगी । अगर इस हाल में ज़िन्दा रही तो तुम्हें भी कोई लड़की नहीं देगा ।

यह सुझाव देकर जस्सो रोने लगी । मंगू सोच में पड़ गया और फिर उठ कर बाहर चला गया ।

तीन दिन के बाद मंगू ने अपनी माँ को संखिया की डलिया ला दी । जस्सो उस पुड़िया को हाथ में पकड़ बहुत देर तक बैठी रोती रही । कई बार उसके जी में आया कि उस पुड़िया को नाली में फेंक दे लेकिन जब यह सोचती कि सात-आठ महीने के बाद उसकी कँवारी बेटी के बच्चा जन्म लेगा तो वह काँप जाती ।

उसने ज्ञानो को तीन दिन और भी ज़्यादा सख्त काढ़ा दिया । वह दिन रात परमात्मा से प्रार्थना करती कि ज्ञानो का गर्भ गिर जाए । उसे पूरी आशा थी कि तीसरे दिन काढ़ा ज़रूर असर करेगा लेकिन वह दिन गुज़रने के बाद भी ज्ञानो अच्छी भली रही तो जस्सो ने संखिया देने का फैसला कर लिया । उसने मंगू को बता दिया । जस्सो खामोशी से रोती हुई संखिए की डलिया को गुड़ में लपेट कर उँगलियों में गोल करती रही ।

शाम को मंगू घर आया और ज्ञानो का रोनी चेहरा देखकर उसकी आँखों में आँसू छलक आए । वह दीए की रोशनी से उठकर अँधेरे में जा बैठा और एकटक उसकी ओर देखता रहा । उसने ज्ञानो के हाथ से लेकर रोटी खाई । आज शायद मंगू की ज़िन्दगी में पहला दिन था कि ज्ञानो को उसने गाली-गलौज नहीं किया । उसने सोचा कि वह घर पर ही मारेगा लेकिन बाद में इरादा बदल दिया ।

जस्सो ज्ञानो के बहुत ही पास लेट कर रो रही थी । उसे पुचकार पुचकार रही थी । ज्ञानो की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि आज माँ के

व्यवहार म तवदीली क्या आ गई है। वह खुश थी कि उसकी मा और भाई दोनो नोंध म नही है।

जस्सो ने अपने आप नानो की खाट आगन म बिछाई और जव वह सोने लगी तो उसके हाथ पर गोली रखकर पानी का गिलास देकर कापती आवाज म बोली

'ले पुत्तरा, खा ले इससे आराम ।' जस्सो आगे कुछ न कह सकी और मुह म पल्लू लेकर रोने लगी।

नानो ने चुपचाप गोली खा ली। कुछ समय तक वह आराम से लेटी रही। फिर उसे महसूस हुआ जैसे उसके पेट म कोई तेज चीज़ काट रही हो। उसका सारा शरीर ऐंठने लगा। वह खाट पर पडी तडपने लगी और जस्सो उसके इर्द गिर्द घूमती हुई आसू बहाती रही।

गली के बाहर चौथा पहरा आया तो नानो को जोर की उल्टी आई। जस्सो अपना रोना पीटना भूल गई और दीया जलाकर नानो पर झुक गई। वह बिलकुल बेहोश पडी थी और उसकी सास उखड गई थी। थोडी ही देर के बाद उसे एक और उलटी आई और वह खाट पर लुढ़क गई।

जस्सो ने अपना सिर पीट लिया और उसके साथ लिपटी हुई विलाप करती रही। आखिरी पहरे से पहले मग्गू भी घर आ गया और मा का रोता देखकर वह समझ गया कि नानो अपनी ज़िन्दगी का दाग साथ लेकर हमेशा के लिए इस ससार से चली गई है। उसे देखते ही जस्सो फूट पडी। अब तक वह थोडा-बहुत सयम बनाए हुए थी लेकिन मग्गू के आने से जस उसे छुट्टी मिल गई और वह अपनी चीख को दबाती हुई निढाल-सी हो गई। मग्गू नानो के ऊपर झुक गया और उसका चेहरा अपने आसुओ से नहला दिया। जब उसे याद आया कि यह सब काली की वजह से हुआ है तो उसके अन्दर बदला लेने की प्रबल भावना जाग उठी। वह लाठी उठाकर गली म आ गया। लेकिन जस्सो ने गिरते पडते उसे आ पकडा और बहुत धीमी और कमजोर आवाज म बोली

पुत्तरा पहले इस काम को सहेज ले। उसे बाद म देख लेंगे। वह इस गली म ज़िदा नही रह सकता। जो माँ अपनी कोख जाई बेटी को जहर दे सकती है वह उसे भी जीता जागता नही रहने देगी।

माँ-बेटा अन्दर आ गए। जस्सो ने खून के सब चिह्न मिटा दिए और फर्श पर लेप कर दिया। जब पौ फट गई तो उसने आँगन म खडे होकर दहाड मारी

'हाय वे लोगा, मैं लुट गई ।' फिर उसकी चीखें सारे गांव पर छा गइ।

लोगा को पता था कि यह चीखें जस्सो की हैं और यह भी मालूम था कि वह क्या रो रही है । गाव म हर प्रेम की मारी मुटियार का गभवती होन के बाद यही हाल होता था और एसी मुटियार की मां की चीखें बहुत ही करुणाभरी होती थी क्योंकि उनम उसके अपने पाप का पछतावा भी शामिल होता था ।

थोडी ही देर म मुहल्ले की सब स्त्रियां जस्सो के घर पहुच गइ । मद शमशान भूमि म लकडियां पहुचाने लग । ताया बसता मगू को जल्दी से जल्दी अर्थी निकालने के लिए जोर दे रहा था । केवल जस्सो रो रही थी । अन्य स्त्रिया उसे चुप करा रही थी । वे कानो को छूती हुई एक दूसरी को कन खिया से समझा रही थी कि ज्ञानो को जहर देकर मारा गया है लेकिन किसी ने यह बात अपने होठा पर नही आने दी । ज्ञानो की मौत का कारण न तो किसीने पूछा और न ही किसी ने बताया ।

सूर्योदय के थोडी देर बाद ही ज्ञानो की अर्थी शमशान भूमि पहुचा दी गई । कोई रीति रिवाज नही किए गए लेकिन मुहल्ले के हर व्यक्ति ने उसकी अर्थी को कधा दिया ताकि वह चुडल बनने के बाद उन्ह परेशान और तग न करे ।

उसकी अर्थी को आग लगाकर सब लोग अपने अपने काम-काज पर चले गए । कोई सफ नही बिछा । किसी ने ज्ञानो के गुणा का वणन नही किया । सब भयभीत और उदास थे । जस्सो क पास केवल बबे हुक्मा बठी थी और वह भी उसे दिलासा देने की बजाय परमात्मा को याद करती हुई सबके लिए सदबुद्धि की कामना कर रही थी ।

काली के घर पर ताला पडा था । जस्सो की पहली चीख सुनने के बाद लोगा ने काली को नही देखा था, न घर म, न गली म, न खेता म । वह ऐसे लुप्त हो गया था जस उसे जमीन निगल गई हो ।

कुछ लोगा ने रात को यह खबर फलाइ कि उन्होंने काली को सूर्यास्त के समय ज्ञानो की चिता के पास बठे देखा था । वह उसकी गम राख पर झुका हुआ था और जब वे उसकी ओर बढे तो वह खडी फसल म छिप गया और फिर उसका कुछ पता नही चला ।

तीन मास तक प्रीतो प्रतिदिन सुबह सवेर खबर सुनाती रही कि काली रात को भी नही आया। लोग कुछ दिन तक तो इस खबर को दिलचस्पी से सुनते रहे लेकिन ज्ञानो की याद फरामोश होने के साथ साथ काली के बारे म भी उनकी जिज्ञासा घटती गई।

एक बार कोई खबर लाया कि भोगपुर और चुलाग के स्टेशनो के बीच रेल के फाटक से थोडी दूर परे रेलगाडी के पहिए किसी युवक के सिर और चेहरे के ऊपर से गुजरे हैं और मृतक का पहचानना मुश्किल है लेकिन सुना है कि मृतक का धड काली से मिलता जुलता है।

इसके बाद खबर फैली कि तीन कोस दूर तक एक अंधे कुएँ से सडी हुई लाश मिली है। कहते है कि उसका हुलिया काली जैसा था। लोगो ने दोनो खबरें सुनी लेकिन किसी ने पडताल करने की आवश्यकता नही समझी।

खेतो मे सरसो खिल गई थी और गेहू की फसल जमीन से एक हाथ ऊपर उठ आई थी। गन्ने के बेलन चलने लगे थे। खडे पानी पर कुहरा जमना शुरू हो गया था। लोग अलावो के गिर्द बैठे सर्दियो के मौसम को कोसते हुए गर्मी के मौसम की प्रशसा करते थे।

मगू की भैस रात को सर्दी मे ठिठुरती थी। एक दिन आकाश पर बादल छा गए और हल्की हल्की बूदाबादी होने लगी। मगू हाथ म लाठी पकडे काली की ड्योढी के सामने आ खडा हुआ। उसने आगे बढकर ताले को हिलाया। उसमे जग लग गया था। उसने गाली देते हुए लाठी के सुम से ताला तोड दिया और साकल खोलकर भैस का रस्सा कोने म पडी चक्की के हत्थे से बाधकर दरवाजा फिर बन्द कर दिया।